भारत में सबसे ज्यादा बिकनेवाली हिन्दी पत्रिका

मनोहर कहानियाँ

ग्रीष्म प्रथम विशेषांक

अतिरिक्तांक

दस्ते इंतकाम
एक ऐसी बेवा की कहानी, जिस के शत्रु अपने आप तबाह हो गये

लंगड़ी डाक्टर
साहस और संकल्प की धनी विकलांग महिला की कहानी

बद्दुआ
मां-बाप का अपमान करनेवाले को बद्दुआ देनेवाली नारी की कथा

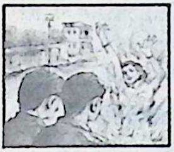

बिना आग के जलते जिस्म
बिना आग के मानव-शरीर में आग लगने की रहस्यमय दास्तान

इस अंक में

१. गुरु-दक्षिणा — विश्वनाथ यादव	४
२. दस्ते इंतकाम — मलिक सफदर हयात	१२
३. बिहार का राबिन हुड — हमारे संवाददाता द्वारा	२०
४. बिना आग के सुलगते जिस्म — कुलदीप शर्मा	२८
५. जाली नोटों का कारोबार — आसिफ फर्रुखाबादी	३६
६. साहस की प्रतिमूर्ति — मनोहर शुक्ल	५८
७. लंगड़ी डाक्टर — नरगिस बानो	६५
८. लामा का पुनर्जन्म — अशोक सरीन	६८
९. अन्तर्कथा देव के सूर्य मन्दिर की — रतीन्द्र नाथ	७६
१०. बद्दुआ — निगहत मिर्जा हिना	८०
११. सर्प मानव — दीपान्विता राय	९४
१२. खूंखार गुलदार का शिकार — महेश शर्मा	१००
१३. दास्तान मादक द्रव्यों की.... — मोहम्मद इशरत खान	१०८
१४. पेट्रोल पम्प के लुटेरे — डा० प्रदीप शालिग्राम मेश्राम	१३४
१५. गंजे की किस्मत — सुरेन्द्र कुमार	१४०

संपादकीय कार्यालय : मनोहर कहानियां २८१ मुट्ठीगंज, इलाहाबाद—३

© इस अंक में प्रकाशित सभी रचनाओं के सर्वाधिकार सुरक्षित है।

छा०पु०नि०

गुरु-दक्षिणा

विश्वनाथ यादव

"मान सिंह, मेरी अन्तरात्मा कहती है कि मेरा पुत्र जीवित है... तुमने जो बीड़ा उठाया है, उसे तुम पूरा करोगे... मैंने तुमसे जो गुरु-दक्षिणा मांगी है, उसे देने में तुम एक न एक दिन अवश्य सफल होगे"

भारत की धार्मिक नगरी काशी में गंगा के पावन तट से कुछ दूर एकान्त में एक आश्रम था। इसमें एक संन्यासी रहता था। यह संन्यासी कौन था और कहां से आया था, यह किसी को पता न था। सब केवल इतना ही जानते थे कि वह कोई सिद्ध महात्मा हैं।

संन्यासी के मुखमंडल पर अद्भुत तेज था। उनके सिर के केश और लम्बी दाढ़ी पूर्णतः सफेद थी। उनका सारा समय पूजा, ध्यान और भजन में बीतता था। वह नित्य भोर में गंगा नहाने जाते थे। स्नान के बाद गंगा-तट पर घंटों बैठकर ईश्वर के ध्यान में तल्लीन रहते थे। आस-पास की जनता उन्हें श्रद्धा और सम्मान के साथ देखती थी।

संन्यासी का व्यक्तित्व भी महान था। वह सबसे प्रेम और आत्मीयता से मिलते थे। ईश्वर में उनकी आस्था अटूट थी। सहानुभूति, सेवा और परोपकार उनके जीवन की अनमोल विशेषताएं थीं। अपने गुणग्राही स्वभाव, अपने गंभीर ज्ञान और अपने वचनामृत से वह सबका मन मोह लेते थे।

एक दिन की बात है। संन्यासी सबेरे गंगा-स्नान करने के बाद तट पर घाट की सीढ़ियों से थोड़ी दूर हट कर ईश्वर के ध्यान में तल्लीन थे। घाट की सीढ़ी पर एक व्यक्ति बैठकर संन्यासी को अपलक देख रहा था। लगता था, संन्यासी के तेज से वह प्रभावित था। उसके चेहरे से स्पष्ट आभास मिलता था कि संन्यासी के प्रति उसके मन में श्रद्धा और भक्ति का भाव उमड़ रहा है।

वह व्यक्ति वेशभूषा से सैनिक सरदार लगता था। आकृति से वह राजपूत लगता था। वह इस प्रतीक्षा में था कि कब संन्यासी का ध्यान टूटे और कब वह उनसे अपने मन की बात कहे।

सहसा संन्यासी का ध्यान टूटा।

वह उठे और आश्रम की ओर चल पड़े। श्रद्धा और भक्ति से विह्वल राजपूत सरदार के मन में आया कि वह अपने मन की बात संन्यासी से कह दे, किन्तु इसके लिए वह साहस नहीं जुटा पाया। वह अपने स्थान से उठा और चुपचाप संन्यासी के पीछे चलने लगा।

आश्रम के निकट पहुंचने पर संन्यासी ने बिना पीछे मुड़े पूछा, "भद्र, तुम कौन हो?"

राजपूत ने उत्तर दिया, "महात्मन, मेरा नाम मानसिंह है। मैं मुगल सम्राट अकबर का विश्वासपात्र सेनापति था और अब सम्राट अकबर के पुत्र जहांगीर का विश्वासी सामन्त हूं।"

संन्यासी ने सहसा पीछे मुड़कर मानसिंह को देखा और कहा, "तो तुम राजा मानसिंह हो। नाम तो तुम्हारा कई बार सुना है। तुम्हारे शौर्य, साहस और विजय के विवरण भी सुने हैं, किन्तु तुमसे मिलने का सौभाग्य नहीं मिला था। आज वह भी मिल गया।"

राजा मानसिंह ने कहा, "आप मेरी जितनी प्रशंसा कर रहे हैं, उसका मैं पात्र नहीं हूं।"

"तुम पात्र हो या नहीं, यह मैं जानता हूं, तुम नहीं। हीरा अपना मूल्य स्वयं नहीं जानता। उसका मूल्य तो जौहरी जानता है। अपने पराक्रमी व्यक्तित्व की तुमने समय पर अमिट छाप छोड़ी है। अच्छा छोड़ो इन सब बातों को। यह तो बताओ कि तुम्हारा यहां आना कैसे हुआ? क्या भगवान विश्वनाथ का दर्शन करने आये हो?"

"हां, यही समझ लीजिए। मैं बंगाल जा रहा था। मेरे साथ मेरी सेना भी है। रास्ते में काशी नगरी पड़ी तो यहां आने का और भगवान शंकर के दर्शन की लालसा का संवरण नहीं कर पाया।"

"सेना के साथ बंगाल जा रहे हो? बात क्या है? क्या किसी अविजित राज्य को जीत कर मुगल साम्राज्य में मिलाने की आकांक्षा है अथवा किसी विद्रोही शासक को नतमस्तक करने का इरादा है?"

"महाराज, बंगाल में यशोहर के राजा प्रतापादित्य ने मुगल सम्राट जहांगीर के विरुद्ध विद्रोह कर दिया है। उसने सोचा होगा कि सम्राट अकबर की मृत्यु के बाद मुगल शासन निर्बल हो जायेगा और वह स्वतंत्र होकर निर्द्वन्द्व राज्य करेगा। इसीलिए तो उसने कर देना बन्द कर दिया है और अपने को स्वतंत्र घोषित कर दिया है। सम्राट जहांगीर के आदेश पर मैं उसी को नतमस्तक करने जा रहा हूं।" राजा मानसिंह ने इतना कहा तो संन्यासी ने पूछा, "विजय के बाद कब लौटोगे?"

"महाराज, मैं लौटूंगा नहीं, क्योंकि

मैं बंगाल का सूबेदार होकर जा रहा हूं। बिना मांगे आपसे विजय का आशीर्वाद मिल गया। यह हमारे लिए क्या कम गौरव की बात है ?"

"विजय तो तुम्हारी होगी ही। अच्छा यह बताओ कि तुम मेरे पास विजय का आशीर्वाद लेने आये थे या और कुछ ?" संन्यासी के मुंह से इतना सुनते ही राजा मानसिंह को ऐसा लगा जैसे संन्यासी ने उनके मन का कोना-कोना झांक कर देख लिया है। उनकी आंखों से भक्ति और श्रद्धा के आंसू उमड़ने लगे। उन्होंने संन्यासी के चरणों में अपना मस्तक रख दिया।

संन्यासी ने स्नेह से मानसिंह को अपने हाथों से ऊपर उठाया और बोले, "वत्स और कोई इच्छा हो, तो बताओ। मैं तुम्हारी इच्छा पूरी करूंगा।"

"भगवन, यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं, तो आप मुझे अपना शिष्य बना लें। मैं इसी आकांक्षा से प्रेरित होकर गंगा-तट से आपके पीछे-पीछे आ रहा हूं।" मानसिंह ने इतना कहा तो संन्यासी ने कहा, "तुम्हारे जैसे यशस्वी व्यक्ति को शिष्य बनाकर मैं अपने को गौरवान्वित समझूंगा।"

दूसरे ही दिन संन्यासी ने राजा मानसिंह को दीक्षा दे दी। दीक्षा पाने के बाद राजा मानसिंह ने कहा, "गुरुदेव, आपने शिष्य तो बना लिया। अब बताइए गुरु-दक्षिणा के रूप में आप मुझसे क्या चाहेंगे ?"

"अभी गुरु-दक्षिणा के लिए इतनी जल्दी क्या है, मानसिंह ?"

"गुरुदेव, मैं एक-दो दिन के बाद सेना सहित बंगाल चला जाऊंगा। आपसे फिर कब मुलाकात होगी, यह कह नहीं सकता। ऐसी स्थिति में मैं यही चाहता हूं कि मैं गुरु-दक्षिणा देकर ऋण-मुक्त हो जाऊं। बोलिए, गुरु-दक्षिणा के रूप में आप मुझसे क्या चाहते हैं ?" राजा मानसिंह ने आग्रह के स्वर में इतना कहा तो संन्यासी मौन होकर कुछ सोचने लगे।

राजा मानसिंह ने फिर पूछा, "गुरुदेव, आप सोच में क्यों पड़ गये ? क्या आपको यह विश्वास नहीं हो रहा है कि आप गुरु-दक्षिणा में जो मांगेंगे, उसे मैं दे पाऊंगा। आप आदेश दें। मैं आपकी मनचाही गुरु-दक्षिणा अवश्य दूंगा।"

"हां, मानसिंह मैं इसी ऊहापोह में था कि मैं जो मांगना चाहता हूं, वह तुम दे पाओगे या नहीं। जब तुम मांगने का हठ ही कर रहे हो तो सुनो, मैं गुरु-दक्षिणा के रूप में तुमसे यह चाहता हूं कि तुम मुझे मेरे बिछुड़े पुत्र से मिलवा दो। तुम्हारे पास शक्ति है, सेना है, गुप्तचर हैं। तुम उसे आसानी से खोज लोगे।" संन्यासी ने इतना कहा तो राजा मानसिंह ने पूछा, "आपका पुत्र कहीं खो गया या किसी ने उसका अपहरण कर लिया ?"

"नहीं वत्स, नहीं। न तो वह खो गया है और न उसका किसी ने अपहरण किया है। मैंने अपने पुत्र को तब त्याग दिया था, जबकि वह शिशु था।"

"क्यों त्याग दिया था आपने ? क्या आपकी पत्नी ने आपको ऐसा निर्मम कार्य करने से रोका नहीं ?"

"वत्स, पत्नी तो पुत्र को जन्म देने के बाद स्वर्ग सिधार गयी थी। मैंने पुत्र का त्याग क्यों किया, यह जानने के लिए तुम्हें मेरा अतीत जानना होगा।" इतना कहकर संन्यासी अपने जीवन के अतीत के पृष्ठ खोलने लगे। वह अपनी कहानी कहते जाते थे और उनकी आंखों से आंसू बहते जाते थे।

"कलकत्ता का कालीघाट अंचल तब एक घना जंगल था। दिन में भी पथिक उधर से आते-ज़ाते भय खाते थे। तब कालीघाट का प्रसिद्ध मंदिर भी नहीं बना था। इतने पर भी यह अंचल अपना धार्मिक महत्व रखता था। यह जनश्रुति थी कि सती का कोई छिन्न अंग इस अरण्य में भी कहीं गिरा था।

"मेरा नाम कामदेव गंगोपाध्याय था। मैं हुगली जिला के गोपालपुर में जन्म से ही रह रहा था। मेरा एक नाम जीयो गांगुली भी था। मेरी पत्नी का नाम पद्मावती था। मैं शास्त्रों का ज्ञाता था। एक विद्वान पंडित के रूप में मेरी काफी प्रतिष्ठा थी।

"कुछ दिनों बाद मेरे मन में न जाने क्या आया कि मैंने गोपालपुर छोड़ दिया और अपनी पत्नी के साथ कालीघाट चला आया। वहीं फकीर डांगा में मैंने मिट्टी का घर बना लिया और वहीं रहकर साधना में रम गया।

"कुछ समय बाद मेरी पत्नी पद्मावती गर्भवती हुई। वह पुत्र-रत्न की प्राप्ति का स्वप्न देखा करती थी। उसने स्वप्न में किसी सिद्ध महात्मा को यह कहते हुए सुना था, 'तुम्हारा यह पुत्र यशस्वी होगा। इसके वंशज कालीघाट अंचल में एक महापीठ की स्थापना करेंगे, जहां देश के विभिन्न भागों से दर्शनार्थी माथा टेकने आयेंगे।'

"पद्मावती को पुत्र-रत्न की प्राप्ति हुई, किंतु दुर्भाग्य से प्रसव के समय उसका देहान्त हो गया। लक्ष्मी-पूजा के दिन जन्म होने के कारण मैंने पुत्र का नाम लक्ष्मीकांत रखा। मैं पत्नी की मृत्यु से काफी विचलित हो गया। मुझे विराग हो गया। मैं कहीं एकांत में जाकर ईश्वर की उपासना में शेष जीवन बिताने के लिए व्यग्र हो गया।

"विरक्त जीवन बिताने में मेरे सामने सबसे बड़ी समस्या यह थी कि मैं अपने दुधमुंहे बच्चे को किसके भरोसे छोड़ूं। संन्यासी होने पर मेरा पुत्र कैसे जीवित रहेगा? काफी दिनों तक मैं इसी चिन्ता में रहा और कोई निर्णय नहीं कर पाया।

"एक दिन मैं बैठा सोच रहा था कि बच्चे को कहां छोड़ूं। इसी समय अचानक मेरे सामने एक छिपकली का अंडा ऊपर से जमीन पर आ गिरा। गिरने के साथ-साथ अंडा फूट गया और लाल रंग के पदार्थ में लिपटा छिपकली का बच्चा बाहर निकल आया। मैंने सोचा कि छिपकली का वच्चा अब नहीं बचेगा। इसी समय चमत्कार हुआ। कहीं से वहां एक छोटा-सा कीड़ा आ गया और छिपकली के बच्चे को चाटने लगा। उसने छिपकली के बच्चे के जन्म के साथ शरीर से लगे लाल रंग के द्रव्य को चाट कर साफ कर दिया।

"अचानक छिपकली के बच्चे में स्पन्दन होने लगा। थोड़ी देर बाद उसमें न जाने कहां से शक्ति आ गयी कि उसने अपने सामने के उस कीड़े को ही निगल लिया।

"इस घटना को मैं आश्चर्य से देख रहा था। मैं मन ही मन सोचने लगा, ईश्वर सबका रक्षक है। जिसका कोई सहारा नहीं होता, उसका सहारा वही बनता है। छिपकली के बच्चे की मां तो नहीं थी, फिर भी ईश्वर ने उसके जीवन की भी व्यवस्था की और उसके आहार की भी।

"मेरे नेत्रों में इस घटना से आंसू आ गये। मेरे मन में यह विश्वास दृढ़ हो गया कि जिस ईश्वर ने असहाय स्थिति में

छिपकली के बच्चे की रक्षा की है, वही निराश्रित होने की स्थिति में मेरे बच्चे की भी रक्षा करेगा। मैंने अपने अबोध बच्चे को भगवान के भरोसे छोड़कर संन्यास लेने का निश्चय किया।

"मैंने एक पर्ची अपने अबोध पुत्र के गले में बांध दिया। पर्ची में मैंने लिखा था, 'जिस अदृश्य शक्ति ने कौओं को काला तथा हंसों को सफेद रंग दिया है, जिसने मयूर को बहुरंगी रूप दिया है, वही लक्ष्मी पूजा के दिन उत्पन्न मेरे पुत्र लक्ष्मीकांत की भी रक्षा करेगा। यह मेरा अटल विश्वास है।'

"गले में यह पर्ची बांध देने के बाद मैंने कुछ देर तक उसे स्नेह के साथ देखा और फिर उसे छोड़कर संन्यासी बनने चला गया।"

इतना कहकर संन्यासी चुप हो गया। उसके चेहरे पर उदासी और चिन्ता की रेखाएं एक साथ उभर आयीं। वह असहाय दृष्टि से राजा मानसिंह की ओर देखने लगा। राजा मानसिंह ने सोचा कि आगे कदाचित घटना ने कुछ ऐसा मोड़ लिया, जिसे संन्यासी बताना नहीं चाहता। उन्होंने उत्सुकता के साथ पूछा, "तो फिर क्या हुआ, गुरुदेव ? आपका पुत्र वहां से कहां गया ? उसे कौन ले गया ? वह अब कहां है ?"

संन्यासी की आंखों में आंसू आ गये। उन आंसुओं में उनके मन की गहरी व्यथा झलकने लगी। उन्होंने अवरुद्ध कंठ से कहा, "मैं बच्चे को छोड़कर संन्यासी हो गया। मेरा बच्चा वहां से कहां गया और कौन ले गया। वह अब कहां है, यह सब कुछ मैं नहीं जानता। हां, मुझे इतना अटूट विश्वास अवश्य है कि जिस कृपानिधान ईश्वर ने छिपकली के बच्चे की रक्षा की

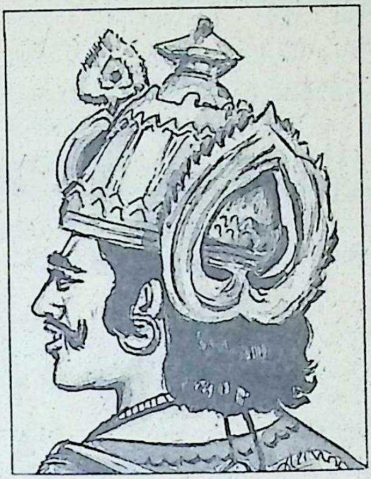

थी, उसी ने मेरे बच्चे की भी रक्षा की होगी। मेरी अन्तरात्मा कहती है कि मेरा पुत्र जीवित है और सुख से है। अन्तरात्मा की आवाज ईश्वर की आवाज होती है। उसे मैं गलत और असत्य नहीं मान सकता।"

"यदि यह बात है, गुरुदेव तो मैं आपके पुत्र को खोज निकालूंगा। मैं उसे आपके पास ले आऊंगा और आपसे मिलाऊंगा। आप निश्चिन्त रहें।" राजा मानसिंह ने इतना कहा तो संन्यासी बोले, "मानसिंह, मुझे अब विश्वास है कि तुमने मेरे पुत्र लक्ष्मीकांत को मुझसे मिलाने का जो बीड़ा उठाया है, उसे तुम अवश्य पूरा करोगे। मेरा आशीर्वाद तुम्हारे साथ है। मैं उस दिन की उत्सुकता के साथ प्रतीक्षा करूंगा, जब तुम मेरी मुंहमांगी दक्षिणा दोगे।"

"आपकी आकांक्षा पूरी होगी, गुरु-देव। दक्षिणा देने के लिए मैं आपके पुत्र के साथ आपके पास आऊंगा। अच्छा, अब विजय का आशीर्वाद दीजिए और

सेना सहित बंगाल जाने की अनुमति दीजिए।" इतना कहकर राजा मानसिंह ने संन्यासी का चरण-स्पर्श किया।

"वत्स, प्रतापादित्य का मानमर्दन करने में तुम सफल होगे। जाओ, निश्चिन्त होकर विजय-यात्रा पर जाओ।" संन्यासी के मुंह से यह आशीर्वाद सुनकर राजा मानसिंह गदगद हो गये। उन्होंने एक बार फिर श्रद्धा से अपना सर झुका लिया।

उसी दिन राजा मानसिंह ने सेना सहित बंगाल के लिए कूच किया। रास्ते भर राजा मानसिंह के सामने संन्यासी का चेहरा रह-रहकर घूमता रहा। वह भगवान से यही प्रार्थना करते रहे कि वह कोई ऐसा रास्ता दिखा दे, जिससे संन्यासी को उसका बिछुड़ा पुत्र मिल जाये और

जेल में शादी

जेल में रहते हुए किसी कैदी के जेल में ही विवाह होने की बात तो आपने सुनी होगी, किन्तु जेल से छूटने और पूर्णतया सुधर जाने के बाद किसी व्यक्ति के जेल में ही शादी होने की बात आपने शायद ही सुनी हो।

चीन निवासी चिन हांग एक ऐसा ही व्यक्ति था, जिसने जेल से छूटने के बाद जेल में आकर धूमधाम से शादी की। यह शादी भी उसने जेल के किसी कैदी से नहीं, अपितु एक प्रतिष्ठित क्रांतिकारी की पुत्री से की थी, जो जेल से आने के बाद उसकी बौद्धिक प्रतिभा और व्यक्तित्व पर रीझ गयी थी।

चिन हांग की माता क्रांतिकारी विचारों की थी। वह एक ऐसे आन्दोलन में भाग लेती थी, जिसे चीन के सत्तारूढ़ नेता फूटी आंख नहीं देख सकते थे। उन्होंने दमन की नीति अपनायी और आन्दोलन के अन्य कार्यकर्ताओं के साथ चिन हांग की माता को भी गिरफ्तार कर लिया और जेल भेज दिया।

माता की गिरफ्तारी के बाद चिन हांग समाज की उपेक्षा और लांछन का केन्द्र बन गया। लोग उसे हीन दृष्टि से देखने लगे। चिन हांग के जीवन में निराशा के साथ-साथ प्रतिकार ने भी जन्म लिया। समाज को वह अपना बैरी समझने लगा। वह अपराधी बन गया और जेल पहुंच गया। जेल में भी कभी-कभी वह उद्दंडता दिखाता था और जेल के कानून कायदे को तोड़ देता था। जेल के अधिकारी उससे परेशान रहते थे।

इसी बीच चीन के नेतृत्व में परिवर्तन हुआ। नये नेताओं का उस आंदोलन के प्रति दृष्टिकोण बदल गया, जिसमें भाग लेने के कारण चिन हांग की मां जेल में डाल दी गयी। अन्य गिरफ्तार कार्यकर्त्ताओं के साथ चिन हांग की मां भी ससम्मान रिहा कर दी गयी।

मां की रिहाई से चिन हांग पर गहरा प्रभाव पड़ा। उसका व्यवहार बदलने लगा। जेल के अधिकारियों का रुख भी सहानुभूति पूर्ण हो गया। जेलर ने भी उसे समझाया कि यदि उसका आचरण अच्छा रहा तो उसकी सजा कम हो जायेगी और वह जल्दी रिहा हो जायेगा। उन्होंने उसमें पढ़ने-लिखने की रुचि जगायी और वह पढ़ने-लिखने लगा। उसने पढ़-लिखकर अच्छा इंसान बनने और समाज की सेवा करने का संकल्प लिया।

अच्छे आचरण के कारण उसकी सजा कम हो गयी और कुछ दिनों बाद वह जेल से रिहा कर दिया गया। जेल से बाहर आने पर उसने समाज के दृष्टिकोण में परिवर्तन देखा। समाज से उसे घृणा और

वह गुरु-दक्षिणा से मुक्त हो जायें।

बंगाल पहुंचने के बाद मानसिंह ने सबसे पहले प्रतापादित्य से लोहा लेने का फैसला किया। अब तक राजा प्रतापादित्य ने बंगाल में अपनी अलग सत्ता स्थापित कर ली थी। उसने यशोहर राज्य को न केवल स्वतंत्र घोषित किया था, अपितु अपनी मुद्रा का भी प्रचलन आरम्भ कर दिया था।

राजा मानसिंह के गुप्तचरों ने उन्हें सूचना दी कि राजा प्रतापादित्य आत्म सम्मानी और पराक्रमी है। वह साहसी योद्धा है। उसकी सेना सुगठित और अनुशासित है। प्रजा उसे चाहती है। वह प्रजा के हित का पूरा ध्यान रखता है। वह धार्मिक भी है। उसने धूमघाट नामक

(शेष पृष्ठ ४३ पर)

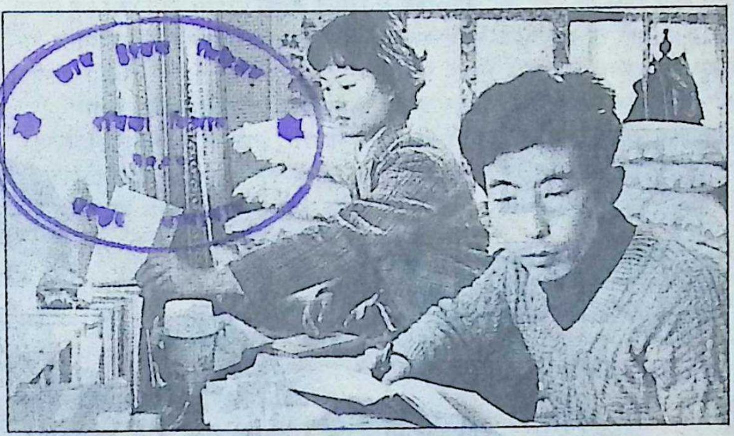

उपेक्षा नहीं, बल्कि सहानुभूति मिली। 'ई मैन' नामक संस्था ने उसको अपने कारखाने में नौकरी दे दी।

इसी कारखाने में एक गुणवती रूपसी ली छाव यंग भी काम करती थी। वह एक प्रतिष्ठित क्रांतिकारी की पुत्री थी। जिस दिन उसका चिन हांग से परिचय हुआ, उसी दिन से वह उसकी ओर आकर्षित हुई। जब उसने चिन हांग की व्यथा-कथा सुनी तब चिन के लिए उसके मन में गहरी आत्मीयता उत्पन्न हुई। नौकरी और अध्ययन दोनों करने वाले चिन को उसने मन ही मन वरण कर लिया।

शासी विश्वविद्यालय से व्यक्तिगत छात्र के रूप में परीक्षा उत्तीर्ण करने वाले चिन की प्रतिभा उस दिन अपनी चरम सीमा पर पहुंच गयी, जबकि विश्वविद्यालय की पत्रिका में प्रकाशित उसके लेख की लेखकों और बुद्धिजीवियों ने प्रशंसा की।

ली छाव यंग ने चिन से विवाह की इच्छा व्यक्त की। चिन जिस जेल में पहले था, वहां गया और जेलर से जेल में उसकी ही स्नेह छाया में विवाह करने की आज्ञा मांगी। दूसरे दिन दोनों की जेल में शादी हो गयी। शादी के बाद जिस किसी ने पूछा कि जेल से शादी क्यों की, उसे चिन ने यही उत्तर दिया, "यह जेल ही वह जगह है, जहां मैं इंसान बना...मैं आज जो कुछ हूं, वह जेल की ही बदौलत हूं।"

—मुमताज अहमद बख्शी

चौधरी ने दीन-दुखी परिवार की
जमीन ही नहीं हड़पी, बल्कि उसे सदा के लिए
गांव छोड़कर चले जाने की धमकी भी दी,
किन्तु इसी बीच खुदा की
बेआवाज लाठी ऐसी बरसी कि उसके
घर में सिवा एक पागल लड़के
के और कोई न बचा

दस्ते इंतकाम

मलिक सफदर हयात

सुबह का समय था। मैं थाने में बैठा था। इसी समय एक बुढ़िया थाने में आयी। उसकी उम्र लगभग ६० साल की रही होगी। उसने सादा, मगर साफ-सुथरा लिबास पहन रखा था। चेहरे-मोहरे से वह शिष्ट और अनुभवी लगती थी।

उसने मुझसे कहा, "थानेदार पुत्तर, मैं एक छोटी सी अर्ज लेकर तुम्हारे पास आयी हूं। मेरा नाम सिराज बीबी है और मेरे शौहर का नाम मरहूम चौधरी फजल हुसैन है।"

"कहिए, क्या बात है?" मैंने इतना कहा तो सिराज बीबी ने कहा, "मेरे शौहर को मरे अठारह साल हो चुके हैं। मरने से पहले उस पर चौधरी गुलाम कादर के कुछ रुपये कर्ज थे। इस कर्ज के बदले हमने अपनी तीन मुरब्बे जमीन चौधरी के पास रेहन रख दी थी। फजल हुसैन के देहांत के बाद हमारे आर्थिक हालात ठीक नहीं रहे, फिर भी मैं कर्ज की किस्तें अदा करती रही। पूरे अठारह साल तक लगातार किस्त अदा करने के बाद भी चौधरी कहता है कि असल रुपये में से अभी तक एक पैसा भी अदा नहीं हुआ। उसने सारे रुपये सूद के हिसाब में लगा लिये हैं। मैं इंसाफ की तलाश में तुम्हारे पास आयी हूं। मैं कर्जा अदा करते-करते बूढ़ी हो गयी हूं। मेरी जमीन मुझे वापस दिला दो। मैं सारी उम्र तुम्हें दुआएं दूंगी।"

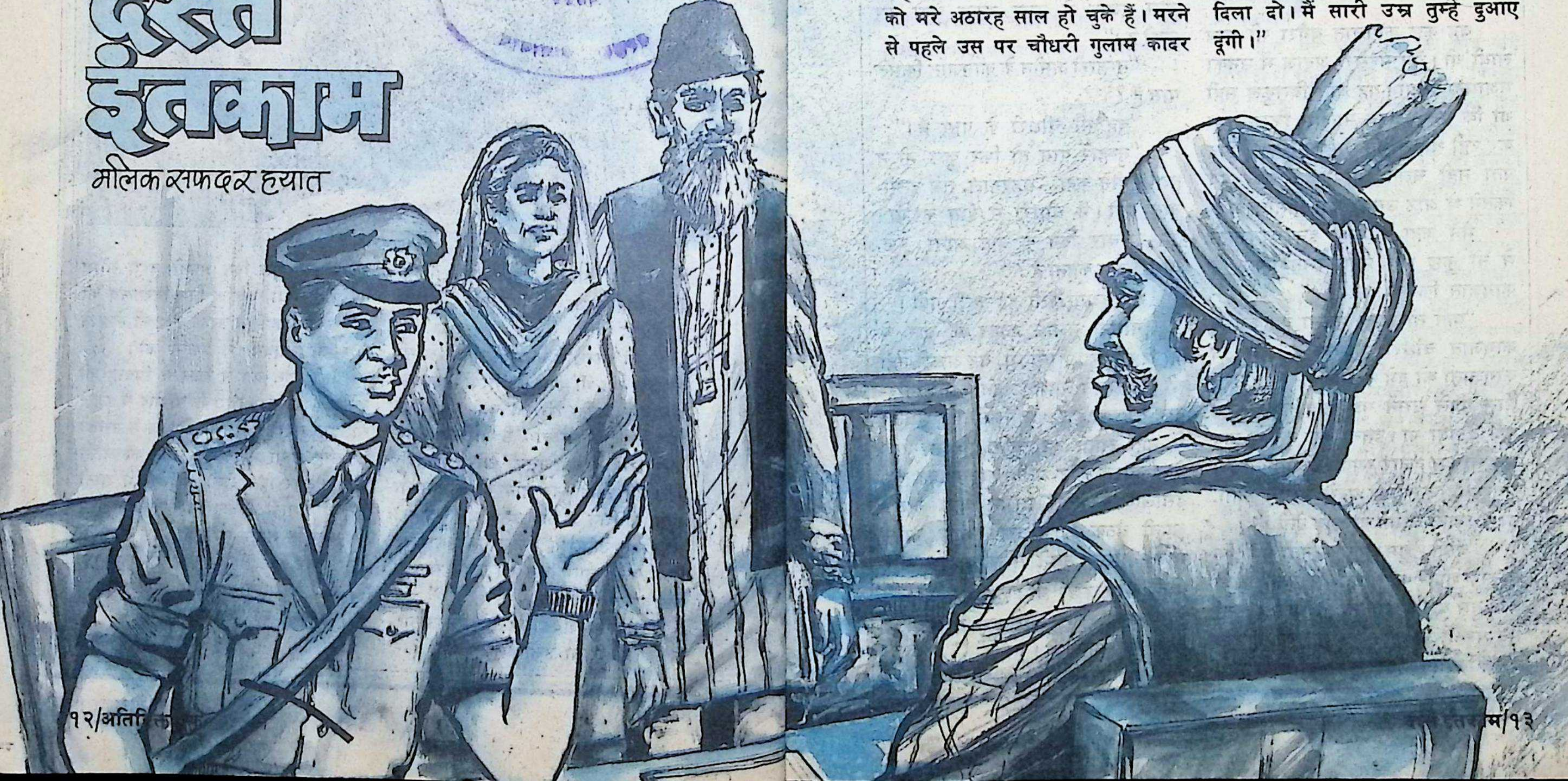

वह कुछ कागजात वगैरा भी साथ लायी थी। मैंने सरसरी अंदाज में उनका मुआयना किया। यह बात बिलकुल सही थी कि वह अठारह साल से किस्तें अदा कर रही थी, लेकिन उन कागजात से यह पता नहीं चलता था कि असल रुपये कितने थे और उसका क्या हिसाब था?

मैंने कहा, "बीबी, इन कागजातों से तो कुछ पता नहीं चलता। कर्ज के कागजात किसके पास हैं?"

"यही तो सारा मसला है। कर्ज के कागजात चौधरी के पास हैं। वह उन कागजातों को हमें नहीं दिखाता। अठारह साल पहले उसने मुझे छह हजार रुपये कर्ज बताया था। इतना कुछ देने के बाद अब भी दस हजार रुपये और मांगता है। अगर यह बात मुझे पहले मालूम होती, तो मैं अपनी जमीन ही छोड़ देती।"

"बीबी, तुम यह मानती हो कि तुम्हारे शौहर ने चौधरी से कर्जा लिया था। तुम यह भी मानती हो कि यह कर्जा सूद पर लिया था। अब सूद का हिसाब यह है कि अगर सिर्फ सूद अदा किया जाये और असल रकम में से कुछ भी अदा न किया जाये, तो सूद का हिसाब सारी उम्र खत्म नहीं हो सकता और दूसरी बात यह है कि यह दीवानी केस है। हम इसमें हाथ नहीं डाल सकते।"

सिराज बीबी ने कहा, "मैं चौधरी पर मुकदमा नहीं करना चाहती। मैं तो सिर्फ इसलिए तुम्हारे पास आयी हूं कि तुम चौधरी को समझा-बुझा कर हमारी जमीन वापस दिला दो। उससे कहो कि वह मेरे दो यतीम बच्चों पर रहम करे। मैंने एक पढ़े-लिखे आदमी से उन रसीदों का हिसाब लगवाया था। मैं अब तक बीस हजार से ऊपर रकम अदा कर चुकी हूं।"

"तुम्हारी जमीन के कागजात किसके पास हैं?"

"वह भी चौधरी के पास हैं।"

"तुम्हारे पास तो फिर कुछ भी न हुआ," मैंने कहा, "बहरहाल, तुम इत्मीनान रखो। मैं चौधरी से बात करूंगा। तुम दो-चार दिन के बाद आना। देखें, चौधरी क्या कहता है?"

वह दुआएं देती हुई चली गयी।

चौधरी गुलाम कादर के बारे में जो रिपोर्ट मुझे मिली थी, वह अच्छी नहीं थी। वह अपने आपको बहुत बड़ा जागीरदार समझता था और किसी को खातिर में नहीं लाता था। चूंकि मामला एक बेवा औरत और यतीम बच्चों का था, इसलिए मैं उससे मिलने चला गया। अपनी बैठक में चौधरी गुलाम कादर मुझसे मिला। उसने सफेद कमीज और धोती बांध रखी थी। कद छह फुट से कुछ ज्यादा ही था और उम्र सत्तर साल के लगभग लगती थी।

कुछ देर इधर-उधर की बातें होती

रहीं। मैंने कहा, "चौधरी साहब, चंद रोज पहले एक बेवा औरत सिराज बीबी मेरे पास आयी थी। उसने अपने शौहर का नाम चौधरी फजल हुसैन बताया था।"

इतने में एक पैंतीस-छत्तीस साल का शख्स कमरे में दाखिल हुआ। वह खासा भीमकाय व्यक्ति था।

चौधरी ने उसे मुखातिब करके कहा, "पुत्तर जमाल, मलिक साहब की बात सुनो। सिराज बीबी इनके पास आयी थी।"

नवागत उसका बेटा जमाल कादर था। उसने मुझे सलाम किया और सोफे पर बैठ गया।

मैंने कहा, "चौधरी साहब...मैंने सुना है कि सिराज बीबी की कुछ जमीन आपके पास गिरवी रखी हुई है?"

जमाल कादर ने पूछा, "क्या उसने हमारे खिलाफ कोई परचा कटवा दिया है?"

"परचा वगैरा तो नहीं कटवाया। वैसे ही मेरे पास आयी थी। कह रही थी कि वह अठारह साल से किस्तें अदा कर रही है।"

"मलिक साहब, आदमी उधार लेता है, तो किस्तें भी देनी पड़ती हैं" चौधरी ने कहा, "यह हमारी शराफत है कि हमने अपना पैसा वसूल करने के लिए कभी सख्ती से काम नहीं लिया।"

"आपने जमीन के बारे में कुछ नहीं बताया।"

"पता नहीं, आप किस जमीन की बात कर रहे हैं? जमीन का हिसाब-किताब तो पटवारी के पास होता है।"

मैं जाने के लिए खड़ा हो गया। मैंने कहा, "आप सच कहते हैं, मुझे पटवारी के पास जाना चाहिए था। आपको ख्वामख्वाह तकलीफ दी।"

उसे फौरन ही अपनी गलती का अहसास हो गया। पटवारी का जिक्र करके उसने मुझे रास्ता दिखा दिया था।

"मलिक साहब, आप तो नाराज हो गये," उसने उठकर मेरे कंधे पर हाथ रख दिया, "आप बैठें तो सही।" जिस मसले के सिलसिले में आप आये हैं, उसके बारे में इतना ही बताना काफी है कि वह काबिले-दखले-अंदाजी-ए-पुलिस नहीं है। बात सिर्फ इतनी है कि सिराज बीबी ने हमसे सूद पर कर्जा लिया था, जो अब उसे भारी लग रहा है। कर्जा तो कर्जा ही होता है। वह तो उसे अदा करना ही पड़ेगा।"

क्षण भर चुप रहने के बाद बड़े चौधरी ने कुछ सोचते हुए कहा, "किस्सा यह है कि उसका आदमी, जिसे यह अब चौधरी कहती है, बहुत बड़ा जालसाज था। उसने एक बेवा औरत की, जो उसकी रिश्तेदार थी, छह मुरब्बे जमीन जाली कागजात के जरिये हमारे पास फ़रोख्त करने की कोशिश की थी। ऐन वक्त पर हमें उसकी जालसाजी का पता चल गया। हमने जमीन खरीदने से इनकार कर दिया। बाद में मामला पुलिस तक पहुंच गया। पुलिस ने फजल हुसैन और उसके दो साथियों को गिरफ्तार कर लिया। हम बयाना दे चुके थे। फजल हुसैन ने अपनी बीवी को मेरे पास भेजा और दरख्वास्त की कि फिलहाल वह हमारा बयाना वापस नहीं कर सकता। सिराज बीबी ने मेरे पैर पकड़ लिये। कहने लगी, चौधरी साहब, आपके पैसे मैं वापस कर दूंगी। आप मुझसे पक्का कागज लिखवा लें, मगर मेरे आदमी के खिलाफ अदालत में गवाही न दें। मुझे उस औरत पर रहम

आ गया। मैंने उसकी इज्जत का खयाल करते हुए फजल हुसैन के खिलाफ गवाही नहीं दी। फिर भी उसे सात साल की सजा हो गयी।" चौधरी इतना कह कर दो-चार क्षणों के लिए रुका और फिर बोला, "जो रकम उसने बतौर बयाना मुझसे ली थी, वह थाने-कचहरी के चक्कर में खर्च हो गयी। सिराज बीबी ने हमसे कुछ और कर्जा भी लिया। पांच साल के बाद फजल हुसैन का जेल में इंतकाल हो गया। उसका एक छोटा भाई था। तजम्मल हुसैन। उसका भी आवारा लोगों में उठना-बैठना था। फजल हुसैन की मौत के एक साल बाद वह अपने किसी साथी के हाथों कत्ल हो गया। अब यह बेवा औरत रह गयी है। हमारी उसके साथ कोई दुश्मनी नहीं है। कर्जे के हिसाब में यह जो कुछ भी दे देती है, वह हम ले लेते हैं। बेवा औरत को परेशान करने से क्या फायदा।"

उन्होंने मुझे सारे किस्से सुना दिये थे, मगर जमीन का जिक्र एक बार भी नहीं किया था, यानी सिराज बीबी की जमीन का। मैंने इस बात पर ज्यादा जोर देना मुनासिब नहीं समझा और वापस आ गया।

तीन-चार रोज बाद सिराज बीबी मेरे पास आयी, तो मैंने उसे चौधरी गुलाम कादर के साथ होने वाली बातचीत के बारे में बताया। वह यह बात सुन कर थोड़ी देर के लिए चुप हो गयी। फिर उसने अपने शौहर की जालसाजी और चौधरी के बेयाने के बारे में एक नयी कहानी सुनाई।

"थानेदार पुत्तर, मेरी बात में कोई झूठ नहीं है।" उसने अपनी बात खत्म करते हुए कहा, "इस बस्ती में अभी भी उस वाकये के कई गवाह मौजूद हैं। सबसे बड़ा गवाह मुहम्मद हुसैन पटवारी है। इसके अलावा मास्टर मुहम्मद तुफैल जुनजवआ और रहमत अली सर्राफ भी अभी जिंदा हैं। तुम उन लोगों से बेशक पूछ लो।"

मुहम्मद हुसैन पटवारी रिटायर हो चुका था और कभी कभार मुझसे मिलता रहता था। वह खासा बूढ़ा आदमी था और दिल में खुदा का खौफ रखता था। एक रोज मैंने उससे सिराज बीबी और चौधरी गुलाम कादर के झगड़े का जिक्र किया। चूंकि वह उन दिनों पटवारी था, इसलिए उसने तफसील से सारी बात बतायी। उसके बयान से सिराज बीबी ने मुझे जो कुछ बताया था उसकी पुष्टि होती थी।

इसके अलावा मैंने चंद अन्य बूढ़े लोगों से भी बातचीत की। उन सब लोगों के बयानों से जो कहानी सामने आयी, वह इस तरह है :

वह १९३०-३४ का जमाना था। जमींदारी की दो पार्टियों में लड़ाई के नतीजे में दोनों ओर के पांच आदमी मारे गये। एक पार्टी के तीन आदमी काम आये। उन तीन आदमियों की मौत के बाद खानदान में एक भी मर्द बाकी नहीं रहा। सिर्फ खानदान का मुखिया उनकी बूढ़ी बीवी जिंदा बची। उसके दो जवान बेटे और शौहर हंगामे में मारे गये। उस औरत का नाम हुरमत बेगम था। हंगामे के फौरन बाद उसने अपनी हवेली मुलाजिमों के सुपुर्द की और अपनी बेटी के साथ शहर आ गयी। उसे डर था कि कहीं विरोधी पार्टी उसे भी खत्म न कर दे।

चौधरी गुलाम कादर उन दोनों पार्टियों के बारे में निष्पक्ष था। उसने देखा कि हुरमत बेगम की जमीन संभालने

वाला कोई शख्स नहीं बचा था। मर्द लड़ाई में मारे गये थे। जो होशियार और वफादार मुलाजिम थे, उनको पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया था। मालिक पीछे न हो, तो मुलाजिमों की जमानतें मुश्किल ही से हुआ करती हैं।

हुरमत बेगम को बेसहारा देखकर चौधरी गुलाम कादर ने उससे ताल्लुकात बढ़ाना शुरू कर दिये, लेकिन वास्तव में उसकी नजर हुरमत बेगम की जमीनों पर थी। एकाध साल में उसने उसकी जमीनों का सारा इंतजाम अपने हाथ में कर लिया। वफादार मुलाजिमों की छुट्टी कर दी और उनकी जगह अपने मतलब के आदमी रख लिये।

सिराज बीबी का शौहर फजल हुसैन एक होशियार आदमी था और सरकारी कर्मचारी था। उसने मुलाजमत के दौरान चंद मुरब्बे जमीन भी खरीद ली थी। उसका चौधरी गुलाम कादर के साथ खासा मेल-मिलाप था।

एक दिन चौधरी गुलाम कादर फजल हुसैन से मिला और बोला, "फजल भाई हमारा एक काम है। कर दोगे?"

"हां कर दूंगा। बताओ तो सही काम क्या है?"

"फजल भाई, एक जमीन के इंतकाल का मामला है। वैसे तो जमीन कब्जे में है। चाहता हूं, कागजात भी हमारे नाम हो जायें।"

"चौधरी साहब, क्या आप हुरमत बेगम की जमीन की बात कर रहे हैं? क्या आप उली जमीन के कागजात की नकलें चाहते हैं? क्या आप जाली खरीद-दारी करना चाहते हैं?"

"हां, तुम्हारा अनुमान सही है। बोलो, काम होगा या नहीं और अगर

होगा तो हमें कितना खर्च करना पड़ेगा?"

"चौधरी साहब, कुल जमीन पांच-छह मुरब्बे होगी। मैं मेहनताना दो हजार रुपये फी मुरब्बा लूंगा। अगर मंजूर हो तो हाथ लगाऊं, वरना नहीं।"

"कैसी बात करते हो फजल भाई। मैं तुम्हें दस हजार देने का वादा करता हूं। आधी रकम तो अभी ले लो।" इतना कहकर चौधरी ने पांच हजार रुपये उसी समय दे दिया।

फजल हुसैन ने चन्द रोज के भीतर कागजात तैयार करवा दिये। जाली दस्तखत हो गये। जरूरी इन्दराज भी हो गये, किन्तु आखिरी मौके पर राज खुल गया और फजल अपने दो साथियों के साथ गिरफ्तार कर लिया गया। पुलिस ने जाली कागजात अपने कब्जे में ले लिया।

चौधरी फौरन थाने पहुंचा और फजल हुसैन से अकेले में कहा, "फजल हुसैन, घबराने की जरूरत नहीं है। मेरे हाथ बहुत लंबे हैं। मैं आपको बड़े आराम से बरी करवा लूंगा, लेकिन जालसाजी के मामले में मेरा जिक्र नहीं आना

चाहिए। मैंने इस संबंध में रास्ता निकालने के लिए वकील से बात कर लिया है। बस तुम्हारी मदद की जरूरत है।"

फजल हुसैन ने कहा, "मैं एक शर्त पर सारा इलजाम अपने सिर ले सकता हूं। अगर केस मेरे खिलाफ हो गया, तो आप उस रकम की मांग नहीं करेंगे, जो मैं आपसे पेशगी ले चुका हूं।"

"रकम की फिक्र मत करो। मैं उसकी मांग कभी नहीं करूंगा।"

"फजल हुसैन चौधरी की बातों में आ गया। उसने उसकी मर्जी के मुताबिक बयान दे दिया।

उस बयान से चौधरी न सिर्फ कानून की गिरफ्त से बच गया, बल्कि उससे उसे हुरमत बेगम के सामने अपनी सफाई पेश करने का बहाना मिल गया। हुरमत बेगम के सामने उसने अपनी वाकपटुता के आधार पर इस ढंग से सफाई पेश की कि हुरमत बेगम ने यह विश्वास कर लिया कि चौधरी बेकसूर है।

हुरमत बीवी को आश्वस्त करने के बाद वह फजल हुसैन की बीवी सिराज बीबी के पास पहुंचा और उसे पांच हजार रुपये की वह रसीद दिखायी जो उसने फजल हुसैन से हासिल की थी। सिराज बीवी को यह बात मालूम थी कि उसका शौहर रिश्वत भी लेता था और कभी-कभार जालसाजी भी कर लेता था।

चौधरी ने केस की तफसील बताने के बाद कहा, "पुलिस यह चाहती है कि मैं तुम्हारे शौहर के खिलाफ बयान दूं। अभी तक तो मैंने कोई बयान नहीं दिया। यह रसीद तुम्हारे शौहर के जुर्म का पक्का सबूत है। अगर मैंने यह रसीद अदालत में पेश कर दी और उसके खिलाफ बयान दे दिया, तो वह सजा से नहीं बच सकेगा। मैं चाहता हूं कि वह बरी हो जाये।"

"चौधरी साहब, यह रसीद आप अदालत में न दिखाएं। आप मेरे शौहर को बचा लें। उसके सिवा घर में और कोई कमाने वाला नहीं है।"

"मैं तुम्हारी बात मान तो लूं, पर मेरे पांच हजार रुपये कौन देगा। फजल तो इसे देने से इनकार कर रहा है। जब जेल में रहते हुए वह रकम नहीं देना चाहता तो जेल से छूटने के बाद क्या देगा?"

"आप चिन्ता न करें, चौधरी साहब, रुपये मैं दूंगी। आप चाहें तो कागज लिखा लीजिए।"

"खाली कागज लिखवाने से क्या होता है। कागज के साथ कोई जमानत भी होनी चाहिए।"

सिराज बीबी ने परेशानी में पूछा, "कैसी जमानत?"

चौधरी बोला, "मैंने सुना है कि फजल हुसैन के पास तीन मुरब्बे बंजर जमीन पड़ी है। मैं तुम्हारी वह जमीन पांच हजार रुपये के बदले गिरवी रख सकता हूं। अगर तुम इस पर राजी हो, तो मैं पक्का कागज तैयार करवा सकता हूं, लेकिन यह काम आज ही हो जाना चाहिए।"

सिराज बीबी सख्त परेशान थी। वह जमीन गिरवी रखने पर तैयार हो गयी। शाम के वक्त चौधरी पक्का कागज लेकर सिराज बीबी के पास पहुंच गया। उसके साथ उसका वकील और दो गवाह भी थे। एक गवाह फजल हुसैन का छोटा भाई तजम्मल हुसैन था। उसने चालाकी यह की कि फजल हुसैन के छोटे भाई को भी हमदर्दी का फरेब दे कर अपने साथ

मिला लिया। तजम्मल लालची आदमी था। चौधरी ने उसे कुछ पैसे भी दिये थे। स्टाम्प-पेपर पर दस्तखत हो गये। सिराज बीबी ने जमीन के कागजात चौधरी के हवाले कर दिये, तो उसके वकील ने कर्जे की शर्तें पढ़कर सुनायी। इन शर्तों में से एक शर्त सूद की थी। रकम छह हजार लिखी गयी थी।

सिराज बीबी ने इस पर एतराज किया, "चौधरी साहब, रकम आपने ज्यादा लिखी है।"

"मुझे तुम्हारे शौहर की रिहाई के लिए भागदौड़ करनी पड़ेगी। उस पर जो खर्च होगा, उसे भी मैंने इस रकम में जोड़ लिया। मैं माकूल सूद लूंगा और अगर रकम ६ मास के भीतर अदा कर दोगी, तो सूद कुछ नहीं लूंगा।"

सिराज बीबी को मजबूरन सारी शर्तें माननी पड़ीं। जाने से पहले चौधरी ने सिराज बीबी और तजम्मल हुसैन से अकेले में कहा, "इस लिखा-पढ़ी का किसी और को पता नहीं चलना चाहिए। अगर फजल हुसैन तक यह बात पहुंच गयी, तो वह गुस्से में अपना केस खराब कर लेगा।"

दोनों ने राजदारी का वादा किया और चौधरी अपनी कामयाबी पर खुश-खुश वहां से चला आया।

अपने कर्जे की वसूली का पक्का इंतजाम करने के बाद चौधरी गुलाम कादर ने अदालत में जो बयान दिया, वह सरासर फजल हुसैन के खिलाफ था। उसने अदालत को बताया कि फजल हुसैन हुरमत बीबी के नुमाइंदे की हैसियत से उसके पास आया था। उसे उसकी जालसाजी का बाद में पता चला था।

फजल हुसैन को जालसाजी के जुर्म में सात साल की सजा हो गयी और सजा के पांच साल बाद उसका जेल में इंतकाल हो गया।

उसके देहांत के बाद उसके छोटे भाई तजम्मल हुसैन ने चौधरी से भाई की जमीन की वापसी की मांग शुरू कर दी। चौधरी की नीयत खराब थी। वह जमीन वापस नहीं करना चाहता था। बाद में किसी ने तजम्मल की हत्या कर दी।

देवर की मौत के बाद सिराज बीबी ने खुद को बिलकुल बेसहारा महसूस करना शुरू कर दिया। उस वक्त उसके सिर्फ दो बच्चे थे। एक लड़की और एक लड़का। जब फजल हुसैन को सजा हुई, तो उनकी उम्र क्रमशः तेरह और नौ साल थी। लड़का छोटा था।

जब चौधरी गुलाम कादर ने सिराज बीबी की जमीन के बारे में बात करने से इनकार कर दिया, तो मैंने सिराज बीबी को मशविरा दिया कि वह तहसीलदार के दफ्तर से अपनी जमीन के बारे में पता करे और कोशिश कर के जमीन के कागजात की नकलें हासिल कर ले। ऐसा न हो कि चौधरी जाली कागजात के जरिये जमीन अपने नाम करवा ले।

उसके चंद रोज बाद सिराज बीबी मेरे पास आयी। उसने बताया कि चौधरी उसके पास आया था और कह रहा था कि उसने मेहनत करके जमीन को काबिले-काश्त बनाया है। इसलिए वह जमीन वापस नहीं कर सकता। अगर मैं जमीन बेचना चाहूं तो वह उसे खरीद लेगा। पंद्रह-बीस साल पहले वह जमीन बंजर पड़ी थी, लेकिन उन दिनों नयी नहर की खुदाई से वह जमीन जरखेज हो गयी थी

(शेष पृष्ठ ४७ पर)

बिहार का राबिनहुड चुनमुन सिंह

रतीन्द्र नाथ

[library stamp]

१८ मई, १९९०। गर्मी अपनी चरम सीमा पर थी। धरती जल रही थी। लू के थपेड़े चल रहे थे। दोपहर का समय था। चारों ओर सन्नाटा था। गर्मी के मारे किसी की सड़क पर निकलने की हिम्मत नहीं पड़ रही थी। बिहटा-बनारस राजमार्ग पर सवारी गाड़ियों का चलना काफी कम हो गया था।

प्रोवेशनर डी०एस०पी० मंसूर आलम बिहटा पुलिस स्टेशन के अपने चैंबर में बैठकर ड्यूटी रजिस्टर में कांसटेबलों की तैनाती देख रहे थे। बीच-बीच में वह पुलिस इंसपेक्टर शंभूशरण ठाकुर से बातचीत भी कर लेते थे। इसी समय अचानक उनके पास रखे टेलीफोन की घंटी बज उठी। इंसपेक्टर ठाकुर ने रिसीवर उठाया और कहा, "हैलो ! शंभूशरण ठाकुर स्पीकिंग।"

"हैलो इंसपेक्टर ! फौरन टेलीफोन डी०एस०पी० मंसूर आलम को दे दीजिए। मुझे एक आवश्यक खबर उन्हें देनी है। मेरे पास वक्त नहीं है।"

"मैं डी०एस०पी० साहब को फोन दे रहा हूं। आप बात करें।" यह कहते हुए शंभूशरण ठाकुर ने टेलीफोन श्री मंसूर आलम को थमा दिया।

फोन पर दूसरी ओर से आवाज आयी, "मिस्टर आलम, सावधान हो जाइए। भोला शर्मा, कल्लू शर्मा, नुनू शर्मा, लोचन शर्मा और चुनमुन सिंह जैसे कुख्यात अपराधी बिहटा स्टेट बैंक लूटने जा रहे हैं। सभी बिहटा हवाई-अड्डे के पीछे बरगद के विशाल वृक्ष के नीचे जमा हैं। आधे घंटे के भीतर वे बैंक की ओर कूच करेंगे।"

"खबर पक्की है न ?" डी०एस०पी० मंसूर आलम ने पूछा।

"सोलहो आना पक्की है, हुजूर ! गलत होने का सवाल ही नहीं पैदा होता।"

"अच्छा, आप कौन बोल रहे हैं ?" डी०एस०पी० पूछते रह गये, लेकिन मुखबिर ने टेलीफोन काट दिया।

चुनमुन सिंह

वह इतना खतरनाक था कि उसके नाम से ही लोगों की सिट्टी-पिट्टी गुम हो जाती थी। उसकी छाया में दहशत पलती और पनपती थी पटना, बिहटा, आरा, पलामू और मध्य बिहार के कई इलाके उसी के इशारे पर सांस लेते थे

मंसूर आलम तुरन्त सतर्क हो गये। उन्होंने तत्काल बिहटा स्टेट बैंक के शाखा प्रबंधक को फोन किया और कहा, "आप कृपया बैंक बंद कर दीजिए। मुझे जानकारी मिली है कि बैंक में डकैती पड़ने वाली है।"

इसके बाद मंसूर आलम, इंसपेक्टर शंभूशरण ठाकुर तथा पुलिस के छः जवानों के साथ जीप से बिहटा हवाई अड्डे की ओर रवाना हो गये। पुलिस दल हथियारों से लैस था। सात मिनट बाद पुलिस जीप हवाई अड्डे के पास पहुंच गयी। जिस बरगद के पेड़ के नीचे अपराधियों के जमा होने की बात मुखबिर ने बतायी थी, वह यहां से सौ गज की दूरी पर था।

पुलिस जीप बरगद के पेड़ की तरफ मुश्किल से दस गज ही आगे बढ़ी थी कि फायर हुआ और गाड़ी का अगला टायर फट गया। ड्राइवर ने जीप रोक दी। डी०एस०पी० मंसूर आलम स्थिति का जायजा लेने के लिये जीप का दरवाजा खोलकर बाहर निकल ही रहे थे कि एक

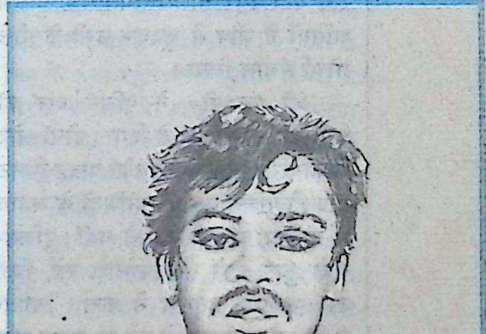

दिनेश सिंह

डी०एस०पी० मंसूर आलम

सनसनाती गोली जीप की हेड लाइट में आकर लगी। जीप का शीशा चूर-चूर हो गया। फार्यरिंग बरगद के पीछे से हो रही थी। मंसूर आलम समेत सभी पुलिस कर्मियों ने जीप से कूदकर उसी के पीछे मोर्चा संभाल लिया।

डी०एस०पी० ने पुलिस दल को फार्यरिंग का आदेश दे दिया। दोनों ओर से फार्यरिंग होने लगी। कोई पन्द्रह मिनट बाद ही पुलिस बल की गोलियों के जवाब में गोलियां चलनी बंद हो गयीं। पुलिस-वाले कुछ क्षणों तक खामोश रहे, फिर डी०एस०पी० आलम ने कहा, "लगता है कि या तो सब मारे गये या उनके पास कारतूस खत्म हो गये। बड़ी सावधानी से आगे बढ़ते हुए जानकारी लेनी है।"

उनके आदेश पर ज्योंही पुलिस दल आगे बढ़ा, त्योंही गोली चलाते हुए अपराधी मकई के खेत के बीच से भागने लगे। पुलिस दल ने उनका पीछा किया। वह बरगद के समीप पहुंची तो देखा कि एक नौजवान जमीन पर पड़ा है। वह गहरे नीले रंग का पतलून तथा पीले रंग की गंजी पहने था। उसकी पीठ में तीन गोलियां लगी थीं। एक गोली का निशान छाती पर भी था। उसके पास से एक माउजर बरामद हुआ, जिसका इस्तेमाल द्वितीय विश्वयुद्ध के दौरान किया गया था।

घटनास्थल पर 'बैग पाइपर' तथा 'थ्रीएक्स रम' शराब की दर्जनों बोतलें खाली पड़ी थीं। डी०एस०पी० मंसूर आलम को यह समझते देर न लगी कि शराब पीकर लुटेरे बैंक की तरफ कूच करने वाले ही रहे होंगे कि यकायक पुलिस बल से उनका मुकाबला हो गया।

उस नौजवान की लाश को लेकर पुलिस दल बिहटा पुलिस स्टेशन लौट आया। बाद में जब शिनाख्त हुई तब पता लगा कि वह बिहार में राबिन हुड के नाम से जाना जाने वाला कुख्यात अपराधी चुनमुन सिंह था। वह हत्या, लूट और अपहरण के अनेक मामलों में शामिल था। दिन दहाड़े बैंक डकैती डालना उसके बायें हाथ का खेल था।

१७ मई को पटना स्थित यूको बैंक की कुर्जी शाखा से एक लाख रुपये की लूट के मामले में वह भी शामिल था। पुलिस का तो यहां तक कहना है कि वही डाका डालने वाले गिरोह का सरगना था। उसको पकड़ने के लिए पचीस हजार रुपये इनाम की घोषणा की गयी थी। चुनमुन सिंह अपराध की दुनिया का बेताज्ज बादशाह था। वह अपने पन्द्रह साल के अपराधी जीवन के दौरान एक बार भी पुलिस के हाथ नहीं लगा था। वह अचूक निशानेबाज था।

वह इतना खतरनाक था कि उसके नाम से ही लोगों की सिट्टी-पिट्टी गुम

हो जाती थी। उसकी छाया में दहशत पलती थी और पनपती थी। पटना, बिहटा, आरा, पलामू और मध्य बिहार के कई इलाके इसी के इशारे पर सांस लेते थे। इन शहरों में उसका खौफ इस कदर छाया हुआ था कि कोई भी व्यक्ति अपने को 'चुनमुन का आदमी' कहकर किसी से या तो मनचाही रकम ऐंठ लेता था, या मनचाहा काम करवा लेता था। उसकी तुलना 'शोले' फिल्म के गब्बर सिंह से की जाती थी।

चुनमुन सिंह के माता-पिता बचपन में उसे प्यार से 'चुन्नू' कहा करते थे। फरवरी १९५९ में उसका जन्म पटना जिला से चालीस किलोमीटर दूर बिहटा थाना के अमहरा गांव में हुआ था। तीन भाई तथा दो बहनों के बीच चुनमुन सिंह दूसरे नंबर पर था। उसके पिता विदु शेखर सिंह के पास अच्छी खेती थी।

चुनमुन पढ़ने में तेज था। घरवालों का लाड़-प्यार उस पर कुछ ज्यादा ही था। बिहटा हाईस्कूल के टीचर उसे बहुत प्यार करते थे, क्योंकि चुनमुन अन्य छात्रों की अपेक्षा कहीं अधिक अनुशासित और आज्ञाकारी था।

वर्ष १९७४ में चुनमुन मैट्रिक का विद्यार्थी था। उस समय बिहटा में दिनेश सिंह का बड़ा आतंक था। छात्र-जीवन में ही दिनेश ने अपराध जगत में प्रवेश किया था। उसके गिरोह में पढ़े-लिखे युवक थे। चुनमुन दिलेर और हृष्ट-पुष्ट था। स्कूल में उसका अपना एक गुट था।

चुनमुन की मुलाकात दिनेश सिंह से हुई। दिनेश उन दिनों जेल से फरार था। दिनेश एवं चुनमुन की दोस्ती बढ़ती गयी। मैट्रिक पास करने के बाद तो चुनमुन दिनेश के गिरोह से पूरी तरह जुड़

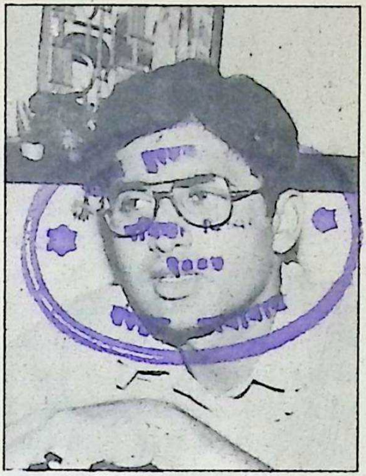

ए० एस०पी० अजय कुमार

गया। चुनमुन की इस हरकत से उसके पिता विवु शेखर सिंह बहुत दुखी हुए। उन्होंने चुनमुन को बहुत समझाया। पिता की बातों का असर पड़ना तो दूर रहा, उल्टे उसने घर ही छोड़ दिया। वह दिनेश सिंह के साथ रहने लगा। उसने दिनेश के गिरोह के साथ दो हत्याओं में भी हिस्सा लिया। अपनी दिलेरी से उसने गिरोह में अपना अच्छा-खासा दबदबा बना लिया।

दिनेश सिंह बिहटा थाना के पैनाल ग्राम का निवासी था। उसके पिता अरुण सिंह पैनाल के अच्छे किसानों में थे। उसकी मां कमला देवी बड़ी धर्मपरायण थीं। मां-बाप का इकलौता बेटा होने से दिनेश को इतना लाड़-प्यार मिला कि वह बिगड़ गया और अन्ततः उसने आपराधिक जीवन में पैर रख दिया।

दिनेश में अपनी बातों से लोगों को प्रभावित करने की अद्भुत क्षमता थी। उसके गिरोह में रामाधार सिंह, ललन सिंह, भोला शर्मा, कल्लू शर्मा, नुनू शर्मा,

लोचन शर्मा सहित बीस सक्रिय सदस्य थे। गिरोह ने अपराध करने के लिए अपना कोड नम्बर 'जीरो-जीरो पांच' रखा था।

दिनेश सिंह अपने जमाने का बहुत बड़ा बस लुटेरा था। बनारस-बिहटा राजमार्ग के सैकड़ों बसों को उसने सन् १९७३ में लूटा था। ग्यारह दिसंबर १९७३ की रात उसने डिहरी-आन-सोन से पटना जानेवाली डीलक्स-कोच बस को रोक लिया और यात्रियों को लूट लिया। एक महिला यात्री ने जब विरोध किया, तो दिनेश की पिस्तौल गरज उठी। वह महिला वहीं ढेर हो गयी। लाखों रुपये का सामान लूटकर गिरोह आराम से चलता बना।

लूटे गये सामानों का बंटवारा करने के लिए गिरोह उसी वक्त नहर के किनारे चला गया। बिहटा पुलिस को इसकी भनक मिल गयी। उसने गिरोह को घेर लिया। दोनों ओर से ताबड़तोड़ गोलियां चलीं। गिरोह के अन्य सदस्य तो किसी प्रकार भाग निकले, लेकिन दिनेश पुलिस के हाथ लग गया। उस पर डकैती व हत्या के मुकदमे चले। वर्ष १९७४ में उसे आजीवन कारावास की सजा मिली। उसे पटना सेंट्रल जेल भेज दिया गया।

छह महीने तक जेल की चहारदीवारी में कैद रहने के पश्चात् दिनेश सिंह जेल से भाग निकला। फरारी की हालत में ही उसकी चुनमुन से घनिष्ठता बढ़ी। चुनमुन भी उसके गिरोह का सदस्य बनकर अपराध करने लगा।

तेरह अप्रैल १९७५ को दिनेश सिंह पुलिस की गिरफ्त में फिर आ गया। बिहटा सेंट्रल बैंक लूटने की योजना बनाते समय बिहटा शराब-भट्ठी में तैनात सादे लिबास में पुलिस-कांसटेबल इकबाल कुरैशी ने उसे दबोच लिया। कड़े पहरे में उसे पुनः जेल की सीखचों में डाल दिया गया।

सजा काटकर दिनेश जून १९८८ में जेल से बाहर निकला, तब तक उसका शिष्य चुनमुन सिंह उससे काफी आगे बढ़ चुका था। दिनेश ने नये सिरे से गिरोह को संगठित किया। किस्मत ने उसका साथ नहीं दिया। सन् १९८९ में एकतीस जुलाई को दानापुर के नौजवान एडीशनल एस०पी० डा० अजय कुमार ने मुर्गीचक गांव के पास मुठभेड़ में उसे मार गिराया।

बहरहाल, अप्रैल १९७५ में जब दिनेश सिंह पकड़ लिया गया, तो चुनमुन सिंह की महत्वाकांक्षा बढ़ गयी। देखते-देखते वह गिरोह का सरदार बन गया। उसकी चर्चा घर-घर होने लगी। बिहटा, आरा एवं पटना के बड़े व्यापारियों से वह चौथ वसूलने लगा। कोई भी व्यापारी उसे चौथ देने में आनाकानी नहीं करता था। आनाकानी का मतलब मौत थी।

ज्यों-ज्यों समय बीतता गया, त्यों-त्यों चुनमुन सिंह के अपराधों की संख्या भी बढ़ती गयी। उसके बढ़ते अपराध और आतंक से अपराध जगत में हलचल मच गयी। बड़े-बड़े अपराधी भी चुनमुन की अपराध शैली के मुरीद हो गये।

१९७९ की घटना है। दानापुर, बिहटा एवं पटना में सत्तन पासवान नामक व्यक्ति ने अपना आतंक फैला दिया। सत्तन पासवान ने कई बलात्कार, हत्या व डकैतियां की थीं। उसका आतंक इस कदर छाया था कि उसके खिलाफ किसी की मुंह खोलने की हिम्मत नहीं होती थी। किसी ने जुर्रत की भी, तो उसे सत्तनगुट से मुंहतोड़ जवाब मिलता था।

हमेशा की तरह जाड़े की उस शाम मनेर मिष्ठान्न भण्डार में लोगबाग नाश्ता

कर रहे थे। मुख्य कारीगर रामजीवन कड़ाह में डालडा गरम कर रहा था। उसे लड्डू बनाने के लिए बेसन भूंजना था। मिष्ठान्न भंडार के मालिक सुंदर शर्मा काउंटर पर बैठकर खाने-पीनेवालों से हिसाब-किताब करने में मशगूल थे। उनके पास ही चुनमुन बैठा था। अचानक हवाई-फायरिंग हुई। दो बुलेट मोटरसाइकिल दुकान के सामने आकर रुक गयी। सामान्य कद-काठी का एक युवक मोटरसाइकिल से उतरा और काउंटर पर रुपया गिन रहे सुंदर शर्मा से कड़कती आवाज में कहा, "मुझे सत्तन के नाम से जाना जाता है, सेठ! फौरन मुझे दस हजार रुपये दे दो।"

सत्तन पासवान का नाम सुनते ही सुंदर शर्मा के होश उड़ गये। चुनमुन के लिए यह सब असहनीय था। वह सीधे अपनी जगह से उछला और सतन का गट्टा पकड़ कर कहा, "सत्तन, तेरा नाम बहुत सुना था। तुझे यह नहीं भूलना चाहिए कि इस इलाके में तुम्हारा नहीं चुनमुन सिंह का सिक्का चलता है। मैं ही चुनमुन सिंह हूं। मैं जिस दिन चाहूंगा, तेरी औकात खत्म कर दूंगा। तेरी यह हिम्मत कि तू मेरे सामने किसी से टैक्स मांगने की जुर्रत करे। मेरे पास इस समय पिस्तौल नहीं है, वरना तुझे सबक सिखा देता।"

चुनमुन सिंह के मुंह से पिस्तौल न होने की बात सुनकर सत्तन पासवान के साथ आये उसके एक शागिर्द ने चुनमुन पर गोली चला दी। इत्तफाक से निशाना चूक गया। इसका चुनमुन ने भरपूर लाभ उठाया। उसने लपक कर रामजीवन के हाथ से छोलनी छीन ली और उसी से कड़ाह में से खौलता घी निकाल कर सत्तन एवं उसके साथियों पर फेंकना शुरू कर

चुनमुन का भाई मुनन सिंह

दिया। सत्तन गिरोह के लोग चिल्लाते हुए भागने लगे। सत्तन का तो मुंह ही जल गया। गिरोह के दो सदस्यों की पिस्तौल हड़बड़ी में वहां गिर गयी। चुनमुन ने उन्हें उठा लिया और क्रोध से उफनता हुआ वहां से चला गया। चुनमुन की दिलेरी देखकर लोग स्तब्ध रह गये।

इस घटना के बाद चुनमुन का दबदबा और अधिक बढ़ गया। सत्तन ने फिर कभी उससे टकराने की जुर्रत नहीं की। अठारह फरवरी १९८९ को एडीशनल एस०पी० डा० अजय कुमार ने दानापुर के लखमी-बिघा गांव में सत्तन को मार गिराया।

चुनमुन के माता-पिता सदैव यह चाहते रहे कि वह भला इंसान बने, मगर चुनमुन बिगड़ता ही गया। उसके मां-बाप ने सोचा कि शायद विवाह के बाद वह सुधर जाये। उन्होंने उसकी शादी कर दी। उसकी पत्नी सुधा जहानाबाद के एक साधारण किसान रामायण सिंह की बेटी थी।

शादी के बाद भी चुनमुन में कोई परिवर्तन नहीं आया। उसकी पत्नी सुधा ने उसे सुधारने का भरसक प्रयास किया, किन्तु वह अपराध-पथ से हटने के लिए राजी न हुआ। सुधा से भी उसकी नहीं पटी।

एक दिन वह घर छोड़कर पलामू चला गया। उसने वहां दुर्गा-ट्रांसपोर्ट में खलासी की नौकरी कर ली। नौकरी की आड़ में चुनमुन डकैत एवं लूट में लिप्त रहने लगा। दुर्गा ट्रांसपोर्ट में काम करने के दौरान ही चुनमुन सिंह का परिचय पलामू के बाहुबली विधायक विनोद सिंह से हुआ। इस परिचय की भी अपनी एक कहानी है।

फरवरी १९८० की बीस तारीख थी। समूचा बिहार प्रदेश शीतलहर की भयंकर चपेट में था। ठिठुरनभरी रात में दुर्गा ट्रांसपोर्ट की बस से पलामू के बाहुबली विधायक विनोद सिंह पटना आ रहे थे। अगले ही दिन से बिहार विधान-सभा का बजट सत्र प्रारंभ होनेवाला था। बस यात्रियों से ठसाठस भरी थी। जब बस पलामू-पटना राजमार्ग पर जंगल के रास्ते से गुजर रही थी, तब डकैतों ने रोड घेरकर बस रुकवा ली और बस के अन्दर घुस गये। यात्रियों में आतंक छा गया। लुटेरे रिवाल्वर के बल पर यात्रियों से सामान छीनने लगे। वे बारी-बारी से यात्रियों को लूटते थे और उन्हें बस से नीचे उतारते जाते थे। विनोद सिंह तक ने उनका विरोध नहीं किया।

इस बस पर खलासी के रूप में चुनमुन भी मौजूद था। वह क्रोध में आगे बढ़ा और अपनी जेब से पिसी हुई लाल मिर्च निकाल कर गेट पर खड़े डकैतों की आंखों में झोंक दिया। डकैत के हाथ से पिस्तौल गिर गयी। चुनमुन सिंह ने पिस्तौल उठा लिया और डकैतों को निशाने पर ले लिया। उसने दो और डकैतों को भी घायल कर दिया। एक डकैत किसी तरह भागने में सफल हो गया।

चुनमुन सिंह की बदौलत यात्रियों की जान भी बच गयी और उनके सामान भी मिल गये। विनोद सिंह समेत सभी यात्री चुनमुन की इस दिलेरी से काफी प्रभावित हुए। बाहुबली विनोद सिंह ने तो उसे उसी समय अपना अंगरक्षक नियुक्त कर.लिया।

विनोद सिंह बाद में उससे इतना प्रभावित हुए कि वह उसे 'राबिन हुड' के नाम से पुकारने लगे। बिहार की आपराधिक राजनीति में विनोद सिंह का अपना एक स्थान था। सच पूछा जाये तो विनोद सिंह पर बलात्कार, बैंक डकैती एवं लूट के साठ संगीन मामले थे। चुनमुन सिंह उर्फ राबिन हुड ने विनोद सिंह के साथ मिलकर चालीस भयंकर अपराध किये। पलामू स्टेट बैंक में दिन-दहाड़े दस लाख की लूट भी इनमें शामिल थी।

जून १९८७ में विनोद सिंह मौत के मुंह में पहुंचा दिये गये। चुनमुन ने पलामू छोड़ दिया। वह अपने गांव अमहरा लौट आया। उसने बिहटा, पटना तथा आरा में अपराध का खाता खोल दिया। एक ही रात में पन्द्रह पेट्रोल-टैंकरों को लूटकर चुनमुन सिंह ने सनसनी फैला दी। लूट के दौरान पेट्रोल टैंकर के एक ड्राइवर एवं एक खलासी को उसने मौत की नींद सुला दिया। एक पेट्रोल-टैंकर का अपहरण कर लिया। टैंकर कहां गया, यह आज तक पुलिस के लिए एक पहेली बनी हुई है। लोगों का अनुमान है कि चुनमुन ने टैंकर

का चेसिस नंबर बदलकर उसे किसी दूसरे प्रांत में बेच दिया। यह घटना एकतीस दिसंबर १९८७ की रात अरवल में घटी थी। इस घटना के सिलसिले में ही अरवल के तत्कालीन थाना-इंचार्ज को निलंबित कर दिया गया था।

३१ दिसम्बर, १९८७ को पटना से पचास किलोमीटर पश्चिम औरंगाबाद रोड पर अरवल पोखरा के निकट चुनमुन के नेतृत्व में अपराधियों के एक जत्थे ने लकड़ी की मोटी-मोटी सिल्लियों से सड़क अवरुद्ध कर दिया। रात में जो भी पेट्रोल टैंकर वहां से गुजरता था, उसे चुनमुन का गिरोह रोकता था और उनसे नकद तथा सामान छीन लेता था और फिर वह टैंकर को जाने की इजाजत दे देता था। इस प्रकार कई टैंकर आते रहे और चुनमुन के साथी उनसे नकदी छीन कर उन्हें जाने की इजाजत देते रहे।

इसी क्रम में हिन्दुस्तान-पेट्रोलियम का एक टैंकर वहां आकर रुक गया। उसके रुकते ही हथियारों से लैस चुनमुन के साथियों ने उसे घेर लिया। टैंकर के ड्राइवर तथा खलासी बाहर निकल आये। ड्राइवर ने चुनमुन के साथियों से कहा, "मुझे तुम लोग नहीं पहचानते हो। मैं भी तुम्हारे ही 'लाइन' का आदमी हूं। यदि मेरे साथ कुछ भी हुआ तो तुम सब भारी चक्कर में पड़ जाओगे।"

ड्राइवर की बात सुनते ही चुनमुन का पारा चढ़ गया। उसके साथियों ने ड्राइवर और खलासी को जख्मी करके पीपल के विशाल वृक्ष के मोटे तने के साथ मूंज की मजबूत रस्सी से बांध दिया। चुनमुन ने फरसे से ड्राइवर एवं खलासी दोनों के हाथ व पैर की अंगुलियां काट दीं। उन दोनों की हृदय-विदारक चीख दूर-दूर तक सन्नाटे को भेदती हुई गूंज उठी। दोनों ने वहीं कुछ देर बाद दम तोड़ दिया।

चुनमुन का गिरोह टैंकर लेकर भाग गया। उस टैंकर का क्या हुआ, कोई आज तक जान नहीं सका। टैंकरों की लूट से चुनमुन के गिरोह को डेढ़ लाख रुपये मिले।

इस घटना से जनता में रोष और असंतोष फैल गया। प्रशासन की जमकर आलोचना भी हुई। बिहार के तत्कालीन मुख्यमंत्री बिन्देश्वरी दुबे ने चुनमुन गिरोह के सफाये के लिए एक अलग पुलिस दल के गठन का निर्देश दिया। पुलिस को चुनमुन को गिरफ्तार करने की सख्त हिदायत दी गयी। इसके बावजूद चुनमुन गिरोह का बाल-बांका नहीं हुआ। गिरोह ने पुलिस से बचने के लिए डकैती व लूट के बदले अपहरण करना आरम्भ किया। चुनमुन ने स्वयं अपने गांव के एक लड़के का अपहरण कर लिया। उसने उसे तब छोड़ा जबकि उसे फिरौती के रूप में दस हजार रुपये मिल गये।

कुछ दिनों बाद चुनमुन गिरोह का हौसला फिर बढ़ गया। वह बैंक डकैती और लूट की वारदातें फिर करने लगा। उसका बढ़ता आतंक पुलिस के लिए चुनौती बन गया।

१९ मार्च, १९८९ का दिन था। दोपहर ढाई बजे थे। बिहटा बाजार स्थित केनारा बैंक का चौकीदार हाथ में बंदूक लेकर बाहर स्टूल पर बैठा था। बैंक का कामकाज हर रोज की तरह था। तभी उसका ध्यान उन पांच युवकों की ओर गया, जो फिल्मी गीत गाते हुए बैंक अहाते में घुस आये थे। चौकीदार उन पर झपटा। एक युवक ने चौकीदार पर गोली चला

(शेष पृष्ठ ५७ पर)

बिना आग के जलते जिस्म

कुलदीप शर्मा

टैक्सास के फिल्म उद्योग में अभिनेत्री ओलगा वार्थ स्टीफंस ने अपनी अदाकारी से एक ऐसी जगह बना ली थी कि किसी फिल्म की सफलता का विश्वास केवल इतने से ही हो जाता था कि उसमें

अभिनेत्री ओलगा काम कर रही है। दीवाने लोग फिल्म के रिलीज होने से पहले ही बुकिंग करा लेते थे।

अक्टूबर १९८४ की बात है। शाम का समय था। अभिनेत्री ओलगा अपनी एक फिल्म की शूटिंग के बाद लम्बी कार में घर लौट रही थी। थकान से एकदम निढाल वह पिछली सीट पर सिर टिका कर पड़ गयी। शीशे में कनखियों से उन्हें निहारते ड्राइवर को लगा कि मैडम कुछ परेशान हैं।

> बिना बाहरी आग के शरीर में अपने आप आग लगने की घटनाएं रहस्यपूर्ण भी हैं और आश्चर्यजनक भी। वैज्ञानिक इस रहस्य को सुलझाने की कोशिश कर रहे हैं, किन्तु अभी तक उन्हें कोई सफलता नहीं मिल पायी है

वह दवा की गोलियां लाने की गरज से गाड़ी एक तरफ लगाकर चला गया। यह देख सभी प्रत्यक्षदर्शी चकित रह गये कि श्रीमती ओलगा का शरीर अचानक तेज प्रकाश से चमक उठा। ऐसा लगा जैसे किसी ने किसी गहरे रंग के कांच के बर्तन में अत्यधिक वोल्टेज की टार्च जला दी हो। देखते-देखते श्रीमती ओलगा एक तेज जलती 'मानव मशाल' में बदल गयी। इससे पहले कि कोई उन्हें बचाता, वह हड्डियों समेत राख का ढेर हो चुकी थीं।

इसी के साथ टेक्सास वासियों के दिलो-दिमाग पर छायी इस प्रसिद्ध अभिनेत्री की जिन्दगी का पर्दा गिर गया। पूरी की पूरी घटना रहस्यपूर्ण थी। सबसे रहस्यपूर्ण बात तो यह थी कि श्रीमती ओलगा का हड्डियों समेत पूरा शरीर स्वाहा हो जाने के बाद भी कार पूरी तरह सुरक्षित थी। यहां तक कि कार की फोम की गद्दी भी सही-सलामत थी। आग की लपटों से पेट्रोल की टंकी फट जानी चाहिए थी, मगर ऐसा नहीं हुआ। गाड़ी को वहां से वापस ले आया गया।

यह पता नहीं चला कि श्रीमती ओलगा का शरीर कैसे जला? आज भी टेक्सास में इस प्रसिद्ध अभिनेत्री की रहस्यमयी मौत की चर्चा होते ही पूरे फिल्म उद्योग में ही नहीं बल्कि टेक्सास वासियों में एक अजीब सा आतंक छा जाता है।

ऐसी ही कहानी है इंगलैण्ड की श्रीमती निकोलि मिलेट की। मिलेट बड़ी मनचली महिला थी। मिलेट हर रोज शराब पीती थी और सो जाती थी। उसके पति जीन मिलेट एक सराय के मालिक थे। अपनी पत्नी की आदत से वह परेशान थे। वह बहुधा मिलेट को समझाते थे, पर मिलेट पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता था। झगड़ा होता था, मगर सुबह होते ही दोनों में सुलह हो जाती थी। होती भी क्यों न, श्रीमती मिलेट ही तो सराय संभाले थी।

बात १९ फरवरी, १९२५ की है। मिलेट परिवार बड़ा प्रसन्न था। होता भी क्यों न, पूरी की पूरी सराय ठसाठस जो भरी हुई थी। अगली सुबह मिलेट की सराय में एक जोरदार पार्टी होने जा

रही थी। रसोई का सारा इंतजाम श्रीमती मिलेट के सिर ही था। भारी पैसा हाथ लगने की बात सोचकर श्रीमती मिलेट फूली नहीं समा रही थी।

आधी रात के बाद श्री मिलेट सो गये। अपनी आदत से मजबूर श्रीमती मिलेट दिनभर की थकान मिटाने के लिए शराब पीने की उत्कंठा में रसोई घर में जा पहुंची। उसने दबे पांव अलमारी खोली और बोतल निकालकर शराब

धूप-स्नान जानलेवा साबित हुआ

गेर्डा हेसर

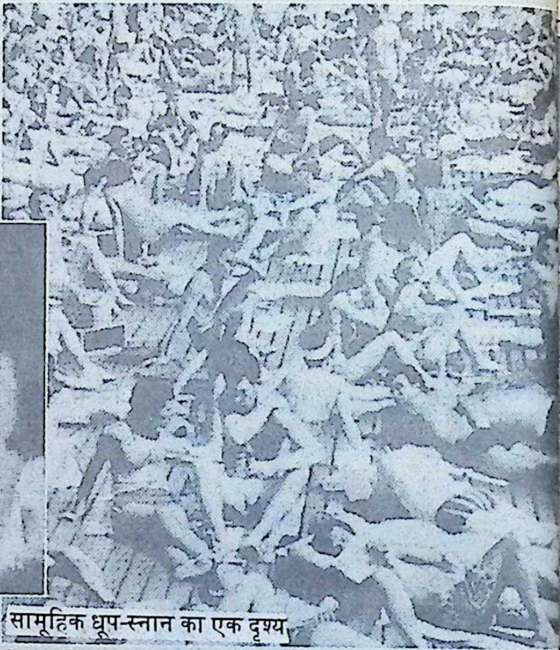

सामूहिक धूप-स्नान का एक दृश्य

हमारे मनीषियों ने 'अति सर्वत्र वर्जयेत' की बात शायद काफी सोच-समझकर ही कही है। योरोप के बड़े मुल्कों में स्वास्थ्य लाभ के लिए धूप-स्नान का आम रिवाज है तथा बहुत अच्छा माना जाता है। मगर समुद्र तट पर पहली बार ज्यादा देर तक धूप लेना जर्मन महिला पर्यटक गेर्डा हेसर के लिए बहुत महंगा साबित हुआ। उसे अपनी जान से ही हाथ धोना पड़ गया।

शरीर के रासायनिक तत्वों पर धूप का ऐसा दैवी चमत्कार जैसा विलक्षण असर हुआ कि वह अचानक जलकर खाक हो गयी। जब तक खौफजदा पहरेदार वहां पहुंचकर कुछ कर पाता गेर्डा की कंचन काया धधकता हुआ अंगारा बन चुकी थी।

शवपरीक्षण करनेवाले डाक्टर जोर्ग अल्मेंड्रोस ने बताया, "अचानक रासायनिक ज्वलनशीलता का यह अजीबोगरीब मामला है। इस तरह हर साल कुछ लोगों की मौत हो जाती है। इस चमत्कारिक घटना को अभी हमें पूरी तरह समझने की जरूरत है। बेशक धूप की तेज गर्मी का ही कहीं-न-कहीं यह असर है।"

खड़े-खड़े ही पी गयी। शराब पीते ही सिर भारी हो गया। वह वहीं दीवाल से सिर टिकाकर बैठ गयी।

रात में कोई दो बजे श्री मिलेट सहित सराय के कई लोगों के किसी के जलने की तीखी गंध महसूस हुई। लोग यह पता लगाने लगे कि यह गंध कहां से आ रही है। जब कुछ लोग रसोई घर में पहुंचे तो उन्होंने देखा कि रसोई घर में, श्रीमती मिलेट धू-धू कर जल रही थीं।

अठाइस वर्षीया गेर्डा अपनी हमउम्र सहेली कैथरीन वेजबाइंडर के साथ कैरीबियन सागर स्थित डोमिनिकन गणतंत्र में मौजमस्ती के साथ हफ्ते भर की छुट्टियां बिताने आयी थी। दोनों पश्चिम जर्मनी के फ्रैंकफुर्त शहर में नौकरी करती थीं।

कैथरीन ने जांचकर्ताओं को बयान दिया, "क्या बताऊं मैंने धूप में ज्यादा लेटने से गेर्डा को मना किया था, मगर जिद्द में उसने मेरी बात अनसुनी कर दी।

"अपनी साल भर की कमाई की बचत लेकर हम यहां आए थे और एक तंदुरुस्ती हजार नियामत समझकर हम समुद्र तट पर धूप-स्नान करने गये थे।

"तेज धूप से त्वचा को होनेवाली तकलीफों के बारे में तो मैं सोच सकती थी मगर मौत का ऐसा भयानक हादसा हो जाएगा यह मेरी कल्पना में भी नहीं आया। अब क्या मुंह लेकर घर लौटूं, यह समझ में नहीं आता।"

दोनों सहेलियों का डोमिनिकन गणतंत्र में पहला दिन था। घंटा भर धूप में बैठने पर कैथरीन को बेहद गर्मी और जलन महसूस हुई। कैथरीन को लगा कि गेर्डा भी धूप की गर्मी से परेशान है। कैथरीन का कहना है, "मैं उठकर पेड़ की छाया में पहुंच गयी। मैंने गेर्डा से भी वहीं चलने पर जोर दिया, मगर उसने कहा, 'मैं थोड़ी देर में आऊंगी।'

"वृक्ष की शीतल छाया में मैं तो सो गयी। लगभग तीन घंटे बाद जागने पर मैंने देखा कि गेर्डा अभी भी धूप में पड़ी थी।"

अभी तक कैरीबियन सागर स्थित डोमिनिकन गणतंत्र में मध्याह्न हो चुका था। धूप में प्रचण्ड निखार आ चुका था। कैथरीन ने उसे शरीर ढकने की सलाह दी, मगर गेर्डा ने अपनी जिद नहीं छोड़ी।

कैथरीन आज भी हर बात अपनी स्मृतियों में संजोए हुए रुंधे गले और अश्रुपूरित नेत्रों के साथ बताती है, "मुझे अपनी नाक में जले हुए मांस की गंध का एहसास हुआ। मैंने देखा गेर्डा के मुंह से धुआं जैसा निकल रहा है।

"मैंने तत्काल उसे बांहों में भर कर वहां से हटाना चाहा। मुझे लगा मेरे हाथ जल जाएंगे। वह कराह उठी। तभी आग की जोरदार लपक निकली। पलक झपकते ही उसकी सारी देह लपटों में समा गयी।"

कैथरीन की चीख सुनकर पहरेदार का ध्यान आग की ओर गया। वह तत्काल बाल्टी में पानी लेकर दौड़ा। मगर तब तक वहां सब कुछ स्वाहा हो चुका था।

डाक्टर अल्मेंड्रोस के शब्दों में—"हम डाक्टर तो हमेशा लोगों को धूप में ज्यादा रहने से रोकते हैं। ऐसी चमत्कारिक घटनाएं अरबों-खरबों के बीच कहीं एकाध होती है। फिर भी धूप-स्नान करनेवालों को सावधानी बरतनी चाहिए, जिससे इस तरह की घटनाओं की भविष्य में पुनरावृत्ति न हो। ■

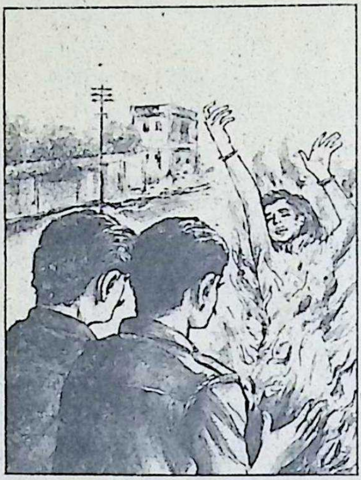

देखते-देखते मिलेट का पूरा का पूरा शरीर राख का ढेर हो गया। सिर का कुछ हिस्सा और मात्र कुछ हड्डियां ही बच गयीं। यह सब कुछ इतनी जल्दी हो गया कि कोई भी उन्हें बचा न सका। पुलिस घटनास्थल पर पहुंची तो पैनी निगाहों से उसने घटनास्थल का निरीक्षण करना आरम्भ किया। रसोई घर में मिर्च मसालों के डिब्बों से लेकर तेल के पीपे तक सब कुछ देखा गया, मगर कोई ऐसा सुराग नहीं मिला, जिससे आग लगने के कारण का पता चलता। इंसपेक्टर को शराब की खाली बोतल मिली तो उसने जीन मिलेट से पूछा, "महोदय, क्या आपकी पत्नी शराब पीती थीं?"

जान मिलेट ने निगाह नीची करके कहा, "वह रोज शराब पीती थी। मैं मना करता था, पर वह मानती ही नहीं थी। बहुधा झगड़ा भी हो जाता था। कभी-कभी तो मारपीट की नौबत आ जाती थी।"

"तो क्या उस रात भी आपकी पत्नी ने शराब पिया था, जबकि घटना हुई थी?" इंसपेक्टर ने पूछा तो जीन मिलेट ने कहा, "सर, जब वह रोज पीती थी, तब यह कैसे कहा जा सकता है कि उस दिन उसने न पिया होगा।"

"क्या उस दिन भी तुम्हारे और उसके बीच झगड़ा हुआ था? क्या उस दिन भी मारपीट हुई थी?"

"नहीं, उस दिन तो न कोई झगड़ा हुआ था और न किसी तरह का विवाद।"

"तुम सत्यता छिपा रहे हो। ऐसा हो ही नहीं सकता कि उस दिन तुम दोनों में झगड़ा और मारपीट न हुई हो। लगता है उस दिन झगड़ा और मारपीट होने के बाद ऊब कर तुम्हारी पत्नी ने शरीर में आग लगाकर आत्महत्या कर लिया होगा।"

जीन मिलेट ने अपनी लाख सफाई दी, पर पुलिस न मानी। वह उन्हें गिरफ्तार करके ले गयी।

बात यहीं खत्म नहीं होती। एक ऐसी परिस्थिति भी देखने को मिली, जबकि इस तरह की घटना ने नया मोड़ ले लिया। यह महज एक इत्तफाक ही था कि मिलेट की सराय में उस समय इंगलैण्ड का एक प्रसिद्ध चिकित्सक ली कैट भी ठहरा हुआ था। उसने मौके पर जाकर स्थिति का अध्ययन किया। निरीक्षण के दौरान उसने कई बातों पर विचार किया। एक तो यह कि श्रीमती मिलेट का शरीर मय हड्डियों के राख कैसे बन गया? दूसरा, उनके कुछ कपड़े भी नहीं जले थे ऐसा क्यों हुआ? उन्होंने इसे 'दैवीय आग' माना। इसी आधार पर परिस्थितियों के विश्लेषण के बाद उन्होंने अपनी रपट तैयार कर ली।

जब मिलेट के विरुद्ध अदालती जांच

शुरू हुई तो चिकित्सक ली कैट ने बतौर चश्मदीद गवाह पैरवी की। उन्होंने अपनी पूरी रपट अदालत में पेश की और दावा किया कि वैज्ञानिक आधार पर ऐसा कतई संभव नहीं है कि पूरा का पूरा शरीर मात्र शराब पीने से पूरी तरह स्वाहा हो जाये। उन्होंने वैज्ञानिक विश्लेषण करते हुए तर्क दिया कि ३००० डिग्री फारेनहाईट से अधिक का ही ताप हड्डियों की शक्ल बदल कर उन्हें राख कर सकता है। इससे नीचे का ताप हड्डियों का कुछ नहीं बिगाड़ सकता। यह इतना ऊंचा ताप है कि सामान्य स्थितियों में तो इसे पैदा किया ही नहीं जा सकता। ली कैट ने अदालत को बताया कि यह शरीर से स्वतः निकली एक आग थी, जिसने श्रीमती मिलेट को जलाकर राख कर दिया था। इसे इंसान द्वारा लगायी गयी आग बताना महज एक बहम ही है। आग के लिए जीन मिलेट किसी तरह से दोषी नहीं है। कैट के निष्कर्ष को अदालत ने मान लिया। उसने जीन मिलेट को ससम्मान बरी कर दिया।

जीन मिलेट तो बरी हो गया किन्तु

अनसुलझा रहस्य

अपने आप मानव-शरीर में लगनेवाली आग सचमुच रहस्यमय है। यह आग कैसी है और क्यों लगती है, यह आज तक किसी की समझ में नहीं आया है। डाक्टर परेशान हैं, प्रशासन हैरान है, वैज्ञानिक उलझन में हैं। किसी की समझ से कुछ नहीं आ रहा है। सबसे अधिक विस्मित और हैरान करनेवाली बात तो यह है कि जलनेवाला तो जल कर राख हो जाता है, परन्तु उसके कपड़े या बिस्तर को आग की लपटें छूती तक नहीं।

मानव दहन की ये घटनाएं विज्ञान के लिए चुनौती हैं। इस चुनौती को विज्ञान ने स्वीकार तो किया है, किन्तु इसे सुलझा नहीं पाया है। वह इसे जितना ही सुलझाने का प्रयास कर रहा है, उतना ही यह उलझता जा रहा है। अब तो हर मनुष्य आतंकित है। कौन जाने, कौन और कब इसका शिकार हो जाये।

पहले तो इन घटनाओं पर वैज्ञानिक और डाक्टर मौन और हैरान रहे। बाद में उन्होंने इसे 'एस०एच०सी०' या 'पी०सी०' नाम दिया। एस०एच०सी० का पूर्ण रूप है–स्पानटेनियस ह्यूमन कम्बशन'। इसका अर्थ है–अज्ञात कारणों से उत्पन्न होने वाली आग से मानव के तत्काल जल जाने की घटनाएं। पी०सी० का तात्पर्य है प्रीटर नेचुरल कम्बशन। यह वह स्थिति है, जिसमें सारे सेल दहन की संकटकालीन अवस्था में पहुंच जाते हैं।

यद्यपि अमेरिकन मेडिकल एसोसियेशन एस०एच०सी० या पी०सी० को मान्यता नहीं देता, तथापि अमेरिका के कुछ डाक्टर इसके अस्तित्व से इनकार भी नहीं करते। कुछ डाक्टरों और वैज्ञानिकों ने तो इस संबंध में बेहद माथापच्ची की, किन्तु वे सफल नहीं हुए। उन्हें सबसे अधिक हैरानी उस समय हुई जबकि उन्होंने देखा कि यह रहस्यमय आग पीठ से आरम्भ होती है, जबकि एस०एच०सी० या पी०सी० के फलस्वरूप लगनेवाली आग शरीर के धड़ से प्रारम्भ होती है। लगता है, यह रहस्य न सुलझा है, न सुलझ पायेगा। ■

जीवनभर उसके लिए उसकी पत्नी की मौत रहस्य का विषय बनी रही। जहां कहीं भी इस घटना का जिक्र होता था, वहां लोग यह कहकर चुप हो जाते थे कि यह दैवी आग थी।

इंगलैण्ड में ही १९७३ में फिर ऐसी ही एक और घटना घटी। भारतीय मूल के एक सिख परिवार में इकलौती बच्ची थी। बड़े इलाज और मिन्नतों के बाद यह पैदा हुई थी। बड़े प्यार से पाली गयी इस लड़की का नाम परविन्दर कौर था। यह अभी केवल सात माह की थी कि एक भयानक घटना घट गयी।

संध्या का समय था कि बच्ची की मां कोई पुस्तक पढ़ने में तन्मय थी। पिता टी०वी० पर किसी मनोरंजक कार्य-क्रम को देखने में व्यस्त था। अचानक मां को कुछ जलने की गंध मिली। उसने चारो ओर नजर दौड़ायी तो उसकी चीख निकल गयी। परविन्दर के पालने से आग की लपटें निकल रही थीं।

मां ने दौड़कर किसी तरह आग बुझायी। बच्ची बुरी तरह जल गयी थी। उसे तत्काल अस्पताल पहुंचाया गया। डाक्टरों ने उसे बचाने का अथक प्रयास किया, किन्तु सफलता नहीं मिली।

बच्ची तो मर गयी, किन्तु वह अपने पीछे एक ऐसी रहस्यमय पहेली छोड़ गयी, जिसका हल आज तक नहीं मिल पाया है। लोग परेशान तो इसलिए थे कि आग कैसे लगी। सिख परिवार होने के कारण सिगरेट से आग लगने का कोई प्रश्न ही नहीं उठता। डाक्टरों ने भी रहस्यमय आग का स्रोत खोजने के लिए बड़ी माथापच्ची की, किन्तु कोई सफलता नहीं मिली।

इस तरह की घटनाओं ने पश्चिमी देशों में भी तहलका मचाया। सत्रहवीं शताब्दी तक यहां 'स्व-दहन' की ऐसी घटनाएं चिकित्सकीय आधार पर सही मानी जाने लगीं। बीसवीं शताब्दी के आते-आते दो सौ से ऊपर ऐसी घटनाएं चिकित्सकीय प्रमाण लिए सामने आयीं।

जहां तक परिस्थितियों का सवाल है, शुरू में देखने में आया कि ऐसी घटनाएं आमतौर पर जाड़ों की सर्द रातों में ही घटीं और तब घटीं जब जलने वाला अकेला था। ऐसे में उसे मात्र दैवीय प्रकोप कह कर टाला जाता था। जब सरे आम जलते लोग देखे गये, तब लोगों को अपनी धारणा बदलनी पड़ी।

अठारहवीं शताब्दी के आते-आते ऐसी घटनाओं ने चिकित्सकों और वैज्ञा-निकों को चौकन्ना कर दिया। मजे की बात तो यह हुई कि ऐसी घटनाओं की चपेट में कुछ प्रसिद्ध चिकित्सक भी आ गए। इनमें यूनिवर्सिटी आफ नाशाविले, टेनसी के प्रोफेसर जेम्स हैमिल्टन भी एक थे।

५ जनवरी, १८३५ की ठंडक भरी शाम थी। प्रोफेसर जेम्स हैमिल्टन विश्व-विद्यालय से लौटे, तो लान में लगे मौसम मापी यंत्र को देखने चले गये। लौटते समय अचानक उन्हें अपनी दायीं जांघ में बहुत तेज दर्द हुआ। थोड़ी देर बाद ही उन्हें जांघ में बेहद गर्मी महसूस हुई। जब उन्होंने जांघ की ओर देखा तो उनकी चीख निकल पड़ी। जांघ से कई इंच लम्बी,. मोटी और आगे से चिपटी आग की तेज लौ ऐसे निकल रही थी, मानो बर्नर की लौ लपलपा रही हो। उन्होंने तत्काल लौ को हाथ से दबा कर उसकी आक्सीजन रोक दी। लौ बुझ गयी। लड़खड़ाते कदमों से वह घर आए

और आते ही पैंट और अण्डरवियर उतार कर आग का मुआयना किया। तीन इंच गहरा और तीन चौथाई इंच चौड़ा घाव बन गया था। रहस्यपूर्ण बात तो यह थी कि पैंट और अण्डरवियर में कोई छेद तक नहीं हुआ था।

१६०७ में भी ऐसी ही एक घटना घटी। जाड़े के दिन थे। भारत में दीनापुर में दो कांसटेबल कहीं जा रहे थे। रास्ते में उन्होंने एक महिला को जाते हुए देखा। अचानक वह यह देखकर आश्चर्य से चौंक गये कि उस महिला के शरीर से आग की लपटें बर्नर की लौ की भांति निकल रही थी। जब तक वे दोनों कांस-टेबल उस महिला के पास पहुंचते, तब तक वह जलकर राख हो चुकी थी।

१६०५ में भी लंदन में ऐसी ही रहस्यमय घटना घटी। १६ वर्षीया कुमारी मेविले हसीन सपने लिए अपने बॉयफ्रेंड के साथ लंदन के एक क्लब में डांस कर रही थी। अचानक मेविले की पीठ और वक्ष से आग की लपटें निकलने लगीं। लोगों ने दौड़कर किसी तरह आग बुझायी। गंभीर हालत में मेविले ने अस्पताल में ही दम तोड़ दिया।

मानव-दहन की इन घटनाओं की तह में जाने के लिए वैज्ञानिक एक लम्बे समय से माथापच्ची कर रहे हैं। इन घटनाओं के चश्मदीद गवाह आम लोगों के अलावा पुलिस, चिकित्सक और अन्य महत्वपूर्ण लोग भी हैं। सभी घटनाओं से यह बात साफ हो गयी है कि आग बिना किसी बाहरी कारणों से लगी। इतने पर भी कोई स्पष्ट तौर पर उसकी सार्थकता मानने को तैयार नहीं है। जहां प्रशासन 'रहस्यपूर्ण' शब्द का सहारा लेता है, वहीं वैज्ञानिक इसे शरीर की कोई अभूतपूर्व क्रिया कहते हैं।

वैज्ञानिकों ने 'स्व-प्रज्वलन' की इस क्रिया को लेकर कुछ महत्वपूर्ण दलीलें दी हैं। उनका कहना है कि इसमें दो राय नहीं कि यह आग शरीर की कुछ क्रियाओं के कारण ही उत्पन्न होती है। असल में हमारे शरीर में ऐसी बहुत सी गैसें और तत्व हैं जो बाहरी वातावरण से मिलते ही जल उठते हैं। शरीर में भी दो अलग-अलग तत्व जब आपस में मिलते हैं, तब आग उत्पन्न हो जाती है। फास्फोरस एक ऐसा पदार्थ है जो शुष्क अवस्था में वातावरण में खुला होने पर आग पकड़ लेता है। हमारे शरीर में इसकी अच्छी खासी मात्रा है। वैज्ञानिकों को इसी से शरीर में रहस्यमय आग लगने की आशंका है।

शरीर में अम्ल, वसा और गैस की भी खासी मात्रा होती है जो अपने आप में महत्वपूर्ण ईंधन है। कुछ वैज्ञानिकों का कहना है कि शरीर में होने वाली रासायनिक क्रियाओं में बहुत से रसायन ऐसे होते हैं जो अकेले भले ही कुछ न करें, मगर आपस में मिलकर ऐसा पदार्थ बना देते हैं जो ज्वलनशील होता है। पाचन तंत्र से जुड़े अंग जैसे आंत आदि से भी ज्वलनशील गैसें निकलती हैं।

हमारा पर्यावरण भी इतना प्रदूषित हो चला है कि तरह-तरह की ज्वलनशील गैसें हमारे इर्दगिर्द अपना जाल बिछा रही हैं। हमारी यह नादानी हमें ही लील रही है। क्या पता कब इनमें से कोई ऐसी गैसें निकलें, जो हमारे शरीर के पोर-पोर में जा समाये और इस काया को स्वाहा कर दे या फिर 'मिलावटी खाद्य' शरीर में पहुंच कर गैस पैदा करें और सब स्वाहा हो जाये। ■

जाली नोटों का व्यापार

आसिफ फर्रुखाबादी

यदि पुलिस अधिकारी ने
सूझ-बूझ के साथ सुराग पाने
की योजना न बनायी
होती तो उस गिरोह का
पता ही न लगता जिसने
बार-बार पकड़े जाने के बाद भी
अपना धंधा नहीं छोड़ा था

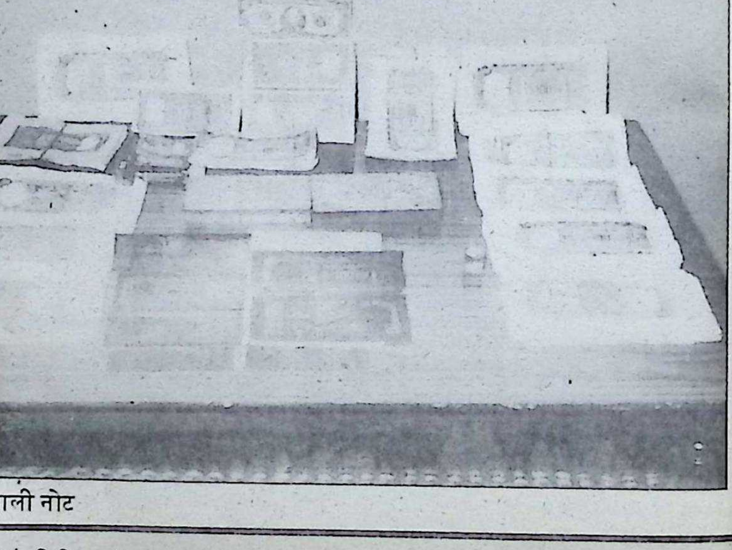

जाली नोट

जौनपुर पुलिस अधीक्षक का चार्ज लिए हुए श्री आर०एन० कठेरिया को एक माह बीता था कि एक दिन उन्हें यह महत्वपूर्ण सूचना मिली कि जनपद जौनपुर में जाली नोटों का कारोबार हो रहा है।

पुलिस अधीक्षक कठेरिया ने कोतवाली इंसपेक्टर श्री सनमानसिंह भदौरिया को अपने कार्यालय में बुलाया और कहा, "मिस्टर भदौरिया मैं आपको एक महत्वपूर्ण मामला सौंप रहा हूं। मुझे सूचना मिली है कि जौनपुर में 'जाली नोटों' का धंधा हो रहा है। सरकारी अर्थव्यवस्था को नुकसान पहुंचाने वाले गिरोह को आप शीघ्र गिरफ्तार करें।"

"ठीक है सर, मैं जाली नोटों का धंधा करनेवालों को शीघ्र ही गिरफ्तार करने का प्रयास करूंगा।" इंसपेक्टर भदौरिया ने कहा।

दूसरे दिन श्री भदौरिया ने अपने

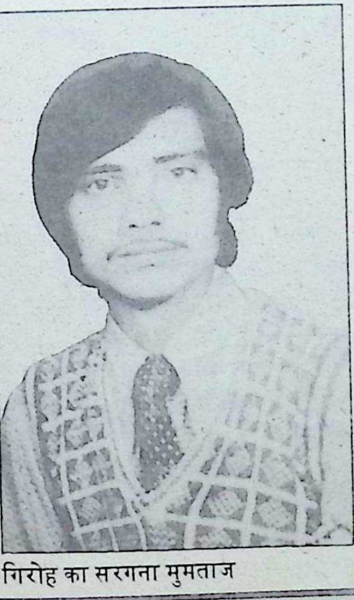

गिरोह का सरगना मुमताज

सहकर्मियों की एक बैठक बुलायी और जाली नोटों के प्रचलन के सिलसिले में विचार-विमर्श किया। बैठक में उपस्थित हेड कांसटेबल परमेश्वर राय ने कहा, "जौनपुर में जाली नोट छापने वाला एक ही गिरोह तीन बार पकड़ा जा चुका है। १९८८ में जब यह गिरोह पकड़ा गया था, तब इसके पास एक लाख तीन हजार सात सौ रुपयों के जाली नोट बरामद हुए थे। कहीं यही गिरोह फिर से सक्रिय तो नहीं हो गया है?"

श्री भदौरिया ने कहा, "हो सकता है, वही गिरोह पुनः सक्रिय हो गया हो। जालसाजी के धंधे में लिप्त गुनहगार को अधिक से अधिक अदालत सात वर्ष के सश्रम कारावास की सजा देती है। जमानत पर छूटने या सजा पूरी होने पर गुनहगार अक्सर अपने पुराने धंधों में लग जाते हैं। आप लोग पुराने गुनहगारों पर नजर रखें और मुझे इस संबंध में सूचना दें।"

कुछ दिनों बाद जौनपुर की पुलिस यह पता लगाने में सफल हो गयी कि जाली नोटों को बनाने का काम जौनपुर नगर में ही कहीं होता है। इस धंधे में कुछ पुराने गुनहगार भी शामिल हैं। जब यह सूचना श्री भदौरिया को दी गयी तब उन्होंने अपने मुखबिरों का जाल जौनपुर शहर में यह जानने के लिए फैला दिया कि इस गिरोह का सरगना कौन है?

कुछ ही दिनों में मुखबिरों ने यह सूचना दिया कि जाली नोट बनाने का धंधा करनेवाले गिरोह का नेता मुमताज है, जो पुराना गुनहगार है। वह सिपाह मोहल्ले में रहता है।

इतनी जानकारी मिलने के बाद श्री भदौरिया ने अपने एक विशेष मुखबिर

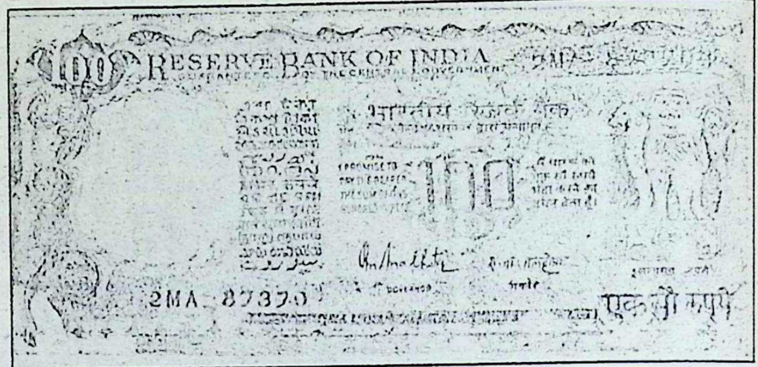

सौ रुपये का जाली नोट

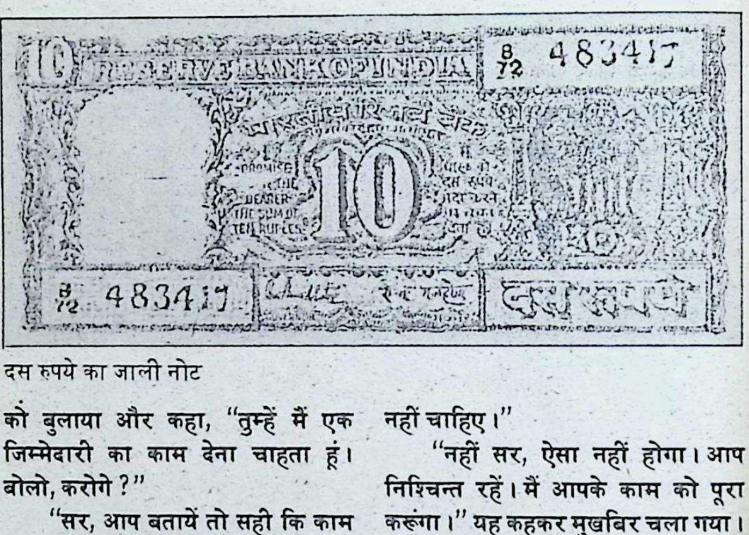

दस रुपये का जाली नोट

को बुलाया और कहा, "तुम्हें मैं एक जिम्मेदारी का काम देना चाहता हूं। बोलो, करोगे ?"

"सर, आप बतायें तो सही कि काम क्या है ?"

"सिपाह मोहल्ले में मुमताज नामक एक व्यक्ति रहता है, जो जाली नोट बनाने का धंधा करनेवाले गिरोह का नेता है। तुम्हें किसी तरह इस व्यक्ति का विश्वास-पात्र बनना होगा और उसके गिरोह में शामिल होकर उसके धंधे में काम करना होगा। तुम्हें यह काम सावधानी से करना होगा। कहीं तुम्हारी असलियत खुलनी नहीं चाहिए।"

"नहीं सर, ऐसा नहीं होगा। आप निश्चिन्त रहें। मैं आपके काम को पूरा करूंगा।" यह कहकर मुखबिर चला गया। उसने पहले मुमताज तथा उसके मित्रों के बारे में जानकारी प्राप्त की।

एक दिन यह मुखबिर उस होटल में पहुंच गया, जहां मुमताज अपने दोस्तों के साथ प्रायः चाय पिया करता था। उस दिन मुमताज वहां अपने एक साथी के साथ चाय पी रहा था। विशेष मुखबिर ने चाय पीते समय चाय वाले से पूछ लिया, "भैया, मुमताज भाई कहां रहते हैं,

आपको पता हो तो बता दें।"

चाय वाले ने मुमताज की ओर संकेत करते हुए कहा, "यही हैं, मुमताज भाई।"

"कहिए, क्या काम है?" मुमताज ने मुखबिर को गौर से देखते हुए पूछा।

"हामिद भाई को तो आप जानते ही होंगे। उन्होंने ही आपके पास मुझे भेजा है।"

स्मरणीय है कि हामिद भी जाली नोट बनाता था और १९८८ में पकड़ा गया था।

"अच्छा।" मुमताज बोला।

"मुमताज भाई, मैं बहुत मुसीबत में हूं। पैसे की तंगी के कारण दो जून की रोटी जुटा पाना मुश्किल हो गया है। आप मेरी मदद करें।"

मुमताज कुछ क्षणों तक कुछ सोचता रहा, फिर बोला, "ठीक है कल सात बजे शाम इसी जगह मिलना। कल ही मैं यह निर्णय ले पाऊंगा कि मैं तुम्हारे लिये क्या कर सकता हूं।"

दूसरे दिन शाम को ठीक सात बजे विशेष मुखबिर चाय की दुकान पर आ गया। सवा सात बजे मुमताज आया और उसे अपने साथ लेकर ख्वाजगी टोला स्थित एक मकान पर पहुंचा।

जब विशेष मुखबिर ने मकान में प्रवेश किया तो उसकी आंखें आश्चर्य से फटी की फटी रह गयीं। कमरे में जाली नोट बनाने के उपकरण रखे हुए थे और रुस्तम तथा इकबाल नामक व्यक्ति जाली नोट बनाने में व्यस्त थे।

विशेष मुखबिर को देखते ही इकबाल बोला, "इसे यहां क्यों ले आये?"

"इनसे कोई खतरा नहीं है। यह हामिद भाई के आदमी हैं। अब यह भी हम लोगों के साथ काम करेंगे।"

इस प्रकार विशेष मुखबिर जाली नोट बनाने वाले गिरोह में शामिल हो गया।

२१ अगस्त, १९९० का दिन था। कोतवाली प्रभारी निरीक्षक सनमानसिंह भदौरिया अपने सहकर्मियों के साथ सरकारी जीप पर आरक्षण विरोधी छात्र आन्दोलन के सिलसिले में कानून व्यवस्था कायम रखने में व्यस्त थे कि इसी समय विशेष मुखबिर ने भदौरिया को सूचना

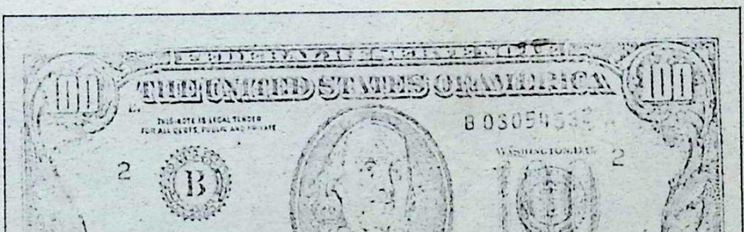

सौ डालर का जाली नोट

एस०पी० आर०एन० कठेरिया

दी कि जाली नोट बनाने वाले गिरोह को रंगे हाथों पकड़ना चाहते हों तो इसी समय मेरे साथ चलिए। श्री भदौरिया ने तत्काल एक पुलिस दल तैयार किया जिसमें एस०आई० रामरूप नाथ, एस०आई० राजाराम यादव, हेडकांसटेबल रामबदन यादव, हेडकांसटेबल परमेश्वर राय, हेड-कांसटेबल बड़े लाल यादव, कांसटेबल रामनाथ राम, ड्राइवर सूर्य प्रताप सिंह शामिल थे। इस पुलिस दल के साथ वह मुखबिर को लेकर मो० ख्वाजगी टोला स्थित इकबाल अहमद के मकान के पास पहुंच गये। विशेष मुखबिर ने दूर से ही मकान की ओर इशारा किया।

जब पुलिस दल इकबाल अहमद के मकान पर पहुंचा तो सहन के पश्चिमी कमरे की खिड़की और दरवाजे बन्द थे। जब उसने दरवाजे और खिड़की की दरार से झांक कर देखा तब उसने कुछ लोगों को काम करते देखा। पुलिस ने दरवाजा खटखटाया तो एक व्यक्ति ने दरवाजा खोला। सामने पुलिस को देखकर वह चिल्लाया, "भागो...भागो...पुलिस आ गयी।" पुलिस दल के लोग भीतर घुस गये। दरवाजा खोलने वाले व्यक्ति को पुलिस ने दबोच लिया और पूछा, "तुम्हारा नाम क्या है?"

"मेरा नाम रुस्तम है। मेरे पिता का नाम कमरुद्दीन है।"

"यहां मकान के भीतर तुम्हारे और कितने साथी हैं। तुम सब यहां क्या कर रहे थे?"

"साहब, हम सब घर के भीतर बैठकर आपस में बात कर रहे थे।"

"बात कर रहे थे या जाली नोट बना रहे थे। हम देख रहे हैं कि मकान के भीतर जाली नोट बनाने के उपकरण हैं और तुम कह रहे हो कि आपस में बात कर रहे थे।" पुलिस इंसपेक्टर ने कड़ाई से पूछा, तो रुस्तम टूट गया और बोला, "सर, यह बात सही है कि हम लोग भीतर जाली नोट बना रहे थे। हमारे अन्य साथी इकबाल अहमद पुत्र फतेह मोहम्मद, मुमताज पुत्र कमरुद्दीन थे। मुमताज मेरा भाई भी है और गिरोह का सरगना भी।"

पुलिस ने इकबाल और मुमताज को बहुत ढूंढ़ा, पर वे नहीं मिले। बाद में देखा गया तो मकान का उत्तरी द्वार खुला था। रुस्तम ने बताया कि पुलिस के आने पर दोनों उत्तरी दरवाजे से फरार हो गये हैं।

पुलिस ने जाली नोट बनाने वाले उपकरण, सौ रुपये के जाली नोट पचास अदद, दस रुपये के जाली नोट चालीस अदद, सौ रुपये के अर्धनिर्मित जाली नोट पन्द्रह अदद, अमरीकी डालर जाली नोट सौ डालर के तीन अदद, जाली अमरीकी नोट सौ डालर के नए बारह अदद, अमरीकी सौ डालर के दो ब्लाक, सौ रुपये

के तीन जाली ब्लाक, दस रुपये के दो जाली एक्सरे प्लेट पर छपा अंकों के दो ब्लाक, लोहे की प्लेट पर दस रुपये का जाली ब्लाक एक सेट, प्रेसर प्लेट लोहे की दो अदद, अंकों की जाली रबर मोहर लकड़ी पर बना पांच अदद, अमरीकी डालर की जाली मुहर लकड़ी पर बनी धातु की एक अदद बरामद किया।

पुलिस बरामद सामानों के साथ रुस्तम को लेकर थाने लौट आयी। पुलिस अधीक्षक कठेरिया सूचना पाने पर जब कोतवाली आये तो बरामद सामानों को देखकर दंग रह गये।

पुलिस ने अभियुक्तों के विरुद्ध भारतीय दंड विधान की धारा ४८९ ए०बी० सी०डी०, २६३ ए०/२५६/२५६ के अन्तर्गत मुकदमा दर्ज किया और जांच का कार्य एस०आई० बालकान्त चौबे को सौंप दिया।

थाने में रुस्तम से पूछताछ के फलस्वरूप मुमताज के जीवन के पिछले पृष्ठ खुले तो उसके जाली नोट बनाने की कथा इस प्रकार उभरकर सामने आयी:

जाली नोट बनाने वाले गिरोह का ३६ वर्षीय सरगना मुमताज जौनपुर शहर के सिपाह मोहल्ले का रहनेवाला था। वह बी०एस-सी० पास था। उसके पिता ने रिक्शा चलाकर और मां ने बीड़ियां बनाकर उसे उच्च शिक्षा दिलायी थी। बी०एस-सी० पास करने के पश्चात उसने एल-एल०बी० में दाखिला ले लिया लेकिन दूसरे वर्ष फेल हो जाने पर उसने पढ़ाई छोड़ दी। उसने शाही पुल स्थित शेरवाली मस्जिद के सामने ताले की दुकान खोल ली।

वह नौकरी भी ढूंढ़ता रहा। जब निराश हो गया तो बम्बई चला गया।

श्री सनमान सिंह भदौरिया

वहां उसने प्रिंटिंग का काम सीखा और पैरामाउन्ट प्रेस में काम करने लगा।

चार-पांच वर्ष बम्बई में रहने के बाद वह १९८० में जौनपुर लौट आया। यहां वह छपाई का काम करने लगा। संयोगवश उसका परिचय बनारस के हेमचन्द मौर्य नामक व्यक्ति से हो गया, जो जाली नोटों का धंधा करता था। महत्वाकांक्षी मुमताज अधिक धन कमाने की लालच में हेमचन्द मौर्य के गिरोह में सम्मिलित हो गया। ३० अगस्त १९८४ को मुमताज हेमचन्द मौर्य और नोखेलाल नामक साथियों के साथ जाली नोट बनाते हुए रंगे हाथ पकड़ा गया।

कुछ दिनों बाद मुमताज जमानत पर छूट गया। वह फिर जौनपुर में ही जाली नोटों का धंधा करने लगा। वर्ष १९८५ में जौनपुर पुलिस द्वारा वह अपने गिरोह के साथ पकड़ा गया।

जमानत पर रिहा होने के बाद मुमताज ने अपने गिरोह को पुनः संगठित

किया और जाली नोट छापने लगा। ६ जुलाई १९८८ को जौनपुर पुलिस ने उसके गिरोह के हामिद हुसैन, शमशेर उर्फ पप्पू और जमीर को बलोच टोला स्थित एक मकान में जाली नोट छापते हुए पकड़ लिया। गिरोह का सरगना मुमताज फरार होने में सफल हो गया। पुलिस ने एक लाख तीन हजार सात सौ रुपये के जाली नोट अभियुक्तों के पास से बरामद किये।

मुमताज जाली नोट छापने का काम एक स्थान पर कभी नहीं करता था। दो-तीन माह बाद वह स्थान बदल देता था।

नोट छापने के लिये मुमताज छोटी प्रिंन्टिग मशीन का प्रयोग करता था। वह एक कुशल मशीनमैन था। २१ अगस्त १९९० को जाली नोट छापने के जो उपकरण पुलिस ने बरामद किये, उनमें प्रिंटिंग मशीन शामिल नहीं थी।

मुमताज छपाई का विशेषज्ञ था। वह प्रिंटिंग मशीन से नोट छापने के बजाय सारा काम हाथ से करता था। ब्लाक और एक्सरे प्लेट पर केमिकल की सहायता से नोट तैयार किये जाते थे। हाथ से तैयार किये जाने वाले नोट प्रिंटिंग मशीन पर छपे नोटों की अपेक्षा अधिक होते थे और असली लगते थे। फरार अभियुक्त इकबाल मुमताज और रुस्तम का बहनोई था। रुस्तम और इकबाल भी प्रिंटिंग के काम में माहिर थे। इकबाल जोगियापुर के एक प्रेस में कई वर्षों तक काम कर चुका था।

मुमताज के गिरोह ने अब तक लाखों रुपये के जाली नोट देश के विभिन्न शहरों में खपा दिये हैं। ये नोट आज भी चल रहे हैं। गिरोह के पास से बरामद जाली डालर इस बात के प्रमाण हैं कि यह गिरोह अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर जाली नोटों का धंधा करता था।

कथा लिखे जाने तक मुमताज और इकबाल फरार थे। ■

(कथा पुलिस सूत्रों पर आधारित)

४ मास की उम्र में बोलने वाला शिशु

प्रकृति की लीला विचित्र है। कभी-कभी तो वह ऐसी बातों को सत्य के रूप में साकार कर देती है, जिसकी हम स्वप्न में भी कल्पना नहीं करते। अकल्पनीय सत्यों को देखकर हम दांतों तले अंगुली दबाकर रह जाते हैं।

ऐसी ही एक विचित्र बात गोंदिया जिले के अर्जुनी मोरगांव नामक स्थान से बीस किलोमीटर दूर मनेरी गांव में हुई। वहां एक विचित्र बालक ने जन्म लिया है। यह तुलसीराम मोयर और सुमित्रा मोयर की आठवीं संतान है। यह आठ मास के गर्भ के बाद उत्पन्न हुआ था। यह विलक्षण बालक जब चार मास का हुआ, तब मां, बाबा और दादा शब्दों का उच्चारण करने लगा। इसकी इस विलक्षणता को देखकर लोगों ने दांतों तले अंगुली दबा ली।

इस बालक का नाम योगराज है। इसमें एक ही नहीं, कई विलक्षणताएं हैं। यह रोज सबेरे चार बजे उठ जाता है और फिर खाट पर नहीं सोता। यदि इसे खाट पर सुला दिया जाये तो यह खाट से नीचे गिर जाता है। इस विलक्षण बालक को देखने वालों का नित्य तांता लगा रहता है।

—सतीश पारथी

—गुरु-दक्षिणा—

(पृष्ठ ११ का शेष)

जंगल को साफ कराकर पांच कोस के घेरे में एक भव्य नगर बसाया है। उसने वहां एक दुर्ग का निर्माण भी कराया है।

राजा प्रतापादित्य के गुणों को सुनकर राजा मानसिंह प्रभावित हो गये। उन्होंने सोचा ऐसे राजा से यदि युद्ध के बिना ही मामला सुलझ जाये तो अच्छा हो। उन्होंने अपने दूत को बुलाया। तलवार और जंजीर देते हुए कहा, "तुम जंजीर और तलवार को लेकर राजा प्रतापादित्य के दरबार में जाओ और उनसे कहो कि इन दोनों वस्तुओं को मुगल सेनापति राजा मानसिंह ने भेजा है। आप इन दोनों में से किसी एक को चुन लें। आपके चुनाव पर ही युद्ध और शांति की संभावना निर्भर होगी।"

राजा मानसिंह के दूत ने राजा प्रतापादित्य के दरबार में उनके सामने तलवार और जंजीर रखकर कहा, "महाराज, युद्ध या शांति का फैसला करने के लिए मानसिंह ने ये दो चीजें भेजी हैं। आप इन दोनों में से किसी एक को चुन लें।"

राजा प्रतापादित्य का आत्म-सम्मान जाग गया। उनकी तेवर चढ़ गयी। उन्होंने जंजीर को नीचे गिरा दिया और उसे पैरों से रौंदा। उन्होंने तलवार उठा ली और कहा, "दूत, राजा मानसिंह से कहना कि मैंने तलवार चुनी है। मैं रणभूमि में उनका स्वागत करूंगा। उनकी भेजी गयी जंजीर पराधीनता की प्रतीक है, जिसे मैं अपनी अंतिम सांस तक नहीं स्वीकार कर सकता।"

जब दूत ने आकर बताया कि प्रतापादित्य ने तलवार को वरण किया और युद्ध-भूमि में स्वागत करने की बात कही है, तब राजा मानसिंह ने समझ लिया कि बिना युद्ध के मामला नहीं सुलझेगा। उन्होंने अपनी सेना को यशोहर राज्य पर हमला करने का आदेश दे दिया।

मांताल में मुगल सेना और प्रतापादित्य की सेना में घमासान युद्ध हुआ। प्रतापादित्य के सैनिकों ने अद्‌भुत वीरता का प्रदर्शन किया, किन्तु राजा मानसिंह के कुशल नेतृत्व और मुगल सेना की उत्कृष्ट व्यूह-रचना के कारण अंततः प्रतापादित्य हार गये। उन्होंने मानसिंह से संधि कर ली। उन्होंने अपनी अलग मुद्रा का प्रचलन बन्द कर दिया। उन्होंने मुगल साम्राज्य का एक अंग बनकर रहना स्वीकार कर लिया। पहले की ही तरह मुगल सम्राट को कर देना भी उन्होंने मंजूर कर लिया।

प्रतापादित्य से संधि हो जाने के बाद राजा मानसिंह अपने गुरुदेव के पुत्र की खोज में लग गये। उन्होंने चारों ओर अपने गुप्तचरों को पता लगाने के लिए भेजा, किन्तु कहीं पता न लगा। उन्होंने कालीघाट क्षेत्र में उस स्थान पर भी अपने आदमी भेजे, किन्तु वे भी असफल होकर लौट आये।

अन्ततः निराश राजा मानसिंह ने चारों ओर यह मुनादी कर दी कि "जो व्यक्ति कामदेव गंगोपाध्याय के पुत्र लक्ष्मीकांत का पता लगायेगा, उसे मनचाहा इनाम दिया जायेगा। स्मरणीय है कि कामदेव गंगोपाध्याय कालीघाट के जंगली क्षेत्र में फकीर डांगा में रहते थे। जब लक्ष्मीकांत शिशु थे तभी कामदेव गंगोपाध्याय उन्हें भगवान के भरोसे अकेला छोड़कर चले गये थे और संन्यासी हो गये थे।"

इस मुनादी के बाद भी जब काफी

दिनों तक लक्ष्मीकांत के संबंध में कोई सुराग न मिला, तब राजा मानसिंह चिन्तित हो गये। एक दिन वह यह सोच रहे थे कि अचानक एक आदमी उनके पास आया और बोला, "श्रीमन्, मेरा नाम शूद्रमणि है। मुझे मालूम हो गया है कि कामदेव गंगोपाध्याय का पुत्र लक्ष्मीकांत कहां है। मैं आपको उसका सही पता तभी बताऊंगा जब आप मुझे मेरा मनचाहा पुरस्कार देंगे।"

"मैं वचनवद्ध हूं। तुम जो चाहोगे, वह तुम्हें मिलेगा। तुम मुझे बताओ कि लक्ष्मीकान्त कहां है?" मानसिंह ने व्यग्रता के साथ कहा तो शूद्रमणि बोला, "तब आप शपथ लेकर कहिए कि पता बताने पर यदि लक्ष्मीकांत मिल गया तो आप मुझे पुरस्कार में पाटलिपुत्र का राजा बना देंगे।"

"मुझे स्वीकार है, शूद्रमणि। मैं तुम्हें पाटलिपुत्र का राजा बनाने का वचन देता हूं।" इतना कहकर मानसिंह पता जानने की उत्सुकता में अपने आसन से उठे और शूद्रमणि के करीब आ गये।

"महाराज प्रतापादित्य के राजस्व-विभाग में एक लक्ष्मीकांत नामक व्यक्ति काम करता है। वही कामदेव गंगोपाध्याय का पुत्र लक्ष्मीकांत है।"

"तुमने यह कैसे विश्वास कर लिया कि वही लक्ष्मीकांत है?"

"श्रीमन्, मैंने संन्यासी द्वारा शिशु लक्ष्मीकांत के गले में पर्ची बांधकर उसे अकेला छोड़कर चले जाने के बाद से उसके राजा प्रतापादित्य के यहां तक पहुंचने की सारी कहानी पता लगा ली है।"

"शूद्रमणि, मुझे सविस्तार सारी बातें बताओ।" राजा मानसिंह ने पूछा तो शूद्रमणि ने बताया, "कालीघाट के जंगल में कुछ संन्यासी तथा निम्नवर्ग के लोग रहते थे। कुछ संन्यासी फकीर डांगा से गुजर रहे थे, अचानक उन्हें एक शिशु का रुदन सुनायी पड़ा। शिशु अकेला पड़ा था। उसके गले में बंधी पर्ची से उन्हें पता लगा कि कोई उस शिशु को, जिसका नाम लक्ष्मीकांत है, भगवान के भरोसे छोड़ गया है।"

"तो फिर आगे क्या हुआ, शूद्रमणि?" राजा मानसिंह ने उत्सुकता से पूछा।

"महाराज, संन्यासी लोग उस शिशु को अपने साथ ले गये और उसका पालन-पोषण किया। उन्होंने उसका नाम लक्ष्मीकांत ही रहने दिया। धीरे-धीरे लक्ष्मीकांत बड़ा हुआ। संन्यासियों ने उसे वेद में पारंगत कर दिया।" इतना कहकर शूद्रमणि ने फिर विराम लिया।

"रुक क्यों गये, शूद्रमणि? बताओ आगे क्या हुआ?" राजा मानसिंह ने फिर उत्सुकता से कहा तो शूद्रमणि बोला, "महाराज उस समय कालीघाट अंचल यशोहर राज्य के अन्तर्गत था। यशोहर के राजा प्रतापादित्य के चाचा बसन्तराय बहुधा कालीघाट जाया करते थे। एक दिन उनकी दृष्टि लक्ष्मीकांत पर पड़ी। उसके वेदों के ज्ञान और प्रखर बुद्धि से वह प्रभावित हुए। उसके बारे में जब संन्यासियों ने सारी बातें उन्हें बतायीं तब वे द्रवित हो गये। वह उसे अपने साथ यशोहर ले आये। उनके आग्रह पर राजा प्रतापादित्य ने लक्ष्मीकांत को राजस्व विभाग में नौकर रख लिया। अपनी कार्यकुशलता से लक्ष्मीकांत ने राजा प्रतापादित्य का मन मोह लिया। वह उनका भी प्रिय पात्र बन गया।"

"शूद्रमणि, मुनादी सुनने के बाद तुम्हारा ध्यान सहसा राजस्व विभाग में काम करने वाले लक्ष्मीकांत पर ही कैसे गया?" राजा मानसिंह ने पूछा तो शूद्रमणि ने बताया, "महाराज, मुझे राजा के चाचा बसन्तराय के एक विश्वासपात्र सेवक ने बताया था कि लक्ष्मीकांत निराश्रित था, किन्तु संन्यासियों के संग में रहने के कारण सुशिक्षित और वेद-पारंगत हो गया था। बसन्तराय जी उसे कालीघाट से अपने साथ ले आये थे। मुनादी में जब मैंने सुना कि लक्ष्मीकांत का पिता कालीघाट के जंगल में उसे अकेला छोड़ गया था, तब मेरे मन में यह विचार उठा कि हो न हो, राजस्व विभाग में काम करनेवाला लक्ष्मीकांत ही कामदेव गंगोपाध्याय का पुत्र है।"

राजा मानसिंह ने बसन्तराय से बात की तो उन्होंने भी शूद्रमणि की बातों की पुष्टि कर दी। उन्होंने अब लक्ष्मीकांत को बुलाया और उसे उसके जन्म की कथा, उसे त्याग कर उसके पिता के संन्यासी हो जाने तथा स्वयं उसके पिता से अपने दीक्षा लेने की घटना बता दिया। सारी बातें सुनने के बाद उसने राजा मानसिंह से कहा, "महाराज, क्या आप मुझे मेरे पिता से मिलवा देंगे?"

"हां, क्यों नहीं, यह तो मैं तुम्हारे कहने से पहले ही कहने वाला था। जानते हो, तुम्हारे पिता ने मुझसे गुरु-दक्षिणा में यही मांगा था कि मैं उन्हें तुमसे मिला दूं। तुम मेरे साथ उनके आश्रम चलो ताकि मैं गुरु-दक्षिणा देकर गुरु के ऋण से मुक्त हो जाऊं।"

सबेरे का समय था। अपने आश्रम के द्वार पर खड़ा वृद्ध संन्यासी बाहर की ओर देख रहा था। सहसा उसे एक सैनिक और एक युवक अपनी ओर आते दिखायी पड़े। सैनिक वेश वाले व्यक्ति को उन्होंने पहचान लिया। वह राजा मानसिंह थे। दूसरे युवक को वह नहीं पहचान पा रहे थे, किन्तु उनकी अन्तरात्मा कह रही थी कि वह उनका बिछुड़ा हुआ पुत्र लक्ष्मीकांत है, जिसे लेकर आज मानसिंह अपनी गुरु-दक्षिणा देने आ रहा है।"

आते ही राजा मानसिंह ने चरण-स्पर्श किया। उस युवक ने भी संन्यासी का चरण-स्पर्श किया। संन्यासी ने मानसिंह से पूछा, "मानसिंह, यह युवक कौन है?"

मानसिंह ने उत्तर दिया, "यह आपका पुत्र लक्ष्मीकांत है। मैं इसे लेकर आपके पास अपनी गुरुदक्षिणा देने आया हूं। मैं पिता पुत्र का मिलन कराने आया हूं।" इतना कहकर मानसिंह ने लक्ष्मीकांत से कहा, "यह तुम्हारे पिता कामदेव गंगोपाध्याय हैं। यह तुम्हें ईश्वर के भरोसे छोड़कर संन्यासी हो गये थे। मुझे इन्होंने दीक्षा भी दी थी। गुरुदक्षिणा में इन्होंने मुझसे कहा था कि मैं इन्हें इनके बिछुड़े पुत्र से मिला दूं। आज मैं यहां उनकी इसी आकांक्षा को पूरा करने आया हूं।"

संन्यासी एकटक राजा मानसिंह को देख रहे थे। उनकी आंखों में आंसू थे। इन आंसुओं में स्नेह भी भरा था और प्रसन्नता की उमंग भी। लक्ष्मीकांत की आंखों में भी आंसू थे, किन्तु उनमें कृतज्ञता का भाव था। यह कृतज्ञता राजा मानसिंह के प्रति भी थी और ईश्वर के प्रति भी, जिसने असंभव स्वप्न को साकार कर दिया था।

युवक लक्ष्मीकांत आगे बढ़ा और संन्यासी के पैर पकड़ कर रोते हुए कहा, "पिता जी, अब मैं आपके ही पास रहकर

आपकी सेवा करना चाहता हूं। बोलिए, यह सौभाग्य मुझे दीजियेगा या नहीं।"

संन्यासी ने पुत्र को उठाते हुए कहा, "उठो, लक्ष्मीकांत उठो। मैं अपनी भूल के लिए क्षमा चाहता हूं। तुम्हारी मां की मृत्यु ने मुझमें वैराग्य उत्पन्न कर दिया था। मेरा कर्त्तव्य था कि मैं पिता के धर्म का पालन करता और तुम्हारा पालन-पोषण करता। मैंने अपने धर्म से विमुख होकर बहुत बड़ा पाप किया है। मैं अपराधी हूं, पुत्र। मुझे क्षमा कर दो।"

लक्ष्मीकांत ने आश्चर्य से पिता को देखा और फिर कहा, "मुझसे क्षमा मांग कर आप मुझे गर्त में क्यों गिरा रहे हैं। पिता चाहे कितनी बड़ी भूल क्यों न करे, किन्तु पुत्र की दृष्टि में वह पिता ही है।"

संन्यासी चुप रहे। वे न जाने क्या सोचते रहे। पुत्र ने उनका ध्यान तोड़ा और कहा, "मैं तो पिता की सेवा करके पुत्र-धर्म का पालन करना चाहता हूं। आप मुझे उससे वंचित क्यों कर रहे हैं?"

"गुरुदेव, लक्ष्मीकांत ठीक ही तो कह रहा है।" राजा मानसिंह ने बीच में ही विनम्रता के साथ कहा।

मानसिंह, एक लम्बे समय के पश्चात एक पुत्र को उसके पिता से मिलवा कर तुमने अद्भुत गुरुदक्षिणा दी है। तुमने अपने कर्त्तव्य को पूर्ण किया है। एक पुत्र अपने पिता की सेवा कर अपने कर्त्तव्य का पालन करना चाहता है। एक छिपकली के बच्चे को उसकी मां की अनुपस्थिति में आहार जुटाकर सृष्टिकर्त्ता ने अपने दायित्व का पालन किया। अपने शिशु पुत्र को घने जंगल में असुरक्षित छोड़ कर मैंने अपने कर्त्तव्य से मुंह मोड़ा। विधाता ने मेरी अनुपस्थिति में उसकी परवरिश कर अपने कर्त्तव्य का पालन किया। इस तरह सभी ने अपना-अपना कर्त्तव्य निभाया। केवल मैं ही अपना कर्त्तव्य नहीं निभा पाया।"

कुछ देर चुप रहने के बाद उन्होंने अपने पुत्र से कहा, "पुत्र, मनुष्य का सबसे बड़ा कर्त्तव्य जन-सेवा है। उसका धर्म संसार के सुख-दुख में सहभागी होना है, उससे भागना नहीं। कर्त्तव्य का पालन विराग में नहीं होता, अनुराग में होता है। पुत्र, दु:ख जीवन का अभिन्न अंग है। जीवन से भागने से शांति नहीं मिलती। मेरी तरह तुम भूल मत करो। जाओ, गृहस्थ जीवन में लौट जाओ। सर्वसाधारण के दु:ख में सहभागी बनो। यही तुम्हारी मेरी सेवा होगी। बोलो, अब तो नहीं कहोगे कि मैं तुम्हें अपनी सेवा से वंचित कर रहा हूं।"

लक्ष्मीकांत अपने पिता के आदेशानुसार वापस बंगाल लौट गया। वह सर्वसाधारण की भलाई में जुट गया।

राजा मानसिंह ने अपने वचन का पालन करते हुए शूद्रमणि को पाटलिपुत्र का राजा बना दिया। उन्होंने बंगाल को तीन भागों में बांट दिया। एक भाग का राजस्व अधिकारी लक्ष्मीकांत को बना दिया। लक्ष्मीकांत को उन्होंने जागीर भी दी, जिसके अन्तर्गत कलिकाता, भागुरा, घासपुरा, परिकान और अनवरपुर के परगनों के अतिरिक्त हेतेगढ़ परगने के भी कुछ भाग शामिल थे। उन्होंने लक्ष्मीकांत को चौधरी की उपाधि भी प्रदान की।

लक्ष्मीकांत के वंशज विद्याधर राय चौधरी ने कालांतर में कलकत्ता के प्रसिद्ध कालीघाट मंदिर की प्रतिष्ठा करके उस स्वप्न को साकार कर दिया, जो कभी उनके संन्यासी पूर्वज कामदेव गंगोपाध्याय की पत्नी पद्मावती ने देखा था।

■

—दस्ते इंतकाम—

(पृष्ठ १९ का शेष)

और उसकी कीमत में खासा इजाफा हो गया था। मैं जमीन बेचना नहीं चाहती थी। मुझे अब भी उम्मीद है कि एक दिन उनकी जमीन वापस मिल जायेगी और उनके घर में भी खुशहाली आ जायेगी।

मैंने इलाके के दो सम्मानित व्यक्तियों से कहा कि वे उस बेवा की मदद करें और जमीन वापस दिलाने की कोशिश करें।

वे दोनों सम्मानित व्यक्ति असफल वापस आ गये। चौधरी ने न सिर्फ जमीन के मामले में सहयोग करने से इंकार कर दिया, बल्कि मेरे बारे में धमकी भरे शब्द भी कहे। उसने कहा, "मलिक सफदर हयात से कह देना कि हमारे मामले में दखलअंदाजी न करें, वरना मैं उसे लाइन-हाजिर करवा दूंगा। इतनी पहुंच है मेरी।"

उसके दो-तीन रोज बाद वह थाने पहुंचा और बगैर किसी भूमिका के बोला, "मलिक साहब, मैं अशरफ नाम के शख्स के खिलाफ परचा कटवाना चाहता हूं। उसने मुझे कत्ल की धमकी दी है।"

मैंने पूछा, "यह अशरफ कौन है?"

"मलिक साहब, यह उसी बुढ़िया का बेटा है, जो रोज आपके पास आंसू बहाने आ जाती है। वही सिराज बीबी..."

मैंने कहा, "ठीक है। चौधरी साहब, मैं उसे थाने बुलवा रहा हूं।"

मैंने एक सिपाही को अशरफ को बुलाने के लिए सिराज बीबी के घर भेज दिया। मेरे कहने पर चौधरी ने सिपाही को सिराज बीबी का पता नोट करा दिया।

तकरीबन आधे घंटे बाद वह सिपाही अशरफ को साथ लेकर आ गया। अशरफ छब्बीस-सताईस साल का एक दुबला-पतला युवक था। वह कुछ भयभीत सा था। उसकी नजर चौधरी पर पड़ी तो वह गर्दन झुकाकर याचक अंदाज में दोनों हाथ सलाम के लिए बढ़ाये, लेकिन चौधरी ने यह कहते हुए मुंह फेर लिया—"उधर बात करो। तुझे थानेदार ने बुलाया है।"

चौधरी का रुख देखकर मैं चकित रह गया। उस युवक के रवैये को देखकर मुझे यकीन नहीं होता था कि वह किसी को धमकी दे सकता है। मैंने उससे पूछा, "अशरफ, तुम चौधरी को कब से जानते हो?"

"मैं इन्हें अच्छी तरह जानता हूं। मैं छोटा सा था जब पहली बार यह मेरे घर आये थे। मुझे दुख है कि आज इन्होंने मेरा सलाम भी कबूल नहीं किया।"

मैंने चौधरी को एक बार देखा और फिर गंभीर होकर अशरफ से पूछा, "अशरफ क्या तुमने चौधरी को कत्ल करने की धमकी दी है?"

अशरफ ने हैरानी से उत्तर दिया, "नहीं जनाब, मैं ऐसा हरगिज नहीं कर सकता। चौधरी साहब हमारे बुजुर्ग हैं। यह बात गलत है।"

मैंने चौधरी से कहा, "चौधरी साहब, क्या अशरफ के मां-बाप में से किसी ने अपनी जमीन आपके पास गिरवी रखी है?"

"यह एक अलग मामला है, मलिक साहब...मैंने इसके बाप के लिए बहुत कुछ किया है। यह बात सच है कि इसने मुझे धमकी दी है। मेरे पास गवाह हैं। आप इसके खिलाफ पर्चा काटें और कानूनी कार्रवाई करें। यह बात तब अपने आप सामने आ जायेगी कि इसने मुझे कत्ल की धमकी दी है या नहीं। चौधरी ने

इतना कहा तो मैंने हेड क्लर्क को बुलाकर चौधरी की रिपोर्ट भी दर्ज करा दी और यह भी दर्ज करा दिया कि सिराज बीबी ने अपनी तीन मुरब्बा जमीन छह हजार रुपये में चौधरी गुलाम कादर के पास गिरवी रखी थी। अठारह साल बीत जाने के बाद भी सिराज बेगम कर्ज अदा नहीं कर पायी। यही कारण है कि सिराज के बेटे अशरफ के दिल में रंजिश है। इसी रंजिश की वजह से उसने चौधरी को कत्ल की धमकी दी है।

रिपोर्ट दर्ज हो जाने के बाद मैंने उस पर चौधरी के हस्ताक्षर करवा लिये। मैंने चौधरी द्वारा बताये गये गवाहों के भी बयान लिये और उनसे भी कहलवा लिया कि सारा झगड़ा गिरवी रखी जमीन के कारण है।

अशरफ को मैंने थाने में बैठा रखा और फिर यह समझा कर घर भेज दिया कि वह एक-दो रोज घर से बाहर न निकले।

तीसरे रोज़ मैंने सिराज बीबी को थाने बुलाया और उसकी तरफ से चौधरी गुलाम कादर के खिलाफ खयानते मुजरिमाना का पर्चा कटवा दिया। उस रिपोर्ट का खुलासा इस प्रकार था–"चौधरी गुलाम कादर ने अठारह साल पहले छह हजार रुपये के बदले में सिराज बीबी की तीन मुरब्बा जमीन गिरवी रखी थी। मुद्दालिया यानी चौधरी साहब ने मुद्दई के बेसहारा होने का फायदा उठाते हुए रसीद में सूद की शर्त भी शामिल कर दी थी। मुद्दई असल रकम से कहीं ज्यादा रकम अदा कर चुकी है। गिरवी और कर्जे के मुआहदे के मुताबिक चौधरी को जमीन इस्तेमाल करने की इजाजत नहीं थी। फिर भी चौधरी ने मुआहदे की खिलाफ वरजी करते हुए मुद्दई की जमीन को पिछले अठारह साल से इस्तेमाल कर रहा है। मुद्दई ने दरख्वास्त की थी कि मुद्दालिया से न सिर्फ उसकी जमीन वापस दिलायी जाये, बल्कि अठारह साल की पैदावार का कम से कम आधा हिस्सा भी दिलाया जाये।"

रिपोर्ट दर्ज करने के बाद मैंने एक ए०एस०आई० को तफ्तीश के लिए भेजा। उसने लौट कर बताया कि चौधरी ने उसे लम्बी-चौड़ी रिश्वत देने की पेशकश की, किन्तु उसने इनकार कर दिया और चौधरी से कह दिया, "यह मामला अब हमारे हाथ में नहीं है। हमें ऊपर से हिदायत मिली है कि बेवा के साथ इंसाफ किया जाये।"

शाम को चौधरी अपने कुछ साथियों के साथ थाने आया। कुछ देर तो वह बाहर बैठा रहा। बाद में मैंने उसे भीतर बुला लिया। उसके साथी बाहर ही बैठे रहे। भीतर आते ही उसने कहा, "मुझे पता चला है कि सिराज बीबी ने मेरे खिलाफ पर्चा कटवा दिया है...मलिक साहब, यदि आप रिश्वत चाहते हैं तो बताइए इस मामले को रफा-दफा करने के लिए आप कितना पैसा लेंगे?"

"चौधरी साहब, इस केस में सौदेबाजी नहीं हो सकती।"

"मेरा खयाल है कि आप ऊपर वालों से डरते हैं। अच्छा, एक काम और करें। सिराज बीबी को बुलवा लीजिए और हमारा राजीनामा करा दीजिए।"

"यह बात आपकी माकूल है। मैं सिराज बीबी और उसके बेटे अशरफ को यहां बुलाये लेता हूं।"

मैंने सिपाही भेजकर सिराज बीबी और उसके बेटे अशरफ को थाने बुला

लिया। सिराज बीवी के आने से पहले मैंने पूछा, "चौधरी साहब, क्या आप सिराज बीबी की जमीन छोड़ना पसन्द करेंगे ?"

"मलिक साहब, यह तो मैं किसी भी हालत में पसन्द न करूंगा। मैंने जी तोड़ मेहनत करके उस जमीन को काश्त के काबिल बनाया है। एक बात और भी है। हम यह बर्दाश्त नहीं कर सकते कि एक छोटा खानदान हमारे मुकाबले में खड़ा हो जाये और जमींदार व चौधरी कहलवाने लगे। मलिक साहब, इस बात पर तो हम सिर कटवा दिया करते हैं या सिर काट दिया करते हैं।"

"चौधरी साहब, राजीनामा दो तरफा होता है, एकतरफा नहीं। वैसे मैं सिराज बीबी को समझाऊंगा कि वह अपनी जमीन आपके हाथ बेंच दे।

"मैं भी यही चाहता हूं, मलिक साहब। अगर वह इस बात पर राजी नहीं होगी तो नुकसान उठायेगी।" मुझे उसकी धमकी भरी बात बुरी तो जरूर लगी, पर मैंने कुछ कहा नहीं।

इसी समय सिराज बीबी, अशरफ और बूढ़े पटवारी मुहम्मद हुसैन के साथ थाने आ गयी। पटवारी को देखते ही चौधरी की तेवर चढ़ गयी। उसने पटवारी से पूछा, "आप किस सिलसिले में यहां आये हैं ?"

बूढ़े पटवारी ने कहा, "मैं सिराज बीबी के कहने पर यहां आया हूं। दो सुलह करने वालों के बीच गवाह का होना बहुत जरूरी है। चौधरी साहब आप फिक्र न करें। मैं कोई नाइंसाफी नहीं करूंगा।"

इसी बीच सिराज बीबी ने कहा, "चौधरी साहब, मुझे मेरा हक दे दीजिए।"

चौधरी ने उपेक्षा के स्वर में कहा, "तुम्हारा कुछ भी हक नहीं है। तुम्हारी जमीन अठारह साल पहले हमारी हो चुकी है। तुमने ६ महीने के वादे पर कर्ज लिया था और वह मुद्दत बीत गयी है। अगर मुद्दत के भीतर कर्ज अदा नहीं किया जाता, तो गिरवी रखी चीज जब्त हो जाती है। मैं तुम्हें इस जमीन के लिए दस हज़ार रुपये दे सकता हूं। अगर मलिक साहब कहेंगे, तो कुछ और इजाफा कर दूंगा। इससे ज्यादा मुझसे कोई उम्मीद न रखो।"

सिराज बेगम ने उत्तर दिया, "चौधरी साहब, मैं इस तरह जमीन नहीं बेचूंगी। पहले मुझे जमीन पर कब्जा मिलना चाहिए और फिर बेचने की बात होगी। कब्जा मिलने के बाद जब कभी मैं जमीन बेचूंगी तो खरीदारी पर पहला हक आपका होगा। वैसे जमीन की कीमत इस समय बीस से पचीस हजार रुपये की मुरब्बा है। मेरी तीन मुरब्बा जमीन साठ-सत्तर हजार रुपये की है।"

"सिराज बीबी, जमीन को भूल जाओ।" चौधरी ने गुस्से में कहा तो मुहम्मद हुसैन पटवारी ने कहा, "चौधरी साहब, ठंडे दिल से बातचीत करके कोई समझौता कर लो। गुस्से से बात नहीं बना करती।"

मैंने कहा, "चौधरी साहब, पहले तो यह बतायें कि कर्ज की रकम क्या है और फिर यह बतायें कि कर्ज की कितनी रकम अब अदा करने के लिए बाकी है ?"

सिराज बीबी ने कहा, "कर्ज की कुल रकम पांच हजार थी।"

चौधरी ने कहा, "मलिक साहब, कर्ज की रकम पांच हजार नहीं बल्कि छह हजार थी।"

सिराज बीबी ने कहा, "कागज में तो छह हजार रुपये ही कर्ज की रकम लिखी है, किन्तु वास्तविकता यह है कि रकम पांच हजार रुपये ही है। एक हजार रुपये चौधरी ने मेरे शौहर के मुकदमे पर खर्च करने का वादा किया था। उसने रुपये खर्च भी नहीं किया, उल्टे उसे कर्ज की असली रकम में शामिल कर लिया। इसने मेरे शौहर के खिलाफ अदालत में बयान दिया और उसकी सजा करवा दी।"

मैंने कहा, "उसमें बहस की जरूरत नहीं है। मैं वही रकम मान लेता हूं, जो कागज में लिखी है। क्यों जी चौधरी साहब, ठीक है न।"

"जी हां, बिल्कुल ठीक है, मलिक साहब।"

"सिराज बीबी, अब तुम बताओ कि कर्ज की कितनी रकम अदा कर चुकी हो?"

"अल्लाह आपका भला करे। बीस हजार से ज्यादा दे चुकी हूं। मेरे पास चौधरी साहब के हाथ की लिखी हुई रसीदें हैं।

पटवारी यह सुनकर हैरान रह गया। उसने कहा, "बीस हजार से ज्यादा दे चुकी हो और अभी तक कर्ज अदा नहीं हुआ।"

चौधरी साहब ने कहा, "मुहम्मद हुसैन इसमें हैरान होने की कोई बात नहीं है। कर्ज सूद पर लिया गया था।"

"अच्छा चौधरी साहब, यह बताएं कि अब कर्ज की कितनी रकम बाकी है?" मैंने इतना कहा तो पहले चौधरी ने टालमटोल की, किन्तु बाद में बताया, "मेरे हिसाब से रकम तकरीबन दस हजार रुपये और निकलती है।"

"चौधरी साहब, मैं कर्ज की रसीद देखना चाहता हूं।"

"मलिक साहब, आप बेशक रसीद देख लें। मैं अपना आदमी भेज कर अभी रसीद मंगवाये देता हूं। आप इस झगड़े का फैसला आज ही कर दें।" इतना कहकर चौधरी ने अपना एक आदमी रसीद लाने के लिए घर भेज दिया।

बीस मिनट में वह आदमी रसीद लेकर वापस आ गया। मैंने रसीद देखा। रसीद के मुताबिक सिराज बीबी ने ६ हजार रुपये बतौर कर्ज बीस फीसदी सालाना सूद पर लिया था। उसने अपनी तीन मुरब्बे जमीन उस कर्ज के बदले में गिरवी रखी थी। सूद के बारे में यह स्पष्ट नहीं था कि वह सूद दर सूद था। इसलिए लिखित के अनुसार वह सादा सूद ही था। ऐसी भी कोई शर्त नहीं थी कि चौधरी जमीन का इस्तेमाल कर सकता है या जमीन की आमदनी खुद अपने पास रख सकता है।"

मैंने मुहम्मद हुसैन पटवारी से कहा, "मेहरबानी करके आप मुझे हिसाब लगाकर यह बताएं कि बीस फीसदी सालाना के हिसाब से छह हजार रुपये का अठारह साल का ब्याज कितना हुआ?"

मुहम्मद हुसैन ने उत्तर दिया, "थानेदार साहब, ब्याज तो इक्कीस हजार छह सौ रुपये हुआ। अगर इसमें असली रकम भी मिला लें तो कुल रकम सत्ताइस हजार छह सौ होती है।"

मैंने चौधरी से कहा, "चौधरी साहब, सिराज बीबी आपको बीस हजार रुपये दे चुकी है। अब उसके जिम्मे आपका करीब साढ़े सात हजार रुपये और निकलता है।"

"नहीं थानेदार साहब, असल रकम इससे बहुत कम होगी, क्योंकि जो रकम अदा हो चुकी है, उस पर सूद नहीं लगाया

जा सकता।" पटवारी मुहम्मद हुसैन ने इतना कहा तो चौधरी की भौंहों पर पहले तो बल पड़े, फिर अपने को संभालते हुए वह बोला, "हिसाब-किताब को गोली मारो जी। मैं इन लोगों को बारह हजार रुपये दे दूंगा।"

मैंने चौधरी से कहा, "अगर आप जमीन खरीदना चाहते हैं, तो जमीन का वाजिब दाम लगाइए और मामला खत्म करिए। वैसे आजकल जमीन बीस-इक्कीस हजार मुरब्बा से कम नहीं है। इस हिसाब से तीन मुरब्बा जमीन का मूल्य साठ-पैसठ हजार रुपये से कम नहीं होगा।"

"और वह जो हम जमीन पर मेहनत करते रहे, उसका क्या हिसाब-किताब होगा?" चौधरी ने झल्ला कर कहा तो सिराज बीबी बोली, "हमने जमीन गिरवी रखी थी, पट्टे पर नहीं दी थी। आप जमीन को इस्तेमाल नहीं कर सकते थे, चौधरी साहब।"

चौधरी ने कहा, "सिराज बीबी, तुमने मेरा पैसा इस्तेमाल किया तो मैंने तुम्हारी जमीन इस्तेमाल कर ली। इसमें कौन सी बुरी बात हो गयी?"

अशरफ ने उत्तर दिया, "हमने पैसा इस्तेमाल करने का सूद दिया। आपने ज़मीन की पैदावार में से हमें क्या दिया?"

चौधरी उबल पड़ा, "तेरे बाप ने मुझे जमीन इस्तेमाल करने का अख्तियार दिया था।"

मैंने कहा, "चौधरी, आपने कर्ज से संबंधित जो कागजात मुझे दिखाये हैं, उनमें ऐसी बात तो कहीं नहीं कही गयी है।"

इसी बीच सिराज बीबी ने पटवारी मुहम्मद हुसैन से बातें करने के बाद कहा, "चौधरी साहब, आप मेरे पैसों का हिसाब कर दें। मैं आपको बकाया रकम कल तक अदा कर दूंगी।"

"ऐसा नहीं हो सकता। इस जमीन पर कब्जा करने का खयाल निकाल दो। यह जमीन मेरी है और मेरे ही पास रहेगी।" चौधरी ने गुस्से में कहा तो पटवारी मुहम्मद हुसैन बोला, "चौधरी यतीमों का माल न खाओ। यह हजम नहीं होगा। जो लोग जुल्म से यतीमों का माल खाते हैं, वे पेटों में यकीनन आग भरते हैं और यह भी तय है कि वे जलती आग में दाखिल होंगे।"

चौधरी ने कटाक्ष भरी मुद्रा में कहा, "किधर आग? मुझे तो वह कहीं नजर नहीं आती।"

मुहम्मद हुसैन ने कहा, "चौधरी, एक बात अच्छी तरह सुन लो। जिस दिन आग नजर आयेगी, उस दिन तुम्हें बचने का रास्ता नहीं दिखायी पड़ेगा। इसलिए खुदा से डरो।"

"अच्छा अब चुप रहो। मुझे सब मिलीभगत लगती है। इस तरह के ड्रामे मैंने बहुत देखे हैं। मैं समझ गया, इस तरह बात हरगिज नहीं बनेगी।" चौधरी ने इतना कहा तो मैंने भी कुछ कड़ा रुख अपनाया और कहा, "मेरा भी यही खयाल है, चौधरी साहब। इस तरह सच-मुच बात नहीं बनेगी। अगर आप सहयोग नहीं करेंगे तो मुझे अपने कानूनी अधिकार उपयोग में लाने होंगे।"

मेरी बात सुनते ही चौधरी उफन पड़ा, "शौक से अपने अधिकारों का उपयोग कर लें। आप मुझे ज्यादा से ज्यादा गिरफ्तार करेंगे और मुझ पर मुकदमा चलायेंगे। ज्यादा से ज्यादा उनके हक में डिग्री हो जायेगी। और क्या होगा? जमीन तो मेरी ही रहेगी। मलिक साहब,

मैं तो जा रहा हूं, मगर जाते-जाते इतना जरूर कहूंगा कि मेरा खानदान इसी इलाके में आबाद रहेगा और आप जैसे थानेदार आते-जाते रहेंगे।"

इतना कहकर चौधरी पैर पटकता हुआ चला गया।

इस घटना के पांचवें दिन ही पटवारी मुहम्मद हुसैन की बात सच हो गयी। अपने इर्द-गिर्द आग का एहसास न करने वाले चौधरी गुलाम कादर को खुदा ने ऐसी आग दिखा दिया कि उसे बचने का रास्ता नजर ही नहीं आया।

गर्मी का मौसम था। दोपहर का समय था। उस समय मैं एक तफ्तीश के सिलसिले में चौधरी गुलाम कादर की हवेली से कुछ ही दूर पर गया था। अचानक 'आग लगी', 'आग लगी' का शोर सुनायी पड़ा। मैंने आगे बढ़कर लोगों से पूछा तो पता लगा कि चौधरी गुलाम कादर की हवेली में आग लगी है।

मैं वहां से सीधे हवेली पहुंच गया। उस समय हवेली चारों तरफ से आग की लपेट में थी। लोग पानी भरी बाल्टियां उठाये इधर-उधर दौड़ रहे थे। आगे जाने की हिम्मत किसी की नहीं हो रही थी। आग इतनी तेज थी कि पन्द्रह-बीस गज के फासले तक आग की तपिश महसूस हो रही थी। चौधरी का पूरा खानदान आग से घिरा था। औरतें चीख-पुकार कर रही थीं। लोग पानी की बाल्टियों से पानी आग की तरफ दूर से ही फेंक रहे थे। चूंकि पानी आग तक पहुंच नहीं पाता था इसलिए आग बुझने का कोई सवाल ही नहीं था।

इसी समय सेहन में ज्यादा शोर सुनायी पड़ा। भीड़ उधर ही दौड़ पड़ी। मैं भी वहां पहुंच गया। सेहन के एक तरफ शयन-कक्ष की एक खिड़की खुली हुई थी। खिड़की तक तो आग की लपटें नहीं पहुंची थीं, किन्तु जिस बरामदे में वह खिड़की थी, वह बरामदा पूरी तरह से आग की लपेट में आता जा रहा था। खिड़की के पास एक चीखती हुई आकृति नजर आ रही थी, जो लोगों से मदद मांग रही थी। वह आकृति खुली होने के बावजूद खिड़की से बाहर नहीं आ सकती थी, क्योंकि खिड़की पर मजबूत सलाखें लगी थीं। लोग उस आकृति को बचाना तो चाहते थे, किन्तु जब वे आगे बढ़ते थे तब वे आग की तपिश को महसूस करके पीछे लौट आते थे।

इसी समय कुछ लोग एक लम्बा सा शहतीर उठा लाये और उससे दरवाजे पर ठोकर मारने लगे। इसी समय मैंने देखा कि दरवाजे में बाहर से कुंडी लगी थी। मैं समझ गया कि यह उसी बदमाश की कारगुजारी होगी, जिसने हवेली में आग लगायी है।

शहतीर से दरवाजे पर लगातार ठोकरें मारने के कारण दरवाजे के दोनों पट फर्श पर गिर गये। वे आधे से ज्यादा जल चुके थे। दरवाजा गिरते ही खिड़की के पास खड़ी आकृति बाहर आने के लिए आगे बढ़ी, किन्तु जैसे ही उसने बरामदे में कदम रखा, वैसे ही एक जलता हुआ शहतीर उसके सिर पर गिरा और वह शहतीर के साथ फर्श पर ढेर हो गयी। बाहर खड़े लोगों की बेसाख्ता चीखें निकल गयीं।

कुछ लोगों ने अपने को खतरे में डालकर आगे बढ़कर उस आकृति को पैर से बाहर घसीट लिया। वह आकृति चौधरी गुलाम कादर की थी, जिसका जिस्म तक जल चुका था। उसकी तरफ देखकर

दिल पर भय छा जाता था। वह मर चुका था।

आग में चौधरी गुलाम कादर के एक बेटे को छोड़कर परिवार के शेष सभी व्यक्ति जलकर मर गये थे। कुल ६ व्यक्तियों की जान गयी थी। जो बेटा बच गया था, उसका नाम फरीद कादर था। वह पैदाइशी पागल था।

अगले रोज जब एक ही वक्त में ६ जनाजे उठे, तो हर व्यक्ति गमजदा था, किन्तु फरीद उछल-उछल कर तालियां बजा रहा था। उसके खयाल में वह कोई तफरीही मेला था।

मैं इस बात का पता लगाने में लगा था कि आखिर हवेली में आग किसने लगायी। अगले दिन रज्जब अली नाम का एक व्यक्ति दो-चार आदमियों के साथ थाने आया। रज्जब अपने को चौधरी का रिश्तेदार बताता था। उसने मुझसे कहा, "थानेदार साहब, अशरफ के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कर लीजिए। आग उसी ने लगायी है। उसने चौधरी को जान से मार डालने की धमकी दी थी। यह बात आप भी अच्छी तरह जानते हैं। चौधरी ने स्वयं थाने आकर आपको यह बताया था कि अशरफ उन्हें कत्ल करने की धमकी दे रहा है।"

"ठीक है। मैं अशरफ को थाने बुलाकर पूछता हूं। अगर उसके विरुद्ध आग लगाने का सबूत मिल गया तो मैं उसके साथ कड़ा रुख अपनाऊंगा और उसे कड़ी से कड़ी सजा दिलवाऊंगा।" मैंने इतना कहा तो रज्जब और उसके साथी संतुष्ट होकर घर लौट गये।

उसी दिन मैंने अशरफ को थाने बुलाया। अशरफ के साथ उसकी मां सिराज बेगम भी थी। मैंने अशरफ से कहा, "अशरफ, गुलाम कादर के आदमियों का कहना है कि तुमने गुलाम कादर की हवेली में आग लगाने की धमकी दी थी?"

अशरफ ने कहा, "यह बात सरासर गलत है। खुदा का शुक्र है कि उसने मुझे बचा लिया, वरना चौधरी गुलाम कादर ने मुझे, मेरी मां, मेरी बहन और उसकी दो बेटियों को मौत के घाट उतार दिया होता।"

"सारी बातें विस्तार के साथ बताओ।" मैंने इतना कहा तो अशरफ बोला, "जिस रोज यहां थाने में आपके सामने हमारी चौधरी से बात हुई थी, उससे अगले रोज चौधरी गुलाम कादर का बेटा जमाल कादर कुछ गुंडे लेकर हमारे घर गया था। वह और उसके साथ आये हुए गुंडे जबरन भीतर घुस गये और हमें घसीटने लगे। उस रोज हमारी शादी-शुदा बहन तथा उसकी दो अल्पवयस्क लड़कियां भी आयी थीं। उन सबने मेरी बहन और उनकी बेटियों के बाल पकड़कर घसीटे। जमाल कादर ने मुझे थप्पड़ मारा और कहा, "तुमने मेरे बाप के साथ सख्त बदकलामी की है।"

इतना कहकर अशरफ ने क्षण भर के लिए विराम लिया और फिर कहा, "मैंने उनसे कहा कि मैंने बदकलामी नहीं की है। यकीन न हो तो मलिक साहब से पूछ लें। मेरी इतनी बात सुनते ही जमाल आग बबूला हो गया और बोला, "फिक्र न कर। मलिक साहब का भी बन्दोबस्त हो जायेगा। सुना है, तुम जमीन के पैसे मांगते थे। तुम्हारी मां ने मेरे खिलाफ धोखा देही की रपट लिखायी है। आज हम झगड़ा खत्म करने आये हैं।"

"इतना कहकर जमाल कादर ने अपने एक साथी से कहा, "रज्जब नवाज,

चलो अपना काम शुरू करो। सिराज बीबी के घर के दोनों कमरों में मिट्टी का तेल अच्छी तरह छिड़क दो। इनमें से एक भी आदमी जिन्दा नहीं रहना चाहिए। जब रज्जब नवाज नामक बदमाश ने मिट्टी के तेल का कनस्टर उठाया तो मेरी मां घबरा गयी। वह जमाल कादर के कदमों में गिर पड़ी।"

इतना कहकर जब अशरफ फिर चुप हो गया तब मैंने उत्सुकता के साथ पूछा, "फिर आगे क्या हुआ?"

अशरफ तो चुप रहा, किन्तु सिराज बीबी ने आगे का हाल बताते हुए कहा, "बेटा, मैंने जमाल का पैर पकड़ कर कहा, 'बेटा, मुझ पर और मेरे बच्चों पर रहम करो। तुम जमीन पर काबिज रहो। मैं न जमीन मांगूगी और न पैसा। मैं अपने परिवार के साथ यह बस्ती छोड़कर चली जाऊंगी।' मेरी बात पर जमाल का रुख बदल गया। उसने रज्जब नवाज को मेरे घर में आग लगाने से रोक दिया। उसने कुछ सादे कागज और स्टाम्प पेपर निकाले और उस पर मुझसे तथा अशरफ से दस्तखत करवाये।

इसके बाद वह अपने साथियों के साथ मुझे यह धमकी देता हुआ चला गया—"मैं बस्ती छोड़ने के लिए सिर्फ तीन दिनों की मोहलत देता हूं। अगर तीन दिनों के बाद भी तुम सब यहां नजर आ गये तो तुम लोगों को अन्दर बन्द करके आग लगा दूंगा। तुम्हारा यह मकान रज्जब नवाज ने खरीद लिया है। दो हजार रुपये में। कोई पूछे तो बता देना कि जमीन भी हमने खरीद ली है। अब तुम्हारी इस इलाके में कोई जायदाद नहीं है।"

"मैंने जमाल से कहा, "बेटा, तीन दिन में हम कैसे घर खाली करेंगे। कम से कम पन्द्रह दिन की तो मोहलत दे दो।" इस पर जमाल ने कहा, "ठीक है, सात दिन में बस्ती छोड़ देना। अगर थानेदार पूछे तो कह देना कि तेरा हमारे साथ राजीनामा हो गया है और तुझे जमीन के बीस हजार रुपये मिल गये हैं।"

मैंने अशरफ अली से पूछा, "जिस दिन हवेली में आग लगी थी, उस दिन तुम कहां थे।"

उस दिन मैं अपने दोस्त साजिद अली के साथ लाहौर चला गया था, जहां मुझे मकान का बन्दोबस्त करना था, क्योंकि जमाल कादर ने हमारे परिवार को निर्धारित अवधि के भीतर मकान न छोड़ने पर जिन्दा जला देने की धमकी दी थी। मैं अपने दोस्त के साथ कल शाम को ही वापस आया हूं।"

मैंने रज्जब नवाज को भी थाने बुलाया। मैंने उससे कड़ाई से पूछा तो उसने यह स्वीकार किया कि वह जमाल कादर के साथ सिराज बीबी के घर गया था। उसके साथ जीरा तेली और चौधरी रज्जब अली भी थे। उसने यह भी स्वीकार किया कि उन सबने अशरफ, सितारा बीबी तथा आप के साथ ज्यादती की। उसके बयान से उन सब बातों की पुष्टि हो गयी कि अशरफ ने जो कुछ बताया था, वह पूर्णतः सत्य था।

मैंने जीरा तेली और रज्जब अली को भी थाने बुलाया और उन दोनों तथा रज्जब नवाज से सख्ती से पूछा कि चौधरी के बंगले में आग किसने लगायी है। उन तीनों ने इस घटना से अपनी अनभिज्ञता बतायी। जब उनसे कोई सुराग नहीं मिला तब मैं निराश हो गया।

मैं वहां से हवेली पहुंचा तो वहां

ए०एस०आई० ने बताया कि उसने बड़ी अजीब चीज देखी है, जिसकी वजह उसकी समझ में नहीं आ रही है। मैंने ए०एस० आई० से जब सारी बातें विस्तार के साथ बताने के लिए कहा तो वह बोला, "मुझे शयन-कक्ष में जली हुई चीजों के बीच एक चूहे का ढांचा मिला है। चूहे की दुम के करीब एक पतला सा तार भी मिला है। उसके एक सिरे को मोड़ कर आंख सी बना दी गयी है। मेरा अपना खयाल है कि यह तार चूहे की दुम के साथ जुड़ा था। जलने की वजह से यह दुम से अलग हो गया। दुम से बंधे तार के दूसरे सिरे पर जले हुए कपड़े की राख भी मिली है। एक चूहा बरामदे में पड़ा था। उसकी दुम से भी तार बंधा था। बरामदे में मिट्टी के तेल का कनस्टर भी मिला है।"

"इन सब चीजों के मिलने से तुम निष्कर्ष क्या निकालते हो?" मैंने पूछा तो ए०एस०आई० ने कहा, "बात बड़ी स्पष्ट सी लगती है। किसी ने चूहों की दुम के साथ मिट्टी के तेल से भिगोये गये कपड़े के टुकड़ों को बांध दिया और उसमें आग लगा दी। चूहों को कमरे के भीतर छोड़ने के बाद दरवाजों में बाहर से कुंडी चढ़ा दी गयी थी। ये चूहे कमरों के चारों ओर दौड़-दौड़ कर आग लगाते रहे।

अगले रोज मैंने हवेली के आस-पास रहने वालों से पूछताछ की, किन्तु कोई सुराग नहीं मिला। मैं चौधरी के पागल बेटे फरीद कादर के पास भी गया। मैंने उससे पूछा, "फरीद, जब आग लगी थी, तब तुम कहां थे?"

"आग..." उसने दोनों हाथ फैलाये, "तमाशा...बहुत सारे लोग...तमाशा... हो, हो...हो..."

अचानक मेरे मन में यह आया कि कहीं इसी ने चूहे की दुम से तार बांधकर उसमें मिट्टी के तेल से भीगे कपड़े बांध कर आग न लगायी हो। मैंने उससे कहा, "फरीद, चूहा...तुमने चूहा देखा?"

वह बोला, "चूहा...तमाशा...आग... चूहा...मैं...जीरा...तमाशा...हो, हो... हो..."

मैंने पूछा, "यह जीरा कौन है?"

फरीद फिर बोला, "मैं...चूहा... जीरा...आग...तमाशा..."

मैं समझ गया कि जीरा कोई अपराधी व्यक्ति है। बिना उसको गिरफ्त में लिये रहस्य नहीं खुलेगा। मैंने ए०एस०आई० से कहा, "तुम आस-पास पता करो और जीरा नाम के उस व्यक्ति को ले आओ, जो फरीद के पास उस दिन या उससे पहले आया हो, जबकि हवेली में आग लगी थी।

कोई आधे-पौन घंटे बाद ए०एस० आई० एक नौ-दस साल के लड़के को साथ लिये हवेली में पहुंच गया। लड़के के साथ उसका बाप भी था। दोनों के चेहरे उतरे थे। लड़के का नाम नजीर उर्फ जीरा था। जीरा को देखते ही फरीद खुशी में तालियां बजाने लगा और बोला।

"ओ आ गया...आहा, जीरा आ गया...।"

मैंने जीरे से पूछा, "जीरे, यह चूहों का क्या किस्सा है?"

इतना सुनते ही जीरा की आंखें खौफ से फैल गयीं। बोला, "कसम खुदा की, मेरा कोई कसूर नहीं है। मैंने तो कुछ भी नहीं किया। इसने, फरीद ने मुझको कहा था कि आओ, चूहों का तमाशा करते हैं।"

"घबराओ नहीं पुत्तर, हमने कब कहा है कि तुम्हारा कसूर है। वैसे हुआ क्या था? चूहे कौन लाया था?"

"चूहे तो जो पिंजरे में फंसे हुए थे। चार-पांच थे। चाची ने मुझे पिंजरा दिया और कहा कि चूहों को मार दो। मैं जाने लगा, तो फरीद ने मुझे रोक लिया। कहने लगा, आओ, चूहों का तमाशा करते हैं।"

"कौन-सी चाची ने पिंजरा दिया था?"

"फरीद की अम्मां ने।"

"अच्छा, फिर क्या हुआ?"

"जी, पहले तो हम चूहों को ऐसे ही छेड़ते रहे। फिर यह फरीद कहने लगा कि चूहों की दुम में कपड़ा बांध कर आग लगाते हैं। मैंने उसको मना भी किया, लेकिन यह नहीं माना...इसने हाथ पर कपड़ा लपेट कर चूहा पकड़ा और मैंने तार के साथ कपड़ा बांध कर तार को चूहे की दुम पर लपेट दिया।"

"कपड़े पर मिट्टी का तेल भी डाला था?"

"आहो जी, उसने कपड़े को कनस्तर में डुबोया था।"

"फिर क्या हुआ?"

"फिर यह माचिस ले आया और एक-एक चूहे के कपड़े को आग लगाकर छोड़ता गया। दो-तीन चूहे कमरों में घुस गये। मैंने फरीद से कहा कि अब तुम्हारे अब्बा जी तुम्हें बहुत मारेंगे। उसने डर के मारे सारे दरवाजे बंद कर दिये। थोड़ी देर बाद अंदर शोर मच गया। उधर भी आग लग गयी। हम डर के मारे बाहर भागे, तो फरीद की कनस्तर से टक्कर हो गयी और वह कनस्तर उलट गया।

बात खत्म करते ही उसने रोना शुरू कर दिया। वह बार-बार यही कहता था, "मैंने कुछ नहीं किया। मेरा कोई कसूर नहीं है।" प्रस्तुति: सुरजीत ■

आदमी के पेट में बीस साल तक थर्मामीटर

आप विश्वास करें या न करें, किन्तु यह सच है कि इंगलैण्ड में ब्राडफोर्ड में मोरिस नाम का एक ऐसा व्यक्ति है, जिसके पेट में २० साल तक थर्मामीटर पड़ा रहा और वह जीवित रहा।

वर्षों तक उसकी आंतों में थर्मामीटर के पड़े रहने के बाद एक दिन अचानक मोरिस के पेट में दर्द हुआ। वह डाक्टर के पास गया, जहां एक्सरे के बाद पता चला कि उसके पेट में थर्मामीटर है। डाक्टरों ने पेट का आपरेशन किया और थर्मामीटर को निकाल लिया। आपरेशन के बाद डाक्टरों को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि थर्मामीटर ठीक है और काम कर रहा है।

डाक्टर ने कहा, "मुझे तो आश्चर्य इसी बात का है कि ५७ वर्षीय मोरिस जीवित कैसे रहा? अगर पेट को हल्का सा धक्का लगता तो भी थर्मामीटर के टूट जाने और शरीर में पारा फैल जाने का खतरा था। ऐसा होने पर मोरिस की मृत्यु निश्चित थी।"

बीस वर्ष पूर्व मोरिस को निमोनिया हो गया था और वह अस्पताल में भरती हुआ था। जब उसका तापमान लिया जा रहा था, तब अचानक उसने पीठ की ओर करवट बदली। फलतः थर्मामीटर उसके पेट के भीतर चला गया। मोरिस अचेत सा हो गया। वह किसी तरह की पीड़ा का अनुभव न कर सका। नर्सों ने इस बात पर ध्यान ही नहीं दिया कि थर्मामीटर मोरिस के पेट में चला गया है। वे तो यही सोचकर चुप हो गयीं कि थर्मामीटर गायब हो गया है। ■

—बिहार का राबिन हुड—

(पृष्ठ २७ का शेष)

दी। गोली उसकी बायीं पसली में लगी और वह वहीं घायल होकर गिर पड़ा। अब पांचों नौजवान बैंक के अंदर आ गये। उन्होंने मुख्यद्वार का शटर गिरा दिया। बैंक कर्मचारियों में दहशत फैल गयी।

रिवाल्वर दिखाकर एक डकैत ने बैंक-मैनेजर से स्ट्रांग रूम की चाभी ले ली। अन्य डकैतों ने तब बैंक-मैनेजर समेत सभी बैंक कर्मचारियों एवं जनता को एक रूम में बंद कर दिया। लुटेरों ने स्ट्रांग रूम खोलकर उसमें रखे आठ लाख आठ हजार तीन सौ तीस रुपये निकाल लिये और वहां से नौ-दो ग्यारह हो गये।

इस डकैती का पता तो तब हुआ जब बैंक के काम से कुछ स्थानीय नागरिक वहां पहुंचे। उन्होंने बैंक स्टाफ को बुक-रूम में बंद देखकर पुलिस को सूचना दी। पुलिस वरिष्ठ अधिकारियों के साथ आयी। उसने बैंक कर्मचारियों को बुक-रूम का ताला तोड़कर निकाला।

मामले की गहन छानबीन के बाद केवल इतना ही पता चल पाया कि डकैती चुनमुन गिरोह ने डाली थी।

दस अगस्त १९८९ की शाम अमहरा गांव में अंधेरा छाया था। दोपहर से ही उस इलाके में लोडशेडिंग चल रही थी। उमस के मारे लोग परेशान थे। गांव में अपनी रखैल छमिया के यहां चुनमुन अपने दोस्तों के साथ गुप्त बैठक कर रहा था। कमरे में लालटेन जल रही थी। सब पसीने से तरबतर थे।

इसी बीच किसी मुखबिर की सूचना के आधार पर डा० अजय कुमार पुलिस दल के साथ वहां आ धमके। जीप की आवाज सुनकर चुनमुन सावधान हो गया। पुलिस घर में घुसने लगी तो छमिया ने दरवाजा छेंक लिया। पुलिस दल के संग कोई महिला पुलिस नहीं थी। फलतः छमिया को वहां से हटाया नहीं जा सका। छमिया को समझाने में ही पुलिस को पांच मिनट लग गये। इतने में पीछे के रास्ते से अपराधी निकल गये। वे सब धान के खेत से भागने में सफल हो गये। पुलिस हाथ मलती रह गयी। छमिया को गिर-फ्तार कर लिया गया। चुनमुन का कोई सुराग नहीं मिला।

सितंबर १९८९ में चुनमुन ने डिहरी-आन-सोन के कुख्यात अपराधी कामेश्वर पाण्डेय से मित्रता की और कामेश्वर के साथ बलिया के 'यूनाइटेड बैंक आफ इंडिया' में डकैती डाली। इस डकैती में पुलिस मुठभेड़ भी हुई, जिसमें कामेश्वर का पुत्र सुनील मारा गया। गिरोह ने कटक स्टेट बैंक से तेइस लाख की रकम लूटा। गया सेंट्रल बैंक को भी चुनमुन और कामेश्वर के गिरोह ने लूट लिया। चुनमुन ने दानापुर नगरपालिका के कमि-श्नर जयशंकर प्रसाद चौरसिया को भी मौत के घाट उतार दिया।

बहरहाल, चुनमुन सिंह उर्फ राबिन हुड के मारे जाने से पटना के आसपास के क्षेत्रों को आतंक से मुक्ति मिली। अभी भी चुनमुन गिरोह के कई सदस्य फरार हैं। कौन जाने भविष्य में इनमें से कोई चुनमुन सिंह का स्थान ले ले और फिर आतंक का वातावरण फैला दे।

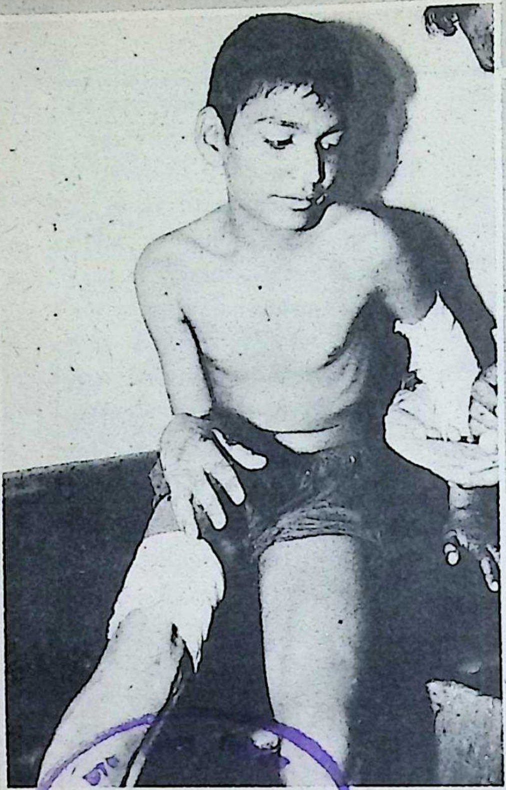

साहसी बालक हरकुमार

१००४

साहस की प्रतिमूर्ति हरकुमार

मनोहर शुक्ला

हरियाणा के जिला अम्बाला के अन्तर्गत एक छोटा सा गांव है, बेलवाली। २५० व्यक्तियों की आबादी वाले इस गांव में पंडित रतनलाल रहते थे। उनके परिवार में पत्नी लीलादेवी तथा दो पुत्र रमेश और हरकुमार थे। रमेश ६ साल का था और हरकुमार २ साल का। एक दिन रतनलाल सुबह की सैर करने घर से निकले तो लौटकर नहीं आये। उनको लापता हुए ६ साल बीत चुके थे। उनकी पत्नी तथा मित्रों ने उन्हें बहुत ढूंढ़ा, किन्तु कोई पता नहीं लगा।

पति की इस रहस्यमय गुमशुदगी के बाद लीलादेवी ने मेहनत-मजदूरी करके अपने परिवार का खर्च भी चलाया और बेटों को पढ़ाने का भी प्रयास किया। रमेश ने आठवीं कक्षा पास कर लिया। मां लीलावती अब बीमार रहती थी। ऐसी स्थिति में उसका आगे पढ़ सकना असंभव हो गया। आर्थिक अवस्था भी मां की बीमारी के कारण दयनीय थी। हरकुमार ने पांचवीं कक्षा पास करके पढ़ाई छोड़ दी।

दोनों भाई मजदूरी करके घर का खर्च चलाते थे और मां की चिकित्सा की व्यवस्था करते थे।

गांव के एक बड़ी पहाड़ी नदी के किनारे ऊंचाई पर बसे

होने के कारण अम्बाला व चण्डीगढ़ के ठेकेदार ट्रकों में पत्थर लादने के लिए रोजाना ही यहां आते थे। नदी से पत्थर निकालकर ट्रक में भरने के लिए प्रत्येक मजदूर को २५ रुपये मजदूरी मिलती थी। रमेश और हरकुमार भी गांव के अन्य मजदूरों के साथ यह काम करते थे।

३ जून १९९० की बात है। सुबह के नौ बजे थे। हरकुमार गांव के दो लड़कों १० वर्षीय सोमनाथ और १३ वर्षीय जीतराम के साथ पत्थर निकालने के लिए नदी की ओर रवाना हुआ। हरकुमार के पास डेढ़ फुट लम्बी लोहे की एक छड़नुमा कुंडी थी। उन पत्थरों को, जो आसानी से नहीं उखड़ पाते थे, उखाड़ने के लिए गांव के लोहार से उसने इस छड़ को विशेष रूप से बनवाया था। इसका वजन दो किलो के करीब था।

नदी से पत्थर निकालने में वह माहिर था। बातों ही बातों में वह बड़े-बड़े पत्थर आसानी से निकाल लेता था। एक ट्रक भरने के लिए ७०-८० कुंतल पत्थरों की जरूरत पड़ती थी। दिन भर में वह इतने पत्थर निकाल लेता था और शाम को २५ रुपये मजदूरी प्राप्त कर लेता था। घर जाकर जब वह सारी मजदूरी अपनी मां के हाथों रखता था, तब उसकी मां

छोटे से बालक ने अपने अभूतपूर्व साहस और शौर्य का जो परिचय दिया उसके पुरस्कार के रूप में वह केवल इतना चाहता है कि कोई आगे बढ़कर शिक्षा प्राप्त करने की उसकी आकांक्षा को पूरा कर दे ताकि वह अपना भविष्य सुखद और समृद्ध बना सके

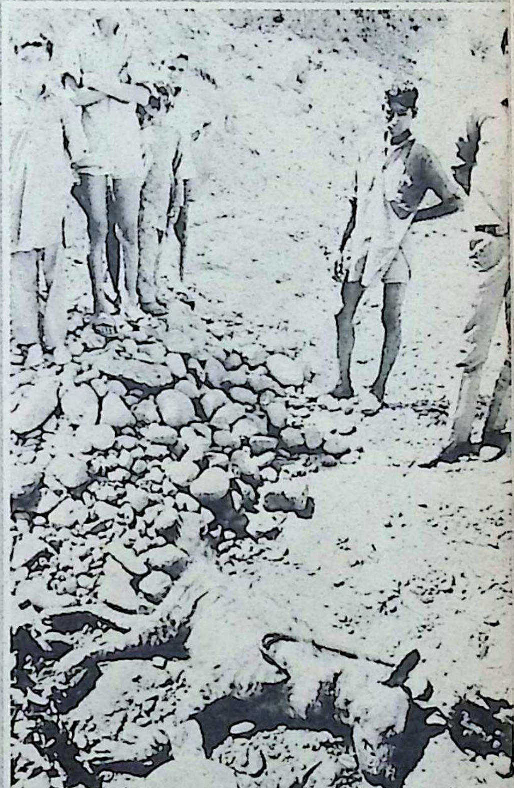

फूली न समाती थी।

नदी-तट पर पहुंचकर हरकुमार नदी में उतर गया और अपने साथियों की सहायता से पत्थर निकालने लगा। कुछ मिनट ही बीते थे कि बिल्कुल पास वाली पहाड़ी पर कुछ हलचल हुई। हरकुमार ने सिर उठाकर देखा तो भेड़ और बकरियां घबराकर इधर-उधर भाग रही थीं। उसने सोचा शायद कोई कुत्ता उनके पीछे पड़ गया है। इसलिए वे सब भाग रही हैं। वह फिर अपने काम में लग

गया। जीतराम उससे कुछ ही कदमों की दूरी पर था।

हरकुमार पत्थर निकालता हुआ नीचे बैठ गया। एक भारी पत्थर निकालने के लिये अपने दोनों हाथों से वह रेत हटा रहा था। उसकी कुंडीनुमा छड़ उससे कोई दो मीटर के फासले पर पड़ी थी। इसी बीच अचानक उसे अपने दायें कंधे पर कोई दबाव महसूस हुआ। हरकुमार ने पत्थर निकालना छोड़ा और ऊपर देखने लगा। ऊपर देखने से पहले ही उसे यह आशंका हुई कि हो न हो कोई जानवर उसे दबोच रहा है। उसके मुंह से चीख निकल गयी। एक जंगली जानवर का पांव उसके कंधे पर था। सोमनाथ और जीतराम यह दृश्य देखकर बुरी तरह चीखते-चिल्लाते वहां से भाग निकले। सोमनाथ तो थोड़ी दूर जाकर जमीन पर गिरकर बेहोश हो गया।

लगता था, ऊंचे किनारों पर से कोई जंगली जानवर नदी में जब उतर रहा था तब अचानक उसका पांव हरकुमार के कंधे पर पड़ गया था। हरकुमार बेहद घबराकर चीख ही रहा था कि जानवर ने अपना दूसरा पांव भी हरकुमार के कंधे पर रख दिया। हरकुमार अपने आपको संभाल न सका और नीचे गिर गया। वह जानवर भी हरकुमार के ऊपर ही लुढ़क आया।

वह कौन-सा जानवर था, यह हरकुमार की समझ में अभी तक न आया था। जानवर के जिस्म पर घने बाल थे और वह चितकबरा था। फिर भी वह चीता कतई न था।

नीचे लुढ़कते ही जानवर ने हरकुमार पर धावा बोल दिया। हरकुमार की बांह उसके मुंह में आ गयी थी।

किसी तरह बांह छुड़ाकर हरकुमार भागने को हुआ तो उसकी टांग जानवर के मुंह में आ गयी। हरकुमार की आंखों के सामने मौत नाचने लगी। वह जोर-जोर से चिल्लाने लगा। उसकी चीख सुनकर गांव के लोग नदी के किनारे पहुंच तो गये। किन्तु नदी में उतर कर जानवर की गिरफ्त से हरकुमार को बचाने की हिम्मत उनमें से कोई भी न जुटा पाया।

इसी बीच जानवर ने हरकुमार की दोनों टांगों और दोनों बांहों को बुरी

तरह चबा डाला। वह पूरी तरह लहू-लुहान हो गया। हरकुमार ने जब देखा कि जंगली जानवर उसकी जान लेने पर तुला है और कोई उसे बचाने नहीं आ रहा है, तब उसने जानवर से जीवन की अंतिम सांस तक जूझने का फैसला कर लिया।

बुरी तरह जख्मी होने के बावजूद उस खूंखार जानवर से हरकुमार भिड़ गया। कई दफा उसने उसे अपने से दूर पटकने में सफलता प्राप्त की, फिर भी एक ग्यारह वर्षीय बालक के लिये एक मदमस्त-जंगली जानवर को काबू में कर पाना कोई सरल कार्य नहीं था।

बेलवाली गांव के लोग नदी के किनारे खड़े होकर आधे घंटे तक बालक और जानवर के बीच होने वाले इस खूनी युद्ध को विवशता के साथ देखते रहे। हरकुमार को बचाने के लिये आगे आने की हिम्मत किसी में न होती थी, क्योंकि वह खूंखार जानवर एक नरभक्षी लकड़बग्घा था। इससे पहले भी वह गांव के कई पशुओं पर हमले करके उन्हें बुरी तरह जख्मी कर चुका था। आठ-दस महीने पहले इसी गांव के दो स्कूली छात्र गायब हो गये थे। कुछ ही दिनों बाद एक बालक का क्षत-विक्षत शव इसी नदी में से मिल गया था। लोगों को यह आशंका थी कि इसी लकड़बग्घे ने बालक को मार डाला था। दूसरे बालक का तो आज तक कुछ पता न चल सका। गांववालों को यह आशंका है कि उस बच्चे को भी यही लकड़बग्घा उठा ले गया था।

अभी कुछ ही दिनों पहले गांव के दो चरवाहों को इसी लकड़बग्घे ने बुरी तरह से जख्मी कर दिया था। वास्तव में यह लकड़बग्घा पिछले कुछ समय से ग्रामीणों के लिए आतंक का पर्याय बन गया था।

इसे गांववासियों की बुजदिली-ही कहना पड़ेगा कि उन्होंने हरकुमार को बचाने के लिए कोई कदम उठाने के बजाय यही सोच लिया कि जब हरकुमार की मौत निश्चित है, तब किसी दूसरे को मौत के मुंह में जाने का कोई तुक नहीं है।

हरकुमार लकड़बग्घे का मुकाबला जी-जान से कर रहा था। उसने अपने को किसी तरह लकड़बग्घे की पकड़ से छुड़ाया तो वह अपनी उस लोहे की कुंडी वाली छड़ पर जा गिरा, जिसे वह पत्थर निकालने के लिए साथ लाया था। हरकुमार ने बिजली की गति से लपक कर छड़ उठा ली। इससे पहले कि वह उठकर लकड़बग्घे पर वार कर पाता, वह एक बार फिर लकड़बग्घे की गिरफ्त में आ गया। छड़ हरकुमार के बायें हाथ में थी। दायां हाथ लकड़बग्घे के मुंह में चला गया था, जिसे नुकीले दांतों वाले खूंखार दरिंदे ने

> बालक हरकुमार ने अकेले खूंख्वार लकड़-बग्घे को मौत के घाट उतारकर अपनी वीरता और साहस का स्तब्धकारी इति-हास रच दिया

चबा डाला था। हरकुमार के हलक से एक लंबी चीख निकल गयी। इतने पर भी छड़ पर उसके हाथ की पकड़ ढीली न हुई। अचानक हरकुमार ने पूरा ज़ोर लगाकर छड़ लकड़बग्घे के सिर पर दे मारी।

इस अप्रत्याशित प्रहार से लकड़बग्घा भयभीत हो उठा। उसने हरकुमार का हाथ छोड़ दिया और घूम कर पीछे की ओर भागने लगा। हरकुमार ने सोचा कि अगर यह खूंखार जानवर बच गया तो वह गांववालों के लिए आतंक बन जायेगा। उसने यह निश्चय किया कि वह उसे जीवित बचकर जाने नहीं देगा, चाहे उसे जान ही क्यों न गंवानी पड़े।

हरकुमार ने छड़ का दूसरा भरपूर प्रहार लकड़बग्घे के सिर पर किया। छड़ के प्रहार से लकड़बग्घा बुरी तरह तिलमिला उठा। हमला करने के इरादे से वह हरकुमार पर फिर लपका। हरकुमार ने तीसरा प्रहार किया तो छड़ की आगे की नुकीली कुंडी लकड़बग्घे की गर्दन में घुस गयी। उस छोटे बालक ने आव देखा न ताव, कुंडी और छड़ के सहारे लकड़बग्घे को चारों ओर घसीटना शुरू कर दिया।

कुछ ही देर बाद हरकुमार को चक्कर आया। वह बेहोश होकर उस नदी की सूखी तलहटी पर गिर गया। तब तक लकड़बग्घे के प्राण-पखेरू उड़ चुके थे।

लकड़बग्घा के मरने से गांव वाले जितना प्रसन्न थे, उससे कहीं अधिक इस आशंका से दुखी थे कि कदाचित हरकुमार ने भयानक जानवर से जूझने में अपने प्राण गंवा दिये हैं।

गांव के एक सम्भ्रान्त व्यक्ति पंडित दुर्गादत्त उस समय गांव में नहीं थे, जबकि एक छोटे से बालक हरकुमार ने एक भयानक लकड़बग्घे से लड़कर और उसे मौत के घाट उतार कर अपनी वीरता और साहस का इतिहास रच दिया था। गांव में आने पर ज्योंही उन्हें इस घटना का पता लगा, त्यों ही वह घटनास्थल पर पहुंच गये।

पंडित दुर्गादत्त ने अचेत हरकुमार को ध्यान से देखा। उस समय उसकी सांस चल रही थी। उन्होंने उसे तत्काल उठा लिया और रामगढ़ के एक डाक्टर के पास उसे ले गये। डाक्टर ने प्रारम्भिक उपचार करने के बाद लड़के को तुरंत चंडीगढ़ के पी०जी०आई० में ले जाने का सुझाव दिया।

चण्डीगढ़ वहां से ३० किलोमीटर की दूरी पर था। शर्माजी ने उसी समय एक टैक्सी का प्रबन्ध किया और हरकुमार को चण्डीगढ़ ले गये। सही वक्त पर पी०जी०आई० में भरती किये जाने के कारण डाक्टरों ने हरकुमार के प्राण बचा लिये। हरकुमार के जिस्म के घावों की गिनती कर पाना कठिन था। घावों में जल्दी ही जहर फैल जाने का पूरा अंदेशा था।

इधर हरकुमार का अस्पताल में उपचार हो रहा था और उधर लकड़बग्घे की लाश के पास लोगों का एक जमघट लग गया था। हरकुमार के अद्भुत साहस की तथा खूंखार जानवर के मारे जाने की चर्चा प्रत्येक व्यक्ति की वाणी पर थी।

सूचना पाकर हरियाणा वन्य विभाग के उप मुख्य वन जीव वार्डन सी०एल० सहगल भी घटनास्थल पर पहुंच गये। खूंखार लकड़बग्घे को मारने वाले बालक के साहस की मुक्तकंठ से प्रशंसा करते हुए उन्होंने कहा, "मैदानी क्षेत्र से सटी-शिवा-

लिक की इन पहाड़ियों पर लकड़बग्घों का प्राकृतिक वास है। ग्रामीणों द्वारा जंगलों का तेजी से कटान किये जाने की वजह से जंगली जानवर इधर-उधर भटक जाते हैं। वैसे इस लकड़बग्घे को नरभक्षी नहीं, खूंखार कहा जा सकता है। इसके जिस्म पर कुछ पुराने जख्म हैं। इन जख्मों को देखकर यह अनुमान लगाया जा सकता है कि इसकी प्रवृत्ति आतंककारी की रही है और इससे पहले भी इसकी मुठभेड़ हुई है।"

उन्होंने लकड़बग्घे की उम्र ५ वर्ष बताया। इसकी लंबाई तो तीन फुट थी और वजन एक कुंतल के आसपास था। पूरी तरह वयस्क उस मादा लकड़बग्घे का एक ग्यारह साल के बच्चे के हाथों मारा जाना कम आश्चर्यजनक नहीं था।

पंजाब के खेल विभाग की निर्देशिका श्रीमती मिल्खा सिंह ने हरकुमार को सरकारी खर्चे पर हास्टल में रखकर शिक्षा दिलवाने की घोषणा की। कुछ दिनों तक अस्पताल में रहने के बाद पूर्ण स्वस्थ होकर जब हरकुमार घर लौटा तो गांव वालों की खुशी का ठिकाना न रहा। गांव वाले उसे हार पहना कर टैक्सी में बैठाकर जुलूस के साथ गांव ले आये।

७ जून '९० को हरियाणा के पूर्व मुख्यमंत्री तथा भारत के पूर्व रक्षामंत्री चौधरी बंशीलाल बेलवाली गांव आये। उन्होंने हरकुमार को ५०० रुपये नकद पुरस्कार दिया और यह आश्वासन दिया कि वह हरकुमार को बाल वीरता पुरस्कार प्रदान करने के लिए केन्द्रीय सरकार से अनुरोध करेंगे।

पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़ के हिन्दी विभाग के प्रोफेसर एम०पी० भारद्वाज ने हरकुमार के लिये प्रति माह १०० रुपये वजीफा देने की पेशकश की है। २६ जून को अम्बाला के उपायुक्त एस०पी० लाम्बा ने अपने साप्ताहिक दरबार में हरकुमार को दो हजार रुपयों का नकद पुरस्कार दिया। उन्होंने भी यह आश्वासन दिया कि वह हरकुमार को राष्ट्रीय वीरता पुरस्कार दिलवाने के लिये केन्द्रीय सरकार को लिखेंगे।

अभी चंद रोज पहले पंचकूला के युवा पैंथर क्लब ने अपने वार्षिक उत्सव फस्ट-९० में दूरदर्शन के उल्टा-पुल्टा कार्यक्रम के प्रस्तोता जसपाल भट्टी के साथ वीर बालक हरकुमार को भी सम्मानित किया था।

हरकुमार ने कथा-लेखकों को भेंट-वार्ता में बताया, "मैं तो पढ़ना चाहता हूं। पढ़ने में मेरा मन भी लगता है। इनाम मुझे मिले या न मिले, किन्तु यदि कोई मुझे पढ़ने भेज दें, तो मैं उसका आभारी रहूंगा।"

कथा लिखे जाने तक हरकुमार की पढ़ाई का कोई समुचित प्रबन्ध व्यावहारिक रूप से नहीं हो पाया था।

संसार का सबसे छोटा जूता

पश्चिम जर्मनी में आफेनबैच के जूता संग्रहालय में दर्शकों के आकर्षण का केन्द्र एक बहुत छोटा जूता बन गया है। संग्रहालय के मालिक का दावा है कि यह जूता संसार का सबसे छोटा जूता है। यह दावा कितना सच है, कितना गलत, यह कोई नहीं कह सकता, फिर भी जो इस जूते को देखता है, वह यही कहता है कि इतना छोटा जूता उसने अभी तक नहीं देखा है।

अंधों की क्रिकेट टीम

कुछ समय पहले भले ही यह धारणा रही हो कि नेत्रहीन और अपंग व्यक्तियों का जीवन निरर्थक है, किन्तु अब विज्ञान के बढ़ते चरणों के साथ यह सिद्ध हो गया है कि नेत्रहीनों और अपंगों का जीवन भी उतना ही सार्थक है, जितना नेत्र वालों तथा हृष्ट-पुष्ट व्यक्तियों का है। अब अपंग भी स्वस्थ व्यक्तियों की भांति लिख सकते हैं, पढ़ सकते हैं और हर तरह के खेल खेल सकते हैं।

३१ जनवरी, १९८९ को बम्बई के बानखेड़े स्टेडियम में उस समय लोगों ने दांतों तले उंगली दबायी जब अंधों और अपंगों की टीम ने क्रिकेट का मैच खेलना आरम्भ किया। नेत्रहीनों की टीम की बाग-डोर रमेश कदम के हाथ में थी और श्री गौतम उपकप्तान थे। २० ओवरों के सीमित खेल में अंधों की टीम ने सात विकेट पर १३५ रन बनाये अपंगों की टीम ने १७ ओवर में ही ३ विकेट खोकर १३६ रन बना लिये। भले ही अपंग टीम मैच जीत गयी हो, किन्तु नेत्रहीन बालर जिस तरह की झनझनाती तेज और फिरकी गेंद फेंकते थे, उनसे दर्शक चकित रह जाते थे। अपंग टीम के बालरों की गेंद पर नेत्रहीन खिलाड़ी जिस तरह के शाट लगाते थे, वह देखते ही बनता था।

नेत्रहीनों की टीम तैयार करने में सबसे बड़ा योगदान बम्बई में प्रभादेवी स्थित नेशनल एसोसियेशन आफ ब्लाइंड्स के प्रशिक्षण केन्द्र की उपसंचालिका श्रीमती अजिता नाडकर्णी को है। जब उनके मस्तिष्क में नेत्रहीनों की टीम तैयार करने का विचार उभरा, तब उन्होंने उसका दायित्व मास्टर राजेन्द्र नाइक को सौंपा।

राजेन्द्र नाइक ने जिस व्यक्ति को टीम का कप्तान बनाया उसका नाम रमेश कदम है। रमेश कदम के साथ उसका दुर्भाग्य बचपन से ही कदम मिलाकर चलता रहा और एक लम्बे अरसे तक उसका साथ नहीं छोड़ा। उसके माता-पिता ने उसे नेत्रहीन देखकर लावारिस छोड़ दिया। जिन व्यक्तियों को रमेश असहाय स्थिति में मिला, उन्होंने उसे पालन-पोषण के लिए सरकारी बोर्डिंग स्नेह-सदन में पहुंचा दिया। नेत्रहीनों के साथ आठवीं कक्षा तक शिक्षा प्राप्त करने के बाद जीविका का कोई उपयुक्त साधन पाने के उद्देश्य से रमेश नेशनल एसोसियेशन आफ ब्लाइंड्स के प्रशिक्षण केन्द्र में चला आया। यहां आने के बाद रमेश का रूझान व्यायाम की ओर गया। क्रिकेट टीम तैयार करने के इरादे से राजेन्द्र नाइक ने रमेश कदम को क्रिकेट के क्षेत्र में उतारा। क्रिकेट में उसकी अभिरुचि और उभरती प्रतिभा देखकर राजेन्द्र नाइक ने उसे अच्छा प्रशिक्षण दिया और अन्ततः उसे अंधों की क्रिकेट टीम का कप्तान बना दिया।

रमेश के अतिरिक्त नेत्रहीन टीम के अन्य सदस्यों के नाम गौतम, प्रकाश विट्ठल, देवदास, जाधव, सुरेश, अरुण, दिलीप, ज्ञानबा और बट्टू हैं। सभी खिलाड़ी क्षेत्र-रक्षण में माहिर हैं। जब अपंगों के साथ बम्बई में मैच हुआ था, तब एक गेंद पर बल्लेबाज द्वारा हवा में गेंद उछाल दिये जाने पर अंधे खिलाड़ी अरुण ने इस तरह लपक लिया कि मंत्रमुग्ध दर्शक लगभग पांच मिनट तक तालियों की गड़गड़ाहट से वातावरण को गुंजाते रहे।

नेत्रहीनों के लिए एक अलग ढंग की घुंघरूदार गेंद तैयार करवायी गयी है। विकेट के तीनों डंडे भी घुंघरूदार हैं। जब बाल डंडे पर लगता है अथवा बल्लेबाज का बल्ला डंडे से छू जाता है तो डंडे से घुंघरू के बजने की आवाज होती है और खिलाड़ी को आउट करार दे दिया जाता है। ■

लंगड़ी डाक्टर

नरगिस बानो

मेरा नाम शबाना है, लेकिन लोगों में 'लंगड़ी लेडी-डाक्टर' के नाम से मशहूर हूं। मुझे अपने इस उपनाम से कोई चिढ़ नहीं है। मैं सचमुच एक टांग से वंचित हूं और व्हील-चेयर पर बैठकर अपने अस्पताल में राउंड लगाती हूं। लोग मुझे बड़ी दिलेर औरत समझते हैं, लेकिन यह

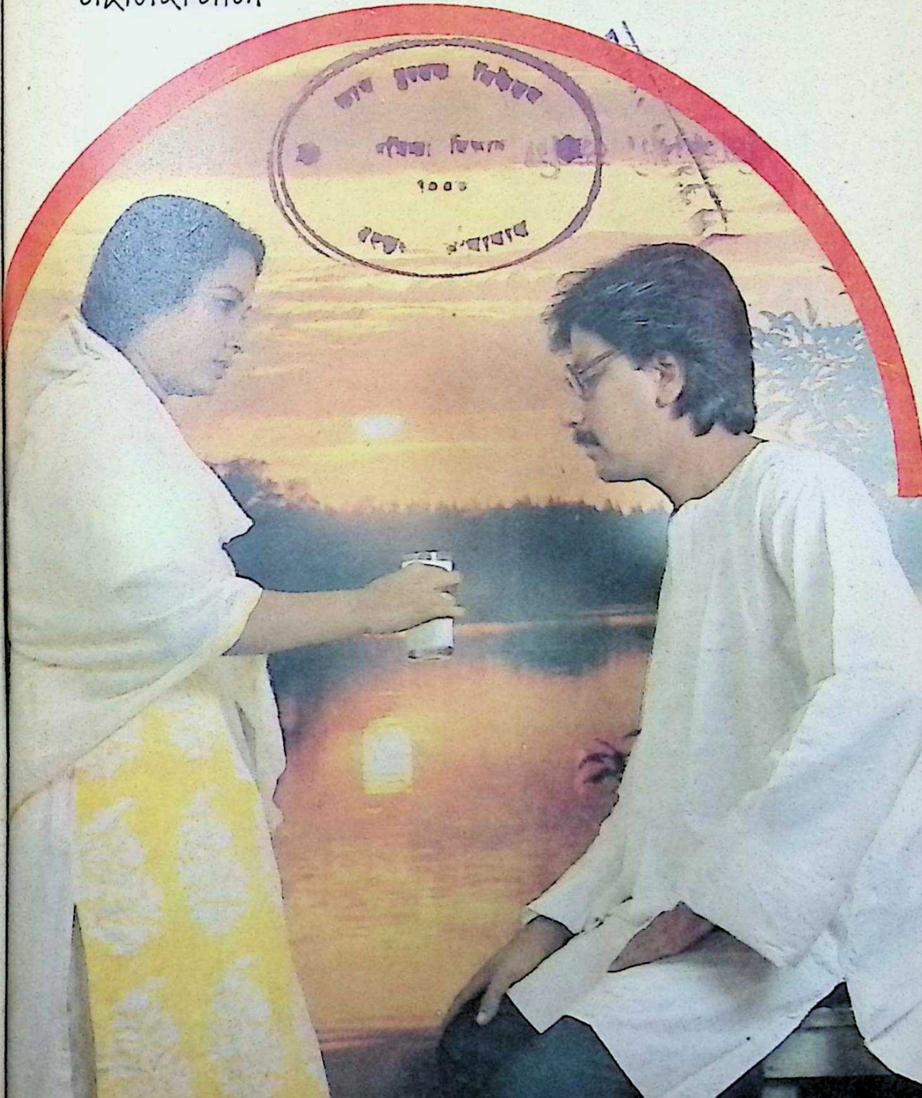

तो सिर्फ मैं ही जानती हूं कि अंदर से मैं कितनी कमजोर हूं। संकल्प और हिम्मत की मूर्ति बने रहना मेरे पेशे का तकाजा है। यह तकाजा पूरा करने के लिए सब्र व जब्त का सलीका मैंने बड़ी मुश्किल से सीखा है।

मेरे आगे-पीछे कोई भी नहीं है। इसीलिए मैं अपना सारा वक्त अपने अस्पताल के मरीजों को देती हूं। दरअसल ऐसा मैं इसलिए करती हूं कि मैं उस दुख को भूल जाऊं, जो मेरी रूह का कांटा बन गया है। मेरी जिन्दगी में कांटे अधिक हैं, फूल कम।

कोई ध्यान नहीं दिया, क्योंकि मम्मी और डैडी से मुझे इतना प्यार मिला था, कि मुझे किसी और के प्यार की जरूरत ही नहीं महसूस होती थी।

एफ०एस-सी० के बाद मैंने मेडिकल कालेज में दाखिला ले लिया। मैं डाक्टर बनना चाहती थी। मेडिकल कालेज में यों तो मेरी बहुत-सी सहेलियां थीं, मगर हम चार लड़कियों और दो लड़कों ने अपना एक विशिष्ट ग्रुप बना लिया था। हम एक दूसरे को अपने घरों में आमंत्रित करते थे। एक दूसरे को बेवकूफ बनाकर लुत्फ लेते थे और एक दूसरे से बेसुरे गाने

मेरे दिल में दुखों की फसल फिर उग आयी है। काफी सोच-विचार के बाद मैं इस नतीजे पर पहुंची हूं कि खुदा ने मुझे और फराज को यह सजा इसलिए दी कि हम कृतघ्न थे

मैं अपने मां-बाप की इकलौती बेटी थी। अल्लाह ने उन्हें दौलत से भी निवाजा था। उन्होंने हमेशा मेरी हर ख्वाहिश पूरी की। हर चीज की प्राप्ति मेरे लिए बहुत ही सरल थी, इसीलिए मुझे दुखों और जिंदगी की मुश्किलों का कोई अहसास नहीं था। स्कूल और कालेज की तालीम के दौरान मेरी बहुत-सी सहेलियां थीं। वे मेरी सम्पन्नता और शक्ल-सूरत से प्रभावित थीं। मैं उनके लिए एक ऐसी शख्सियत थी, जिसे लोग दूर से देखकर पसंद तो करते हैं, मगर उसके दिल में नहीं झांकते। मैंने लोगों के इस रवैये पर

सुनकर खुश होते थे। घरवालों को भी हमारी इन सरगर्मियों पर कोई एतराज नहीं होता था।

हमारे ग्रुप के लड़कों में फराज भी था। उसका ताल्लुक एक गरीब घराने से था। वह शुरू में बड़ा रिजर्व रहता था। जब हम लोगों ने उसे भरपूर सहृदयता दी, तो वह हम से घुल-मिल गया और हमारे प्रोग्राम में भाग लेने लगा। कभी-कभी मुझे उसका रवैया बड़ा अजीब सा लगता था। वह ख्वाहमख्वाह हम लोगों से नाराज हो जाता था। वह नाराजगी की कोई वजह भी नहीं बताता था। हम

उसे मनाने की कोशिश करते, तो वह हमें बात करने से मना करता था। दो-तीन रोज गुजर जाने पर उसका मूड अपने आप ठीक हो जाता था और वह खुद ही हमसे अपने तल्ख रवैये पर माफी मांग लेता था।

तीन साल बीत गये। इसी दौरान मैं फराज के बारे में बहुत कुछ जान गयी। फराज का बाप मर चुका था। उसकी वालिदा एक कालेज में लेक्चरर थीं। उन्होंने फराज और उसकी बहन शीरी को बड़ी अच्छी शिक्षा दी थीं। वह फराज को डाक्टर बनाना चाहती थीं। फराज भी उनकी यह ख्वाहिश पूरा करना अपना फर्ज समझता था।

इस दौरान हमें यह अहसास हो गया था कि फराज हमसे नाराज क्यों हो जाया करता था। दरअसल उसकी आर्थिक स्थिति ऐसी नहीं थी कि वह हमारी तरह पैसा खर्च कर सके। इसलिए वह वक्तीतौर पर हमसे अलग हो जाया करता था।

फराज की बहन शीरी भी फराज की तरह बहुत खूबसूरत, लेकिन बड़ी सादा मिजाज थी। मैं अक्सर उससे मिलने चली जाती थी। वह भी एक कालेज में पढ़ रही थी।

मुझे यह अंदाजा भी हो चुका था कि बहुत-सी लड़कियां फराज को चाहती हैं, लेकिन वह उनमें कोई दिलचस्पी नहीं लेता था। मेरे साथ उसका रवैया एकदम भिन्न था। अगरचे उसने मुझसे कभी मोहब्बत का इजहार नहीं किया था, मगर मुझे यह अहसास बखूबी हो चुका था कि उसने अपने दिल के वर्क पर मेरा नाम लिख रखा था। यह अहसास मुझे उल्लासित कर दिया करता था। कभी-कभी मेरे साथ भी उसके लहजे में तल्खी आ जाती थी, मगर बाद में वह माफी मांग लेता था।

गुजरते वक्त के साथ-साथ जब हम एक दूसरे के और करीब आ गये, तब मैंने फराज से उसके इस तल्ख रवैये की वजह पूछ ही ली। उसने कहा, "जब मुझ पर बहुत ज्यादा मानसिक दबाव पड़ता है, तो मैं किसी पर भी फट पड़ता हूं। न जाने तुम मेरी बातें कैसे बर्दाश्त कर लेती हो।"

मैंने कहा, "मैं बहुत ठंडे मिजाज की लड़की हूं। इसलिए मुझमें बर्दाश्त का माद्दा बहुत है।"

"मुझमें बिलकुल नहीं है।" वह बोला।

"आखिर क्यों?"

"शायद गरीबी की वजह से।"

"गरीबी इंसान को चिड़चिड़ा, तल्ख और आदमबेजार तो नहीं बनाती।"

"तुम यह बातें नहीं जान सकोगी, शबाना। तुम्हें हर किस्म का ऐशो-आराम मुहैया है। मैं तुम्हें उस तकलीफ का अहसास भी नहीं दिलाना चाहता, जो हम गरीब बर्दाश्त करते हैं।"

"तुम मुझे यह अहसास क्यों नहीं दिलाना चाहते?"

"इसलिए कि मैं जब तुम्हें खुशियां नहीं दे सकता, तो तल्खियों और वंचनाओं का अहसास भी क्यों दिलाऊं।"

वह पहला दिन था, जब फराज ने दबे-दबे अल्फाज में मुझसे अपनी मोहब्बत का इजहार किया था। इसके साथ-साथ उसने यह भी जता दिया था कि जब तक उसकी बहन की शादी नहीं हो जायेगी, वह अपनी शादी के बारे में सोच भी नहीं सकता।

(शेष पृष्ठ ८८ पर)

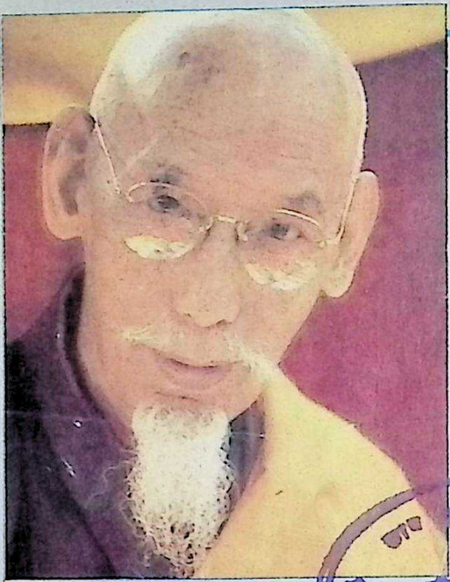

"विलक्षण प्रकृति वाले बालक को साधारण व्यक्ति न समझिए। यह पूर्व जन्म का महान व्यक्ति है। इसके लक्षणों से तो ऐसा लगता है कि यह किसी बहुत बड़े लामा का अवतार है"

लामा क्याब्जे जोंग रिनपोंछे

लामा का पुनर्जन्म

अशोक सरीन

लामा रिनपोंछे की घंटी, डमरू तथा माला के साथ तेंजिन पवित्र गद्दी पर

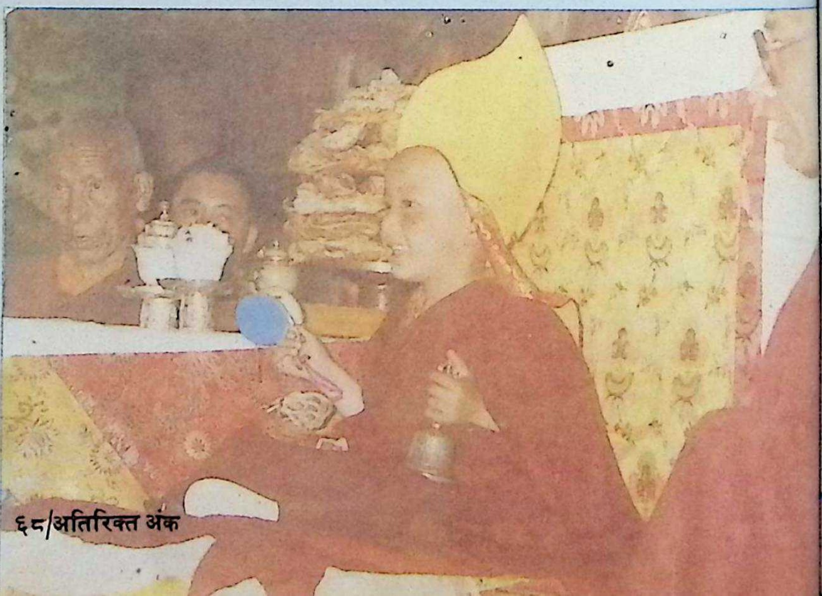

सन् १९५९ में तिब्बत पर चीनी आक्रमण के दौरान बहुत से तिब्बती भाग कर भारत आ गये थे। ये तिब्बती शरणार्थी भारत के विभिन्न पहाड़ी क्षेत्रों में बस गये। हिमाचल के जिला कांगड़ा के मुख्यालय धर्मशाला में एक छोटा सा कस्बा मकलोड-गंज है। यहां तिब्बती शरणार्थियों की बस्ती बस गयी। यह बस्ती बाद में लघु तिब्बत के नाम से विख्यात हो गयी। यहां पर महामहिम दलाई लामा का निवास स्थान बना, जिसे लोग स्वर्ग आश्रम के नाम से जानने लगे। इसी स्वर्गाश्रम में तिब्बतियों का राजनीतिक मुख्यालय है।

तिब्बती शरणार्थी अपनी जीविका चलाने के लिए अनेक धंधों में जुट गये। हथकरघा उद्योग इनमें प्रमुख है। हथकरघा उद्योग में तिब्बतियों की अपनी एक अलग पहचान है। विदेशों में तिब्बती हथकरघा-वस्त्रों की काफी मांग है। कुछ तिब्बती शरणार्थियों ने होटल-रेस्तरां का व्यवसाय भी आरम्भ किया।

हिमाचल के जिला मुख्यालय कुल्लू में बसने वाले श्री छेरिंग तोपग्याल खांग्सर भी उन तिब्बती शरणार्थियों में से थे जो तिब्बत से भागकर आये थे। उन्होंने कुल्लू में रेस्तरां खोल लिया था। बढ़िया तिब्बती भोजन देने के कारण इनका रेस्तरां अच्छा चल निकला था। इनके परिवार में इनकी पत्नी टशी याग्जोम तथा तीन बच्चे थे। अच्छी आय होने से खांग्सर परिवार सुख और आनन्द का जीवन बिता रहा था।

समय धीरे-धीरे गुजरता रहा। छेरिंग खांग्सर अपने रेस्तरां में व्यस्त रहते थे। उनकी पत्नी टशी याग्जोम अपने बच्चों तथा पूजा-पाठ में लगी रहती थी। टशी

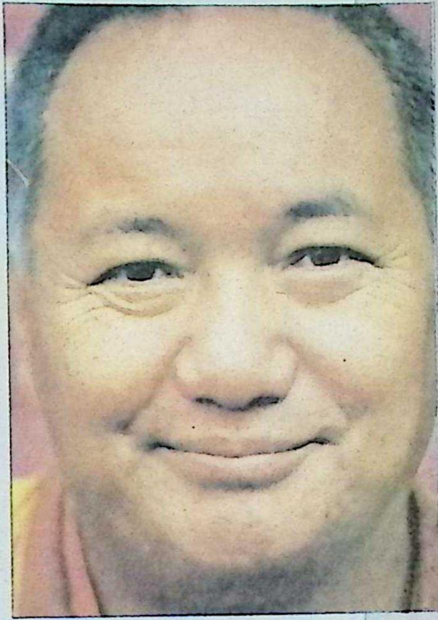

दलाई लामा

लामा थुब्तेन यशी

याग्जोम का चौथा प्रसव होने में कुछ ही दिन शेष थे। उसे स्वप्न में अक्सर महामहिम दलाई लामा दिखायी देते थे। उनके चेहरे पर मुस्कराहट होती थी। आशीर्वाद की मुद्रा में उनका हाथ ऊपर उठा होता था। एक बार स्वप्न में उसे सुन्दर, साफ झील दिखायी दी, जिसमें भगवान बुद्ध की तीन आकृतियां उभरी हुई थीं।

एक दिन स्वप्न में उसे अपना प्रसव होता नजर आया। प्रसव के बाद उसे महामहिम दलाई लामा के दर्शन हुये। उन्होंने नवजात शिशु को अपना आशीर्वाद दिया तथा उसका नाम तेंजिन रखा। टशी अपने इन विचित्र सपनों का जिक्र पति से बराबर करती थी। उसके पति छेरिंग तोपग्याल हर बार यह कहकर उसे शांत कर देते थे कि तुम पूजा-पाठ में अधिक तन्मय रहती हो इसीलिए तुम बहुधा स्वप्न में परम पावन दलाई लामा को देखती हो।

७ मार्च १९८५ की सुबह होने वाली थी। टशी याग्जोम प्रसव वेदना से कराह रही थी। तिब्बती महिला डाक्टर उसकी देखभाल कर रही थी। छेरिंग तोपग्याल बेचैनी से बरामदे में चहलकदमी कर रहे थे। वह मन ही मन सुखद और निरापद प्रसव के लिए भगवान से प्रार्थना कर रहे थे। इसी बीच उनके कान में नवजात शिशु की किलकारी गूंजी। आत्म-विभोर होकर डाक्टर के बाहर आने की प्रतीक्षा करने लगे। मन ही मन उन्होंने सोच लिया कि अगर बेटा हुआ तो वह उसका नाम तेंजिन रखेंगे। टशी याग्जोम भी अपने बेटे का यही नाम रखना चाहती थी। उसे स्वप्न में महामहिम दलाई लामा ने बालक का यही नाम रखने के लिए कहा भी था।

सहसा तिब्बती महिला डाक्टर बाहर आयी और छेरिंग तोपग्याल से कहा, "बधाई हो। आपकी पत्नी ने पुत्ररत्न को जन्म दिया है।" पुत्र जन्म की बात सुनते ही छेरिंग की खुशी का ठिकाना न रहा। आस-पास रहने वाले तिब्बती भी बधाई देने आने लगे।

छेरिंग तिब्बतियों के साथ नवजात शिशु को देखने गये। शिशु के मुखमंडल पर अद्भुत आभा थी। उस बालक में विचित्र सम्मोहन था। जो उसे देखता था, वही उसकी प्रशंसा करने लगता था।

लोगों के मुख से अपने बेटे की प्रशंसा सुन छेरिंग तोपग्याल और टशी याग्जोम की खुशी का पारावार न था। उन्होंने स्नेह तथा प्यार के साथ शिशु का पालन-पोषण शुरू किया।

धीरे-धीरे शिशु बड़ा होने लगा। उसका शरीर असाधारण ढंग से विकसित होने लगा। कुछ रोज बाद बालक का नामकरण संस्कार हुआ। छेरिंग और टशी ने उसे महामहिम दलाई लामा का आशीर्वाद का फल समझा। उन्होंने उसका नाम तेंजिन चांडाक रखा। जैसे-जैसे तेंजिन की उम्र बढ़ने लगी वैसे-वैसे उसके चेहरे पर गम्भीरता के लक्षण दिखायी देने लगे।

वह शिशुओं जैसी चेष्टाएं नहीं करता था। वह अपनी मां के साथ पूजा कमरे में घंटों बैठकर माला फेरता था। पूजा में उसकी तल्लीनता देख सभी को आश्चर्य होता था। एक वर्ष का बालक कभी एक स्थान पर घण्टों बैठा रहता था। यह बात सामान्य बालकों में नहीं पायी जाती।

जब तेंजिन चांडाक दो वर्ष का हुआ, तब तो उसमें और आश्चर्यजनक परिवर्तन आये। उसका दिल खेल में नहीं लगता

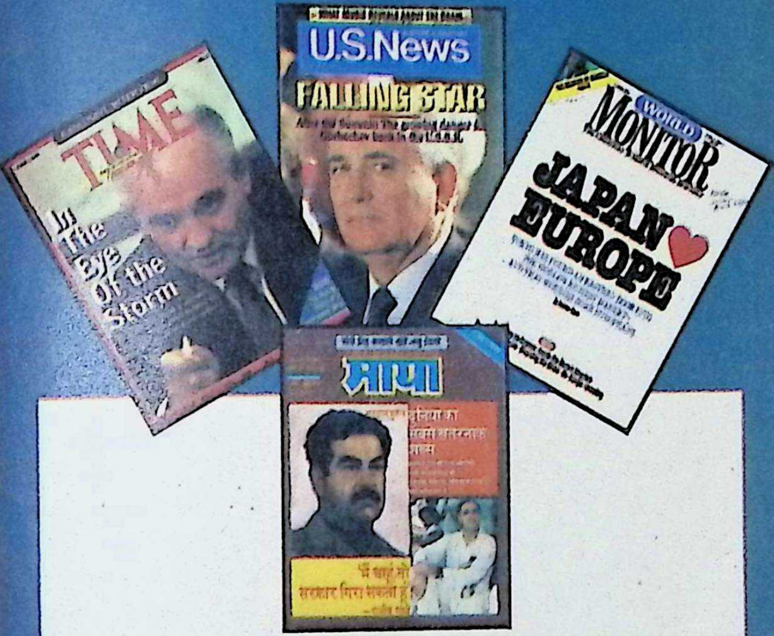

माया ने विश्व प्रसिद्ध

टाइम, यू०एस० न्यूज एंड वर्ल्ड रिपोर्ट, वर्ल्ड मानीटर

जैसी समाचार पत्रिकाओं से सहयोग-अनुबंध किया है।
इस अनुबंध के तहत इन पत्रिकाओं में प्रकाशित
विश्व की ताजा सामग्री हिंदी में प्रकाशित करने का एकमात्र
अधिकार माया को मिला है।

हर अंक में नियमित प्रकाशित

देश के साथ अब दुनिया भी **माया** में सिमट आयी।

था। वह खिलौने अथवा मिठाई के लिए जिद नहीं करता था। वह कभी रोता-चिल्लाता न था। वह अक्सर यही रट लगाये रहता था, "मेरे पास बौद्ध विहार मंदिर है। मुझे वहां जाना है।"

उसकी तोतली बातें छेरिंग तोपग्याल को बहुत अच्छी लगती थीं। वह उसके हठ को बाल-सुलभ हठ मानकर उस पर ध्यान न देते थे। ज्यों-ज्यों तेंजिन वांडाक बड़ा होने लगा त्यों-त्यों वह बौद्ध विहार में जाने की जिद करने लगा। उसकी बढ़ती जिद देख एक दिन छेरिंग तोपग्याल उसे कुल्लू से ४० किमी० दूर मनाली के गार्डेन थैच्कोव लिंग विहार ले गया। यह विहार व्यास नदी के किनारे स्थित है। वहां पहुंचने पर तेंजिन ने यह कहकर उन्हें आश्चर्य में डाल दिया—"यह मेरा बौद्ध विहार नहीं है। मेरा बौद्ध विहार बहुत बड़ा है। वह किसी नदी के किनारे नहीं है।"

बालक के इस अद्भुत क्रिया-कलाप को देखकर गार्डेन थैच्कोव लिंग विहार के लामाओं ने छेरिंग तोपग्याल को बताया, "आपका बेटा कोई महान अवतार है। इसके लक्षण किसी बड़े लामा के हैं। वह पूर्वजन्म में कोई बहुत बड़ा लामा रहा होगा?"

तेंजिन वांडाक की बातों से यह तो स्पष्ट था कि वह पूर्वजन्म की बात कर रहा है, पर यह स्पष्ट नहीं हो रहा था कि वह जिस बौद्ध विहार की बात कर रहा है, वह कहां है। उसकी रहस्यभरी बातों से उसका पिता गहरी उलझन में था। बालक बार-बार बौद्ध विहार जाने की हठ करता था, किन्तु पिता बौद्ध विहार का पता-ठिकाना न जानने से बालक की इच्छा पूरी करने में असमर्थ था।

इधर तेंजिन वांडाक अपने अज्ञात बौद्ध विहार जाने का हठ कर रहा था, उधर लामा क्याब्जे जोंग रिनपोंछे के शिष्य उस चमत्कारी बालक की खोज कर रहे थे, जिसने उनके लामा के अवतार के रूप में जन्म लिया था। १९८८ में लामा क्याब्जे जोंग रिनपोंछे के देवदूत ने अपनी अध्यात्मिक शक्ति का प्रयोग करके बताया कि लामा का अवतार १९८५ में हो चुका है। अपनी कविता के माध्यम से देवदूत ने यह भी बताया कि अवतारी बालक का नाम तेंजिन रखा गया है।

लामा क्याब्जे रिनपोंछे की एक अति प्रिय अंग्रेज शिष्या थी, जिसका नाम ग्रेटा जानसन था। उसने एक दिन स्वप्न में एक छोटा सा बालक देखा। इस बालक के चारों ओर प्रकाश फैला था। वह एक सफेद पत्थरों वाले घर के बाहर खेल रहा था। घर के आगे एक नदी बह रही थी और उसके पीछे हिमाच्छादित पर्वत दिखायी दे रहे थे। अपने स्वप्न के आधार पर ग्रेटा जानसन ने देखे गये दृश्य का रेखा-चित्र तैयार किया। उसने इस रेखा-चित्र को गार्डन मठ मंडगाड के प्रशासक तेंजिन वांगचुक के पास इस आग्रह के साथ भेज दिया कि वह इस स्थान का पता लगाने का कष्ट करें।

लामा क्याब्जे जोंग रिनपोंछे की मृत्यु १९८४ में हुई थी। उनके अवतार के रूप में जन्म लेने वाले बालक की खोज में व्यस्त उनके अनुयायियों ने यह निश्चय किया कि १९८५ में जन्म लेने वाले तिब्बती बालकों की सूची तैयार करायी जाये। उस सूची में से खोजी दल उस बालक की खोज करे जो व्यवहार, प्रकृति और चिह्नों की दृष्टि से लामा क्याब्जे जोंग

रिनपोंछे से मिलता-जुलता हो।

इस निर्णय के अनुसार एक खोजी दल भारत और नेपाल गया। उसने १९८५ में जन्म लेने वाले पांच सौ से अधिक तिब्बती बच्चों की एक सूची तैयार की। इस सूची में से उसने पांच ऐसे बच्चों को चुना, जो लक्षण, व्यवहार और प्रकृति की दृष्टि से लामा क्याब्जे जोंग रिनपोंछे से मिलते-जुलते थे। इन बच्चों की सूची जब पूर्ण विवरण के साथ दलाई लामा के सामने प्रस्तुत की गयी, तब उन्होंने उनमें से किसी को लामा रिनपोंछे का अवतार मानने से इनकार कर दिया।

दलाई लामा के इस निर्णय से खोजी दल निराश नहीं हुआ। उसने १९८५ में जन्म लेने वाले ३१ बच्चों की दूसरी सूची तैयार की। कुल्लू के छेरिंग तोपग्याल का पुत्र तेंजिन वांडाक भी इस सूची में शामिल था। खोजी दल जब तेंजिन के पास गया तो वह उसके असाधारण क्रिया-कलापों को देखकर स्तब्ध रह गया। तेंजिन की माता टशी याग्जोम ने खोजी-दल को बताया कि "तेंजिन के जन्म से पहले महामहिम दलाई लामा ने स्वप्न में उसे आशीर्वाद दिया था कि एक असाधारण प्रतिभा वाला पुत्र पैदा होगा। उसका नाम तेंजिन रखा जाना चाहिए।"

खोजी दल ने पूछा, "आपको बालक में जन्म के बाद क्या कोई असाधारण बात दिखायी पड़ी थी?"

माता टशी याग्जोम ने बताया, "बालक सामान्य बालकों जैसा आचरण नहीं करता था। वह पूजा के कक्ष में घंटों बैठा रहता था और माला फेरता रहता था।"

"कुछ बड़े होने पर तो आपको और भी अधिक असाधारण बातें दिखायी पड़ी होंगी।" खोजी दल ने पूछा तो टशी याग्जोम ने बताया, "हां, और भी असाधारण बातें उसमें दिखायी पड़ीं। वह बहुधा बौद्ध विहार जाने की जिद करता था। मैं उसे व्यास नदी के तट पर स्थित गार्डन थैच्कोव लिंग विहार ले गयी। उसने विहार को देखते ही कहा, 'यह मेरा विहार नहीं है। मेरा विहार किसी नदी के किनारे नहीं बना है। वह इस विहार से बहुत बड़ा है।' अपने विहार की भौगोलिक स्थिति का यह कोई विवरण नहीं देता। आज भी यह अपने उस रहस्यमय विहार जाने की जिद करता रहता है।"

"क्या आपने गार्डन थैच्कोव के लामाओं से बालक की इस रहस्यभरी बात का जिक्र नहीं किया?" खोजी दल ने पूछा तो टशी याग्जोम ने उत्तर दिया, "हां, मैंने लामाओं से सारी बातें बतायी थीं। उन्होंने मुझसे यह कहा था कि तुम्हारा बेटा कोई महान अवतार है। इसमें लामा के लक्षण मिल रहे हैं। यह पूर्वजन्म में कोई बड़ा लामा रहा होगा।"

इतना सुनते ही खोजी दल के आनन्द की सीमा न रही। उनकी अन्तरात्मा कहने लगी कि जिस बालक की खोज की जा रही है, वह यही है। खोजी दल ने गार्डन थैच्कोव लिंग विहार के लामाओं से बात की तो उन्होंने फिर इस बात को दुहराया कि असाधारण बालक तेंजिन पूर्वजन्म का कोई लामा है, हो सकता है, यह महान लामा क्याब्जे जोंग रिनपोंछे का ही अवतार हो।

लामा क्याब्जे जोंग रिनपोंछे के देवदूत ने भी स्वप्न में जो बताया था, उससे भी यही सिद्ध होता था कि तेंजिन

ही लामा रिनपोंछे का अवतार है। गार्डन मठ मंडगाड के प्रशासक को बुलाया गया तो उसने बताया कि ग्रेटा जानसन ने उसे जिस स्थान का रेखा चित्र बना कर दिया था, वह पूर्णतया उसी स्थान का रेखा-चित्र है, जहां तेंजिन रहता है।

खोजी दल लामा रिनपोंछे की शिष्या ग्रेटा जानसन को कुल्लू ले आया। तेंजिन, उसका घर और उसके घर की भौगोलिक स्थिति को देखते ही ग्रेटा जानसन की प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। उसने हर्ष विह्वल होकर कहा, "मैंने स्वप्न में जिस असाधारण तेजस्वी बालक को देखा था, वह यही तेंजिन है। घर की भौगोलिक स्थिति भी वही है, जो मैंने स्वप्न में देखी थी। अब मुझे पूर्ण विश्वास हो गया कि परम पूज्य लामा रिनपोंछे का अवतार यही है।"

अब खोजी दल परम पूज्य दलाई लामा से मिला और उन्हें अपनी खोज में मिले तथ्यों से अवगत किया। दलाई लामा कुछ देरं ध्यान-मग्न रहे और उसके बाद बोले, "निश्चय ही तेंजिन लामा क्याब्जे जोंग रिनपोंछे का अवतार है।"

इधर दलाई लामा ने अपना अभि निर्णय दिया और उधर १८ अप्रैल, १९९० को गार्डन बौद्ध मठ मंडगाड के लामाओं का एक दल तेंजिन की परीक्षा लेने के लिए कुल्लू आया। तेंजिन बालक इस दल को देखकर बहुत खुश हुआ। उसने हाथ उठाकर लामाओं को आशीर्वाद भी दिया। तेंजिन के आगे बहुत से चित्र रखे गये। उसने उन चित्रों को बहुत देर तक देखा और फिर लामा क्याब्जे जोंग रिन-पोंछे का चित्र निकालकर बोला, "यह चित्र मेरा है।" इतना सुनते ही वहां का वातावरण हर्षध्वनि से गूंज गया।

लामाओं ने तेंजिन के आगे लामाओं की मालाएं तथा घंटियां रखीं। उसने कुछ देर तक मालाओं और घंटियों को ध्यान से देखा और फिर लामा रिनपोंछे की माला और घंटी को निकालकर लामाओं के सामने रखते हुए बोला, "यह माला और घंटी मेरी है।"

लामाओं को अब पूर्ण विश्वास हो गया कि तेंजिन ही लामा रिनपोंछे का अवतार है। उन्होंने यह घोषित कर दिया कि तेंजिन ही पूर्व जन्म का लामा रिनपोंछे है। इस घोषणा के साथ ही वातावरण जयध्वनि से गूंज उठा। तिब्बतियों की भीड़ लामा रिनपोंछे के अवतारी के दर्शन के लिए उमड़ पड़ी।

एक चमत्कारी बालक के रूप में लामा रिनपोंछे का जन्म १९०५ में तिब्बत के खाम गांव में हुआ था। पांच वर्ष की छोटी आयु में ही इस बालक का अभिषेक एक महान लामा के अवतार के रूप में हुआ। ११ वर्ष की आयु में वह तिब्बत की राजधानी ल्हासा में गार्डन मठ में गये। वहां उन्होंने बौद्ध ग्रंथों का गहन अध्ययन किया। एक महान धर्मवेत्ता और तार्किक व्याख्याता के रूप में उनकी प्रतिष्ठा हुई। एक विद्वान लामा ने उनके बारे में बताया कि उनकी तार्किक शक्ति इतनी प्रबल थी कि यदि धर्म कीर्ति भी उनसे विवाद करती तो वह भी उनके सामने बौनी हो जाती।

तिब्बती में डाक्टर जैसी उपाधि को गेशे कहते हैं। गेशे की उपाधि पाने का गौरव भी रिनपोंछे को २५ वर्ष की उम्र में ही मिल गया। इसके बाद वह तिब्बत के तांत्रिक महाविद्यालय में प्राचार्य नियुक्त हो गये। १९३७ में वह ल्हासा के

(शेष पृष्ठ ९२ पर)

संसार का सबसे छोटा कलेण्डर

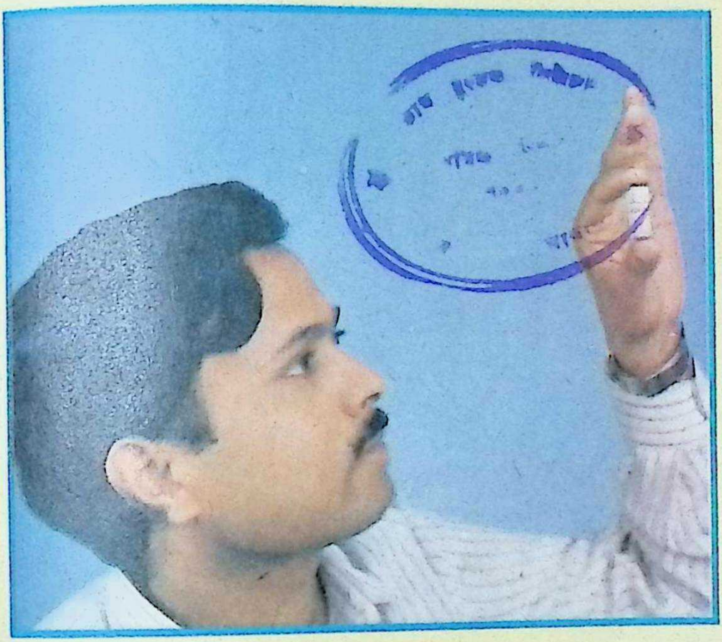

भारत सदा से प्रतिभाशाली व्यक्तियों का देश रहा है। पहले भी इस देश की विभूतियों ने विश्व को चमत्कृत किया है, आज भी कर रही हैं और आगे भी करती रहेंगी। इन्हीं प्रतिभाशाली व्यक्तियों की परम्परा में एक और युवा का नाम उस समय जुड़ गया जबकि इसने हाथ की अंगूठी के आकार में पांच हजार वर्षों से भी अधिक के लिए विश्व का सबसे छोटा कलेण्डर तैयार किया। उसके इस चमत्कारिक कार्य से सब स्तब्ध रह गये हैं।

इस युवक का नाम श्री अजय कुमार खेतान है। इसकी उम्र २९ वर्ष है और यह इंजीनियर है। यह एक इलेक्ट्रानिक फर्म का मालिक है और बर्न्स प्लाट, तिलक रोड रानीगंज में रहता है। इसके पिता का नाम श्री वासुदेव खेतान है।

इसने जो अद्भुत कलेण्डर बनाया है, वह अंगूठी के आकार का है। इसका व्यास १.३ सेमी और ऊंचाई ३ सेमी है। कलेण्डर की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि कुछ ही सेकेण्ड में इसका विस्तार किसी भी सीमा तक किया जा सकता है।

श्री अजय खेतान का दृढ़ विश्वास है कि उनका कलेण्डर विश्व का सबसे छोटा कलेण्डर है। उन्हें इस बात की भी आशा है कि शीघ्र ही उनका नाम गिनीज बुक आफ वर्ल्ड रेकार्ड्स में दर्ज हो जायेगा। ■

अन्तर्कथा देव के सूर्यमन्दिर की

रतीन्द्र नाथ

औरंगजेब उस समय आश्चर्य चकित रह गया जब कि उसके सैनिकों ने भोर होते ही यह सूचना दी कि भगवान सूर्य ने उसकी चुनौती स्वीकार कर ली और रातोंरात मंदिर का दरवाजा पूर्व से पश्चिम कर दिया

९९५ ईसवी। कार्तिक कृष्ण पक्ष की सप्तमी। बिहार के औरंगाबाद जिले के पहाड़ों से घिरे घने जंगल में पलामू-डाल्टेनगंज के प्रतापी राजा ऐल ने अपने सैनिकों के साथ डेरा डाल दिया था। यह वन राजा ऐल के राज्य में था। उनका राज्य डाल्टेनगंज से गया तक फैला था।

महाराजा ऐल जिस राजवंश के थे, उसकी स्थापना ४३५ वर्ष पूर्व उनके पूर्वज माहपसिंह के पुत्र शक्ति सिंह ने की थी। इसी वंश के आठवें शासक महाराजा ऐल थे। उनका राज्य पलामू-डाल्टेनगंज के नाम से विख्यात था।

महाराजा ऐल प्रजावत्सल थे। प्रजा का सुख-दुख जानने के लिए वह सदा विह्वल रहते थे। इसी उद्देश्य से वह अपने घोड़े पर सवार होकर सैकड़ों सैनिकों के साथ महीने भर की यात्रा पर निकला करते थे। इसी यात्रा के सिलसिले में रात हो जाने के कारण एक बार उन्होंने इस घने जंगल में पड़ाव डाल दिया था।

रात का समय था। महाराजा ऐल एक सेमल के वृक्ष के नीचे तम्बू में सो रहे थे। आसमान में बादल थे। उनके पीछे चन्द्रमा न जाने कहां छिप गया था। सिर्फ चार-पांच तारे टिमटिमा रहे थे। चारों तरफ अंधकार था। आम, महुआ, साल, सागौन, सेमल एवं गुलंच के दरख्त हवा में झूम रहे थे। पहाड़ से सीधे गिरकर गंगा में मिलनेवाले जल की कलकल ध्वनि वातावरण में गूंज रही थी। निविड़ अंधकार में यह पता ही नहीं लगता था कि रात कितनी बीत गयी है।

अचानक राजा को शौच लगी। वह तंबू से बाहर आये। सैनिक गहरी नींद में थे। पास में एक लालटेन जल रही थी। राजा ने नींद में डूबे सैनिकों को जगाना ठीक नहीं समझा। उन्होंने हाथ में लालटेन ले ली और बगल की पगडंडी पर चल पड़े। वह यह सोचते थे कि यह टेढ़ी-मेढ़ी पगडंडी उन्हें गंगा-तट पर पहुंचा देगी।

महाराजा ऐल उस घने अंधेरे जंगल में लालटेन के प्रकाश में आगे बढ़े तो बढ़ते ही गये। जंगली फूलों की सुगंध चारों ओर फैली थी। जब कभी लालटेन के प्रकाश में उनकी दृष्टि अपने हाथ पर जाती थी, तब उनका हृदय दुख और पीड़ा से भर जाता था। उनको कुष्ठ रोग था, जो उनके सारे शरीर में फैल गया था। उन्होंने इसका बहुत इलाज करवाया,

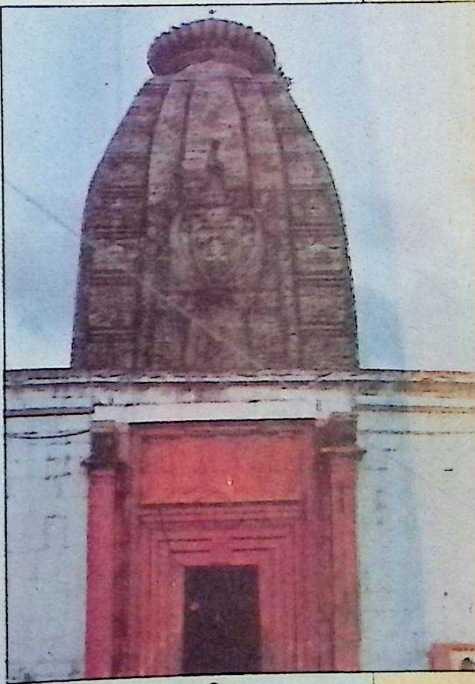

सूर्य का देव मन्दिर, जिसका दरवाजा पश्चिम की ओर है

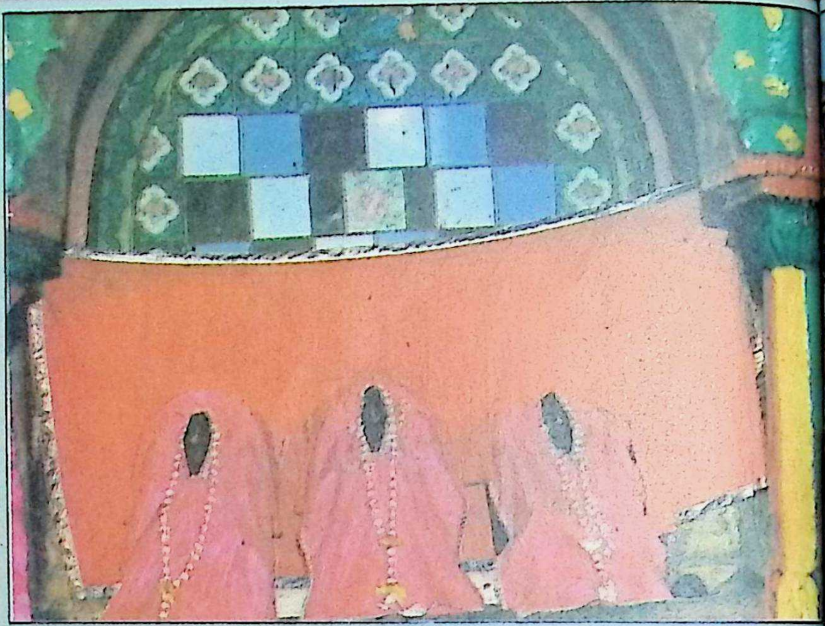

देव मन्दिर के भीतर स्थापित सूर्य की तीन प्रतिमाएं

किन्तु यह ठीक नहीं हुआ।

सहसा उनके मन में आया कि अब और अधिक दूर जाना उनके बस की बात नहीं है। उन्होंने पास ही एक चीड़ के वृक्ष के नीचे शौच किया। पास ही एक छोटा सा गड्ढा था। उसके कीचड़ सने जल से उन्होंने आबदस्त लिया। वह वहां से अपने शिविर में लौट आये और सो गये।

सवेरा हुआ। सूरज भी निकल आया, किन्तु महाराजा ऐल अभी तक नहीं उठे थे। प्रधान सेनापति रघुराज सिंह तोमर चिन्तित हो गये। इससे पहले तो राजा नियमित रूप से भोर में ही उठ जाते थे, किन्तु आज क्या हो गया, जो वह अभी तक नहीं उठे। प्रधान सेनापति ने शिविर में झांका तो राजा को गहरी निद्रा में लीन देखा।

प्रधान सेनापति रघुराज सिंह तोमर ने सोचा कि कहीं राजा अस्वस्थ तो नहीं हो गये। वह स्वयं उनके पास चले गये। उन्होंने राजा को जगाया। राजा उठकर बैठ गये। उन्हें प्रधान सेनापति तोमर ने देखा तो वह विस्मित रह गये। उनके मुख से निकल पड़ा, "हे राजन! यह क्या? अरे! आपके दोनों हाथ के कुष्ठ ठीक हो गये? यह चमत्कार कैसे हुआ? आप मुझे बताएं।"

अपने दोनों हाथों को देखकर राजा ऐल स्वयं विस्मित थे। उन्होंने प्रधान सेनापति को रात की घटना बतायी तो प्रधान सेनापति तोमर ने कहा, "हे प्रजा-पालक, मेरी सलाह मानिए और अविलम्ब उस गड्ढे में चलकर स्नान कर लीजिए। मुझे अब विश्वास हो गया है कि कीचड़

राजा ऐल का किला, जो अब खंडहर होता जा रहा है

सना जल आपके लिए अमृत सिद्ध होगा और आपका शरीर कुष्ठ रोग से मुक्त हो जायेगा। मेरी अन्तरात्मा तो यही कहती है कि गड्ढे के जल में अवश्य ही किसी देवता का वास है।"

राजा की अन्तरात्मा से भी वही आवाज आयी जो प्रधान सेनापति की अंतरात्मा से गूंज रही थी। उन्हें विश्वास हो गया था कि गड्ढे के जल में अवश्य कोई चमत्कारिक शक्ति है। वह तत्काल प्रधान सेनापति रघुराज सिंह तोमर के साथ गड्ढे की ओर चल पड़े।

गड्ढे में कीचड़ होते हुए भी पानी था। राजा निर्वस्त्र होकर गड्ढे में उतर गये और डुबकी लगाने लगे। उन्होंने कीचड़ को हाथ से उठाकर अपने समूचे देह में लगा लिया। देखते-देखते राजा के शरीर का कुष्ठ ठीक हो गया और वह कुंदन की भांति चमकने लगा। यह चमत्कार देखकर राजा के सैनिकों की खुशी का ठिकाना न रहा। हर्ष-विभोर राजा ने उस दिन वहीं रुकने का निश्चय किया।

प्रजा का सुख-दुख जानने के लिए राजा अपने सैनिकों के साथ आस-पास के गांवों में घूमते रहे। शाम होते ही पड़ाव पर लौट आये।

रात हुई तो चांदनी चारों ओर फैल गयी। सारा जंगल बड़ा मनभावन दिखायी पड़ने लगा। भोजन करने के बाद सारे सैनिक विश्राम करने चले गये। राजा भी अपने शिविर में जाकर सो गये।

रात में राजा ने एक बालक को देखा, जो लाल वस्त्र पहने था और सात घोड़ों

(शेष पृष्ठ १२२ पर)

बद दुआ
निगहत मिरजा हिना

वकास हैदर न तो मेरा बचपन का साथी था, न रिश्तेदार। इंटर के इम्तिहान के बाद अगर मैं बोर होकर आर्ट्स कालेज ज्वाइन न करती, तो वह शायद जिंदगी में कभी मुझसे मिला भी न होता। कालेज में दाखिले के लिए हम दोनों का टेस्ट एक ही दिन हुआ था। वह हमारी जान-पहचान का पहला दिन था। फिर यह सिलसिला लंबा होता गया और वह हमारी जिंदगी पर छा गया। नफीस और शिष्ट मिजाज वकास कब दिल-व-दिमाग में बस गया, इसका अंदाजा ही न हो सका और जब अंदाजा हुआ, तो मैं उसकी मोहब्बत में इतनी दूर निकल आयी थी कि वापसी की हर राह बंद हो चुकी थी।

उस जमाने में दिमाग भी इनकलाबी सा हुआ करता था। न मुझे वकास हैदर के ठाठ-बाट और खूबसूरत मर्सीडीज कार के आगे अपना वजूद कमतर लगा और न वकास ने ही इन चीजों पर कोई ध्यान दिया। मैं सात बहन-भाइयों में दूसरे नंबर पर थी। मेरे मां-बाप मुझे बेहद चाहते थे। वे मेरी हर ख्वाहिश पूरी करते थे। मेरी बड़ी बहन की शादी हमारी ही तरह के मध्यवर्गीय रिश्तेदारों में हुई थी। शादी के लिए मेरे सफेदपोश बाप को किसी से कर्ज नहीं लेना पड़ा था।

मैंने कामर्शियल आर्टिस्ट बनने का फैसला इसलिए किया था कि मेरा इरादा आर्ट्स कालेज से निकलने के बाद किसी बड़े संस्थान में काम करने का था। मैंने सोचा था कि इस तरह अब्बा को कुछ तो सहारा मिल जायेगा।

मेरे बाद ही तीन बहनों के कद भी मुझ तक आने लगे थे। अब्बा अकेले कमाने वाले थे। अम्मा इतनी सुघड़ थीं

"या अल्लाह
मुझे माफ फरमा।
मैं अपने अल्फाज
वापस लेती हूं,
जो मैंने कभी
किसी के लिए
सख्त गुस्से
में अदा किये थे।
काश, उस
बददुआ से
ज्यादा मेरी
दुआ में असर होता,
तो वकास
हैदर मुझसे जुदा
न होता"

कि घर में कभी पैसों की कमी महसूस नहीं होने देती थीं। मुझे पता था कि एक मेरी ही फीस जाने के बाद अब्बा की तनख्वाह का खासा हिस्सा कम हो जाता है। वकास हैदर से कभी-कभी मैं इन मसलों पर भी बातचीत कर लेती थी।

वकास हैदर ने मुझे बताया था कि वह अपने बड़े भाई अरसलान हैदर के साथ काम करेगा। उसने मुझे भी यह आश्वासन दे रखा था कि कालेज के बाद वह मुझे अपने भाई की एडवरटाईजिंग कंपनी में नौकरी दिला देगा। मैंने इसे उचित नहीं समझा था। सोचा था, दूसरी जगह भी कोशिश करती रहूंगी। अगर वकास के भाई की कंपनी से ज्यादा अच्छी कोई कंपनी नजर आयी, तो वहीं जाब कर लूंगी।

कालेज से निकलने के बाद वकास हैदर ने इस तरह घेराव किया कि मुझे उसके भाई की कंपनी में नौकरी करनी ही पड़ी।

अरसलान हैदर भारीभरकम और रोबदार शख्सियत के मालिक थे। पहले दिन तो मैं उनसे खाली भयभीत रही। वह तो शक था कि उनके और भी कई काम रहते थे, जिसकी वजह से वह हफ्ते में दो-एक बार ही चक्कर लगाते थे। उनका मैनेजर काफी ईमानदार और सहृदय था। वह उस पर हद से ज्यादा भरोसा भी करते थे।

अरसलान हैदर की अमीरी और वैभव देख-देखकर न जाने क्यों मुझे वकास का और अपना मिलन नामुमकिन नजर आने लगा था। वकास भी तो ठाठ-बाट से रहता था, लेकिन मैंने कभी इस बारे में सोचा ही नहीं। वकास एक-दो बार मेरे पास आया, तो मैंने उससे कहा, "तुम कंपनी के मालिक के भाई हो, बल्कि हिस्सेदार भी। इस तरह यहां आकर मुझे तमाशा न बनाओ।"

"अच्छा तो यह खुशफहमी है। भई, काम की चेकिंग के सिलसिले में आना तो पड़ता ही है।"

"ठीक है। तुम बखुशी आओ, मगर मेहरबानी करके मुझसे बेतकल्लुफी का इजहार करके दूसरों के लिए बातचीत का विषय न बनाओ।"

वकास मुझे गौर से देखता हुआ चला गया। न जाने उसने क्या समझा।

बहुत दिन तक वह मेरे सामने न आया और एक दिन अरसलान हैदर के साथ आया भी, तो मैं अनजान बनी काम में लगी रही। वह लम्हा भर को ठिठका और फिर आगे बढ़ गया। उसी दिन जब मैं बस-स्टाप पर पहुंची, तो वकास अपनी लंबी-चौड़ी गाड़ी समेत मौजूद था। मैंने उसे देख कर नजरें चुरा लीं।

वह सख्त गुस्से में लगता था। उसने मुझसे कहा, "बैठो गाड़ी में।"

मुझे हंसी आ गयी। वकास हैदर

और गुस्सा दो परस्पर-विरोधी चीजें थीं। वह तो हंसता, मुस्कुराता और छेड़छाड़ करता ही अच्छा लगता था। मैंने लोगों के सामने तमाशा बनने से बेहतर समझा कि उसके साथ चुपचाप गाड़ी में बैठ जाऊं। कुछ देर तो वह चुपचाप गाड़ी ड्राइव करता रहा। फिर बहुत संजीदा लहजे में बोला, "मरियम, तुम्हारे इस अंदाज को मैं क्या समझूं। तुम क्यों दूर-दूर रहने लगी हो। मुझसे कोई गलती हुई है, या कोई और बात है?"

मैंने आंखों में आने वाले आंसुओं को उसकी नजर बचा कर पोंछा और मजबूत लहजे में कहा, "वकास हैदर, तुम इतने प्यारे और सहृदय इंसान हो कि कभी तुमने मेरे और अपने तबकाती फर्क को महसूस ही नहीं किया, लेकिन अब इस कंपनी में नौकरी करने के बाद मुझे लगता है कि मैं तुमसे और तुम्हारी अमीरी से प्रभावित होने लगी हूं। तुम लोगों की दसियों कंपनियां हैं। बेफिक्री है। तुम्हारी सारी जिंदगी खूबसूरती और दौलत के गिर्द घूम रही है और मैं जिस तबके से ताल्लुक रखती हूं, वहां कदम-कदम पर सोच और फिक्र है। रोटी की फिक्र, मकान की फिक्र, तालीम की फिक्र..."

"बस बस, प्लीज, मरियम। अगर मुझे अहसास होता कि तुम ऐसी बातें करोगी, तो मैं कभी तुम्हें सर्विस न दिलवाता। तुम तो बहुत दिलेर थी। यह चंद दिन में तबकाती फर्क वगैरा की बातें कहां से आ गयीं तुम्हें। मैं अब भी वही हूं, तुम्हारा दोस्त, तुम्हारी मोहब्बत। दोस्ती और मोहब्बत में किसी फर्क को कोई अहमियत नहीं दी जाती। बस दिल की धड़कनें एक दूसरे को देखकर खूबसूरत पैगाम दे दें, यही बहुत है।"

वकास हैदर गुस्से से मुझे देखता रहा और फिर तेज रफ्तारी के सारे रिकार्ड तोड़ते हुए मेरे घर से काफी फासले पर गाड़ी रोक दी। वह हमेशा मुझे घर से दूर उतारा करता था। हम मध्य वर्ग की लड़कियां अपने घर वालों से ज्यादा मोहल्ले वालों से डर और खौफ महसूस करती हैं और यही डर हमेशा मेरे साथ रहा। मोहब्बत करना जुर्म नहीं है, मगर मेरे तबके की लड़कियां अगर मोहब्बत करें, तो यह जुर्म ही गिना जाता है और वह भी एक अमीरजादे के साथ, जिसकी लंबी-चौड़ी गाड़ी गली में आ ही नहीं सकती। अगर कोई कभी मुझे वकास के साथ देख पाता, तो यकीनन मुझ पर बद-किरदारी की मोहर लग चुकी होती।

मैंने गाड़ी से उतर कर वकास को खुदा हाफिज कहा, मगर उसने मेरी तरफ देखा भी नहीं। उसके जाने के बाद मैंने सोचा, अगर वकास के बढ़ते कदम न रुके, तो न जाने क्या होगा। मुझे अरसलान हैदर का गुस्से से भरा चेहरा याद आया और मेरे रोंगटे खड़े हो गये।

अगले दिन मैं कोशिश के बावजूद घर से निकलने का इरादा न कर सकी, हालांकि आज एक विदेशी डिजाइनर को आना था और उसके साथ खासतौर पर मेरी मीटिंग थी।

शाम को इंतहाई बेजारी की हालत में मैं कमरे में गजलें सुन रही थी कि मेरी छोटी बहन तूफानी अंदाज से कमरे में दाखिल हुई और बोली, "दीदी सुनो। कुछ लोग आये हैं। अपने कपड़ों से बहुत अमीर लग रहे हैं। दो औरतें और तीन मर्द हैं।"

मैं बदहवासी में कमरे से निकली, तो सामने ही अरसलान हैदर और वकास

खड़े थे। उनके साथ ही दो महिलाएं भी थीं। एक वृद्ध थी और दूसरी अधेड़। अधेड़ महिला शायद अरसलान हैदर की बेगम थी। उनके करीब ही एक शर्मीला सा नौजवान खड़ा था। मैं बौखला कर रह गयी। अब्बा ने आगे बढ़कर उनका स्वागत किया और घर के छोटे-से, लेकिन साफ-सुथरे और नफासत से सजे ड्राइंग-रूम में बैठा दिया।

बाद में मुझे पता चला कि वृद्ध महिला वकास की वालिदा हैं। मैं उन दोनों महिलाओं की नजरों के घेराव में थी। मैं घबराकर जल्दी से वहां से उठ गयी और मेहमानों की आवभगत के बारे में बहनों को हिदायतें देने लगी।

थोड़ी देर के बाद अम्मा खुशी से गुलनार चेहरा लिये मेरे पास आयीं और मेरा ललाट चूम लिया, "बेटा, वे लोग तुम्हारे रिश्ते के लिए आये हैं।"

मैं हक्का-बक्का खड़ी की खड़ी रह गयी। जिस मंजिल को हासिल करना मुझे बेहद मुश्किल लग रहा था, वह मंजिल मेरे बेहद करीब आ चुकी थी। अब्बा ने सोचने के लिए मोहलत चाही, तो वह उन्हें मिल गयी।

एक हफ्ते बाद मेरी उंगली में वकास हैदर के नाम की अंगूठी पहना दी गयी। अरसलान हैदर ने मुझसे कहा था कि मैं पूर्ववत अपना काम करती रहूं, मगर अपने सहकर्मियों से वकास हैदर और अपनी मंगनी की खबर गुप्त रखूं। मैंने उनकी बात मान ली, क्योंकि उस वक्त मुलाजमत मेरे लिए बहुत जरूरी थी।

अब्बा ने दो साल की मोहलत मांगी थी शादी के लिए। सोचा था; इस अरसे में दहेज के लिए कुछ रुपया जमा हो जायेगा। अगर और कोई रिश्ता होता, तो शायद मैं फिलहाल इनकार कर देती, क्योंकि अभी मुझे अब्बा का बोझ बंटाना था।

वकास मुझसे लिये-दिये रहता था। हां, कभी-कभार मूड में होता, तो गाड़ी लिये स्टाप पर मौजूद होता। मैं भी बेधड़क किसी पिकनिक-स्पाट पर उसके साथ चली जाती। अम्मा को मैंने वकास के बारे में सब कुछ बता दिया था।

हमारी मंगनी को छह माह हो चुके थे। जब एक दिन अचानक वकास ने बताया कि वह कनाडा जा रहा है। भाई का इरादा वहां पर भी कुछ काम करने का है। मेरी आंखों में अनजानी आशंकाएं देखकर वह हंस पड़ा, "अरे बेवकूफ! तुम्हें एतबार नहीं है मुझ पर। सिर्फ डेढ़ साल की बात है। भाई कह रहे हैं कि वह वादे के मुताबिक शादी करेंगे और मुझे बुला लेंगे। फिर तुम भी मेरे साथ होगी।"

वह मुझे वादों के सुनहरे जाल में जकड़ कर विदेश चला गया। उसके जाने के बाद मुझे अहसास हुआ कि मेरा तो रोम-रोम उसकी मोहब्बत में डूब चुका है और जुदाई चाहे वह अस्थायी ही हो, बहुत जानलेवा होती है।

वकास के पत्र आते रहते थे। मैं उसे विस्तारपूर्वक छोटी-छोटी बातें भी लिखा करती थी। वकास की जुदाई के कांटे चुनते-चुनते दिन कब बीत गये, यह अहसास ही न हो सका। एक दिन अचानक अरसलान हैदर हमारे घर यह खबर देने आये कि वकास के आने में एक माह रह गया है और हम लोग जल्दी ही शादी की तारीख तय करने आ रहे हैं।

मैं खुशी से झूम उठी। अब्बा आश्वस्त थे। मेरे दहेज के लिए वह जो कुछ जमा कर सकते थे, उन्होंने किया। लोग मेरे सौभाग्य

की मिसालें देते थे और मैं गरूर के अहसास से विभोर होकर बेपरवाही से हंस दिया करती थी।

वह एक सर्द और मनहूस शाम थी। अरसलान हैदर अकेले हमारे घर आये और बोले, "मैं शादी की तारीख तय करने आया हूं।" अब्बा ने कुछ कहना चाहा, मगर अम्मा ने उन्हें चुप रहने का इशारा किया।

बड़े वाद-विवाद के बाद अरसलान हैदर की मनपसंद तारीख तय कर दी गयी। अचानक अरसलान हैदर बोले, "निकाह आप कौन-से होटल में करेंगे ?"

अब्बा हड़बड़ा गये और बोले, "बेटा, मैं तो मैरिज-हाल का बंदोबस्त करूंगा। इतनी ही मेरी सामर्थ्य है, बल्कि यह भी मेरी सामर्थ्य से बहुत ज्यादा है।"

"ह्वाट ?" अरसलान हैदर की गंभीर आवाज से मेरे छोटे-से घर के दरो-दीवार गूंज उठे, "अगर आपकी औकात इतनी ही थी, तो क्या जरूरत थी, सब्जबाग देखने की। इतने ऊंचे घर का लड़का पसंद किये बैठे हैं और हाल यह है कि हमारे यहां आने वाले मेहमानों के लिए किसी घटिया मैरिज-हाल का इंतजाम कर रहे हैं। आप जानते हैं कम से कम ६०० आदमी भाग लेंगे, इस शादी में।"

अम्मा की आंखें सदमे और हैरत से फटी रह गयीं। अब्बा ने तो हिसाब लगाया था कि ज्यादा से ज्यादा डेढ़ सौ आदमी बुलाये जायेंगे, जिनमें मर्द-औरतें सभी शामिल होंगे। अब्बा परेशानी से अरसलान हैदर की शक्ल देख रहे थे और मैं दरवाजे का पट थामे बेहिस व बेहरकत खड़ी थी।

अचानक अरसलान हैदर की आवाज फिर कानों से टकरायी, "अभी दहेज देखना होगा मुझे। कम-अज-कम पच्चीस तोले का जेवर तो दे ही रहे होंगे आप अपनी बेटी को।"

"बेटा, यह कैसा जानलेवा मजाक कर रहे हो तुम ?"

"मैं...मैं जानलेवा मजाक कर रहा हूं—आप लोगों से। मजाक तो आप लोगों ने खुद अपने साथ किया है। कहां मेरा हीरा जैसा भाई और कहां यह गंदी गलियां। मैं चाहता, तो यह मंगनी का ढोंग भी न होने देता, मगर अफसोस इस बात का है कि अगर मैं ऐसा करता तो मैं अपना भाई खो देता। आप लोगों ने तो मेरे कलेजे पर हाथ डाला था। अब अगर तमाम चीजों का बन्दोबस्त आपने कर दिया, तो शायद मेरे दिल में आपके लिए कोई नरम कोना पैदा हो जाये, वरना फिक्र न करें, आपकी बेटी कोई दूसरा अमीरजादा फांस लेगी।"

"बस करो, अरसलान हैदर, बस करो।" मेरी सहनशीलता जवाब दे गयी, "देखो, मेरे मां-बाप के चेहरे। ये अपनी गरीबी और बेटियां पैदा होने की सजा तो पहले ही से भुगत रहे हैं। तुम क्यों

> अगर उरफी मुझे यह न बताते कि वह न जाने कब से खामोश और एकतरफा मोहब्बत की आग में जल रहे थे तो मैं जिन्दगी भर उनके अहसान से दबी रहती

हमें हमारी गरीबी का अहसास दिलाने आये हो। काश ! तुम मां-बाप के सोने की तरह दमकते दिल देख सकते। कोई चाहे जितना ही गरीब क्यों न हो, किन्तु औलाद के भविष्य के लिए हमेशा खूबसूरत ख्वाब ही देखता है। आज मैं...मरियम खां...तुम्हें बद-दुआ देती हूं कि सारे जमाने की दौलत होते हुए भी तुम औलाद की मामूली खुशी के लिए तरसोगे। जिस तरह इस वक्त तुमने मेरे मां-बाप का दिल दुखाया है, उसी तरह तुम भी औलाद के दुख से आशना होगे। अब बेहतर यही होगा कि तुम यहां से चले जाओ। आइंदा कभी इस दहलीज की ओर रुख भी न करना।"

गहरे दुख से मैं बेहोश होकर गिर पड़ी।

मेरी मंगनी टूटने की खबर हर तरफ फैल गयी। मैं चाहती, तो वकास को सब कुछ लिख कर भेज सकती थी, लेकिन अकेला वकास मुझे गवारा न था। मैं अपनी आने वाली नस्ल को खानदान से दूरी का तोहफा दे ही नहीं सकती थी। खानदान से कट कर इंसान की शिनाख्त कितनी मुश्किल हो जाती है, इसका अंदाज मुझे अच्छी तरह था। अगर मेरे प्यार के आगे बेबस होकर वकास हैदर मुझे कबूल भी कर लेता, तो भी मुझे अपने बाप की यह बेइज्जती चैन से जीने न देती।

मेरे ममेरे भाई उरफी को इस हादसे का पता लगा तो वह मेरे दुखी मां-बाप को तसल्ली देने आ गये। उन्होंने अब्बा से कहा, "आप चिन्ता न करें। आपकी प्रतिष्ठा पर कोई आंच नहीं आयेगी। जिस दिन मरियम की शादी होनी है उसी दिन उसकी शादी होगी और मैं उससे शादी करूंगा।"

अम्मा और अब्बा को राहत मिल गयी। जिस तारीख को मेरी शादी वकास हैदर के साथ होनी थी, उसी तारीख को उरफी बारात लेकर आ गये। अगर उरफी मुझे यह न बताते कि वह न जाने कब से खामोश और एकतरफा मोहब्बत की आग में जल रहे थे, तो मैं जिन्दगी भर उनके अहसान से दबी रहती।

उरफी भी हमारी तरह मध्यवर्ग से ताल्लुक रखते थे। अरसलान हैदर ने जिस गरीबी की वजह से मुझे ठुकराया था, वह मेरे लिए चुनौती बन गयी थी। उरफी मेरी मानसिक अवस्था को अच्छी तरह समझते थे। मैंने गरीबी के खिलाफ जो जंग शुरू की, उसमें उरफी ने हर कदम पर मेरा साथ दिया।

बहुत कम समय में हमने अपनी जद्दोजहद का फल पा लिया। हमने बेहद फैशनेबुल इलाके में आधुनिक तरह की कोठी खरीदी और बहुत जल्दी उसमें शिफ्ट हो गये। मैंने अपनी निजी एडवरटाईजिंग-फर्म कायम कर ली, जो मेरी और उरफी की थी। हमारे सहृदय साथियों की बदौलत बहुत जल्दी कारोबारी क्षेत्र में मकबूल हो गयी।

एक दिन मुझे यह जानकर बहुत हैरानी हुई कि सामने वाली विशाल कोठी में अरसलान हैदर का खानदान रहता है। उरफी की शरारत पर हंसी भी आयी और वकास हैदर की याद पर आंखों में नमी भी। यहां पड़ोस का होना न होना बराबर ही था।

एक दिन घर की नौकरानी दो दिन की लगातार गैर-हाजिरी के बाद काम करने आयी, तो मैं उस पर बुरी तरह बरस पड़ी। वह रुआंसी होकर बोली, "बेगम साहब, सामने वाले घर में जो हैदर साहब रहते हैं न, उनके बच्चे ने खुदकुशी कर ली। हमने कई साल उनके

घर काम किया है। वह बहुत अच्छा बच्चा था, बेगम साहब...बहुत अच्छा।"

"क्या नाम था उसका?" मैंने चौंक कर पूछा।

"नेमान हैदर। मैट्रिक में फेल हो गया, तो खुदकुशी कर ली।"

नेमान...नेमान...चारों तरफ यह नाम गूंज उठा। वकास कितना दीवाना-वार प्यार करता था उससे। कालेज के जमाने में हमेशा उसके मुंह पर अपने भतीजे की शरारतों का जिक्र रहता था। वह अक्सर कहा करता था, "मरियम, तुमसे ज्यादा अगर मुझे कोई प्यारा है, तो वह नेमान है।"

"क्या कहें बेगम साहब, अल्लाह ने इतना पैसा दिया है, मगर उस घर में खुशी नाम की भी नहीं है। पहले साहब ने बड़ी बेटी की शादी की। वह खुश थी घर में, लेकिन दो साल बाद ही बेवा होकर एक बच्चे के साथ बाप के घर चली आयी। छोटी की शादी की, तो पता नहीं, साहब जैसा आदमी कैसे मात खा गया...वह लोग स्मगलर निकल आये थे। साहब की बेटी के हाथ लंदन हेरोइन भेजी। वह वहां पकड़ी गयी। साहब ने बहुत असरो-रसूख इस्तेमाल किया, मगर उसे सजा होकर रही। शौहर ने तलाक दे दिया। वह अभी लंदन ही में है।"

कुछ देर चुप रहने के बाद नौकरानी फिर बोली, "मुसीबतों ने इतने से ही हैदर साहब का पिंड नहीं छोड़ा। बड़े बेटे को कैंसर हुआ। पहले टांग काटी गयी और बाद में वह बच न सका। अब यह सबसे छोटा और आखिरी बेटा था। यह भी साहब को आंसुओं में डुबो गया। उधर साहब का लाडला भाई वकास हैदर कारोबार करने कनाडा गया था। इधर

खूब अच्छी मंगनी हुई। पता नहीं, अंदर-अंदर क्या गड़बड़ हुई कि शादी न हो सकी। वह हमेशा के लिए कनाडा में ही रह गया।"

मैं सिर थामे बैठी थी। मेरे चारों ओर मेरी बद-दुआ चक्कर लगा रही थी, जो अब से चंद साल पहले मैंने अरसलान हैदर को दी थी। आज मैं पूछ रही हूं, रब्ब साईं से कि मेरी बद-दुआ में इतना असर! एक बाप को लगातार इतने सदमे दिये कि वह अंदर से टूट-फूट गया। काश! इतना असर मेरी दुआ में भी होता, कि वकास हैदर मुझसे जुदा ही न होता।

उस दिन के बाद से मैं बोलते-बोलते अचानक खामोश हो जाती हूं। सोचती हूं, कोई गलत बात मुंह से न निकल जाये। अक्सर बात करते-करते लफ्ज खो जाते हैं और जेहन खाली-खाली हो जाता है। उरफी हैरान हैं कि एकाएक मेरी जुबान में हकलाहट कैसे पैदा हो गयी। उरफी को कैसे बताऊं कि मैं वह काली जुबान की औरत हूं, जिसकी बद-दुआ से किसी का भरा-पूरा घर उजड़ गया है।

■ —प्रस्तुति : मुरजीत

—लंगड़ी डाक्टर—

(पृष्ठ ६७ का शेष)

आहिस्ता-आहिस्ता मैं समझ गयी कि फराज निर्धनता और वंचना-भावना का शिकार है। मैं उसे समझाती थी, "गुरबत ही सब कुछ नहीं है। असल चीज तो इंसान का जौहर होता है।" मेरे बात पर वह बिफर उठता था और कहता था, "अगर गुरबत बुरी नहीं, तो फिर मेरे अब्बू के इंतकाल के बाद हमारे रिश्तेदारों ने हमसे मुंह क्यों मोड़ लिया था? दरअसल तुम्हें गुरबत का तजुर्बा ही नहीं। अगर आज मेरे पास दौलत आ जाये, तो वही लोग मेरे आगे-पीछे घूमेंगे, जो आज मुझसे नजरें चुराते हैं।"

"इंसान दौलत से नहीं, अपने किरदार से बड़ा होता है फराज।"

वह कुछ सोचता था और कहता था, "मुमकिन है कि ऐसा हो, मगर मैं तो यह समझता हूं कि रुपया ही इस दौर की सबसे बड़ी हकीकत है। सारी दुनिया उसके गिर्द घूमती है और वह दुनिया की हर खुशी खरीद सकता है।"

मेडिकल के आखिरी दो वर्षों में हम सब की व्यस्तता बहुत बढ़ गयी। फिर खुदा-खुदा करके इम्तिहान हुए, तो यों लगा कि सिर से बहुत बड़ा बोझ उतर गया है।

इसी दौरान फराज की अम्मी भी मुलाजमत से रिटायर हो गयीं। जब हम हाउस-जाब मुकम्मल कर रहे थे, फराज की बहन शीरी का रिश्ता तय हो गया। शादी की तैयारियों में मैंने भी फराज का हाथ बंटाया। शादी के मौके पर जब फराज से मिली, तब उसे बहुत खुशी हुई।

शीरी की शादी के बाद फराज बहुत पुरसुकून नजर आता था। संयोगवश हम दोनों एक ही अस्पताल में हाउस-जाब कर रहे थे। उन्हीं दिनों हमने अमेरिका में स्पेशलाइजेशन के लिए दरख्वास्त भेज दी। यह भी संयोगवश ही था कि हम दोनों को यह जवाब मिला कि दाखिला मिल सकता है। मैं बहुत खुश थी कि स्पेशलाइजेशन के बाद वतन आकर अपना एक छोटा-सा अस्पताल खोल लूंगी।

जब मैंने मम्मी-डैडी से यह बात की, तो मम्मी ने दो-टूक में जवाब दिया, जबकि डैडी मेरे अमेरिका जाने पर राजी थे। मम्मी का कहना था कि उन्होंने डाक्टरी की तालीम दिलवा कर मेरी जिद पूरी कर दी है और अब वह मुझे अपने घर का देखना चाहती हैं। वह उसे इतनी दूर जाने की इजाजत नहीं दे सकतीं। मैंने उनकी बड़ी मिन्नत समाजत की। डैडी ने भी उन्हें समझाया, लेकिन वह अपनी बात पर अड़ी रहीं। बाद में वह इस बात पर राजी हुईं कि अगर मैं बाहर जाना ही चाहती हूं, तो शादी कर लूं और अपने शौहर के साथ जाऊं। वह मेरा रिश्ता अपनी पसंद से करना चाहती थीं और यह मुझे मंजूर नहीं था।

जब मैंने यह बात फराज को बतायी, तो वह दूसरे ही दिन अपनी अम्मी के साथ हमारे घर पहुंच गया। मेरे मम्मी-डैडी उसे अच्छी तरह जानते थे। बातों ही बातों में उसने कहा कि, "मैं भी छात्रवृत्ति पर अमेरिका की उसी यूनिवर्सिटी में जा रहा हूं, जहां शबाना को जाना है। अगर आप उसका रिश्ता कबूल कर लें, तो हम दोनों इकट्ठे वहां जा सकते हैं।"

मेरे मम्मी-डैडी राजी हो गये। मैं चंद ही दिनों में डाक्टर मिसेज फराज

बन गयी।

वह मेरी जिंदगी के बेहतरीन दिन थे। मुझे यों लगता था, जैसे दुनिया की हर खुशी मेरे दामन में आ गयी है। मैं इन्हीं खुशियों और फराज के संग अमेरिका आ गयी। हम दोनों एक ही यूनिवर्सिटी में स्पेशलाइजेशन करने लगे, लेकिन अभी छह माह भी नहीं गुजरे थे कि वतन से डैडी के इंतकाल की खबर ने मुझे तोड़ कर रख दिया। मैं पढ़ाई छोड़कर फौरन वतन आ गयी। यहां मम्मी अकेली रह गयी थीं।

डैडी की अचानक मौत ने मम्मी को भी बुरी तरह प्रभावित किया था। वह बीमार रहने लगी थीं। उन्हें मेरी जरूरत थी। मैंने स्पेशलाइजेशन का इरादा छोड़ दिया। मैंने फराज को लिखा कि मैं अमेरिका नहीं आ सकूंगी। जब वह स्पेशलाइजेशन करके आयेगा, तो उसे एक छोटा-सा अस्पताल तैयार मिलेगा। यहां हम दोनों काम किया करेंगे।

मैंने एक छोटा-सा अस्पताल कायम करने की तैयारियां शुरू कर दी। अभी यह अस्पताल पूरी तरह मुकम्मल भी नहीं हुआ था कि मम्मी भी हृदयगति बंद हो जाने से मर गयीं। अब मैं तनहा रह गयी थी। मैं अमेरिका भी नहीं जा सकती थी, क्योंकि मैंने अपना अस्पताल बना लिया था। यहां अकेले रहना भी मेरे लिए मुश्किल था। इसलिए मैंने फराज को लिखा कि उसे अपना कोर्स मुकम्मंल किये छह माह से ज्यादा हो गये हैं, लिहाजा वह फौरन वापस आ जाये।

यह बताना तो मैं भूल ही गयी कि फराज ने स्पेशलाइजेशन करने के बाद वहीं एक बड़े अस्पताल में मुलाजमत कर ली थी और मुझे लिखा था कि मैं अपना अस्पताल न बनाऊं और वहां आ जाऊं। उसने यह भी लिखा था कि वहां अस्पताल बनाने से एक माह में जितनी आमदनी होगी, वह अमेरिका में एक हफ्ते की तनख्वाह की आधी भी नहीं होगी।

मैंने अस्पताल दौलत कमाने के लिए तो नहीं बनाया था। मेरे मां-बाप मेरे लिए बहुत दौलत छोड़ गये थे। मैं तो यह अस्पताल फराज को तोहफे में देना चाहती थी और उसके साथ वहां काम करना चाहती थी। जब फराज ने वापस आने से इनकार कर दिया, तो मैंने अस्पताल कुछ साथियों के हवाले किया और अमेरिका जाने की तैयारियां करने लगी।

अमेरिका जाने वाले दिन जब मैं एयरपोर्ट जा रही थी, तब एक तेज-रफ्तार ट्रक से हमारी कार टकरा गयी। मुझे जो साथी एयरपोर्ट छोड़ने जा रहे थे, उन्हें तो मामूली चोट आयी। मेरी एक टांग इस बुरी तरह चकनाचूर हुई कि उसे काटने के सिवा कोई उपाय न रहा। यों मैं एक टांग से वंचित हो गयी।

होना तो यह चाहिए था कि फराज मेरे पास पहुंचता, मगर हुआ यह कि उसने हमेशा के लिए अमेरिका में रहने का फैसला सुनाते हुए मुझे तलाकनामा भेज दिया।

फराज के इस रवैये से मुझे शदीद सदमा पहुंचा। मैं सब्र के सिवा क्या कर सकती थी। बीमारी के बिस्तर पर लेटे-लेटे मुझे खयाल आया कि खुदा ने यह सजा मुझे इसलिए दी है कि मैं उसका शुक्रिया अदा करने के बजाय उसे भूल गयी थी। उसने मुझे बेपनाह नेमतों से निवाजा था, मगर मैंने नमाज-रोजे की पाबंदी कभी नहीं की थी। यह भी मेरी

कृतघ्नता थी कि मैं अस्पताल बनाने के बाद असहाय मरीजों का सस्ता इलाज करने के बजाय उसे ठेके पर देकर अपनी खुशी की खातिर अमेरिका जा रही थी। मैंने रो-रो कर सच्चे दिल से खुदा से माफी मांगी और अपने आपको अस्पताल के लिए सर्मपित कर दिया। अपने दुखों को भूलने के लिए मैं दिन-रात अस्पताल में मग्न रहती।

वक्त गुजरता रहा। मुझे लोगों की सेवा से मानसिक सुकून मिलने लगा। मैं अपने दुख लगभग भूल सी गयी। पंद्रह वर्षों के इस अरसे में छोटा-सा अस्पताल एक बड़े चिकित्सालय में बदल गया। मुझे उससे जो आमदनी होती थी, उसे मैं अस्पताल ही में लगा देती थी। खुदा ने मेरे हाथों में शफा भी बहुत दी थी। लोग मुझे 'लंगड़ी लेडी डाक्टर' जरूर कहते थे, मगर मेरा आदर भी बहुत करते थे। दूर-दूर से अपने इलाज के लिए लोग मेरे पास आते थे।

कुछ ही अरसे पहले की बात है। मैं ह्वील-चेयर पर बैठी हुई सुबह के वक्त अस्पताल का राउंड ले रही थी। अचानक एक मरीज को देखकर बुरी तरह चौंक गयी। इसे कल रात अस्पताल में दाखिल कराया गया था। यह मरीज डाक्टर फराज था। मेरा शौहर फराज...उस पर फालिज का शदीद हमला हुआ था और यह पहला हमला नहीं था। इससे पहले वह अमेरिका में एक या दो बार इस हमले का शिकार हो चुका था।

उसने अपनी अमेरिकी बीवी से कहा था, "तुम मुझे मेरे मुल्क पहुंचा दो।" काफी आरजू-मिन्नत के बाद उसकी अमेरिकी बीवी उसे उसके वतन ले आयी। वतन पहुंचते ही उसे फिर फालिज का दौरा पड़ा। उसकी अमेरिकी बीवी उसे मेरे अस्पताल में दाखिल करा गयी। शायद वह नहीं जानती थी कि यह अस्पताल फराज की साबका बीवी का है, वरना वह उसके इलाज के लिए एक बड़ी रकम पेशगी जमा न करती। वह फराज की बीमारी का पिछला रिकार्ड भी दे गयी थी।

मैंने और जानकारी के लिए जब उस होटल में फोन किया, जिसमें वह ठहरी हुई थी, तब पता चला कि वह कल रात वापस जा चुकी है।

फराज की हालत इतनी बदतर थी कि वह न बोल सकता था, न कोई हरकत कर सकता था। वह भी मुझे पहचान गया था। मुझे देखते ही उसकी आंखों से आंसू आ जाते थे। मैं खुद भी उसका सामना नहीं करना चाहती थी, मगर मेरा फर्ज मुझे मजबूर करता था कि दूसरे मरीजों की तरह उसे भी देखूं। मैं जानती थी कि वह अब निरोग्य नहीं हो सकता। फराज भी यह बात जरूर समझता रहा होगा। इसीलिए वह अपनी सजल आंखों से मुझे देखने के बाद उस ट्रे पर नजर डालता था, जिसमें दवाइयां और इंजेक्शन रखे होते थे।

मैं उसकी नजरों का मतलब समझती थी। वह चाहता था कि उसे 'मर्सी किलिंग' इंजेक्शन लगाकर हमेशा की नींद सुला दिया जाये। उसकी यह हालत मुझसे देखी नहीं जाती थी। मैंने खुद उसे कभी बद-दुआ नहीं दी थी। फिर उसे अपने हाथों कैसे मार सकती थी।

फराज की मां तो मर चुकी थीं, मगर उसकी बहन शीरीं मुझसे मिली और उसने रो-रो कर मुझसे माफी मांगते हुए कहा, "फराज भाई की अमेरिकी

बीवी उन्हें यहां लायी थी। वह खुद होटल में रहती थी और उन्हें मेरे यहां छोड़ गयी थी। फिर वह उन्हें इलाज के लिए यहां पहुंचाकर अमेरिका चली गयी...खुदा के लिए आप भैया को माफ कर दें और उन्हें इस लगातार तकलीफ से छुटकारा दिलाने के लिए 'मर्सी किलिंग' का इंजेक्शन लगा दें। इस जिंदगी से मौत बेहतर है।"

यह एक बहन के अल्फाज थे। जाहिर है कि वह यह सब उसकी बदतर हालत देखकर कह रही थी।

उस वक्त तो मैं कोई फैसला न कर सकी, मगर रात को मैंने रो-रो कर अपने खुदा से दुआ मांगी कि ए खुदाया, मेरा इम्तिहान न ले। कोई बीवी अपने सुहाग को अपने हाथों खत्म नहीं कर सकती। मैंने तो कभी उसके लिए बद-दुआ तक नहीं की। फिर मैं उसे 'मर्सी किलिंग' का इंजेक्शन कैसे लगाऊं? अगर तू मेरे सब्र व जब्त का इम्तिहान लेना ही चाहता है, तो मुझे हौसला दे। अगर यह हौसला नहीं दे सकता, तो फिर उसे खुद ही उठा ले।

सुबह अस्पताल जाने से पहले मैंने फैसला कर लिया कि मैं फराज को मौत का इंजेक्शन लगा ही दूं, ताकि वह उस लगातार तकलीफ से बच जाये।

अस्पताल पहुंचने के बाद मैंने खुद इंजेक्शन तैयार किया और नर्स के साथ फराज के कमरे में आ गयी। फराज उस वक्त आंखें बंद किये लेटा था। मैंने लरजते हाथों से इंजेक्शन की सीरिंज उठायी। मैंने कुर्सी आगे खिसकायी, मगर ज्यों ही मैंने उसे छुआ, त्यों ही मुझे ऐसा लगा कि उसका जिस्म ठंडा पड़ चुका है। फिर यह मालूम करने में देर न लगी कि रात के किसी लम्हे उसके दिल ने धड़कना छोड़ दिया था...गोया खुदा ने मेरी दुआ सुन ली थी। मैं अपने सुहाग को अपने हाथों खत्म करने से बच गयी थी।

फराज को कब्र में उतरे कई दिन बीत चुके हैं, मगर मैं अब तक नहीं संभल पायी। मेरे दिल में दुखों की फसल फिर उग आयी है। काफी सोच-विचार के बाद मैं उस नतीजे पर पहुंची कि अल्लाह ताला ने मुझे और फराज को यह सजा इसलिए दी कि हम कृतघ्न थे। हमने वह कर्ज अदा नहीं किया, जो हम पर देय था। ■

प्रस्तुति—हरपाल कौर

साहसी पतिव्रता

एक नारी ने अपने पति के प्राण की रक्षा में अपना एक हाथ गंवा कर अपने साहस का अनूठा इतिहास रच दिया है। इसे अपने हाथ के कट जाने का कोई गम नहीं है। इसे इस बात की खुशी है कि उसका सुहाग बच गया। वह कहती है—"पतिव्रता नारी का जीवन पति के लिए होता है। पति की जीवन-रक्षा में अपने जीवन को दांव पर लगाना नारी का धर्म है।"

इस साहसी नारी का नाम कल्पना सराफ है। यह बिलासपुर जिले में डगरा-पारा में अपने पति संजय सराफ के साथ रहती थी। एक दिन इसके पति की कुछ लोगों से तकरार हो गयी। बात इतनी बढ़ गयी कि एक व्यक्ति तलवार लेकर संजय को मारने दौड़ा। पति को बचाने के लिए कल्पना बीच में आ गयी। तलवार का वार उसके बायें हाथ पर पड़ा और वह कट गया। जिस हमलावर ने तलवार से वार किया था, वह अपने साथियों के साथ फरार हो गया। पुलिस उनकी तलाश कर रही है।

—अब्दुल सईद खान

—लामा का पुनर्जन्म—

(पृष्ठ ७४ का शेष)

गार्डन मठ के 'मठाधीश' हो गये।

१९५९ में चीनी आक्रमण के दौरान वह तिब्बत से भागकर भारत चले आये। वह शरणार्थी के रूप में एक वर्ष तक यायावर का जीवन बिताते रहे। बाद में पश्चिम बंगाल में वस्सा मठ में बस गये। दलाई लामा के आग्रह पर उन्होंने वाराणसी स्थित तिब्बती अध्ययन संस्थान में प्राचार्य का पद संभाल लिया। कुछ वर्षों बाद वह गार्डन मठ मंडगाड आ गये और वहीं रहने लगे। १९७८ में लामा थिब्तेन यशी के आग्रह पर लामा रिनपोंछे बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए पश्चिमी देशों में गये। यह यात्रा उन्होंने 'फाउण्डेशन फार द प्रिजर्वेशन आफ द महायान ट्रेडीशन' के अंतर्गत की। इस संस्था की स्थापना लामा थिब्तेन यशी ने बौद्ध धर्म के प्रचार के लिए १९७४ में की थी। लामा रिनपोंछे ने अपनी वाग्विदग्धता से विदेशों में अच्छी ख्याति प्राप्त कर ली। उनके व्याख्यानों में ऐसा जादू था कि वे श्रोताओं को मंत्र-मुग्ध कर देते थे। उन्होंने दो बार विदेश यात्रा की और बौद्ध धर्म का गौरव बढ़ाया।

१५ नवम्बर, १९८४ को ८० वर्ष की आयु में अचानक लामा रिनपोंछे का निधन हो गया। उनके अनुयायी और प्रशंसक शोक-मग्न हो गये। प्रायः लामा अपनी मृत्यु की भविष्यवाणी कर देते हैं, किन्तु उन्होंने पहले से कोई भविष्यवाणी नहीं की। उनकी कुल्लू स्थित २४ ध्यान केन्द्रों की यात्रा की बहुत बड़ी इच्छा थी, किन्तु मृत्यु ने उनकी यह इच्छा पूरी न होने दी। कुल्लू यात्रा की उत्कट इच्छा वह अपने मन में समेटे इस असार संसार से चले गये। उनके निर्वाण के बाद लामा तेंजिन वांगचुक अस्थायी रूप से गार्डन मठ मंडगाड का संचालन करने लगे। निर्वाण के बाद लामा रिनपोंछे का पार्थिव शरीर चार दिनों तक उनके भक्तों के दर्शनार्थ रखा गया। उनके अंतिम दर्शन के लिए देश-विदेश से उनके अनुयायी आये। शव को अग्नि दिये जाने के समय कुछ हाथी और साधु वहीं से गुजरे। हाथी के लिए तिब्बती 'आक्स' शब्द का प्रयोग करते हैं। १९८५ को तिब्बती आक्स वर्ष कहते थे। शव को अग्नि देते समय हाथी के वहां से गुजरने से तिब्बतियों को यह विश्वास हो गया कि लामा रिनपोंछे का जन्म आक्स वर्ष अर्थात् १९८५ में होगा।

लामा रिनपोंछे ने तो निर्वाण ले लिया, किन्तु उनके अनुयायियों के मन मे यह अडिग विश्वास बना रहा कि बौद्ध धर्म की पुनर्जन्म संबंधी मान्यता सत्य होगी और लामा रिनपोंछे अवतार लेकर फिर उनके बीच आयेंगे।

बौद्ध धर्म में यह विश्वास है कि अपने शिष्यों तथा अनुयायियों के मार्ग-दर्शन और कल्याण के लिए धर्मगुरु तथा धर्माचार्य पुनः जन्म लेते हैं और कुछ विशेष चिह्नों से युक्त होने के कारण अल्पायु में ढूंढ़ भी लिये जाते हैं।

तिब्बतियों के सर्वोच्च गुरु महामना दलाई लामा चौदहवें ने अपनी आत्मकथा 'मेरा देश मेरे देशवासी' में लिखा है—"हम विश्वास करते हैं कि विभिन्न रूपों में प्रत्येक प्राणी मृत्यु के बाद फिर जन्म लेते हैं। प्रत्येक जीवन में, जो सुख और दुख वे भोगते हैं, उसका अनुपात उनके जन्म में किये गये अच्छे और बुरे कर्मों द्वारा निश्चित होता है। वे अपने वर्तमान जीवन में अपने प्रयासों द्वारा अनुपात में

कुछ परिवर्तन भी कर सकते हैं। इसे कर्म का नियम कहते हैं। प्राणी कर्म के क्षेत्र में ऊपर या नीचे हो सकते हैं। उदाहरण के लिये, पशु जीवन से मनुष्य जीवन में, या मनुष्य जीवन से पशु जीवन में आ-जा सकते हैं। अंततः ज्ञान के प्रभाव से जब उनका पुनर्जन्म बंद हो जाता है, तब उन्हें निर्वाण मिल जाता है। निर्वाण में ज्ञान की सीढ़ियां हैं। सबसे ऊंची सीढ़ी बौद्धत्व है। अवतार वे प्राणी हैं, जिन्होंने या तो निर्वाण की विभिन्न श्रेणियों को प्राप्त कर लिया है, या निर्वाण से नीचे की सीढ़ी अर्हत प्राप्त कर ली है। वे दूसरे लोगों को निर्वाण की ओर उठाने में सहायता करने के लिए पुनः अवतरित होते हैं।"

२८ अप्रैल, १९९० को तेंजिन वांडाक को कुल्लू से मनाली गार्डन थैच्कोव विहार लाया गया। विहार को खूब सजाया गया था। वहां विशिष्ट व्यक्तियों के लिये बनाये गये कक्ष में बालक को लाकर पवित्र जल से स्नान कराया गया और भोजन कराया गया। बाद में उसे गोम्पा के मुख्य विशाल कक्ष में लाया गया। कक्ष लामाओं, संन्यासियों तथा बौद्ध अनुयायियों से भरा था। मंत्रोच्चारण के साथ तेंजिन को लामा के रूप में प्रतिष्ठित किया गया।

अपने बेटे को महान लामा का अवतार पाकर तोपग्याल वांगचुक के खुशी की सीमा न थी। तेंजिन की माता गौरव से फूली नहीं समाती थी। उसने गर्व के साथ कहा, "अवतारी बालक ने मेरी कोख से जन्म लेकर मुझे अमर कर दिया। यह हमारे अच्छे कर्मों का पुण्य फल था कि तेंजिन ने हमारे पुत्र के रूप में जन्म लिया।"

आजकल बालक तेंजिन अपने वर्तमान माता-पिता के पास बुद्ध धर्म की धरोहर और कर्नाटक के बौद्ध विहार की अमानत के रूप में रह रहा है। कुछ समय बाद इस बालक को कर्नाटक स्थित इसके संस्थान गार्डन बौद्ध मठ मंडगाड में रखा जायेगा जहां इसकी शिक्षा तिब्वती परंपरा और वर्तमान शिक्षा प्रणाली के अनुसार होगी।

क्याब्जे जोंग रिनपोंछे का कुल्लू में पुनर्जन्म होने से उनकी कुल्लू जाने की अन्तिम इच्छा थी, पूरी हो गयी। शायद उन्हें अपने वहां अवतार लेने का पूर्वाभास हो गया था।

३६ इंच लम्बी मूंछ वाला व्यक्ति

प्राचीन काल से ही मूंछ मर्दों की शान समझी जाती रही है। मूंछों की शान रखने के लिए लोग मर मिटना पसन्द करते थे। वे मूंछों को ऊंचा रखना अपने लिए गौरव की बात समझते थे और मूंछों का गिरना अपमान समझते थे। अमेरिका में न्यू हाल में रहनेवाला जिम मिशेल ऐसा ही व्यक्ति है, जो मूंछों को ही अपना गौरव समझता है।

४६ वर्षीय मिशेल ट्रक का मालिक है। उसकी मूंछें ३६ इंच लम्बी हैं। वह जहां कहीं भी जाता है, वहां गौरव और गर्व के साथ अपनी मूंछों का प्रदर्शन करता है। उसने दस साल से मूंछों को बढ़ाकर इतना लम्बा किया है। जिसने भी उसे दस साल पहले देखा होगा, वह अब उसे पहचान नहीं पायेगा। दाढ़ी-मूंछ ने उसका चेहरा बिल्कुल ही बदल दिया है।

मिशेल का दृढ़ निश्चय है कि वह अपनी दाढ़ी और मूंछ कभी नहीं मुड़ायेगा। वह उसे बराबर बढ़ाता ही रहेगा। उसका कहना है कि बढ़ी हुई मूंछों से उसे आन्तरिक शक्ति मिलती है। मूंछ बढ़ाने में उसे बड़ा मजा आता है।

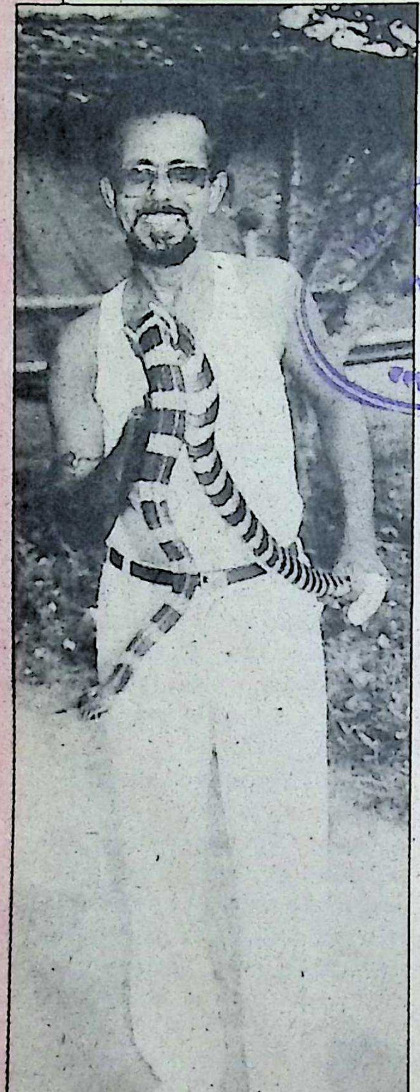

सर्प-मानव

दीपान्विता राय

हीरेन बाबू के पास सर्प-दंश के उपचार के लिए जो जड़ी है, उससे भेषज अनुसंधान में बहुत बड़ी उपलब्धि हो सकती थी। उन्होंने इसके उपयोग के लिए आग्रह भी किया, किन्तु किसी ने ध्यान नहीं दिया, क्योंकि उनके पास मेडिकल साइंस की कोई डिग्री नहीं थी

पचीस अगस्त १९८७ की बात है। रानाघाट सदर अस्पताल के बरामदे में एक व्यक्ति बैठा आंसू बहा रहा था। इसका नाम शतानन था। इसकी बहन शिवानी को सांप ने डंस लिया था। वह उसे बड़ी आशा के साथ अस्पताल लाया था, किन्तु डाक्टरों ने दो टूक जवाब देकर उसे निराश कर दिया था।

इससे पहले वह शिवानी को कृष्ण-नगर अस्पताल ले गया था, जहां डाक्टरों ने स्पष्ट कह दिया था कि उसकी बहन को बचा पाना अब उनके लिए संभव नहीं है।

शिवानी अधिकारी उसकी इकलौती बहन थी। वह एक चार मास के शिशु की मां थी। शिशु को देखकर शतानन की आंखों के आंसू नहीं थमते थे। उसकी समझ में नहीं आता था कि यदि शिवानी को कुछ हो गया तो उसके दुधमुंहे शिशु का क्या होगा।

इसी समय एस०डी०ओ० मुक्तेश्वर हालदार किसी व्यक्तिगत काम से अस्पताल पहुंचे। उनकी निगाह उदास और आंसू बहा रहे शतानन पर पड़ी, तो उनके मन में करुणा जाग गयी। उन्होंने उससे उसके दुख का कारण पूछा तो उसने सही बात बता दी। शतानन की व्यथा का कारण जानने के बाद उन्हें सहसा याद आयी कि एक स्थानीय स्कूल में हीरेन्द्रकुमार राय की प्रदर्शनी चल रही है। हीरेन्द्रराय सांप के बारे में गहरी जानकारी रखते थे। मुक्तेश्वर उदास शतानन को लेकर उस स्कूल में पहुंचे। उन्होंने हीरेन्द्रकुमार राय से कहा, "आपको तो सांपों के बारे में बहुत जानकारी है। इस युवक की बहन को सर्प ने काट लिया है। आप इसे बचा पायेंगे या नहीं?"

शिवानी को वहां लाया गया। हीरेन्द्र ने उसे पहले काफी मात्रा में अदरख का रस पिलाया। कुछ ही देर में शिवानी के रोंगटे खड़े हो गये। इसके बाद हीरेन्द्र ने इसे जड़ी-बूटियों से बनी कोई दवा दी। दवा खाते ही शरीर का तापमान सामान्य होने लगा। उन्होंने उसे फिर दवा दी। तीसरी बार दवा देने के बाद शिवानी के शरीर में स्पंदन हुआ और थोड़ी ही देर बाद वह उठकर बैठ गयी। वहां उपस्थित दर्शक चकित रह गये। मुक्तेश्वर हालदार भी विस्मित थे। शतानन के चेहरे पर खुशी लौट आयी। उसकी आंखों में कृतज्ञता के आंसू उमड़ आये। अहसान जताने

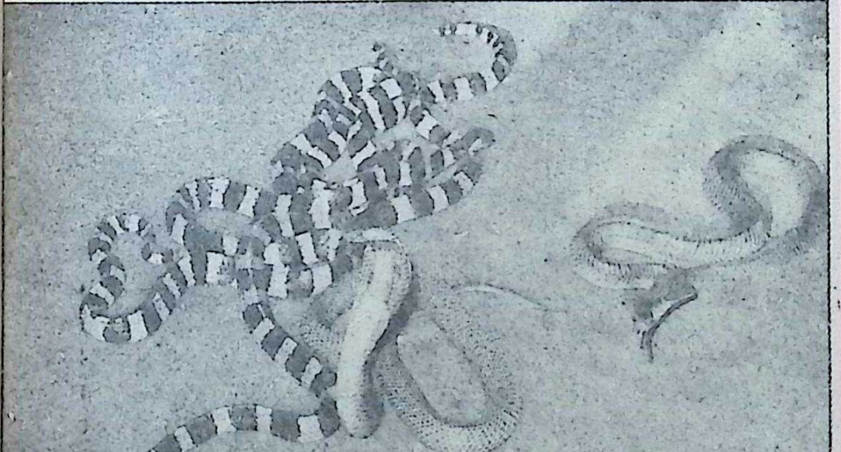

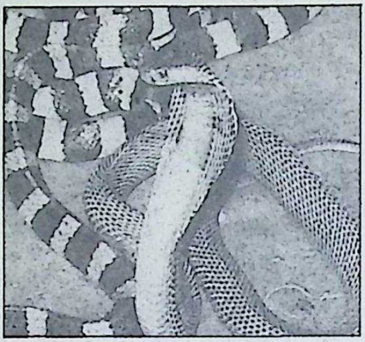

की भाषा उस समय वह ढूंढ़ नहीं पा रहा था।

हीरेन्द्र उर्फ हीरेन राय पायराडांगा के निवासी थे। स्टेशन के पास ही उनका घर था। उनके मकान को देखकर कोई यह अनुमान नहीं लगा सकता था कि उस घर में अलग-अलग किस्म के लगभग तीन सौ सांप होंगे। इन सांपों में कुछ सांप पिटारे में थे, कुछ लकड़ी की पेटी में, कुछ कांच के बाक्स में और कुछ हौज में। भारत में जितने भी प्रकार के सांप पाये जाते हैं, उनमें से लगभग सभी प्रजाति के सर्प यहां लाकर रखे गये थे।

बातचीत के दौरान हीरेन राय ने बताया कि विभिन्न जंतु-जानवरों के प्रति उनका बचपन से ही लगाव था। वह सांपों के बारे में अधिकाधिक जानकारी के लिए सदा उत्सुक रहते थे। १९५८ में उनके दो घनिष्ठ रिश्तेदार सांप के काटने से मर गये थे। इन मौतों ने उन पर गहरा असर डाला था। उन्होंने सांप के विषय में अध्ययन शुरू किया। वैज्ञानिक तरीके से उन्होंने सांप पकड़ना सीखा। फिर वह विभिन्न किस्म के सांप पकड़ते थे और उनका संग्रह करते थे। शुरू में तो यह उनका एक शौक था, किन्तु बाद में यह उनकी आदत बन गयी। पिछले पन्द्रह साल से वह सांपों के संग्रह में लगे हैं।

उन्होंने बताया कि गर्मी और बरसात में सांप मेढक तथा छिपकली खाते हैं। जाड़े में न तो मेढक मिलते हैं, न छिपकली। तब सांपों को अंडे खिलाना पड़ता है। तीन सौ सांपों को रोजाना अंडे खिलाने में उनको काफी व्यय करना पड़ता था।

हीरेन्द्र बाबू सुबह से ही सांपों की देखभाल शुरू कर देते थे। वह नित्य सांपों का पिंजड़ा साफ करते थे। कौन सांप किस सर्पिणी को चुनता है इसका वह विशेष ध्यान रखते थे। जब वह समझ लेते थे कि दो सांप मिलने के इच्छुक हैं तब वे उन्हें और सांपों से अलग कर देते थे। सांपों के साथ रहते-रहते हीरेन बाबू को सांपों की भूख, इच्छा-अनिच्छा, मेल-जोल आदि का सहज ज्ञान हो गया था।

वह सर्पों की दुनिया से इस तरह जुड़ गये थे कि अपनी उजड़ती गृहस्थी का भी उन्हें ज्ञान नहीं हुआ। उनकी पत्नी ने सर्पों के कारण ही उन्हें त्याग दिया। बाद में पत्नी का स्वर्गवास भी हो गया। सर्पों के साथ रहते-रहते उन्हें सांप की जिन्दगी व स्वभाव की इतनी अच्छी जानकारी हो गयी थी कि लोग उन्हें सर्प-मानव कहने लगे थे।

हीरेन बाबू ने सर्प के बारे में बताया कि सामान्यतः सांप को देखते ही लोग या तो उसे मार डालते हैं, या भाग खड़े होते हैं। भारत में जो ३०० किस्म के सांप मिलते हैं, उनमें से सिर्फ ८४ जातियां ही विषैले सर्पों की हैं। शेष जातियों के सर्प विषैले नहीं होते। वे कोई नुकसान भी नहीं करते।

उनके अनुसार विषैले सांप चार प्रकार के होते हैं: (१) मांग केउटा,

गोखुरा या शंखचूड़ (२) वाइपर या चन्द्रबोड़ा (३) करैत तथा (४) समुद्री सांप। सांपों के प्रसंग में जब बहुला और लखिन्दर का जिक्र आया तब हीरेन बाबू ने कहा, "मुझे तो यह कहानी कपोल कल्पित लगती है। काली नागिन के काटने से लखिन्दर के मरने की बात मुझे जंचती नहीं। मेरी अपनी जानकारी के अनुसार काली नागिन इतनी विषैली नहीं होती कि उसके काटने से कोई मर जाये।

संपेरे बीन बजाकर सांप का खेल दिखाते हैं, जिससे लगता है कि सांपों को सुर का बहुत ज्ञान है और वे बंशी की तान पर नाचते हैं। यह बात गलत है। सांप के कान नहीं होते। इसीलिए बंशी या बीन की आवाज वे सुन ही नहीं सकते। सांपों को दिखाई भी कम पड़ता है। उनकी आंखों की पुतलियां स्थिर रहती हैं। वे इधर-उधर नहीं घूमतीं। इसीलिए सांप स्थिर चीजों को नहीं देख पाता। संपेरा बीन बजाते हुए बीन को डोलाता है, उसे देखने के लिए ही सांप को अपना सिर डोलाना पड़ता है, क्योंकि वह स्थिर रहकर आंखों की पुतलियां घुमाकर उस हिलते-डोलते बीन को नहीं देख सकता। सांप के अनुभूति के केन्द्र दो हैं, जीभ तथा पेट। जीभ की मदद से वह यह समझ लेता है कि उसका शिकार किधर है। पेट के जरिए वह जमीन के कंपन को अनुभव करता है और उसी से अपने दुश्मन और दोस्त को पहचान लेता है।

अपने अनुभव के आधार पर हीरेन्द्र राय ने सांप के बारे में बताया कि सर्पों का यौनाचार उनके जीवन का सबसे आकर्षक पक्ष है। आमतौर पर वर्षा ऋतु ही सांपों के मिलन का समय होता है। फिर भी ऐसा नहीं है कि दूसरे समय में वे कभी मिलते ही नहीं। यह मिलन साधारणतः एक ही किस्म के नर और मादा सांपों के बीच होता है। फिर भी जब दो अलग जाति के सांप एक ही क्षेत्र में होते हैं और आसपास उनकी जाति के सांप विरले ही मिलते हैं, तब भिन्न किस्म के सांप और सांपिन के बीच मिलन हो जाता है। यही कारण है कि अक्सर केउटा और धामिन सांप का मिलन होता है। ऐसे मिलन से नए प्रजाति के सांप पैदा होते हैं।

मिलन से पहले सांपों में पूर्वराग दिखायी पड़ता है। यदि किसी क्षेत्र में मात्र एक मादा सर्पिणी हो तथा शेष सभी सर्प हों, तो सभी अपना मनोरंजन करना चाहेंगे। तब वे सभी सांप विभिन्न भंगिमा में विभिन्न गति से उस सर्पिणी के चारों ओर घूमने लगते हैं। कोई भी सांप उस सर्पिणी को स्पर्श नहीं करता। आखीर में जिस सांप को पूर्ण विश्वास हो जाता है कि सांपिन उससे सहवास के लिए सहमत है, वही आगे बढ़कर उस सांपिन को छूता है। इसके बाद शेष सभी सांप वहां से धीरे-धीरे खिसक जाते हैं। उनमें कोई झगड़ा नहीं होता, विवाद नहीं होता। दूसरे पशुओं की तरह लड़ाई नहीं होती। बहुत सुंदर है उनका यह पारस्परिक समझौता।

जब अन्य सभी सांप वहां से चले जाते हैं तब उस जोड़े की मिलन क्रीड़ा शुरू होती है। नर और मादा एक दूसरे के करीब आते हैं, दूर चले जाते हैं, फिर पास आते हैं। वे एक दूसरे को काटते हैं, डंसते हैं, जिससे अक्सर खून भी निकल आता है। इससे उत्तेजना में कमी नहीं आती। सांपिन की देह से उस समय एक तरह की गंध निकलती है, जिससे उनकी कामोत्तेजना बढ़ जाती है। इसके बाद

उनका सहवास आरंभ होता है। गांव के लोग इस मिलन को 'शंख लगना' कहते हैं। उस समय दोनों सांप एक दूसरे को जकड़ कर शंख का आकार धारण करते हैं।

फन वाले सांप उस समय अपना फ़न फैला लेते हैं। इस तरह आलिंगनबद्ध होकर वे जमीन पर लगभग दो-तीन फीट ऊपर तन कर खड़े हो जाते हैं। इसी मुद्रा में वे लगभग आधे घंटे से लेकर पैंतालीस मिनट तक रहते हैं। इसके बाद वे दोनों क्रमशः निस्तेज होने लगते हैं और जमीन पर निर्जीव की तरह लेट जाते हैं। कुछ देर तक सांप और सांपिन एक दूसरे से मुक्त होकर अलग-अलग दिशाओं की ओर चले जाते हैं।

सांप का मस्तिष्क अत्यंत छोटा होता है, जिससे उसमें संवेदनशीलता लगभग नहीं के बराबर होती है। इसीलिए उनमें आपसी संबंध नहीं होता। यहां तक कि बच्चों के प्रति भी उनमें अनुराग नहीं होता। अंडे देने के बाद सांपिन अंडों को छोड़कर चली जाती है। यही नहीं, अक्सर वह अपने ही बच्चों को खा जाती है।

बचपन से ही हम यह सुनते आये हैं कि सांप को मारने के बाद उसे जला देना चाहिए। अन्यथा उसका संगी या संगिनी मारने वाले को तलाश कर उसे डंस लेती है। आधुनिक शिक्षित लोग इस मान्यता को किस्सागोई या बकवास मानते हैं।

हीरेन राय का कहना है कि इस मान्यता का एक वास्तविक आधार है। सांप के आंखों की पुतलियां कैमरा के लेंस की तरह बनी होती हैं। इसलिए उसके मरने से पहले का दृश्य उसकी आंखों की पुतलियों में अक्स हो जाता है। उसका जोड़ा या साथी जब उसकी लाश के पास आता है तो उसकी आंखों में उसे मारने वाले की तस्वीर दिखायी पड़ती है। वह देखकर उसे पहचान लेता है और फिर वह उससे प्रतिशोध लेता है। इसीलिए सांप मारकर उसे जला देना ही उचित है।

सांप के विषय में इतनी जानकारी देने के बाद हीरेन बाबू ने बताया कि हमारे देश में हर साल बहुत से लोग सांप के डंसने से मरते हैं, इसका कारण उचित दवा की जानकारी न होना है। भारत में अब तक सिर्फ कोबरा के जहर का प्रति-षेधक आविष्कृत हुआ है। अन्य तीन तरह के विषैले सांपों के विष के बारे में कोई अनुसंधान ही नहीं हुआ। यह अनुसंधान बहुत जरूरी है।

१९७५ की बात है। हीरेन्द्र बाबू बसिरहाट के एक सरकारी दफ्तर में नौकरी करते थे। एक दिन कार्यालय के सामने के मैदान में बैठकर वह दोपहर का लंच ले रहे थे। अचानक उन्होंने गौर किया कि एक सुदर्शन व्यक्ति उनसे कुछ दूरी पर बैठा है और उन्हीं को देख-देखकर मुस्करा रहा है। हीरेन्द्र राय को बहुत आश्चर्य हुआ, क्योंकि वह व्यक्ति बिलकुल अजनबी था। कुछ देर के बाद उस व्यक्ति ने हीरेन बाबू को बुलाया और कहा, "सांप तेरा पीछा कर रहा है। तेरे सामने घोर विपदा है। तू घबड़ा नहीं। मैं तुझे दो जड़ी दूंगा। इनमें से एक का नाम है मणिराज। इसे बाग में गाड़ देने से बिना तेरी जानकारी के कोई सांप तेरे घर में नहीं घुस पायेगा। दूसरी जड़ी कभी मुसी-बत पड़ने पर उपयोग में लाना।" इतना कहकर उसने दो जड़ी दिया और वहां से चला गया। उस परम हितैषी व्यक्ति का नाम-पता तो हीरेन बाबू न जान पाये, किंतु उसकी दी हुई जड़ी का कमाल उन्होंने

आजमा कर देख लिया। एक बार एक शंखचूड़ ने उन्हें ही डंस लिया। उन्होंने जड़ी का प्रयोग किया और उनकी जान बच गयी।

एक बार हीरेन बाबू इंडियन इंस्टीट्यूट आफ मेडिकल साइंस के अधिकारियों के पास गये और कहा, "अगर किसी को विषैले सांप ने काट लिया हो और उसकी मौत निश्चित हो तो मैं उसे भी मरने से बचा सकता हूं। मेरे पास एक ऐसी जड़ी है, जो सांप के काटे हुए व्यक्ति को बचा सकती है। मैं इस पर अनुसंधान में सहयोग दे सकता हूं। हीरेन बाबू की बातों पर किसी ने ध्यान नहीं दिया, क्योंकि उनके पास मेडिकल साइंस या विज्ञान की कोई भारी-भरकम डिग्री नहीं थी।

हीरेन्द्र राय को इस बात का कोई दुख नहीं है कि उनकी बातों पर किसी ने ध्यान नहीं दिया। वह तो इस संबंध में सदा मुस्कराते हुए यही कहते हैं, "मुझे यश नहीं मिला तो क्या हुआ? शिवानी अधिकारी को तो मैंने बचा दिया। उसके चार महीने के बच्चे को तो मां वापस मिल गयी। इससे अधिक आनंद की बात इस दुनिया में मेरे लिए और क्या हो सकती है?" ■

चमत्कारी बालक

यह एक आश्चर्यजनक सत्य है कि अमेरिका में एक ऐसा लड़का है, जिसके स्पर्शमात्र से ही असाध्य से असाध्य रोग भी क्षणभर में दूर हो जाते हैं। इस ९ वर्षीय अद्भुत बालक का नाम ज्वॉय है। वह एक पादरी का बेटा है। यह चमत्कारी बालक भयानक से भी रोगों को ठीक करने का चमत्कार फोनेक्स के एक गिरजाघर में दिखाता है। जिस समय यह किसी रोगी को स्पर्श करता है, उस समय उसके हाथ में पवित्र धर्मग्रंथ 'बाइबिल' होता है और यह ईश्वर के ध्यान में तन्मय रहता है।

एक महिला ने बताया कि उसका बच्चा चकत्ता रोग से पीड़ित था। वह बच्चे को चमत्कारी बालक के पास ले गयी। ज्योंही बालक ने रोगी बच्चे का स्पर्श किया, त्योंही बच्चे के शरीर से चकत्ते गायब हो गये।

इस बालक के चमत्कार से लाभ उठाने वाली एक अन्य महिला ने बताया कि वह आर्थराइटिस की भयानक पीड़ा से परेशान थी। उसका चलना-फिरना मुश्किल था। ज्योंही इस चमत्कारी बालक ने उसका स्पर्श किया, त्योंही उसका दर्द काफूर हो गया। वह चलने ही नहीं लगी, बल्कि कुछ ही क्षणों के बाद दौड़ने लायक भी बन गयी।

दुर्घटना में एक व्यक्ति के हाथ की हड्डी टूट गयी थी किन्तु ज्योंही इस विलक्षण दैवी शक्ति वाले बालक ने उसका स्पर्श किया, त्योंही वह ठीक हो गया। उसकी हड्डियां अपने आप जुड़ गयीं।

यह छोटा चमत्कारी बालक कहता है—जो कुछ मैं करता हूं, वह प्रभु के प्रताप से करता हूं। जब मैं यह समझने लगूंगा कि जो कुछ मैं करता हूं, वह अपने प्रताप से करता हूं, तब मैं वह नहीं रह पाऊंगा, जो आज हूं।"

■

खूंखार गुलदार का शिकार

महेश शर्मा

मेरा नाम महेश शर्मा है। मेरा जन्म स्थान मेरठ है। साहस और वीरता की गाथाओं और रोमांचक शिकारों में मेरी बचपन से ही रुचि रही है। मैंने श्रीराम शर्मा तथा जिम कार्बेट की रोमांचक शिकार कथाएं बचपन में ही पढ़ डाली थीं। उन क्षणों की कल्पना करके मुझे आनन्द मिलता था, जबकि शिकारी अपने प्राणों को हथेली पर लेकर हिंसक जीवों के पीछे पड़ जाता है और उसका शिकार करके ही दम लेता है।

बचपन से ही एक अच्छा शिकारी बनने की मेरी आकांक्षा थी। मैं संकटों से घबराता नहीं हूं। एक बार मैंने यह सुना कि मेरे गांव के आस-पास के गांवों में भेड़ियों ने उत्पात मचा रखा है। उनके आतंक से गांव वाले सूर्य डूबते ही अपने घरों का दरवाजा बन्द कर लेते हैं। गांव वालों के पशुओं और छोटे-बच्चों को भी खूंखार भेड़िये उठा ले जाते थे और मार डालते थे।

जब कभी मुझे इस रोमांचक शिकार की याद आती है, तब मैं ईश्वर को धन्यवाद देता हूं, जिसने गुलदार के शिकंजे से अपने साथी को बचाने का मुझे जुझारू साहस दिया

महेश शर्मा अपने माथा क साथ

मैंने अपने मित्र भूपन्द्र नाथ वत्स से कहा, "भाई, शिकार में तुम्हारी भी रुचि है और मेरी भी। क्यों न हम और तुम मिलकर भेड़ियों का शिकार करें और गांव वालों को आतंक से मुक्त करें।" मेरी बात सुनकर वत्स ने कहा, "भाई महेश, इससे बड़ी बात और क्या हो सकती है। चलो, हम दोनों मिलकर जीवन का पहला शिकार करें।"

हम दोनों मित्र दो बड़े चाकू लेकर शिकार के लिए चल पड़े। न जाने कैसे यह बात मेरे पिता जी को पता लग गयी। उन्होंने आदमी भेजकर हम दोनों को बीच रास्ते से ही लौटा लिया। घर पर हम दोनों को डाट भी सहनी पड़ी और मार भी। उन्होंने कहा, "नादान बच्चों, तुम लोग यह भी नहीं समझते कि जिन खूंखार जानवरों को साहसी ग्रामीण भी नहीं मार पा रहे हैं, उन्हें तुम क्या मारोगे ?"

मैंने कहा, "पिता जी, जोखिम उठाने का साहस ही तो शिकार का प्राण तत्व

महेश शर्मा

है। जिसमें यह साहस नहीं होता वह शिकार नहीं कर पाता। मेरी समझ में ग्रामीणों में 'करो या मरो' के संकल्प के साथ भेड़ियों पर टूट पड़ने का साहस नहीं है।"

"आतंक और साहस के बीच संघर्ष अभी तुम लोगों ने देखा नहीं है। इसी से ऐसा कहते हो। जब अग्नि-परीक्षा की घड़ियों से गुजरोगे, तब पता चलेगा कि शिकार कितना भयावह होता है।"

मैंने पिताजी से तर्क करना उचित नहीं समझा और चुप हो गया। पिता जी ने मुझे चुप तो कर दिया, किन्तु मेरे भीतर उमड़ती शिकार की लालसा को वह शांत नहीं कर पाये। मैंने मन ही मन संकल्प कर लिया कि यदि मुझे भविष्य में शिकार करने का कभी मौका मिला तो मैं अपने साहस से सबको चमत्कृत कर दूंगा।

ईश्वर ने मेरे मन की आवाज सुन ली। १९५१ में मैं पुलिस सब इंसपेक्टर बन गया। इस नौकरी के मिलते ही मेरा मन बोल उठा कि अब रोमांचक शिकारों का अवसर मिलेगा। कुछ ही दिनों बाद मैं सब इंसपेक्टर से इंसपेक्टर बन गया। इस दौरान मैं जंगली इलाकों के कई थानों में रहा। इन थानों में अपनी तैनाती के दौरान कई शिकारियों को मैंने शिकार करते देखा। मैंने बहुत-सी शिकार कथाएं पढ़ डाली और शिकार के सारे गुरों से परिचित हो गया।

१९६४ का वर्ष था। जबलपुर जिले की सिहोरा तहसील के ढीमरखेड़ा थाने में मुझे थानेदार के रूप में आये हुए कुछ ही दिन गुजरे थे कि एक दिन मैंने सुना कि एक गुलदार ने इतना आतंक मचा रखा है कि लोगों का जीना दूभर हो गया है।

मेरा थाना जंगल के बीच में था। बीच में ऊंची-नीची पहाड़ियां थीं। जंगल में प्रायः सभी प्रकार के वन्यजीव रहते थे। रात्रि के समय शेर और गुलदार अपने शिकार की तलाश में थाने के परिसर तक आ जाते थे। रात के समय न कोई घर से निकलता था और न जंगल तक जाने का साहस करता था।

मैंने एक दिन अपने थाने के मुंशी से पूछा, "सुना है, यहां एक गुलदार ने आतंक मचा रखा है।"

"हां साहब, बात सच है। एक रात तो गुलदार थाने के सामने जाकर बैठ गया था। लोगों की नजर पड़ी तो वे घबरा गये। सिपाहियों ने हवाई फायर करके उसे किसी तरह भगाया।" मुंशी ने बताया तो मैंने मन ही मन गुलदार को मार डालने का संकल्प कर लिया।

दो दिन बाद ही थाने से थोड़ी दूर

पर बसे रमपुरा गांव का चौकीदार मेरे पास घबराया हुआ आया और बोला, "साहब, रमपुरा गांव के झरिया गोंड के बैल को गुलदार ने जंगल में मार डाला। गुलदार का आतंक बहुत बढ़ गया है। साहब, कुछ उपाय कीजिए।"

"झरिया का बैल जंगल में कैसे पहुंच गया। मुझे तो यह बताया गया है कि लोग मवेशियों को घर के भीतर बांधते हैं और शाम होते ही घरों का दरवाजा बन्द कर लेते हैं।" मैंने इतना कहा तो चौकीदार बोला, "साहब, जंगल में महुए के बहुत से पेड़ हैं। गांव के लोग वहां तड़के महुआ बिनने जाते हैं। वे साथ में अपने मवेशी भी ले जाते हैं। मवेशी जंगल में चरते रहते हैं और वे महुआ बिनते हैं। झरिया भी महुआ बिनने के उद्देश्य से वहां गया था और साथ में अपना बैल भी ले गया था।"

"गुलदार ने केवल झरिया के बैल पर ही हमला किया था या सब मवेशियों पर?" मैंने फिर पूछा, तो चौकीदार बोला, "साहब, गुलदार ने मवेशियों पर हमला किया था, और मवेशी तो भाग गये, किन्तु झरिया का बैल उसकी चपेट में आ गया।"

"ठीक है, चौकीदार, तुम चलो। मैं भी जंगल आता हूं। आज मैं इस गुलदार को ठिकाने लगाकर ही दम लूंगा। बहुत दिनों से मेरी यह साध थी कि मैं किसी खूंखार जंगली जानवर का शिकार करूं, आज मैं अपनी साध पूरी करूंगा।" आश्वासन के स्वर में इतना कहकर मैंने चौकीदार को घटनास्थल पर भेज दिया।

मैंने ३०३ बोर की राइफल और कारतूस थाने से लिया और सिपाही नर्वदा सिंह के साथ घटनास्थल की ओर रवाना हुआ। नर्वदा सिंह दिलेर था। उसके पास भी बन्दूक थी। मैंने रास्ते में नर्वदा सिंह ने कहा, "मुझे यह विश्वास है कि गुलदार अंधेरा होते ही अपना शिकार खाने अवश्य आयेगा।"

"आना तो चाहिए, साहब। अभी तक तो मैंने शिकारियों के मुंह से यही सुना है कि यदि जंगली जानवर अपना शिकार नहीं खा पाता तो वह अंधेरा होते ही अपना शिकार खाने आता है।"

जहां बैल मरा पड़ा था, उससे ३० कदम दूर एक वृक्ष था। मैंने इसी वृक्ष पर एक मचान बनवाया। लकड़ी पर देर तक बैठे रहने में मुझे असुविधा न हो, इसलिए मैंने उस पर एक मोटा गद्दा बिछवा दिया। अभी शाम होने में पांच घण्टे की देर थी। इसलिए मैं आवश्यक तैयारी के लिए थाने लौट आया।

मैंने आदमी भेजकर आसपास के गांवों के निवासियों को ताकीद कर दिया कि शाम होने पर कोई जंगल में न जाये। ऐसा मैंने इसलिए किया कि कोई अनजान राही यदि अंधेरा होने पर रास्ते में आ गया तो गुलदार उस पर हमला करने से बाज नहीं आयेगा। मैंने शिकारियों तथा शिकार-कथाओं से जो अनुभव प्राप्त किये थे, उसके अनुसार जंगली जानवरों की यह आदत होती है कि दिन के समय शिकार करने के बाद यदि उन्हें शिकार खाने का अवसर नहीं मिलता तो वे एकान्त ढूंढ़कर आस-पास ही छिपे रहते हैं और अंधेरा होते ही बड़ी सतर्कता के साथ शिकार को खाने के लिए उसके पास पहुंचते हैं। ऐसे समय में वे किसी तरह का व्यवधान सहन नहीं करते।

मैं यह सोचकर कि रात में न जाने कब तक जागना पड़े, सो गया। जब चार

बजने को हुआ, तब सिपाही नर्वदा सिंह मेरे घर आया। उसने मुझे जगाया और बोला, "साहब, अब तैयार हो जाइए।"

मैंने पूछा, "गुलदार दिखायी तो नहीं पड़ा?"

नर्वदा ने उत्तर दिया, "नहीं, अभी तक उसका कोई अता-पता नहीं है।"

मैंने थाने के रोजनामचे में आवश्यक इन्दराज किया तथा राइफल और कारतूस लेकर सिपाही नर्वदा सिंह के साथ शिकार के लिए प्रस्थान किया। मैं नर्वदा सिंह के साथ दुर्गा मंदिर गया और अपनी सफलता के लिए देवी से आशीर्वाद मांगा। सायंकाल पांच बजे मैं घटनास्थल पर पहुंच गया। वहां चौकीदार तीन अन्य ग्रामीणों के साथ मौजूद था। चौकीदार ने बताया कि अभी तक इस बात का कोई पता नहीं लगा कि गुलदार कहीं पास ही दुबका बैठा है या कहीं भाग गया।

मैंने कहा, "चौकीदार, तुम चिन्ता न करो। अंधेरा होते ही गुलदार अपने आप अपने शिकार के पास आयेगा। हिंसक जीव अपनी दृढ़ शक्ति से यह पता लगा लेते हैं कि उनके आस-पास कौन है। पशुओं के होने की गंध तो इन्हें दूर से ही मिल जाती है।

इतना कहकर मैंने मचान का एक बार फिर निरीक्षण किया। मचान इतना ऊंचा था कि वहां तक गुलदार के पहुंचने की कोई संभावना नहीं थी। हवा शिकार की दिशा से विपरीत दिशा में बह रही थी। इससे गुलदार को हमारी मौजूदगी का आभास हो सकता था।

मैं लगभग साढ़े पांच बजे सिपाही नर्वदा सिंह के साथ मचान पर बैठ गया। मैंने टार्च और राइफल को भलीभांति जांच लिया ताकि जरूरत के समय ये धोखा न दें। कुछ ही देर में सूर्य अस्त हो गया। चारों ओर अंधेरा फैलने लगा। कुछ ही समय बाद पेड़ों की लम्बी-लम्बी परछाइयां भी अंधकार में विलीन हो गयीं। मैं नर्वदा सिंह के साथ सावधान होकर गुलदार के आने की प्रतीक्षा करने लगा।

कुछ रात और बीती, पर गुलदार का कहीं पता न था। मैंने धैर्य के साथ अपनी प्रतीक्षा जारी रखी। अचानक मुझे गुलदार दबे पांव अपने शिकार की ओर बढ़ता दिखायी पड़ा। मैंने उसे छेड़ना उचित नहीं समझा और उसे अपने शिकार के पास आने दिया।

गुलदार आकर अपने शिकार के पीछे बैठ गया और उसकी दाहिनी जांघ का मांस खाने लगा। मैंने नर्वदा सिंह को टार्च का प्रकाश फेंकने का संकेत किया। टार्च के प्रकाश ने बैल और गुलदार को अपने घेरे में ले लिया। मैंने गुलदार को निशाने पर लिया और गोली चला दी। गोली के छर्रे गुलदार के शरीर में धंस गये।

गोली लगते ही गुलदार गरजा और फिर लंगड़ाता हुआ पश्चिम की ओर घनी झाड़ियों में पहुंचकर ओझल हो गया। कुछ समय तक उसके दौड़ने से पत्तों की खड़खड़ाहट होती रही और फिर सब कुछ शांत हो गया। मुझे कुछ आशा भी हुई और निराशा भी। आशा इस बात की थी कि गुलदार शायद गोली लगने से झाड़ी में पहुंच कर मर गया है। निराशा इस बात की हुई कि अगर गुलदार जिन्दा है तो घायल होने के कारण वह और अधिक खूंखार हो जायेगा। निराशा का एक कारण यह भी था कि

यदि गुलदार नहीं मरा है तो जंगली जानवर के शिकार की मेरी आकांक्षा अधूरी रह जायेगी।

मैं आशा और निराशा के बीच झूल ही रहा था कि अचानक रमपुरा गांव से ग्रामीण शोर करते हुए और ढोल बजाते हुए आते दिखायी पड़े। मुझे यह समझते देर न लगी कि गोली की आवाज और उसके साथ गुलदार के गरजने की आवाज सुनकर गांववालों ने यह अनुमान लगा लिया कि गुलदार मारा गया। इसीलिए वे खुशी से चिल्लाते हुए और ढोल बजाते हुए यहां आ रहे हैं। चौकीदार के साथ भीड़ के घटनास्थल पर आने पर जब मैंने छोटी बल्लियां और रस्सियां देखीं, तब मैं समझ गया कि मेरा अनुमान सही है। वे बल्लियां और रस्सियां गुलदार को बांधकर ले जाने के लिए लाये थे।

आधा घंटा बीत जाने पर भी जब गुलदार का कोई सुराग नहीं मिला, तब सबके मन में यही बात बैठ गयी कि गुलदार निश्चय ही मर गया है। ग्रामीण उधर जाना चाहते थे, जिधर जाकर गुलदार झाड़ी में ओझल हो गया था, पर मैंने उन्हें मना कर दिया, क्योंकि मुझे यह आशंका थी कि कहीं गुलदार जिन्दा हुआ तो वह उन पर हमला कर सकता है।

लगभग एक घंटा और बीत गया, किन्तु उधर झाड़ियों में कोई हलचल नहीं हुई। इसी समय नर्वदा सिंह ने कहा, "अब तो यह निश्चित है कि गुलदार मर गया है। अब हमें उसके शव को ढूंढ़ना चाहिए।" मुझे यह बात कुछ ठीक लगी। हम सब गुलदार को ढूंढ़ने के लिए पश्चिम दिशा में बढ़ गये। लोग झाड़ियों में पत्थर फेंकते हुए आगे बढ़ रहे थे, ताकि यदि गुलदार जिन्दा हो तो बाहर निकल आये।

अचानक हमारी आशा के विपरीत गुलदार एक झाड़ी से गरजता हुआ बाहर आया। सब लोग अपना प्राण बचाने के लिए भागे। मैं स्वयं बन्दूक हाथ में लिये हुए किंकर्त्तव्यविमूढ़ होकर एक ओर भागा। इसी समय किसी के चीखने की आवाज हुई। आगे बढ़कर मैंने जो दृश्य देखा उससे मेरे रोंगटे खड़े हो गये।

मैंने देखा कि सिपाही नर्वदा सिंह राइफल को लाठी की तरह दोनों हाथों से ऊपर उठाये खड़ा था और गुलदार पिछले पंजों पर खड़ा था। वह अपने शेष दो पंजों को नर्वदा सिंह की राइफल पर रखे था और हमला करने की ताक में था। नर्वदा सिंह गुलदार के भारी शरीर का बोझ अधिक समय तक नहीं संभाल पाया। वह पीठ के बल जमीन पर गिर गया। उसकी राइफल उसके हाथ से छूटकर जमीन पर गिर पड़ी।

गुलदार अचानक नर्वदा सिंह पर सवार हो गया। वह उसकी गर्दन अपने मुंह में लेने के लिए बेताब था। नर्वदा सिंह अपने दोनों हाथों को आगे बढ़ाकर गुलदार के मुंह को अपने से दूर हटाने की कोशिश कर रहा था। मुझे ऐसा लग रहा था कि कुछ ही क्षणों में नर्वदा सिंह अपने को गुलदार के हवाले कर देगा और उसकी जीवन-लीला समाप्त हो जायेगी।

मैं अच्छी तरह जानता था कि घायल गुलदार से जूझना अपनी मृत्यु को खुला निमंत्रण देना है। यह वह क्षण था जबकि मुझे मृत्यु से दूर भागने या मृत्यु से जूझने का निर्णय लेना था। मैंने अपने साथी की जीवन-रक्षा के लिए मौत से जूझने का निर्णय किया।

मैंने तुरन्त गुलदार की ओर बन्दूक

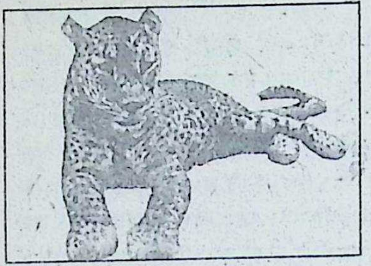

तानकर निशाना साधा। गोली चलाने से पहले मुझे सहसा ध्यान आया कि छर्रे गुलदार के साथ-साथ नर्वदा सिंह को भी लग सकते हैं। मैंने क्षणभर सोचा और फिर दबे पांव गुलदार के पास पहुंच गया। मैंने बन्दूक की नाल दाहिने कंधे पर रखकर उसके हृदय-स्थल की सीध में लगाकर गोली चला दी। गुलदार नर्वदा सिंह पर अपना सारा क्रोध निकालने में इतना तल्लीन था कि उसे मेरे पास पहुंचने और बन्दूक की नाल कंधे से लगाने का आभास भी न हुआ।

गुलदार के शरीर में छर्रे धंस गये। वह बौखला गया और नर्वदा सिंह को छोड़कर मेरी ओर झपटा। मुझे उसके इस हमले का पहले ही से अनुमान था, इसीलिए मैं तेजी से बायीं ओर हट गया। गुलदार पर दूसरा फायर करने से बन्दूक की दोनों नाल खाली हो गयी थी। गुस्से से उबलते गुलदार से मुझे यह कतई उम्मीद नहीं थी कि वह मुझे नर्वदा सिंह की जमीन पर गिरी हुई बन्दूक को उठाने का मौका देगा।

मैंने अपनी राइफल को पुनः लोड करने के लिए जेब से दो कारतूस निकाले और नाल में भरने की कोशिश की। जल्दबाजी और घबराहट में बन्दूक की नाल नहीं खुल पायी। इसी समय मैंने गुलदार को गरजकर अपनी ओर छलांग लगाते देखा। मैं पीछे हटा किन्तु पेड़ से टकरा कर गिर पड़ा।

मौत और जिन्दगी के बीच अब बहुत थोड़ा सा फासला रह गया था। यह मेरा सौभाग्य था कि दूसरे फायर से गुलदार की शक्ति इतनी क्षीण हो गयी थी कि वह मुझ तक छलांग न लगा पाया। गुलदार बीच में ही गिर पड़ा। अब वह लंगड़ाता-लंगड़ाता मेरी ओर बढ़ने लगा।

मैंने भांप लिया कि गुलदार की शक्ति क्षीण हो गयी है। मेरा मनोबल बढ़ गया। मैंने बन्दूक को जोर से पकड़ा और उसकी नाल की तरफ से गुलदार के सिर पर भरपूर प्रहार किया। गुलदार जमीन पर गिर गया। मैंने फिर दूसरा प्रहार किया।

गुलदार जोर से गरजा और फिर मेरी ओर बढ़ने के बजाय लंगड़ाता हुआ झाड़ी की ओर चला गया। मैंने नर्वदा सिंह की भरी राइफल उठा ली ताकि यदि गुलदार हमला करे तो मैं उसका सामना कर सकूं।

मैं वहां से सीधे नर्वदा सिंह के पास पहुंचा। नर्वदा सिंह खून से भीगा था। मैंने नर्वदा को होश में लाने की कोशिश की, किन्तु वह होश में न आया। मैं चार-पांच मिनट तक नर्वदा के पास बैठा रहा, किन्तु मेरी दृष्टि उस ओर लगी रही, जिधर गुलदार लंगड़ाते हुए गया था।

जब काफी देर तक नर्वदा को होश नहीं आया, तब मैं उसे घसीटकर कुछ दूर पर ले गया। उसका बायां हाथ खून से लथपथ था। वह बुरी तरह घायल हो गया था। उसकी हालत से मुझे चिन्ता हो रही थी। मैंने चौकीदार को ग्रामीणों के साथ आने के लिए आवाज दी। कुछ

देर बाद चौकीदार कुछ लोगों के साथ आया। मैंने उससे कहा कि वह नर्वदा को चारपाई पर लिटा कर गांव में प्राथमिक उपचार के लिए ले जाये। चौकीदार ने मेरे आदेश का पालन किया।

अभी तक उस ओर कोई हलचल नहीं हुई, जिधर गुलदार भागा था। अब हमें यह सन्देह होने लगा कि गुलदार मर गया है। मैं कुछ ग्रामीणों के साथ उस ओर बढ़ा जिधर गुलदार गया था। मैं अपनी राइफल लिए दायें-बायें देखता, सावधान होकर आगे बढ़ रहा था। अंचानक एक झाड़ी में नजर पड़ी तो वहां गुलदार मरा पड़ा था।

गुलदार को थाने लाया गया। नर्वदा सिंह को उपचार के लिए सिहोरा तहसील के शासकीय अस्पताल भिजवा दिया गया। दूसरे दिन जब गुलदार के मारे जाने की खबर चारों ओर फैली तो गुलदार को देखने के लिए दिन भर ग्रामीणों की भीड़ उमड़ती रही।

कुछ ही दिन बाद नर्वदा सिंह स्वस्थ होकर घर आ गया। उसे जब भी इन रोमांचक क्षणों की याद आती है, तब वह भय से सिहर जाता है। गुलदार के मारे जाने की खबर जब अखबारों में छपी तब मेरे अधिकारियों और जनता ने मेरे साहस की मुक्त-कंठ से प्रशंसा की।

मेरे ड्राइंग रूम में इस गुलदार की खाल आज भी टंगी हुई है। जब कभी मेरी दृष्टि इस पर पड़ती है, तो मन भय से कांप जाता है और मैं उस ईश्वर को धन्यवाद देता हूं, जिसने मुझे मौत से जूझकर नर्वदा सिंह की प्राण-रक्षा करने का साहस दिया।

●

प्रस्तुति—पी०आर० शुक्ल

विधाता की अद्भुत सृष्टि

ईश्वर की लीला बड़ी विचित्र है। उसकी सृष्टि में कभी ऐसी विलक्षणताएं मिलती हैं, जिन्हें देखकर हमारे सामने सिवा स्तब्ध होने और उन्हें उसकी माया कहकर संतोष कर लेने के और कोई दूसरा विकल्प ही नहीं रहता।

रोनी और डोनी विधाता की ऐसी ही एक सृष्टि हैं। ये दोनों सियामी जुड़वां भाई हैं। ये दोनों जन्म से ही एक दूसरे से पेट से जुड़े हैं। पैदा होने के बाद इन्हें बीस महीने तक अस्पताल में रखा गया। डाक्टरों ने इन्हें एक दूसरे से अलग करने पर बहुत सोचा, किन्तु अन्त में वे इसी निष्कर्ष पर पहुंचे कि इन्हें एक दूसरे से अलग नहीं किया जा सकता। निराश होकर डाक्टरों ने इन्हें इनके पिता के घर भेज दिया। तब से आज तक ३८ वर्षों से ये एक दूसरे से जुड़े हुए रह रहे हैं।

एक दूसरे से जुड़े हुए इन दोनों जुड़वां भाइयों को दो साल तक घर पर ही शिक्षा मिली क्योंकि स्कूल के अधिकारियों ने इनके मां-बाप से स्पष्ट कह दिया कि इन्हें स्कूल भेजना बेकार है। एजूकेशन बोर्ड का कहना है कि ये दोनों एक दूसरे से इस तरह जुड़े हैं कि इनके लिए अकेले अपने से कोई काम कर सकना असंभव है।

तीन साल पहले इन्हें सर्कस में काम मिल गया। अब इनका समय सर्कस की टीम के साथ दक्षिण अमेरिका में घूमने में बीतता है। सर्कस के अद्भुत प्राणी के रूप में ये दोनों आकर्षण के केन्द्र बन गये हैं। चारों ओर इनकी चर्चा है।

दास्तान मादक द्रव्यों की तस्करी की

मो० इशरत खान

सीमा सुरक्षा बल ने मादक द्रव्यों की तस्करी के स्रोत का पता लगाने और गिरोह को पकड़ने में जो सफलता प्राप्त की, वह उसके रजत जयन्ती वर्ष की एक ऐसी गौरवशाली उपलब्धि बन गयी, जिसे सदा गर्व के साथ याद किया जाएगा

अप्रैल १९९० का दूसरा सप्ताह था। सतहत्तरवीं बटालियन सीमा सुरक्षा बल के स्टाफ अधिकारी विजय सिंह अपने फाजिल्का स्थित कार्यालय में सहयोगियों के साथ बैठे थे और भारत-पाक सीमा से होने वाली तस्करी में बराबर होने वाली वृद्धि पर चिन्ताभरी मुद्रा में विचार-विमर्श कर रहे थे।

एक अधिकारी ने कहा, "सर, हमारी बटालियन भारत-पाक सीमा से होने वाली तस्करी को रोकने के लिए भरसक प्रयास कर रही है, किन्तु उसे कोई सफलता नहीं मिल रही है।"

स्टाफ अधिकारी विजय सिंह ने उत्तर दिया, "सफलता न मिलने के कारणों की जांच के लिए ही तो पंजाब सीमा-सुरक्षा बल के अतिरिक्त महानिदेशक प्रकाश सिंह सरहद का दौरा कर रहे हैं। उनके दौरे से अन्य अधिकारियों ने भी सतर्कता में वृद्धि कर दिया है। सीमा के कुछ खास और अहमियत रखनेवाले स्थानों पर नाकेबन्दी की जा रही है। सीमा पर बनाये गये अवरोधों का भी अतिरिक्त महानिदेशक निरीक्षण कर रहे हैं। समस्त कमांडरों को उन्होंने यह आदेश दिया है कि वे तस्करों पर पूरी नजर रखें और उनके हर प्रयासों को विफल कर दें।"

"सर, आजकल हमारी बटालियन के कमांडेण्ट के०एस० यादव भी परेशान रहते हैं। वह भी चाहते हैं कि सीमा-सुरक्षा बल के रजत जयन्ती वर्ष १९९० में कुछ ऐसी गौरवशाली उपलब्धि मिले कि सीमा सुरक्षा बल के इतिहास में एक

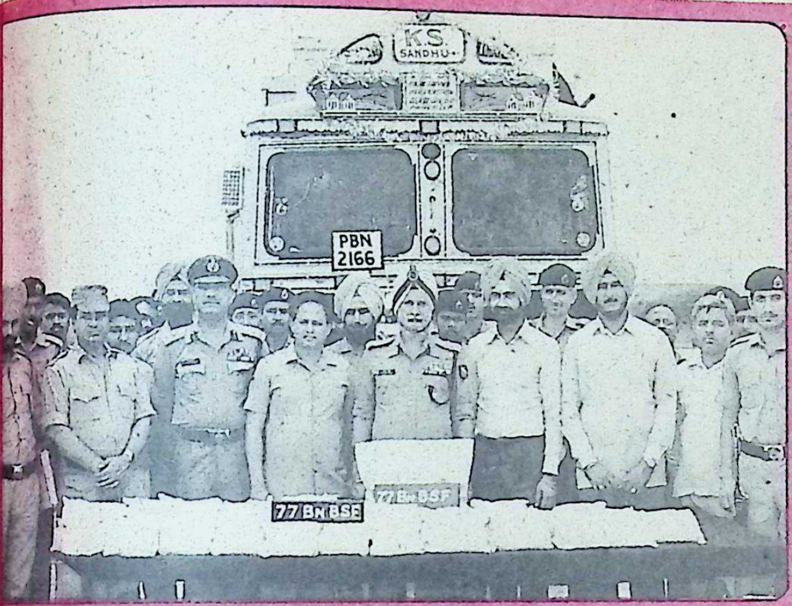

सीमा-प्रहरियों के कब्जे में वह ट्रक जिससे हेरोइन बरामद की गयी थी

सुनहरा अध्याय जुड़ जाये।"

"तस्करी पर अंकुश पाने और तस्करों के गिरोहों को समाप्त करके ही सीमा-सुरक्षा बल के इतिहास में सुनहरा अध्याय जोड़ा जा सकता है। उसके लिए जोरदार प्रयास शुरू कर दिये गये हैं। गुप्तचर विभाग की सरगर्मी बढ़ गयी है। हमें भी सतर्क रहना चाहिए। गुप्तचर विभाग से हमें भी कुछ महत्वपूर्ण सूचनाएं मिली हैं।" स्टाफ अधिकारी ने इतना कहा तो वहां बैठे उनके विश्वस्त सहयोगियों ने एक साथ पूछा, "सर, क्या कोई नयी सूचना मिली है?"

"हां, गुप्तचर विभाग ने यह सूचना दी है कि सतहत्तरवीं बटालियन सीमा-सुरक्षा बल के सीमा क्षेत्र से भारी मात्रा में हेरोइन की खेप आनेवाली है।"

"सर, यह तो बताइए कि हेरोइन की यह खेप कौन लायेगा? कब लायेगा? कहां से लायेगा और कहां ले जायेगा?"

"भाई, अभी मेरे पास इन प्रश्नों में से किसी एक के भी उत्तर नहीं हैं। हां, मैं आप लोगों से इतना ही कहूंगा कि आप सब सतर्क रहें ताकि जब कभी कहीं से कोई हेरोइन लाने का प्रयास करे तो हम उसे माल के साथ अपनी गिरफ्त में ले लें।"

"आप निश्चिन्त रहें, सर। हम पूरी तरह से चौकस रहेंगे। हां, यह तो बताइए कि हाल में फिरोजपुर में जो हेरोइन पकड़ी गयी थी, उसके बारे में कुछ और पता लगा?"

"मैंने फिरोजपुर के स्टाफ अधिकारी से फोन पर बात की थी। उन्होंने केवल

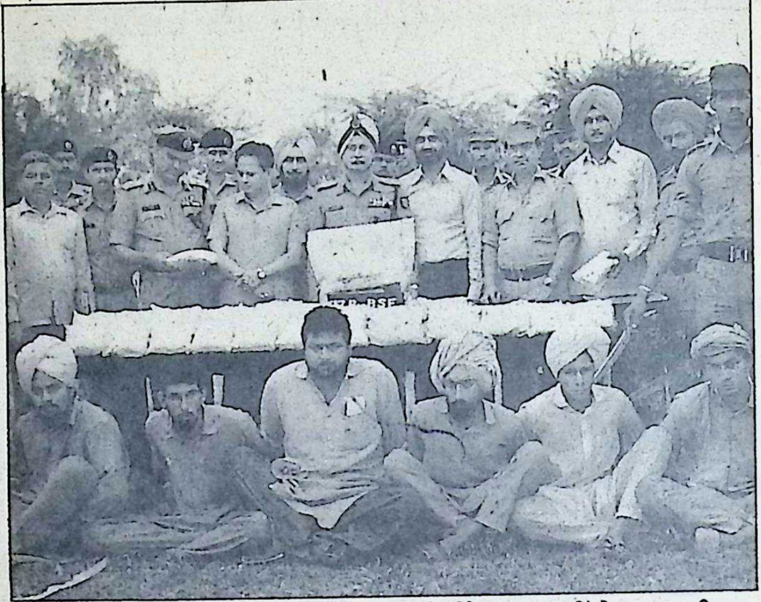

सीमा-प्रहरियों के साथ पकड़े गये तस्कर। चित्र में बैठे हुए तस्करों के साथ बगीचा सिंह (बायें से तीसरा)

इतना ही बताया कि पकड़ी गयी ४० किलोग्राम हेरोइन्न बगीचा सिंह नामक तस्कर के पास भेजी जानेवाली थी। बगीचा सिंह कौन है, कहां रहता है और क्या करता है, इन सब प्रश्नों का उत्तर मुझे अभी तक नहीं मिल पाया है।"

"हो सकता है, सर कि इस पकड़ी गयी हेरोइन और अप्रैल के अंतिम सप्ताह तक लायी जानेवाली हेरोइन के खेप में कोई सम्बद्धता हो।"

"इस संभावना से इनकार नहीं किया जा सकता। मैं इस दिशा में अपने प्रयासों में तेजी लाऊंगा ताकि यह पता लग जाये कि बगीचा सिंह सीमा से होनेवाली तस्करी से कहां तक जुड़ा है।" इतना कहकर विजय सिंह अपने कार्यालय से उठे और चले गये।

विजय सिंह अपने आवास पर पहुंचकर यह सोचने लगे कि हेरोइन की संभावित खेप आने में अब केवल एक सप्ताह का समय रह गया है। इतने कम समय में बगीचा सिंह के सम्बंध में पूरी जानकारी और उसके संभावित तस्करी से जुड़े रहने या न जुड़े रहने की बात कैसे जानी जा सकती है। स्टाफ अधिकारी विजय सिंह ने हिम्मत न हारी। उन्होंने गुप्तचरों तथा मुखबिरों को और अधिक सक्रिय कर दिया।

२३ अप्रैल १९९०। दिन ढल चुका था। अंधेरा धीरे-धीरे चारों ओर फैल रहा था। स्टाफ अधिकारी विजय सिंह अपने दफ्तर में फाइलें पलट रहे थे। कार्यालय में टाइपराइटरों की आवाज गूंज रही थी। कुछ संचार के संकेत भी

सुनाई दे रहे थे। लैम्प की रोशनी छन-छन कर उनकी टेबल पर रखे ढेर सारे कागजों तथा फाइलों के पन्नों तथा तसवीरों पर पड़ रही थी। वह कभी फाइल देखते थे और कभी विचारों में डूब जाते थे। जब विचार-मुद्रा टूटती थी, तब वह नक्शों पर अपनी नजर डालते थे और कभी-कभी किसी नक्शे पर लाल पेंसिल से कुछ निशान लगा देते थे। फाइलों और नक्शों को देखते-देखते उन्हें रात के दस बज गये। वह काम समेट कर घर जानेवाले ही थे कि टेलीफोन की घण्टी घनघना उठी।

उन्होंने फोन उठाया तो दूसरी ओर से उनके एक मुखबिर ने कहा, "साहब, उसका पता चल गया है। आप तुरन्त जलालाबाद मोड़ पर मिलें।"

विजय सिंह ने जवाब दिया, "ठीक है, रोजर, मैं आ रहा हूं।" विजय सिंह के पास वक्त बहुत कम था और रास्ता खासा लम्बा था। उन्होंने हिम्मत न हारी और अपनी गाड़ी को तूफानी गति से चलाते हुए जलालाबाद मोड़ पहुंच गये। वहां उनका मुखबिर रोजर पहले से मौजूद था।

उन्होंने उससे पूछा, "बगीचा सिंह के बारे में क्या पता लगा?"

"साहब, सीमा से होनेवाली मादक द्रव्यों की तस्करी का वही सूत्रधार है। पहले वह मुक्तसर के तस्कर इत्तवार सिंह उर्फ पाढ़ा की ओर से पाण्डी के रूप में कार्य करता था। स्मरणीय है कि पाकिस्तान से तस्करी का माल ले आने और ले जानेवाला पाण्डी कहलाता है। अब वह पाण्डी का काम नहीं करता। अब वह मादक द्रव्य सीमांत क्षेत्र से अपनी ट्रकों से ले आता है। माल को वह बम्बई और दिल्ली पहुंचाता है। उसके पास दो ट्रक हैं।"

"रोजर, यह तो बताओ कि उसकी ट्रक का नम्बर क्या है?"

"सर, उसके एक ट्रक का नम्बर पी०बी०एन० २१६६ है और दूसरे ट्रक का नम्बर पी०बी०एक्स० ७४२८ है। उसका पाकिस्तान के बड़े-बड़े तस्करों से संबंध है। इनमें गग्गी भट्टी तथा मुहम्मद असलम का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। बगीचा सीमा पर काम करनेवाले लोगों के माध्यम से पाकिस्तान में अपने तस्कर साथियों को पत्र भेजता है।" इतना कहकर मुखबिर ने स्टाफ अधिकारी को एक पर्ची दी, जिसमें बगीचा सिंह का टेलीफोन नम्बर ८५६४-२८६ तथा कोड ००६२४२ अंकित था।

"क्या तुम्हारे पास और कोई महत्वपूर्ण जानकारी है?" स्टाफ अधिकारी विजय सिंह ने पूछा तो मुखबिर रोजर ने जवाब दिया, "सर, वह तस्कर गग्गी भट्टी और मुहम्मद असलम का तस्करी का माल ले आता है। टेलीफोन पर वह जब गग्गी भट्टी से बात करता है तब उसे 'मामा' के नाम से संबोधित करता है और अपने को भनेवा अर्थात भानजा कहता है।"

मुखबिर ने बगीचा सिंह के जीवन की पृष्ठभूमि के संबंध में जो कुछ पता था, वह सब बता दिया।

स्टाफ अधिकारी विजय सिंह ने मुखबिर रोजर को बगीचा पर निगाह रखने की हिदायत दी। मुखबिर रोजर मुक्तसर चला गया और विजय सिंह ने फाजिल्का की ओर अपनी गाड़ी मोड़ दी।

रास्ते भर विजय सिंह उन तमाम सूचनाओं का विश्लेषण करते रहे जो

उन्हें बगीचा सिंह के संबंध में मिली थीं। मुखबिर द्वारा दी गयी जानकारी के आधार पर उनके मन में यह बात बैठ गयी थी कि बगीचा सिंह ही ४० किलो हेरोइन ले आया था और यही फिर अप्रैल के अन्तिम सप्ताह में हेरोइन की दूसरी खेप ले आयेगा। अपने कार्यालय पहुंचकर उन्होंने गुप्तचरों तथा मुखबिरों को बगीचा सिंह के बारे में अधिकाधिक जानकारी देने का निर्देश दिया। उन्होंने अपने पाकिस्तान स्थित सूत्रों को यह पता लगाने का निर्देश दिया कि क्या बगीचा सिंह मुहम्मद असलम और गग्गी भट्टी से ही संबंध रखता है या और किसी से भी। क्या फिरोजपुर में जो हेरोइन पकड़ी गयी है, उसे असलम या गग्गी ने भेजा था या और किसी ने? क्या असलम और गग्गी भट्टी अप्रैल के अंतिम सप्ताह में हेरोइन की दूसरी खेप भेजना चाहते हैं? असलम और भट्टी की तस्करी की कार्यशैली क्या है? इन सब प्रश्नों का विस्तृत उत्तर देने के लिए विजय सिंह ने अपने पाक स्थित सूत्रों को दो दिन का समय दिया।

पाक-स्थित सूत्रों, मुखबिरों, गुप्तचरों तथा रोजर द्वारा बताये गये तथ्यों से यह स्पष्ट हो गया कि बगीचा सिंह, गग्गी भट्टी तथा मुहम्मद असलम भारत-पाक सीमा से होने वाली तस्करी के प्रमुख नायक थे। इन तीनों तस्करों के संबंध में प्राप्त विवरणों तथा इनकी कार्यशैली के संबंध में प्राप्त जानकारी के अनुसार तस्करी की पृष्ठभूमि इस प्रकार उभर कर सामने आयी:

पंजाब में मुक्तसर-कोटकपूरा रोड पर मुक्तसर से लगभग सात किमी० दूर एक गांव है, चारेवान। आज से तीस वर्ष पूर्व चारेवान गांव में बगीचा सिंह ने जन्म लिया था। उसके पिता का नाम कश्मीर सिंह था। कश्मीर सिंह सम्पन्न व्यक्ति था। गांव और समाज में उसकी प्रतिष्ठा थी।

बगीचा सिंह का पालन-पोषण लाड़-प्यार में हुआ। पिता कश्मीर सिंह ने अपने बेटे के साथ भविष्य के सुनहरे सपने संजो रखे थे। वह उसे पढ़ा-लिखा कर किसी ऊंचे पद पर देखना चाहता था। उसने बड़े अरमान के साथ बेटे को पढ़ने के लिए स्कूल भेजा। आरम्भ में बालक बगीचा सिंह बड़ा जहीन था। स्कूल के अध्यापक भी उसकी कुशाग्र बुद्धि की प्रशंसा करते थे। अपने बेटे की प्रशंसा सुनकर कश्मीर सिंह फूला न समाता था। अब उसे यह आशा होने लगी थी कि बड़ा होकर बगीचा सिंह बड़ा आदमी बनेगा।

पिता कश्मीर सिंह की आशाओं पर उस समय तुषारापात हुआ जबकि सातवीं कक्षा तक पहुंचते-पहुंचते बगीचा सिंह की जीवन-दिशा पूरी तरह से बदल गयी। पढ़ने से उसका मन उचट गया। असामाजिक तत्वों से उसका साथ हो गया और वह तेजी से अपराध की ओर बढ़ने लगा।

१९७५ में साथ के असामाजिक तत्वों ने उसे मुक्तसर के कुख्यात तस्कर इत्तवार सिंह उर्फ पाढ़ा के पास पहुंचा दिया। इत्तवार सिंह ने उसे क्लीनर की नौकरी दे दी। वह तस्करी का माल ढोने वाले ट्रक पर क्लीनर के रूप में काम करने लगा। यहीं वह तस्करी की ओर आकर्षित हुआ। कुछ ही दिनों में उसने तस्करी की सारी कला सीख ली। उसने ड्राइविंग भी सीख ली। उसने काला धंधा भी किया। उसने

सीमा सुरक्षा बल द्वारा पकड़ी गयी हेरोइन के थैले

ट्रकों की खरीद-फरोख्त भी की।

धन कमाने की ललक उसे अपराध में अधिकाधिक लिप्त होने के लिए प्रेरित करती रही। जब इत्तवार सिंह ने उसे अपने लिए पाण्डी या कैरियर का काम करने की जिम्मेदारी सौंपी, तब उसकी खुशी का ठिकाना न रहा। वह पाकिस्तान जाता था और वहां से इत्तवार सिंह का तस्करी का माल भारत ले आता था। वह भारत से तस्करी का माल पाकिस्तान भी ले जाता था। उसका कार्यक्षेत्र भारत-पाक सीमा पर स्थित जलालाबाद की सीमा चौकी बहादुर का इलाका तथा डीआरडी नाम का क्षेत्र था।

पाण्डी के रूप में कार्य करने का सबसे बड़ा लाभ बगीचा सिंह को यह हुआ कि उसका पाकिस्तान और भारत के बड़े-बड़े तस्करों से परिचय हुआ। उसने तस्करी के सारे गुर भी सीख लिये। अब उसके मन में स्वतंत्र रूप से तस्करी का धंधा करने की इच्छा जाग्रत हुई। उसने दो ट्रकें खरीद लीं, जिनके नम्बर क्रमशः पी०बी०एन० २१६६ तथा पी० बी०एक्स० ७४२८ थे। उसने बोरा सिंह नामक तस्कर से साठ-गांठ की और मादक द्रव्यों की तस्करी करने लगा। वह मादक द्रव्यों को पाकिस्तान से मंगवाता था और उसे अपनी ट्रक से दिल्ली तथा बम्बई पहुंचाया करता था। उसने अब पाण्डी का काम छोड़ दिया। मादक द्रव्यों के लिए उसने अपने ट्रक में विशेष गुप्त स्थान बनवा लिये थे।

पाकिस्तान में जिन तस्करों से बगीचा सिंह का परिचय हुआ, उनमें गग्गी भट्टी

तथा मुहम्मद असलम का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। गग्गी भट्टी तक बगीचा सिंह को पहुंचाने का श्रेय पाकिस्तान के ओकारा क्षेत्र के तस्कर अनवर खान को है। बगीचा सिंह जब इत्तवार सिंह के लिए पाण्डी का काम करता था, तभी उसका परिचय अनवर खान से हुआ था, धीरे-धीरे दोनों का परिचय प्रगाढ़ मित्रता में बदल गया।

अनवर खान लाहौर के कुख्यात तस्कर गग्गी भट्टी का माल लाया करता था और उसे भारत के तस्करों से साठ-गांठ करके भारत भेजवाया करता था। इसी सिलसिले में उसकी बगीचा सिंह से जान-पहचान हुई थी। पहले वह अनवर खान का माल भारत लाता था, किन्तु भट्टी से परिचय होने के बाद उसका माल भी सीधे भारत लाने लगा।

मुहम्मद असलम भी पाकिस्तान का कुख्यात तस्कर था। वह पाकिस्तानी गांव ठाकुरा का रहनेवाला था। पहले वह उतना कुख्यात नहीं था, किन्तु जब से वह भट्टी के सम्पर्क में आया, तब से उसका नाम चारों ओर फैल गया। गग्गी भट्टी ने मुहम्मद असलम के साथ मिलकर तस्करी की वृहद योजना तैयार की। उसके सुझाव पर असलम ने कसूर जिले के कंगनपुर के कुख्यात तस्कर मोहम्मद दीन से साठ-गांठ की। उसने ओकारा के तस्कर रहमत अली को भी अपनी योजना में शामिल किया।

पाकिस्तान के इन सब तस्करों ने भारत के तस्कर बगीचा सिंह को भी अपनी इस योजना में प्रमुख भूमिका निभाने के लिए शामिल किया। मादक द्रव्यों की तस्करी के लिए इन्होंने भारत-पाक सीमा का जलालाबाद का इलाका चुना। रहमत अली इस सीमा पर स्थित अपने खेतों की देखभाल करने के सिलसिले में अक्सर सीमा पर चक्कर लगाता था। वह माल को बड़ी आसानी से भारतीय सीमा पर पहुंचा देता था, जहां से बगीचा सिंह के ट्रक उसे उसके गंतव्य तक पहुंचा देते थे।

बगीचा सिंह हालांकि अब पाकिस्तान आने-जाने का खतरा मोल नहीं लेता था, फिर भी पाकिस्तान के तस्करों से उसके संबंध अब भी पूर्ववत बने थे। वह अब भी एस०टी०डी० पर गग्गी भट्टी से बात करता था। बातचीत के दौरान दोनों एक-दूसरे को सांकेतिक शब्दों से संबोधित करते थे। बगीचा सिंह अपने को भानजा कहकर और गग्गी को मामा कहकर संबोधित करता था। गग्गी के सुझाव पर ही असलम ने अपने माल को भारत में अपने ठिकाने पर पहुंचाने की जिम्मेदारी बगीचा सिंह को सौंपी थी। बगीचा सिंह को एक किलो हेरोइन दिल्ली तक पहुंचाने के एक हजार रुपये और बम्बई तक पहुंचाने के लिए डेढ़ हजार रुपए मिलते थे।

भारत और पाकिस्तान के तस्करों की इस योजना के अन्तर्गत ही ४० किलोग्राम हेरोइन सीमा पार बगीचा सिंह के पास भेजी गयी थी, जो फिरोजपुर में सीमा सुरक्षा बल द्वारा पकड़ी गयी थी। इस योजना के अन्तर्गत हेरोइन की दूसरी खेप ३० अप्रैल अथवा १ मई, १९९० को भारतीय सीमा में भेजी जाने वाली थी। तस्कर जिस स्थान पर माल का लेन-देन करते हैं, उसे वे अपनी भाषा में 'ऊंट' कहते हैं। इस माल को सौंपने के लिए जलालाबाद-फिरोजपुर मील पत्थर ५९ 'ऊंट' के रूप में तय किया गया है। यहां

३० अप्रैल अथवा १ मई, १९९० को मुहम्मद असलम द्वारा तस्करी का माल बगीचा सिंह को सौंपने की योजना बनायी गयी है।

सारी जानकारी मिलने के बाद स्टाफ अधिकारी विजय सिंह ने भारत स्थित अपने सूत्रों तथा गुप्तचर विभाग से कहा कि वे बगीचा सिंह तथा उसके सहयोगियों की गतिविधियों पर कड़ी नज़र रखें और उन्हें बराबर अवगत करते रहें। उन्होंने अपने पाकिस्तान स्थित सूत्रों को भी गग्गी भट्टी, मुहम्मद असलम, मोहम्मद दीन और रहमत अली पर दृष्टि रखने और कोई महत्वपूर्ण बात होने पर उसकी सूचना देने की हिदायत दी।

भारत स्थित सूत्रों तथा पाकिस्तान स्थित सूत्रों को आवश्यक निर्देश देने के बाद स्टाफ अधिकारी विजय सिंह अतिरिक्त महानिरीक्षक बी०एस० विष्ट से मिले और उन्हें सारी बातों से अवगत किया। साथ ही साथ यह भी आग्रह किया कि वह ३० अप्रैल अथवा १ मई को आनेवाले तस्करी के माल को तथा तस्कर बगीचा सिंह को पकड़ने के लिए कोई कारगर योजना तैयार करें।

अतिरिक्त महानिरीक्षक ने अपने सहयोगियों से विचार-विमर्श करने के बाद यह तय किया कि उनके निर्देशन में कार्रवाई योजना बनायी जाये। इस कार्रवाई योजना के अन्तर्गत एक दल गठित किया जायेगा, जिसमें ७७ वीं बटालियन के जवान, कमाण्डेंट के०एस० यादव और स्टाफ अधिकारी विजय सिंह शामिल रहेंगे। इस कार्रवाई दल का नेतृत्व संभालने का दायित्व अतिरिक्त महानिरीक्षक बी०एस० विष्ट ने अपने ऊपर लिया।

इस अभियान का नाम 'आपरेशन सिलवर जुबली' रखा गया। सीमा-सुरक्षा बल के रजत जयन्ती वर्ष होने के कारण अभियान को यह नाम दिया गया।

आपरेशन सिलवर जुबली की कार्य-योजना को अन्तिम रूप दिया ही जा रहा था कि २९ अप्रैल, १९९० को जब स्टाफ अधिकारी विजय सिंह दफ्तर जा रहे थे, तब रास्ते में उनका रनर उन्मेद-खान मिला। उसने उन्हें पाक स्थित सूत्र से प्राप्त एक पत्र दिया जिसमें कहा गया था कि पाकिस्तान के सीमान्त गांव भट्टी सदर से तस्करों का गिरोह हेरोइन की खेप के साथ २९-३० अप्रैल की रात को भारतीय सीमा में प्रवेश करेगा। तस्करों का गिरोह हेरोइन की खेप के साथ सीमा स्तम्भ २२९/४ इलाके से भारतीय क्षेत्र में प्रवेश करके मील पत्थर ५९ पर पहुंचने की कोशिश करेगा।

स्टाफ अधिकारी विजय सिंह ने कमाण्डेण्ट के०एस० यादव को फोन पर पाक सूत्र से प्राप्त महत्वपूर्ण सूचना से अवगत किया। उन्होंने फिरोजपुर की कई केस फाइलों के गहन अध्ययन के फलस्वरूप बगीचा सिंह और मुहम्मद असलम की कार्यशैली के संबंध में प्राप्त जानकारी से भी उन्हें परिचित किया। सारी बातें सुनने के बाद कमाण्डेण्ट के० एस० यादव ने कहा, "विजय सिंह, तस्करों को पकड़ने के लिए सीमा-सुरक्षा बल के जवानों को भारी संख्या में उस स्थान पर तैनात कर दिया जाये, जहां वे पाक सीमा पार करके भारतीय सीमा में प्रवेश करेंगे।"

"मेरी समझ में ऐसा करना ठीक न होगा।" स्टाफ अधिकारी विजय सिंह ने इतना कहा तो कमाण्डेण्ट यादव ने

चौंक कर पूछा, "फिर क्या किया जाये, विजय सिंह?"

विजय सिंह ने कहा, "सर, बी० ओ०पी०एस०एस० वाला तथा जोधा-वाला के बीच नाका न लगाया जाये। खास तौर से सीमा-स्तम्भ २२६/४ के इलाके को बिल्कुल खाली छोड़ दिया जाये। मैं सिलवर जुबली आपरेशन के दौरान यह कदम उठाना उचित समझता हूं।"

"इससे लाभ क्या होगा, विजय सिंह?"

"सर, इससे तस्कर शत-प्रतिशत हमारे जाल में फंस जायेंगे और यह सोच-कर अपने आप 'किलिंग ग्राउण्ड' तक चले आयेंगे। इसके साथ हमें एक कार्र-वाई और करनी होगी।"

"वह क्या विजय सिंह?"

"सर, मील पत्थर ५६ तक तस्करों के पहुंचने के सभी संभावित रास्तों पर वायरलेस के साथ अपने आदमी बैठा दिये जायें ताकि तस्करों की गतिविधियों की खबर हमें बराबर मिलती रहे।"

"तुम्हारी योजना पसन्द आयी, विजय सिंह। मैं अब वैसी ही व्यूह-रचना करूंगा—जैसी तुम कह रहे हो।"

इतना कहने के बाद कमाण्डेंट के० एस० यादव समस्या के एक और पहलू पर प्रकाश डालते हुए कहा, "अजीब सी बात है, विजय सिंह। पाकि-स्तानी तस्कर प्रायः जलालाबाद के इलाके को ही तस्करी के माल के साथ अपनी घुसपैठ के लिए चुनते हैं।"

"सर, कभी यह इलाका जब रेतीला था, तब इस ओर तस्करों की घुसपैठ नहीं होती थी। जब से नहर के पानी ने इस धरती को शस्य श्यामला बना दिया है, तब से घुसपैठ बढ़ी है। खेतों की मेड़ों पर सफेदा वृक्षों की कतारें हैं। कभी खेतों में धान की फसल लहराती है, तो कभी धान, कपास और नरमा की ४-५ फुट तक की ऊंचाई वाली फसल लहराती है। इन फसलों की आड़ लेकर तस्कर भारतीय सीमा में निश्चिन्तता के साथ दूर तक चले जाते हैं। पंजाब में भारत-पाक अन्तर्राष्ट्रीय सीमा तक फसल होना तस्करों की घुसपैठ के लिए वरदान बन गया है।" विजय सिंह ने स्थिति का विश्लेषण किया, तो कमाण्डेंट यादव बोले, "अच्छा यह बताओ विजय सिंह कि पाकिस्तानी सीमा चौकी गट्टी बिसौके से ही तस्कर अधिकतर भारत क्यों आते हैं?"

विजय सिंह ने पाक-सीमा गट्टी बिसौके के आंसपास की भौगोलिक स्थिति का विश्लेषण करते हुए कहा, "सर, पाकिस्तान की यह चौकी २२६/४ स्तम्भ के पास पड़ती है। यह इलाका सरकण्डे की ऊंची-ऊंची झाड़ियों से युक्त है इसी इलाके में सतलज का पानी क्रीक या झील के रूप में भारत में प्रवेश करता है। सतलज का पानी बी०ओ०पी० जोधावाला एस० एस० वाला तथा गट्टी पोस्ट के समाना-न्तर बहता हुआ फिर पाकिस्तान में प्रवेश कर जाता है। इस तरह नदी, नालों और झीलों से जल-युक्त सीमाएं बन जाती हैं। इस भौगोलिक स्थिति का तस्कर भरपूर लाभ उठाते हैं।"

इतनी बात होने के बाद स्टाफ अधि-कारी ने फोन रख दिया और अपने कार्य में व्यस्त हो गये। उधर कमाण्डेण्ट यादव ने स्टाफ अधिकारी विजय सिंह से हुई बातों से अतिरिक्त उपमहानिरीक्षक बी० एस० विष्ट को भी अवगत किया। श्री

विष्ट ने तस्करों के विरुद्ध व्यूह-रचना में २९ अप्रैल को सीमा-स्तम्भ २२९/४ के इलाके को खाली छोड़ने के विजय सिंह के प्रस्ताव से सहमति व्यक्त की। दोनों अधिकारियों ने आपरेशन सिलवर जुबली को अन्तिम रूप दे दिया।

२९ अप्रैल को सायंकाल उस इलाके को खाली छोड़ दिया गया, जहां तस्कर आने वाले थे। रास्ते में कमाण्डेण्ट यादव अपने साथियों के साथ तस्करों की गतिविधियों पर नजर रखने के लिए बैठ गये। ७७वीं बटालियन की ६ हथियार बन्द टोलियां बनायी गयीं। इन टोलियों को जलालाबाद रोड पर जगह-जगह अहमियत वाली जगहों पर बैठा दिया गया। विजय सिंह ने अपनी जीप को मील पत्थर ५९ के पीछे सोना सदर गांव के बाहरी किनारे पर तैयारी हालत में रखा। वह स्वयं एक उठी हुई जगह पर अपने साथी शेर सिंह और नायक विनोद पाण्डेय के साथ घात लगाकर बैठ गये।

रात ग्यारह बजे के लगभग पाकिस्तानी सीमा चौकी गट्टी बिसौके की ओर दो पाकिस्तानी जीपें दौड़तीं दिखायी पड़ीं। उन जीपों से कुछ रेंजर तथा सिख आतंकवादी उतरते दिखायी पड़े। इसके बाद वे सब कहां गये, यह पता नहीं लग सका, क्योंकि जीपों की हेडलाइट जल्दी ही बुझा दी गयी। इस बीच सीमा-स्तम्भ २२८/१२ के समीपवर्ती क्षेत्र में गोली चलने की आवाज आयी। इससे यह पता लगा कि रेंजरों ने तस्करों को सीमा-स्तम्भ २२९/४ से सीमा पार कराने के बजाय सीमा-स्तम्भ २२८/१२ से सीमा पार कराने का प्रयास किया है। कुछ देर बाद गोली चलनी बन्द हो गयी। इससे यह पता लगा कि रेंजरों ने कड़े प्रतिरोध से विवश होकर तस्करों को सीमा-स्तम्भ २२८/१२ से प्रविष्ट कराने का इरादा छोड़ देना पड़ा है।

३० अप्रैल को विजय सिंह को अपने पाक सूत्र से यह सूचना मिली कि भारतीय सीमा सुरक्षा बल के कड़े प्रतिरोध के कारण पाक रेंजर्स तस्करों के गिरोह को भारतीय सीमा में प्रविष्ट कराने में सफल नहीं हुए। अब हेरोइन की खेप के साथ तस्कर गिरोह ३० अप्रैल और १ मई की रात को सीमा-स्तम्भ २२९/४

इसरायल में विश्व का सबसे पुराना कुआं

इसरायल में विश्व का सबसे पुराना कुआं हैफा के दक्षिण में ४०० मीटर दूर समुद्र तट पर उस समय मिला, जबकि पुरातत्वविद पाषाण काल के एक गांव की खुदाई करवा रहे थे। पुरातत्ववेत्ताओं के अनुसार यह कुआं पाषाण काल का है और आठ हजार वर्ष पुराना है।

अभी तक तुर्की में मिला एक हजार वर्ष पुराना कुआं ही विश्व का सबसे पुराना कुआं माना जाता था।

उत्खनन परियोजना के अध्यक्ष श्री इहुद गलीली को उद्धृत करते हुए समाचार पत्रों ने बताया कि इस कुएं के मिलने से यह स्पष्ट हो गया कि पाषाण काल के निवासी जल संसाधनों तथा उनके उपयोग का सापेक्षिक तौर पर अधिक अच्छा ज्ञान रखते थे।

—रमेश कुमार

के इलाके से सीमा पार करने का प्रयास करेंगे।

आपरेशन सिलवर योजना के अन्तर्गत की गयी व्यूह-रचना में कोई परिवर्तन नहीं किया गया। २९ अप्रैल की भांति ३० अप्रैल और १ मई की रात को भी सीमा-स्तम्भ २२९/४ का इलाका खुला छोड़ दिया गया। अतिरिक्त डी०आई० जी० विष्ट कमांडेंट यादव के साथ जलालाबाद मोड़ पर नजर रखने के लिए बैठ गये।

रात में अचानक अतिरिक्त डी० आई०जी० विष्ट ने एक ट्रक को अपनी ओर आते देखा। ट्रक की हेडलाइट की रोशनी में उन्होंने ट्रक का नम्बर पढ़ा तो चौंक गये। ट्रक का नम्बर पी०बी० एन० २१६६ था। स्टाफ अधिकारी विजय सिंह ने उन्हें बगीचा सिंह के ट्रक का यही नम्बर बताया था। उन्होंने बगीचा सिंह के ट्रक की सूचना वायरलेस से विजय सिंह को दी, जो मील पत्थर नम्बर ५९ पर मौजूद थे।

इस बीच ट्रक से कुछ सिख उतरे। वे सामने स्थित 'शेरेशान' होटल में चले गये। श्री विष्ट को ऐसा लगा कि ट्रक के भीतर अब भी कुछ लोग हैं। उन्होंने ट्रक को उसमें सवार सिखों को गिरफ्तार करने का इरादा जाहिर किया तो श्री यादव ने ऐसा न करने की सलाह दी। उनके अनुसार आपरेशन सफल तभी होगा, जबकि बगीचा सिंह की ट्रक हेरोइन की खेप के साथ पकड़ी जाये।

रात्रि धीरे-धीरे भयावह होती जा रही थी। माइल स्टोन ५९ पर बैठे स्टाफ अधिकारी विजय सिंह अपने शिकार का बड़ी बेसब्री से इन्तजार कर रहे थे। इतने में पाक सीमा गट्टी मंदर की ओर से कुछ हरकत हुई। अचानक वहां टार्च की रोशनी के साथ ही एक जीप की लाईट भी जली। फिर गट्टी-बिसौके की ओर बन्दूक के फायर की आवाज भी सुनाई दी। सीमा सुरक्षा बल की नाका पार्टी ने इसे पाक रेंजर्स द्वारा शिकार किये जाने की प्रक्रिया समझा और उस ओर कोई विशेष ध्यान नहीं दिया।

लगभग ग्यारह बजे रात्रि तस्करों का एक दल पीठ पर सामान लादे धीरे-धीरे सीमा स्तम्भ २२९/४ के इलाके से भारत में प्रविष्ट हुआ। खाली छोड़ दिये जाने के कारण तस्करों को आगे बढ़ने में कोई बाधा नहीं हुई। सुरक्षा बल के जवान उन पर पूरी नजर रख रहे थे। धीरे-धीरे तस्कर सीमा-चौकी से अन्दर की ओर सतलज के समानान्तर हाथी घास या सरकण्डा युक्त इलाके में पहुंच गये। प्रतिरोध न होने से वे धीरे-धीरे आश्वस्त होते जा रहे थे।

स्टाफ अधिकारी ने तस्करों को गिना तो वे संख्या में सात निकले। तस्कर गिरोह पुण्ये वाला कैनाल से होता हुआ भारतीय क्षेत्र में संतोष वाला गांव तक पहुंच गया। वे सुआ कैनाल की एक शाखा पर बने पुल की ओर बढ़ रहा था।

पाक सूत्र से मिली जानकारी के अनुसार इन तस्करों से हेरोइन लेकर बगीचा सिंह उसे अपनी ट्रक से दिल्ली ले जाना चाहता था।

इसी बीच एक तस्कर ने दूसरे तस्कर को कुछ निर्देश दिया। दूसरा तस्कर फिरोजपुर रोड पर स्थित मील पत्थर के पास भूसे का निशान बनाने लगा। विजय सिंह को यह समझते देर न लगी कि यह निशान इसलिए बनाया जा रहा है कि इसी स्थान पर बगीचा सिंह को हेरोइन की खेप सौंपने की योजना है।

रात का तीसरा पहर चढ़ चुका था। ३० अप्रैल, पहली मई में परिणत हो चुकी थी। विजय सिंह के पास रात्रि के समय देखने की दूरबीन थी। इसकी मदद से वे तस्करों की गतिविधियां देखते रहे। उन्होंने इन सब बातों की सूचना श्री विष्ट को दे दी।

रात्रि के लगभग दो बजे बगीचा सिंह ने अपनी ट्रक स्टार्ट की और अपने साथियों के साथ मील पत्थर ५९ की ओर रवाना हुआ। वहां पहुंचकर भूसे की लकीर के पास उसने ट्रक रोक दी। वह माल लाने का इंतजार करने लगा। थोड़ी देर बाद बगीचा ने अपने ट्रक को वहां से जलालाबाद मोड़ की ओर लाकर खड़ा कर दिया। उसने उसका बोनट भी खोल दिया ताकि किसी को शंका न हो। उधर उसके पांचों साथी सुआ कैनाल पुल पर पहुंचकर तस्करों से माल का लेन-देन करने में लग गये। लेन-देन की प्रक्रिया पूरी होने के बाद तस्करों ने पाक सीमा की ओर रुख किया।

पाकिस्तानी तस्कर फिर पाकिस्तानी सीमा में चले गये। इधर बगीचा सिंह के साथियों ने हेरोइन के थैलों को अपने कंधे पर लादकर उस ओर बढ़ना शुरू किया, जहां ट्रक खड़ा था। जब सारे थैलों को ट्रक पर लाद दिया गया और सभी व्यक्ति ट्रक पर सवार हो गये तब ट्रक रवाना हुआ। ट्रक के रवाना होने की सूचना अतिरिक्त डी०आई०जी० विष्ट को दी गयी। अधिकारियों का संकेत पाते ही सीमा-सुरक्षा बल के जवानों ने चारों ओर से ट्रक को घेर लिया। श्री विजय सिंह जवानों का निर्देशन कर रहे थे।

इसी समय सीमा सुरक्षा बल के एक अधिकारी की यह आवाज गूंजी, "तुम लोग चारों ओर से सीमा-सुरक्षा बल द्वारा घेर लिये गये हो। आत्मसमर्पण

विश्व की सबसे छोटे कद वाली मां

आगरा के एक नर्सिंग होम में दाखिल एक मीटर लम्बी गुड्डी पहले ही से चर्चा का विषय थी, किन्तु वह और अधिक चर्चा का केन्द्र उस समय बन गयी, जबकि उसने पचास सेमी० लम्बे बच्चे को जन्म दिया।

नर्सिंग होम की डाक्टर अलका सैफ ने बताया कि आपरेशन के बाद बच्चे का जन्म हुआ। जच्चा-बच्चा दोनों स्वस्थ हैं।

अभी तक सबसे छोटे कद की जिस महिला को मां बनने का सौभाग्य मिला है, उसका नाम मधु गुप्ता है। उसकी लम्बाई १२० सेमी है। सबसे छोटे कद की मां के रूप में फिरोजाबाद की इस महिला का नाम गिनीज बुक में दर्ज है।

गुड्डी ने अब यह दावा किया है कि अब मधु गुप्ता विश्व की सबसे छोटे कद की मां नहीं रही। अब गिनीज बुक में मधु गुप्ता के स्थान पर उसका नाम दर्ज होना चाहिए।

२५ वर्षीया गुड्डी एक रिक्शा चालक की पत्नी है। वह जिधर जाती है, उधर ही अपने अद्भुत बौनेपन के कारण आकर्षण का केन्द्र बन जाती है।

—रमेश कुमार

कर दो, वरना गोली से भून दिये जाओगे।"

इस चेतावनी का तस्करों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा। उन्होंने गोली चलायी। जवाब में स्टाफ अधिकारी विजय सिंह ने भी गोली चला दी। चारों ओर से गोलियों की बौछार से बगीचा सिंह और उसके साथी आत्मसमर्पण करने के लिए विवश हो गये। इसी बीच कमांडर यादव और अतिरिक्त डी०आई०जी० विष्ट भी वहां पहुंच गये।

आत्मसमर्पण के बाद बगीचा सिंह ने स्वीकार किया कि वह एक लम्बे अरसे से पाकिस्तान के तस्करों की साठ-गांठ से मादक द्रव्यों की तस्करी करता था। उसने अपने साथ पकड़े गये अपने साथियों का नाम सोहन सिंह और निर्मल सिंह बताया। उसने यह भी बताया कि उसके साथ उसका एक साथी पूरन सिंह भी था, जो अंधेरे का लाभ उठाकर फरार हो गया।

कमांडेंट यादव और अतिरिक्त डी० आई०जी० विष्ट ने पीछा करके बगीचा सिंह के दो और साथियों को गिरफ्तार किया। इनमें से एक का नाम हरजिन्दर सिंह और दूसरे का नाम सारन सिंह था। सारन सिंह बगीचा सिंह का सगा भाई था।

इन तस्करों के पास से कुल मिलाकर पचास पैकेट हेरोइन बरामद हुई, जो वजन में ५० किलोग्राम थी। इसका मूल्य ५३ करोड़ रुपये था। हेरोइन के अलावा तस्करों के पास से देशी पिस्तौल और कारतूस भी बरामद हुए। सीमा-सुरक्षा बल के जवानों को तस्करों के पास से ४००० रुपये भी मिले। बगीचा सिंह के ट्रक को भी सीमा सुरक्षा बल ने अपने कब्जे में ले लिया।

पूछताछ के दौरान पाक तस्करों से साठ-गांठ और माल लाने में पाकिस्तानी रेंजरों के संरक्षण मिलने की बात को भी बगीचा सिंह ने स्वीकार किया। उसने यह भी बताया कि पाकिस्तानी तस्करों का जो दल हेरोइन की खेप सौंपने आया था, उनमें रहमत अली, मोहम्मद दीन तथा मुहम्मद असलम शामिल थे।

सीमा सुरक्षा बल की यह सफलता उसके रजत जयंती वर्ष की एक ऐसी ऐतिहासिक उपलब्धि बन गयी है, जिस पर सदा गर्व किया जायेगा।

पानी बरसाने वाला वृक्ष

संसार में ऐसी-ऐसी विचित्र वस्तुएं हैं कि हम उन्हें देखकर स्तब्ध रह जाते हैं। एस्टर्डम में एक वनस्पति उद्यान है, जिसमें एक अद्भुत वृक्ष है। इस वृक्ष की पत्तियों से लगातार जल की बूंदें गिरती रहती हैं। देखने वाले को ऐसा लगता है कि जैसे हल्की-हल्की वर्षा हो रही हो। इस वृक्ष का नाम एरम है।

अगस्त १९९१ अंक

सत्यकथा

विशेष आकर्षण

तांत्रिक रामा की अद्भुत कथा
उत्तरी बिहार के सीवान जिले के सिद्ध तांत्रिक रामा द्वारा अपनी साधना के बल पर हजारों दीन-दुखियों का कल्याण किए जाने की अद्भुत कथा

ईमानदारी की कीमत
एक ईमानदार सब-इंसपेक्टर को ईमानदारी बरतने के एवज में नौकरी से मुअत्तल कर जेल भेजे जाने की नौबत आ जाने की, भ्रष्टाचार को उजागर करनेवाली कथा

आत्माओं से साक्षात्कार
अपने युग के दर्शकों को सम्मोहित कर आत्माओं को मेज पर बुलाकर या अपने सूक्ष्म शरीर को स्थूल शरीर से अलग कर हवा में तैराने वाले डेनियल डगलस होम के चमत्कारों की कथा

भरमौर : गद्दियों की अनोखी परम्पराएं
हिमाचल में, नैसर्गिक सौंदर्य बिखरनेवाली खूबसूरत घाटी भरमौर के निवासी गद्दियों के धार्मिक और भौतिक जीवन से जुड़ी अनोखी परम्पराओं की कथा

खत ने राज खोला
बांदा के एक गांव में अपने प्रेमी को तेजाब डाल कर जलाए जाने के बाद स्वयं भी माशूका द्वारा भूरागढ़ की बावड़ी में कूदकर आत्महत्या कर लिए जाने की कथा

तथा और भी
शिकार, प्रेम-अपराध, रहस्य-रोमांच की मन को छू लेने वाली सत्यकथाएं

लालच
एक महाराजा का
दतिया के महाराजा द्वारा लालच में पड़कर अपने खजांची का वंश निर्मूल कर देने और स्वयं भी सत्ता से हाथ धो बैठने की इतिहास-कथा

—अन्तर्कथा देव के सूर्य मंदिर की— (पृष्ठ ७९ का शेष)

पर सवार था। उसके तेज से राजा श्रद्धा से अभिभूत हो गये। उसके मुखमंडल की शांति और मुस्कान ने उनको आकर्षित कर लिया। उन्होंने इस दिव्य बालक के पास आते ही उसका परिचय पाने के लिए कुछ कहना चाहा, किन्तु उनके बोलने से पहले वह दिव्य बालक बोल पड़ा, "हे दीन-दुखियों के पालक! मैं जानता हूं कि तुम यह जानने के लिए उत्सुक हो कि मैं कौन हूं। अपना परिचय देने से पहले मैं तुम्हें यह बता देना चाहता हूं कि मैं वर्षों से तुम्हारी प्रतीक्षा कर रहा हूं।"

"पर क्यों?" राजा ने पूछा तो उस दिव्य बालक ने कहा, "मैं इस जंगल में मंदिर का निर्माण करवाना चाहता हूं। मंदिर के जिस योग्य पुरुष की मैं अब तक प्रतीक्षा कर रहा था, वह तुम्हीं हो।"

"हे देव! अभी तक आपने अपना परिचय नहीं दिया। कृपया, बताइए तो आप कौन हैं?"

"मैं भगवान सूर्य हूं। जब मैं उदय होता हूं तो सृष्टि का काम-काज शुरू होता है और जब अस्त होता हूं तो लोग अपने-अपने कार्यों को रोक देते हैं। मैं जीवन एवं गति का प्रतीक हूं।"

"मैं आपका दर्शन पाकर कृतार्थ हो गया। अब बताइए क्या आदेश है?" राजा ने श्रद्धा-नत होकर पूछा तो सूर्य भगवान ने कहा, "राजन, जिस गड्ढे के जल से तुम्हारा कुष्ठ रोग दूर हुआ है, उसके भीतर मेरी तीन मूर्तियां हैं। वहां खुदाई करवाओ। मेरी ये मूर्तियां ब्रह्मा, शिव एवं विष्णु के रूप में हैं। उदय-काल में मैं ब्रह्मा हूं, मध्याह्न में शिव तथा अस्त के समय विष्णु। इन तीनों को मिलाकर मैं महादेव हूं। राजन, खुदाई के बाद वहां मंदिर बनवाओ। यह मंदिर 'देव के मंदिर' के नाम से जाना जायेगा। यह स्थान 'देव स्थान' के नाम से प्रसिद्ध होगा।"

प्रातः काल राजा सोकर उठे तो उन्होंने संकल्प किया कि वे मूर्तियों को निकलवाने का कार्य आज ही करेंगे और सृष्टिचालक भगवान भास्कर के आदेश का पालन करेंगे। उन्होंने कर्मचारियों को आदेश दिया कि वे सब उनके साथ चलें और गड्ढे से मूर्तियां निकालें।

राजा ऐल ने गड्ढे के कीचड़ को बाहर निकलवाकर जमीन खुदवानी शुरू कर दी। बीस फुट की गहराई में तीन प्रतिमाएं मिलीं। इन तीनों प्रतिमाओं के ठीक बगल में सात घोड़ेवाला एक विशाल रथ था। रथ को बाहर निकालने के लिए ज्यों-ज्यों खुदाई होती गयी, त्यों-त्यों वह जमीन में धंसता चला गया। अंत में आकाशवाणी हुई—"राजन, मेरा रथ बाहर निकालने की कोशिश मत करो। यदि अब और जमीन खुदवाओगे तो बाढ़ का विनाशकारी दृश्य उपस्थित हो जायेगा। चुपचाप अब यहीं मंदिर बनवा दो। इतना ध्यान रखना कि मंदिर वर्ष ९९६ के चैत्र मास से पहले बनकर तैयार हो जाये।"

महाराजा ऐल ने हजारों मजदूर एवं मिस्त्री लगाया और दिन-रात काम करा कर मंदिर का निर्माण करवाया। विशाल मंदिर भगवान भास्कर के आदेश के अनुरूप चैत्र से पहले फाल्गुन में ही बनकर तैयार हो गया। मंदिर का मुख्य द्वार पूरब की ओर था। मंदिर के गुंबद पर राजा ने ढाई किलो वजन का सोने का कलश लगवाया और उस पर सात घोड़ों पर सवार भगवान सूर्य की प्रतिमा निर्मित

करायी।

सूर्य का यह मंदिर जिस दिन बनकर तैयार हुआ, उसी दिन से राजा ऐल को चिंता होने लगी कि मंदिर में स्थापित भगवान भास्कर की मूर्ति की विधिवत पूजा कैसे शुरू की जाये और किस पुजारी से पहली पूजा-अर्चना करवायी जाये? राजा इसी उधेड़बुन से गुजर रहे थे कि मंदिर बनने के तीसरे दिन की रात उन्हें पुनः स्वप्न हुआ।

स्वप्न में भगवान सूर्य ने कहा, "वत्स, मैं अति प्रसन्न हूं। तुम मंदिर के बगल में अपना किला बनवाओ और मेरी पूजा शुरू कर दो। मेरी इच्छा है कि सर्वप्रथम तुम ही मेरी आराधना करो। इससे आपकी सभी मनोकामनायें पूरी होंगी। तुम्हारे सात जन्म के पाप नष्ट हो जायेंगे। तुम्हें पुत्र व संपत्ति का लाभ होगा। तुम्हारा जीवन सफल होगा। मेरी पूजा चैत्र एवं कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की षष्ठी को नेम से करो।"

"हे भगवान, पहले आप यह बताएं कि आपकी पूजा कैसे शुरू की जाये? आपकी पूजा से किसको और कैसे सिद्धि मिली है?" राजा ऐल ने स्वप्न में ही भगवान भास्कर से पूछा।

भगवान सूर्य ने कहा, "महाराज, आज से चार सौ वर्ष पहले सूरसिद्ध नामक एक ब्राह्मण था। वह अपने पूर्व जन्म के पाप से अत्यन्त दुखी था। उसके समस्त शरीर में श्वेत कुष्ठ हो गया था। उसे कोई पुत्र नहीं था। उसके सभी स्वजन और परिचित उससे घृणा करते थे। वह दुखमय जीवन व्यतीत कर रहा था। शांति पाने के लिए वह वन में गया, किन्तु वहां भी उसे शांति नहीं मिली।

"अन्ततः उसने अन्न-जल त्याग दिया और शरीर त्यागने को तैयार हो गया। वह जंगल में गया। वहां वह अपनी धोती को फाड़कर फांसी लगाने जा ही रहा था कि मैं साधु के रूप में प्रकट हुआ। मैंने उससे पूछा, "विप्र, तुम्हें कौन-सा दुख है? तुम्हारे दुख का कारण क्या है?"

ब्राह्मण ने उत्तर दिया, "हे देव! अपने कष्ट का कारण मैं क्या बताऊं। न जाने क्यों मुझ पर दुखों का पहाड़ टूट पड़ा है।"

मैंने कहा, "ब्राह्मण, सुनो। जो वन में आग लगाता है वह कोढ़ी होता है। ब्राह्मण की हत्या करनेवाला पुत्रहीन होता है। जो गुरुजनों की आलोचना करता है, उससे भाई-बंधु विरोध रखते हैं। पूर्व जन्म में तुमने इन तीनों पापों को किया है, इसी से तुम दुख भोग रहे हो।"

यह सुनकर ब्राह्मण सूरसिद्ध बोला, "भगवन्, मुझे यह बताइए कि मैं उससे कैसे मुक्ति पाऊं? मुझे उत्तम पद पाने का उद्यम बताइए।"

मैंने कहा, "हे सूरसिद्ध, तुम घर जाओ और कार्तिक एवं चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की षष्ठी का व्रत करो। उसका विधान यह है कि पंचमी के दिन उपवास करके रात में चांद देखकर खीर एवं रोटी खाओ। षष्ठी को भी समस्त दिन तथा रात में उपवास करो। सायंकाल डूबते सूरज को श्रद्धा पूर्वक किसी नदी, तालाब व पोखर के किनारे खड़े होकर अर्घ्य दो। सप्तमी को भी प्रातः काल उदय हुए सूर्य को अर्घ्यदान करो। उसके पश्चात श्रद्धा-भक्ति से पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, नारियल, नीबू, पान, सोना, चांदी, वस्त्र आदि से पूजा करो और ब्राह्मण को दक्षिणा देकर व्रत को समाप्त करो।"

बहरहाल, व्रत का उपदेश सुनकर

राम विलास सिंह

सूरसिद्ध मेरे जैसे साधु को प्रणाम करके घर लौट आया और भक्ति-भाव से उसने षष्ठी को उत्तम व्रत किया। व्रत के फलस्वरूप वह कुष्ठ रोग से मुक्त हो गया। उसकी पत्नी को पुत्र हुआ। सभी बंधुगण उसका सम्मान करने लगे। मृत्यु के बाद सूरसिद्ध स्वर्गलोक गया। सूरसिद्ध के बाद इस व्रत का प्रचार-प्रसार नहीं हो सका।

सूरसिद्ध की कथा सुनाने के बाद भगवान सूर्य ने राजा ऐल से कहा, "हे राजन, तुम इसी चैत्र से यह पावन व्रत आरम्भ कर दो। तुम मंदिर से सटे पोखर को भी खुदवाओ ताकि वहीं लोग मेरी आराधना-अर्चना कर सकें। मंदिर के एक तरफ तुम्हारा किला रहेगा और दूसरे तरफ पोखर।"

व्रत का संपूर्ण नियम बताकर भगवान भास्कर अन्तर्धान हो गये। राजा जग गये। भोर हो चुका था।

राजा ऐल मारे खुशी से झूम उठे। उन्होंने अपने सैनिकों से सारा वृतांत बताया। दिन-रात मजदूरों से काम लगवाकर उन्होंने बीस बीघा में तालाब का निर्माण करवाया। उन्होंने चैत्र मास शुक्ल पक्ष का छठ का व्रत किया। राजा की दिन-दूनी रात-चौगुनी उन्नति होने लगी। धीरे-धीरे वहां किला भी बन गया। राजा डाल्टेनगंज छोड़ देव में ही रहने लगे।

राजा ऐल जब तक जीवित रहे तब तक उन्होंने नियमित रूप से चैत्र एवं कार्तिक मास की छठ का व्रत रखा। वह प्रतिदिन मुंह अंधेरे पोखर में खड़े होकर सूर्य के उदय होने का इन्तजार करते थे। सूर्य को आकाश में देखते ही वह हथेलियों से पोखर का जल उठाकर पांच बार उन्हें अर्घ्य देते थे।

राजा ऐल की १०५० ई० में मृत्यु हो गयी। उनके बाद प्रवील सिंह देव गद्दी पर आसीन हुए। प्रवील भी अपने पिता की भांति भगवान भास्कर के भक्त थे। वह राज का सारा कामकाज देव में रहकर करते थे। डाल्टेनगंज में सिर्फ राजा की सैनिक-छावनी ही रह गयी। महाराजा ऐल तथा प्रवील के व्रत, पूजा और अर्चना का राज्य की प्रजा पर भी प्रभाव पड़ा। हजारों लोग नियमित रूप से छठ का व्रत रखने लगे। प्रवील सिंह के बाद नरोत्तम सिंह और फतेह नारायण सिंह गद्दी पर बैठे। ये सभी प्रजावत्सल और धर्म-परायण थे। अपने पूर्वज महाराजा ऐल की भांति सब भगवान सूर्य के उपासक थे। ये सभी सूर्य को अर्घ्य देते थे और उनकी पूजा अर्चना करते थे।

सन् १६७५ में देव के राज-सिंहासन पर मित्रभानु सिंह आसीन हुए। इस समय दिल्ली के मुगल राज-सिंहासन पर औरंगजेब विराजमान था। औरंगजेब कट्टर

मुसलमान शासक था। वर्ष १६५८ में गद्दी पर बैठते ही उसने उत्तरी भारत के मंदिरों को तोड़वाना आरम्भ किया। हिन्दू जनता में गहरा आतंक था। किसी की जुबान न खुलती थी। वह मंदिरों की जगह मस्जिद बनवाता था। जो इसका विरोध करता था जेल में डाल दिया जाता था।

१६७५ की कार्तिक शुक्ल पक्ष षष्ठी थी। हजारों भक्त देव के पोखर में अस्त-गामी सूर्य को अर्घ्य देकर मंदिर में जा रहे थे। आकाश में डूबते सूर्य की केवल लालिमा शेष रह गयी थी। इसी समय अचानक हथियारों से लैस घुड़सवार सैनिकों ने मंदिर को चारों तरफ से घेर लिया। मित्रभानु सिंह को तत्काल खबर दी गयी। वह अपने सेनापति के साथ किले से बाहर आये और मंदिर की ओर चल पड़े।

मंदिर के मुख्य द्वार पर पहुंचकर उन्होंने घुड़सवार सैनिकों से पूछा, "तुम लोग कौन हो? तुम लोगों ने इस मन्दिर को क्यों घेर लिया है?"

इतना सुनते ही मुगल सेनापति गुलाम रजा सामने आया और बोला, "पहले यह तो बताइए कि आप कौन हैं?"

"मेरा नाम मित्रभानु सिंह है। मैं यहां का राजा हूं। यह मन्दिर हमारा है। आज षष्ठी का पर्व है। दर्शनार्थियों और भगवान सूर्य के आराधकों की भीड़ यहां जमा है। आप लोगों के कारण श्रद्धालुओं में आतंक फैल गया है। बताइए आप क्यों आये हैं?"

इतना सुनते ही गुलाम रजा बोला, "राजन्, हम लोग मुगल बादशाह औरंग-जेब के फौजी हैं। बादशाह का हुक्म है कि इस मंदिर को तोड़कर इसकी जगह मस्जिद बनायी जाये। बादशाह स्वयं यहां आयी सेना का नेतृत्व कर रहे हैं।"

"कहां हैं तुम्हारे बादशाह? मैं उनसे मिलना चाहता हूं।" महाराज मित्रभानु सिंह ने कहा तो गुलाम रजा बोला, "बादशाह गंगा के नजदीक शाम की नमाज पढ़ रहे हैं। वह यहां आनेवाले ही हैं।"

"ठीक है। मैं उनकी प्रतीक्षा करता हूं।"

मित्रभानु सिंह गुलाम रजा से यह कह ही रहे थे कि उन्हें घोड़ों की टाप सुनायी पड़ी। औरंगजेब अपने दलबल के साथ वहां पहुंच गया। गुलाम रजा ने सिर झुकाकर जहांपनाह को अभिवादन किया।

"तुमने मंदिर तोड़वाना शुरू क्यों नहीं किया अब तक?" आंखें तरेरकर औरंगजेब ने गुलाम रजा से पूछा।

"हुजूर, यहां के राजा ने मुझे ऐसा करने से रोक दिया।"

"कौन है यहां का शासक? क्या उसे पता नहीं कि मुगल बादशाह औरंगजेब ने मन्दिर तोड़ने का हुक्म दिया है। मेरे हुक्म की तामील न करने की जुर्रत उसने कैसे की?" बादशाह औरंगजेब ने गुस्से से कहा तो राजमुकुट धारण किये एक लंबा-चौड़ा नौजवान आगे आया और औरंगजेब से बोला, "मैं देव का राजा मित्रभानु सिंह मुगल शहंशाह औरंगजेब का इस सरजमीं पर स्वागत करता हूं। मेरी आपसे गुजारिश है कि भगवान भास्कर के इस मंदिर को ज्यों का त्यों रहने दें।"

"यह भास्कर कौन है?" उपहास के स्वर में औरंगजेब बोला।

औरंगजेब की इस धृष्टता को राजा

मित्रभानु विष होते हुए भी पी गये और संयम के साथ बोले, "शहंशाह, भगवान भास्कर सूर्य का नाम है। सूर्य साक्षात रोशनी के प्रतीक हैं। इस मंदिर में उनकी तीन मूर्तियां हैं। तीनों जमीन की खुदाई करने पर मिली हैं। यहां के पोखर में श्रद्धा एवं भक्ति से चैत्र व कार्तिक शुक्ल पक्ष षष्ठी के दिन जो कोई भी बिना अन्न-जल ग्रहण किये डूबते सूर्य को अर्घ्य देता है, उसकी सब मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। वह सभी पापों से मुक्त हो जाता है। उसके सारे कष्ट यहां तक कि चर्मरोग भी खत्म हो जाते हैं।"

"मुझे इन बातों पर विश्वास नहीं आता, मित्रभानु। तुम झूठ बोल रहे हो।"

"नहीं जहांपनाह, मैंने जो कुछ भी कहा है, वह सत्य है। आप यहां के निवासियों से पूछ सकते हैं।"

"मित्रभानु, यदि तुम्हारी बात सच है, तो मुझे कोई करिश्मा करके दिखाओ। यदि करिश्मा दिखा दोगे तो मैं तुम्हारे भास्कर भगवान पर विश्वास करूंगा।"

"बादशाह, मैं तो भगवान का तुच्छ सेवक हूं। कोई चमत्कार कैसे कर सकता हूं। मेरी भक्ति ही मेरी सच्ची श्रद्धा है।"

"मित्रभानु, यदि तुम्हारी भक्ति सच्ची है और भगवानं भास्कर का सचमुच अस्तित्व है, तो करिश्मा जरूर होगा। मैं मंदिर एवं तुम्हारी परीक्षा लूंगा। यदि तुम्हारी भक्ति में जरा भी दम है, तो अपने भास्कर से कहकर मंदिर का मुख्य द्वार पूरब से पश्चिम करवा दो। मैं आज रात भर का समय देता हूं। कल सूर्योदय से पहले अगर मंदिर का रुख पूरब से पश्चिम हो जाता है तो इस मंदिर का बाल बांका भी नहीं होगा। मैं स्वयं इसके विकास के लिए हजार स्वर्ण-मुद्राएं दूंगा। यदि मंदिर का द्वार जैसे का तैसा रहा तो, इसे गिरा कर मैं इसे मस्जिद में तब्दील करवा दूंगा।"

मित्रभानु थोड़ी देर तक खामोश रहे। औरंगजेब ने हल्की मुस्कान के साथ पूछा, "चुप क्यों हो गये? क्या डर लग रहा है?"

"नहीं बादशाह, मैं बिल्कुल डर नहीं रहा हूं। मैं इस परीक्षा के लिए तैयार हूं। भगवान भास्कर की कृपा हुई तो सुबह लोग मंदिर का दरवाजा बजाय पूरब के पश्चिम में ही देखेंगे।" औरंगजेब इतना कहकर चला गया, तो राजा मित्रभानु अपने कर्मचारियों के साथ भगवान भास्कर के मंदिर में गये।

सूर्य देवता की तीनों प्रतिमाओं के सामने राजा मित्रभानु बैठ गये और यह प्रार्थना की, "हे आदित्य देव, मैं आपका दास हूं। आप सब कुछ जानते हैं। औरंगजेब को मेरी भक्ति एवं आपके अस्तित्व पर संदेह है। वह मेरी परीक्षा ले रहा है। उसने परीक्षा के लिये शर्त रखी है कि अगर आप में सत्यता, शक्ति और सामर्थ्य है तो रातोंरात मंदिर का द्वार पूरब से पश्चिम कर दीजिये। अब मेरी लाज आपके हाथ में है। यदि आप ऐसा नहीं करेंगे तो मैं अपना सिर काटकर आपके चरणों में अर्पित कर दूंगा। कोई मेरी भक्ति, आपके अस्तित्व तथा इस मंदिर की हंसी उड़ाये, यह मैं सहन नहीं कर सकता। इससे पहले मैं मर जाना पसंद करूंगा।"

थोड़ी देर तक कोई जवाब न मिला। मंदिर भवन में गहरी शांति थी। रात का तीसरा पहर बीत चुका था। अचानक मित्रभानु ने अपना सिर काट दिया। तत्काल चमत्कार हुआ। तीनों मूर्तियां

यकायक गायब हो गयीं और वहां सात घोड़े पर सवार एक बालक उपस्थित हो गया। उसने आशीर्वाद की मुद्रा में कहा, "भक्त उठो। मैं तेरी भक्ति से प्रसन्न हूं। अब तुम्हें बादशाह के आगे छोटा नहीं होना पड़ेगा। तुम जो चाहते हो वही होकर रहेगा।"

इसके बाद मित्रभानु का सिर धड़ से जुड़ गया। घोड़ा और सवार दोनों अन्तर्धान हो गये। भगवान भास्कर की तीनों मूर्तियां पहले की तरह अपने स्थान पर आ गयीं।

अचानक भूकम्प आ गया। मंदिर कांपने लगा। मंदिर की घंटियां स्वतः बजने लगीं। जब सब कुछ शांत हुआ तो सारे मुलाजिम दरबारी और राजा मित्रभानु यह देखकर चकित रह गये कि मंदिर का मुख्य द्वार पूरब से घूमकर पश्चिम हो गया है। तब तक भोर हो चुकी थी। रात्रि का धुंधलका छंटने लगा था।

सुबह जब मुगल सैनिकों ने मंदिर पर दृष्टि डाली तो मंदिर का दरवाजा पूरब के बजाय पश्चिम देखकर दांतों तले अंगुली दबाकर रह गये। असंभव संभव हो गया। वे दौड़कर औरंगजेब के खेमे में पहुंचे और बोले, "जहांपनाह, गजब हो गया। मंदिर का दरवाजा पश्चिम दिशा में हो गया। जिस बात के होने की आप ख्वाब में भी उम्मीद नहीं रखते थे, वह हो गया।"

"करिश्मा हो गया...क्या तुम लोग जो कुछ कह रहे हो, वह सत्य है?"

"हां सच है, जहांपनाह। बिल्कुल सच है। यकीन न होता हो, तो चल कर खुद देख लें।"

औरंगजेब सैनिकों के साथ मंदिर के दरवाजे पर पहुंचा तो हतप्रभ रह गया। मन्दिर का दरवाजा बजाय पूरब के पश्चिम दिशा में हो गया था। भगवान भास्कर ने उसकी चुनौती स्वीकार कर ली थी। वह नतमस्तक हो गया। उसने मन्दिर में जाकर सूर्य की मूर्तियों के आगे अपना शीश झुका दिया। वहां जलती दिव्य-ज्योतियों को प्रणाम कर उसने इस देवालय के विकास के लिये एक हजार स्वर्ण मुद्राएं दीं।

औरंगजेब १७०७ ई० तक जीवित रहा। वह नियमित रूप से १६७७ से १७०६ तक चैत्र एवं कार्तिक की छठ के अवसर पर देव आता था और डूबते हुए तथा उदय होते हुए सूर्य को नमस्कार करता था। प्रसिद्ध इतिहासवेत्ता डा० के० के० दत्ता ने अपनी पुस्तक 'हिस्ट्री ऑफ माडर्न बिहार' के धार्मिक अध्याय में देव के इस अलौकिक मंदिर एवं औरंगजेब दोनों की चर्चा की है।

सन् १७१५ में मित्रभानु की मृत्यु हो गयी। उनके पुत्र छत्रपति सिंह देव के राजा बने। अपने पिता के समान छत्रपति भी भगवान भास्कर के भक्त थे। उन्होंने मंदिर के ऊपरी भाग में जगह-जगह पर सोने का सिक्का चिपकवाया। सोने का कलश तो मंदिर के गुंबद पर पहले से ही था।

छत्रपति सिंह के बाद देव की राजगद्दी पर घनश्याम सिंह, जयप्रकाश सिंह, भीष्म देव सिंह और जगन्नाथ सिंह बैठे। वे सभी भगवान भास्कर के उपासक तथा धार्मिक प्रवृत्ति के थे। इन सबने चैत्र और कार्तिक में षष्ठी का व्रत रखने और भगवान सूर्य को अर्घ्य देने की पावन परम्परा का पालन किया। जगन्नाथ सिंह अंतिम शासक थे, जिनकी मृत्यु १९३४ में हुई।

१७१९ के भाद्रों की घनी अंधेरी

रात में सुज्जू तथा जग्गू नामक दो चोरों ने मंदिर के गुंबद पर स्थित सोने का कलश एवं सोने का सिक्का चुराने का इरादा किया। वे रस्सी के सहारे गुंबद तक पहुंच गये। ज्यों ही उन्होंने सोने के कलश पर हाथ रखा, त्यों ही उनके पांव फिसल गये और वे गुंबद से कुछ नीचे दीवार पर चिपक कर पत्थर में तब्दील हो गये। पत्थर की शक्ल आज भी दोनों चोरों की शक्ल से काफी मिलती-जुलती है।

इस घटना के बाद फिर किसी ने सोने का कलश तथा सोने का सिक्का चुराने की हिम्मत नहीं की। मंदिर की खासियत यह है कि उसके उत्तरी कोने पर कुएं के नजदीक खड़े होकर अगर कोई गुंबद को देखे तो ऐसा लगता है कि दो व्यक्ति सोने के कलश को छू रहे हैं और घोड़े पर सवार एक बालक उन्हें धक्का दे रहा है। लोगों की धारणा है कि वे दोनों वही सुज्जू और जग्गू चोर हैं और बालक भगवान सूर्य हैं। लोगों का यह भी विश्वास है कि भगवान सूर्य स्वयं कलश की रक्षा करते हैं।

देव के पावन मन्दिर के साथ साधना के बल पर सूर्यदेव को अपने वश में करनेवाले तंत्र-शास्त्री आदित्य की विलक्षण कथा भी जुड़ी है

देव के इस पावन और चमत्कारी मंदिर के साथ तंत्र शास्त्री आदित्य की विलक्षण कथा भी जुड़ी है, जिसने अपनी साधना के बल पर भगवान भास्कर को भी वश में कर लिया था।

आदित्य का जन्म सन् १७८२ में देव से पन्द्रह किलोमीटर उत्तर मयूर ग्राम में चैत्र मास की छठ के दिन हुआ था। उसकी मां जमुनी अस्तगामी सूर्य को अर्घ्य देकर जैसे ही घर लौटी उसे प्रसव-वेदना हुई। उसने एक विलक्षण बालक को जन्म दिया। कहते हैं कि जन्म के समय से ही वह बालक लाल वस्त्र पहने था। उसके चेहरे पर अद्‌भुत तेज था। उसकी काया कुंदन की तरह चमक रही थी। छठ के दिन जन्म होने के कारण बालक का नाम 'आदित्य' रखा गया। उसके पिता टहल जूता-चप्पल बनाने का धंधा करते थे।

चार भाई-बहनों के बीच आदित्य सबसे छोटा था। वह जब कम उम्र का था, तभी उसके पिता की मृत्यु हो गयी। बड़े भाई उसे लावारिस समझते थे। वे उसकी उपेक्षा करते थे। उपेक्षा और दरिद्रता का जीवन बिताने के बावजूद आदित्य के चेहरे पर सदा संतोष का भाव झलकता था।

एक बार सायंकाल आदित्य अपनी झोपड़ी में बैठकर अपनी मां के साथ चना खा रहा था। अचानक कमण्डल लिये कुछ साधु वहां आ गये। आदित्य ने उनका आदर-सत्कार किया। उसने उनके लिये भोजन की व्यवस्था की। भोजन तैयार होते-होते सूर्य डूब गया।

सूर्यास्त हो जाने से अतिथियों ने भोजन करने से इनकार कर दिया। अतिथि घर आयें और भूखे रह जायें, यह आदित्य कैसे सह सकता था। उसने अपनी झोपड़ी से बाहर निकलकर भगवान भास्कर का आह्वान किया। उसके आह्वान तथा प्रार्थना पर अंधेरा दूर हो गया और

तत्क्षण सूर्य का प्रकाश फैल गया।

आदित्य साधुओं के पास गया और बोला, "आप लोग चलकर भोजन कर लें। देखिए, अब न सूर्यास्त हुआ है और न अंधेरा हुआ है।"

साधुओं के आश्चर्य की सीमा न रही। सूर्यास्त हो जाने के बाद भी सूर्य का निकल आना उनके लिए अद्‌भुत चमत्कार था। उन सबने कहा, "अवश्य भोजन करेंगे, किन्तु यह तो बताओ कि यह चमत्कार कैसे हुआ ?"

"यह सब भगवान भास्कर की माया है। अच्छा, चलिए भोजन करिए।"

"साधुओं ने भोजन किया और आदित्य को आशीर्वाद दिया। ज्यों ही साधुओं ने भोजन कर लिया, त्यों ही सूर्य फिर डूब गया। साधुओं के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। चमत्कार पर चमत्कार देखकर वे स्तब्ध रह गये।

ग्यारह वर्ष की उम्र में आदित्य गांव की पाठशाला में भरती हुआ। एक दिन वह पाठशाला जा रहा था। संयोग से रास्ते में एक ज्योतिषी ने उसका हाथ देख लिया। उसके मुख से निकल पड़ा, "तुम तो साक्षात् सूर्य के रूप हो। तुम भगवान भास्कर के पुजारी बनोगे और अनगिनत दीन-दुखियों तथा रोगियों के कष्ट का निवारण करोगे।"

चौदह साल की उम्र में आदित्य का यज्ञोपवीत हुआ। यज्ञोपवीत के समय दो पग चलने का नियम है। कहा जाता है कि उससे अधिक चलने पर संसार छूट जाता है। आदित्य दो पग की जगह तीन पग चला। लोगों को यह आभास हो गया कि आदित्य आगे चलकर वैरागी बनेगा।

एक रात आदित्य ने सपने में रथ पर सवार एक बालक को देखा, जिसने उससे कहा, "आदित्य तू देव पोखर के नजदीक जाकर मेरी आराधना कर। मैं भगवान सूर्य हूं। देव में ही मैं वास करता हूं।"

अगली सुबह हाथ में कमण्डल लिये आदित्य देव पहुंच गया। पीपल का बड़ा पेड़ पोखर के किनारे पर था। वहीं उसने सौ रस्सियों का सिकहर बनाया और उसी पर बैठकर सूर्य का ध्यान किया।

पीपल के वृक्ष पर एक ब्रह्मराक्षस रहता था। आदित्य को इसका पता न था। उसने सूर्यशतक के पहले श्लोक का पाठ किया।

आदित्य के मुंह से श्लोक सुनकर ब्रह्मराक्षस ने उसे दुहरा दिया। जब आदित्य ने इसका फिर पाठ किया तब ब्रह्मराक्षस ने फिर दुहरा दिया। यह क्रम जब काफी देर तक चला तब आदित्य ने समझ लिया कि कुटिल ब्रह्मराक्षस उसकी आराधना में विघ्न डालना चाहता है। आदित्य ने सानुनासिक श्लोक का पाठ किया। इस श्लोक की भी ब्रह्मराक्षस पुनरावृत्ति करने लगा। आदित्य ने हार न मानी। वह सानुनासिक श्लोक का बराबर पाठ करता गया। ब्रह्मराक्षस पुनरावृत्ति करते-करते थक गया।

वह आदित्य के पास आया और बोला, "मैं हार गया, तुम जीत गये। तुम मुझसे वर मांगो। मैं तुम्हें दो वर दूंगा।"

आदित्य ने कहा, "हे दानव ! पहला आशीर्वाद तुम मुझे यह दो कि तुम देव में अब कभी नहीं आओगे। दूसरा वर यह दो कि मुझे भगवान भास्कर का दर्शन हो जाये।"

आदित्य की बात से ब्रह्मराक्षस हंसा। उसने बताया, "यहां रोज शाम को ग्वालों के लड़के गायों को पानी पिलाने के लिये आते हैं। उनके संग एक बालक रहता है।

उसकी दोनों आंखों के बीच सफेद दाग है। उससे कोई बात नहीं करता है। अन्य लड़के उसे कोढ़ी कहते हैं। वह अंधकार होने के बाद अंत में अपनी गाय को लेकर जाता है। वही भगवान सूर्य हैं। ऐसा रूप उन्होंने इसलिए धारण किया है कि

ऐतिहासिक सूर्य मंदिर उपेक्षित क्यों ?

पटना शहर से चालीस किलोमीटर पश्चिम विक्रम प्रखंड में उलार नामक स्थान पर भगवान सूर्य का प्राचीन मंदिर है। यहां छठ के अवसर पर साल में दो बार मेले लगते हैं। दूर-दूर से अनगिनत नर-नारी यहां आते हैं और भगवान भास्कर की पूजा-अर्चना करते हैं। उलार में सूर्य की पूजा प्राचीन काल से ही होती आ रही है। इसका विवरण कई पौराणिक ग्रंथों में भी है।

उलार में भगवान सूर्य के मंदिर की स्थापना द्वापर युग में भगवान कृष्ण के वंशज राजा शाम्ब ने की थी। यह किवदन्ती है कि राजा शाम्ब ने अपनी पत्नी को नंगी स्नान करते देख लिया था। उनकी पत्नी ने क्रुद्ध होकर उन्हें कोढ़ी होने का श्राप दे दिया। फलस्वरूप शाम्ब कुष्ठ रोगी हो गये।

जब राजा शाम्ब ने अपनी व्यथा-कथा नारद मुनि को सुनायी तब नारद मुनि ने कहा, "राजन्, बारह आदित्य होते हैं। तुम उनकी मूर्ति को ग्यारह जगह पर एक-एक माह स्थापित कर उपासना करो। सूर्य देवता प्रसन्न होकर तुम्हें कुष्ठ रोग से मुक्त कर देंगे। बारहवें स्थान को तुम छोड़ देना। वहां भविष्य में मूर्ति किसी अन्य राजा द्वारा स्थापित की जायेगी।"

नारद के आदेश पर शाम्ब ने ग्यारह जगहों पर सूर्य की मूर्ति स्थापित की और भगवान सूर्य उनकी साधना और तपस्या से प्रसन्न हुए और उन्हें कुष्ठ रोग से मुक्त होने का वरदान दिया।

राजा शाम्ब ने जिन-जिन स्थानों पर मन्दिर बनवाकर तथा सूर्य भगवान की मूर्तियां स्थापित कीं, उन सब स्थानों के साथ अर्क शब्द जुड़ गया। संस्कृत में अर्क शब्द का अर्थ होता है, सूर्य। अंगारी में स्थापित मंदिर अंशार्क कहलाया। इस तरह के उनके स्थापित किये गये मंदिर कोणार्क, ओलार्क, लोलार्क, दर्शनार्क और पुण्डार्क आदि नामों से प्रसिद्ध हैं। दर्शनार्क मंदिर अयोध्या में है और लोलार्क मन्दिर काशी में है।

ओलार्क का अपभ्रंश उलार है। कालान्तर में ओलार्क का नाम ही उलार पड़ गया। ओलार्क मंदिर का उल्लेख सूर्य पुराण और शिव पुराण में भी मिलता है।

द्वापर युग में राजा शाम्ब ने उलार में सूर्य मंदिर सोन नदी के किनारे पर बनवाया था। धीरे-धीरे ग्रामीणों ने सोन का किनारा भरकर घर बना लिया।

कोई उन्हें पहचाने नहीं। तुम अगर भास्कर का दर्शन करना चाहते हो तो ग्वालों के जाने के बाद उस बालक का पैर पकड़ लेना और कहना कि आप अपने वास्तविक रूप में आयें। वह बालक अगर अपनी जान छुड़ाकर भागना चाहे तो भी उसे

फलस्वरूप जो मंदिर एकदम नदी से सटा हुआ था, आज वह नदी से चार किलोमीटर की दूरी पर है।

यह प्राचीन मंदिर एक विशाल पीपल की छाया में बनाया गया। १९५२ में पीपल गिर गया और तब मंदिर धराशायी हो गया। भगवान सूर्य की मूर्ति उसी पीपल के पेड़ के बीच में खंडित अवस्था में मिली।

सन् १९५३ में प्रसिद्ध संत अलबेला बाबा ने मंदिर के पास अपनी कुटिया बनवायी। संत अलबेला बाबा दिघवारा छपरा के निवासी थे। उन्होंने मंदिर के पुर्ननिर्माण का संकल्प किया। उन्होंने खुदाई भी करवाया। खुदाई में अनेक प्राचीन मूर्तियां भी प्राप्त हुई। जन-सहयोग से उन्होंने १९५६-५७ में नये मंदिर का निर्माण करवाया। १९७४ में संत अलबेला इस असार संसार से चल बसे।

उलार में भगवान भास्कर की मूर्ति खंडित है। इसे बनवाने का प्रयास किया गया, किन्तु सफलता नहीं मिली। सरकार उलार के महत्व और विकास के प्रति उदासीन है। उलार मेले से बिहार सरकार को प्रति वर्ष चालीस हजार की आय होती है, किन्तु मेले की सुव्यवस्था और दर्शनार्थियों की सुख-सुविधा का कोई ध्यान नहीं रखा जाता है।

बिहार के पूर्व मुख्यमंत्री बिन्देश्वरी दुबे ने ३१ मार्च, १९८६ को उलार जाकर पूजा-अर्चना की। उन्होंने वहां धर्मशाला बनवाने, शौचालय बनवाने, पानी की टंकी तथा चिकित्सालय बनवाने की घोषणा की। आज तक यह घोषणा साकार नहीं हो पायी।

चैत्र मास छठ के पावन पर्व पर धर्मशालाओं के अभाव में दर्शनार्थी सड़कों के किनारे व खेतों में पड़े रहते हैं। चिलचिलाती धूप में वहां पेयजल के लिये लोग तरस जाते हैं। चारों ओर गंदगी ही गंदगी दिखायी पड़ती है। बहुधा महामारी फैलने का खतरा बढ़ जाता है। इन सब के बावजूद बिहार सरकार का स्वास्थ्य विभाग निश्चेष्ट रहता है।

छठ का प्रथम व्रत सूरसिद्ध नामक ब्राह्मण ने किया था। इसे बिहार के जन-जन में पहुंचाने का श्रेय राजा ऐल को है। सूर्य पुराण में यह उल्लेख मिलता है कि सुकन्या, द्रौपदी एवं च्यवन मुनि की पत्नी साल में एक बार सूर्य का व्रत करती थीं।

सूर्य के प्रमुख पूजा-स्थलों में उलार का वही महत्व है, जो कोणार्क का है। कोणार्क के मंदिर पर उड़ीसा की सरकार पर्याप्त धन व्यय करती है। यही कारण है कि वह पर्यटकों के आकर्षण का केन्द्र बन गया है। बिहार का ओलार्क मंदिर अपने दुर्भाग्य पर आंसू बहा रहा है। उसके आंसुओं को देखनेवाला कोई नहीं है। ■

—रतीन्द्र नाथ

भागने न देना।" इतना कहकर वह ब्रह्म-राक्षस वहां से चला गया।

आदित्य ने वही किया जो ब्रह्मराक्षस कह गया था। आदित्य शाम चार बजे से ही पोखर की तरफ टकटकी लगाये पेड़ की छाया में बैठा रहा। सूरज जब अस्त होने लगा तब बहुत से लड़के गाय लेकर वहां पहुंचे। सबसे पीछे एक बालक अपनी गाय के साथ था। उसके ललाट पर सफेद दाग था। आदित्य ने मन ही मन उसे प्रणाम किया।

सब लड़के तो गाय लेकर चले गये, किन्तु वह लड़का बैठा रहा, जिसके ललाट पर कुष्ठ के दाग थे। आदित्य ने उसका पैर पकड़ लिया और कहा, "भगवान आप अपना असली रूप दिखावें।"

उस बालक ने कहा, "भाई, तुम्हें भ्रम हो रहा है। मैं साधारण व्यक्ति हूं, कोई दिव्य पुरुष नहीं। मेरा पिण्ड छोड़ दो। मुझे परेशान न करो।"

आदित्य ने कहा, "आप कौन हैं, यह मैं अच्छी तरह जानता हूं। मुझे भ्रमित न करें। मुझे आप अपना असली रूप दिखायें। मैं आपसे विनती करता हूं।" उस बालक ने आदित्य को भरसक टालना चाहा, किन्तु आदित्य अपने हठ पर डटा रहा। अंततः हार कर उस बालक ने अपना वास्तविक रूप प्रकट किया। वह अब सात घोड़ों पर सवार दिव्य बालक था।

उसने हाथ उठाकर आदित्य को आशीर्वाद दिया और कहा, "हे भक्त, मैं ही सूर्य हूं। मैं तुमसे अति प्रसन्न हूं। मैं तुझे वर देता हूं कि प्रतिदिन सुबह पूरब दिशा में मेरे उदय के समय तुम जब ताकोगे तो मेरा दिव्य रूप तुम्हें कुछ पल के लिए दिखायी पड़ेगा। उस वक्त तुम मुझसे जो कुछ भी मांगोगे, मैं दूंगा। इतना ध्यान अवश्य रखना कि इसका उपयोग लोगों के कल्याण के लिए हो, उनके अहित के लिए नहीं।"

भगवान सूर्य से यह वर पाने के बाद आदित्य पोखर के बगल में ही कुटिया बनाकर रहने लगा। उसकी चमत्कारी विद्या की ख्याति दूर-दूर तक फैल गयी। उसने असंख्य कुष्ठ रोगियों, चर्म रोगियों तथा जीवन से निराश लोगों के कष्ट दूर किये।

सन् १८०२ का अगस्त का महीना था। देव समेत पलामू, गया व अन्य सभी जगह सूखा पड़ गया। लोग पानी के लिए तरसने लगे। विवश होकर हजारों की संख्या में ग्रामीण आदित्य की शरण में गये। उन्होंने उससे विनती किया, "महात्मा, आप जल्द अपने भास्कर से कहें कि वे बादलों की ओट में छिप जायें और वर्षा करवा कर हमें अकाल के पंजे से बचा लें।"

लोगों की आर्तवाणी से आदित्य का हृदय पसीज गया। उसने सूर्य भगवान का ध्यान किया और फिर मुस्कराते हुए कहा, "तुम लोग जल्दी से यहां से भागो। मूसलाधार वर्षा होने वाली है।"

सचमुच देखते-देखते आसमान का रंग बदल गया। तेज हवा के साथ मूसलाधार वर्षा होने लगी। खेत लहलहा उठे। किसानों को राहत मिली।

सन् १८५५ में तिहत्तर साल की उम्र में आदित्य का स्वर्गवास हो गया। वह अपनी तंत्र-साधना और सूर्यभक्ति के बल पर अमर हो गया। आज भी लोग कार्तिक और चैत्र की शुक्ल पक्ष की षष्ठी को जब सूर्य नमस्कार के लिए इस मंदिर के परिसर में जमा होते हैं तब उनकी स्मृति में राजा ऐल और आदित्य दोनों सजीव हो जाते हैं।

जैसे-जैसे समय आगे बढ़ा देव सूर्य-स्थल के रूप में विख्यात हो गया। विदेशी पर्यटकों के लिये यह दर्शनीय स्थान हो गया। १९७८ में बिहार सरकार के तत्कालीन ग्रामीण विकास मंत्री रामविलास सिंह ने देव का कायापलट किया।

पोखर के चारों ओर रामविलास सिंह ने सरकारी धन से पक्का घाट बनवाया और एक सुन्दर सी धर्मशाला का भी निर्माण करवाया।

पर्व के समय शांति-व्यवस्था कायम रखने के लिए रामविलास ने वहां स्थायी रूप से पुलिस स्टेशन की स्थापना करवायी। वहां एयरकंडीशन होटल बनवाने की दिशा में रामविलास पहल कर ही रहे थे कि १९८० का चुनाव आ गया और जनतापार्टी हार गयी। सारी योजना खटाई में पड़ गयी।

१९८९ चुनाव के उपरान्त लालू सरकार में रामविलास सिंह पुनः मंत्री बने। उनका संकल्प है कि वह देव को भारत के प्रमुख तीर्थ स्थलों की श्रेणी में जल्द ही ला देंगे। इसे भव्य और दर्शनीय बनाने के लिये पन्द्रह करोड़ की एक योजना तैयार की गयी है। योजना का कार्यान्वयन होने पर देव का सूर्य-मंदिर कोणार्क-मंदिर की भांति विख्यात हो जायेगा।

देव का सूर्य मंदिर जितना पुराना है उतना ही अनूठा भी। कांचीपुरम के शंकराचार्य के अनुसार यह भगवान सूर्य की जन्मस्थली है। यहां कोई भी भगवान सूर्य से जो मांगता है, भगवान उसे वह दे देते हैं। (कथा स्थानीय छानबीन, इतिहासवेत्ता डा० के०के० दत्ता एवं रुद्रदत्त पाठक की पुस्तकों पर आधारित)

■

पैरों का सफल प्रत्यारोपण

अमेरिकी डाक्टरों ने सर्जरी के इतिहास में नया स्तब्धकारी अध्याय उस समय जोड़ दिया जबकि उन्होंने पैरों से रहित एक व्यक्ति को एक मृत व्यक्ति के पैरों को प्रत्यारोपित करके चलने-फिरने योग्य बना दिया। यह ऐतिहासिक सफलता प्राप्त करने वाली डाक्टरों की टीम का नेतृत्व सुप्रसिद्ध डाक्टर जे०आर० ह्विपेटी ने किया;

डाक्टर ह्विपेटी ने बताया कि ४१ वर्षीय विल विगलर जब १९ वर्ष का था, तभी एक भयानक दुर्घटना से ग्रस्त होने के कारण उसके दोनों पैरों को काट दिया गया। तब से लेकर अब तक लगातार २२ वर्षों तक वह अपाहिज का दुर्भाग्यपूर्ण जीवन बिताता रहा। एक दुर्घटना में मर जाने वाले युवक के पैरों को प्रयोगात्मक रूप से प्रत्यारोपित करने का जब डाक्टरों ने निर्णय लिया तब विल विगलर ने इस परीक्षण के लिए डाक्टरों के सामने अपना नाम प्रस्तावित किया। डाक्टरों ने उसका प्रस्ताव स्वीकार कर लिया।

डाक्टरों ने पैरों का सफल प्रत्यारोपण कर दिया। माइक्रोसर्जरी के सहारे उन्होंने विगलर के 'स्टम्प' से नसों को जोड़ दिया। प्रत्यारोपण के एक महीने बाद विगलर थोड़ा बहुत चल-फिर लेने लगा। शरीर भारी-भरकम होने के कारण १८ वर्षीय युवक के प्रत्यारोपित पैर उसका भार संभालने में पूरी तरह से समर्थ नहीं है। चलते-चलते वह भचकने लगता है।

■

यदि पुलिस ने सूझ-बूझ से काम न लिया होता तो विचित्र अपराध शैली अपनाने वाले अपराधियों का पता लगा पाना सचमुच टेढ़ी खीर था

पेट्रोल पम्प के लुटेरे

डा० प्रदीप शालिग्राम मेश्राम

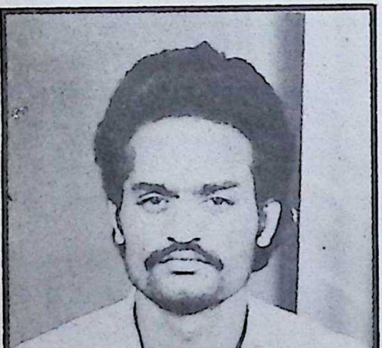

स्वर्ण सिंग

नागपुर से १५ किलोमीटर दूर कामठी नाम का एक छोटा सा शहर है। यह शहर नागपुर-जबलपुर रोड पर स्थित है। इसी रोड पर खैरी सिवार नामक स्थान पर सूर्यलाला महाबीर प्रसाद जायसवाल का पेट्रोल पम्प है।

१७ फरवरी, '८९ की बात है। रात बारह बजे का समय था। पेट्रोल पम्प पर दो नौकर अपने काम में लगे थे और सूर्यलाला महाबीर प्रसाद जायसवाल कैश संभाल रहे थे। इसी समय एक व्यक्ति आकर उनके कंधे पर रिवाल्वर टिका दी और कड़कती आवाज में कहा, "हैण्ड्स अप।"

सूर्यलाला महाबीर प्रसाद जायसवाल बुरी तरह भयभीत हो गये। उन्होंने देखा कि जो व्यक्ति उनके कंधे पर रिवाल्वर की नाल टिकाये था, वह अपना चेहरा काले कपड़े से ढंके था। उसी समय अपना

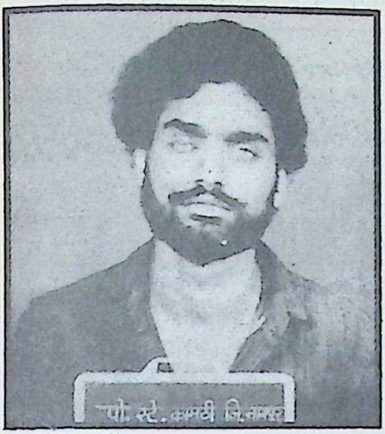

सुखविन्दर सिंग

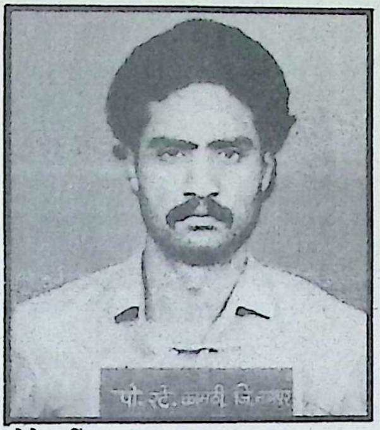

जोगेन्द्र सिंग

चेहरा काले कपड़े से ढंके हुए दो और व्यक्ति आगे बढ़े। उनके हाथों में चाकू जैसे तेज-धार वाले हथियार थे। उनमें से एक केबिन के बाहर निगरानी करने लगा और दूसरा दोनों नौकरों को डराने धमकाने लगा। इसी बीच उस व्यक्ति ने जिसके हाथ में रिवाल्वर था, झपटकर जायसवाल के पास से बैग उठा लिया। उसने आलमारी खोल-कर उसमें रखा धन भी निकाल लिया। मेज की दराज से भी उसने रकम निकाल ली। सारी रकम लेकर वे तीनों धमकाते हुए भाग कर सड़क पर आये और रात के अंधेरे में गुम हो गये।

सूर्यलाला जायसवाल ने तत्काल इस डकैती की सूचना फोन से कामठी पुलिस स्टेशन को दी। उन्होंने फोन पर ही पुलिस उप-निरीक्षक बी०एस० फलाली को बताया कि लुटेरे पेट्रोल पम्प से एक लाख तीस हजार तीन सौ रुपये लूट कर ले गये हैं। पुलिस उप-निरीक्षक ने भारतीय दंड विधान की धारा ३९२,३९७ और ३४ के अन्तर्गत मामला दर्ज किया।

पुलिस स्टेशन से आठ किलोमीटर दूर स्थित घटनास्थल पर जाकर उप-निरीक्षक फलाली ने स्थिति का निरीक्षण किया और फिर पुलिस स्टेशन लौट आये। उन्होंने पुलिस निरीक्षक मदन सिंग चह्वाण को स्थिति से अवगत किया और उनके ही निर्देशन में लुटेरों की खोज आरम्भ की।

काफी खोज के बाद भी जब उन्हें सफलता नहीं मिली, तब वह और इंस-पेक्टर मदन सिंग दोनों ही चिन्तित हो गये। पेट्रोल पम्प लूटे जाने की यह तीसरी घटना थी। इससे पहले दो घटनाएं और हुई थीं। तीनों ही घटनाएं कामठी पुलिस स्टेशन क्षेत्र में ही हुई थी।

२१ जून, १९८९ को हिंदुस्तान पेट्रोल पंप कापसी पर रात तीन बजे डाका पड़ा। यह पेट्रोल पंप नागपुर, भंडारा रोड पर कामठी से दक्षिण की ओर १८ किलोमीटर दूर स्थित है। यहां तीन व्यक्तियों ने ३८ हजार रुपया नकद लूट लिया। इस लूट की सूचना ४७ वर्षीय श्रावण सोंविदा मानकर ने फोन पर पुलिस को दी। पुलिस निरीक्षक चह्वाण ने पुलिस दल के साथ

घटनास्थल का निरीक्षण किया और थाने आकर मामला दर्ज कर लिया। अथक प्रयास के बाद भी पुलिस अपराधियों का पता नहीं लगा पायी।

१२ जुलाई, '८९ की रात ठीक इसी ढंग की डकैती की घटना नागपुर-जबलपुर रोड पर स्थित 'नया पेट्रोल पम्प' पर घटी। प्रभाकर कुवारे ने पेट्रोल पंप से चार किलोमीटर दूर स्थित कामठी पुलिस स्टेशन को इस घटना की सूचना दी। यहां पर भी तीन अज्ञात लुटेरों ने आठ हजार रुपये पर हाथ साफ किया था। घटनास्थल का निरीक्षण करने और मामला दर्ज करने के बाद पुलिस उप-निरीक्षक एन०सी० ओझा ने इंसपेक्टर चह्वाण के मार्गदर्शन में मामले की व्यापक जांच की। अपराधियों का पीछा करते हुए पुलिस नागपुर तक पहुंची, लेकिन अपराधी हाथ नहीं आये। खोजी कुत्ते भी पुलिस की कोई मदद नहीं कर सके।

तीनों ही डकैती की घटनाओं में अपराधियों की संख्या और अपराध-शैली एक सी होने से पुलिस अधिकारियों के मन में यह बात बैठ गयी कि तीनों डकैतियां एक ही गिरोह ने डाली है।

इन डकैतियों से पेट्रोल पंप वालों में सनसनी फैल गयी। रात नौ बजे के बाद पेट्रोल पंप वीरान सा हो जाता था। अपराधियों को पकड़ने में पुलिस की असफलता से जनता में असंतोष बढ़ता जा रहा था।

अन्ततः पुलिस ने अपराधियों को पकड़ने का बीड़ा उठा लिया। इंसपेक्टर चह्वाण ने अपने मुखबिर चारों ओर फैला दिये। १९ जुलाई को एक मुखबिर ने अपराधियों के संबंध में इंसपेक्टर चह्वाण को महत्वपूर्ण सूचना दी। इंसपेक्टर चह्वाण को निराशा के घने अंधकार में आशा की किरण मिल गयी। उन्होंने मुखबिर के साथ प्रधान आरक्षक रामदास कुमरे को अपराधियों का सुराग पाने के लिए भेज दिया।

मुखबिर प्र० आरक्षक रामदास कुमरे को अमरावती रोड पर स्थित वाडी ले गया। वहां पूछताछ करने पर पता लगा कि चुंगी नाके के पास स्वर्ण सिंग पुत्र गुरनाम सिंग की ठेलानुमा एक दुकान है, जहां कैसेट तथा जनरल स्टोर्स के सामान बिकते हैं। वहां पर कुछ संदिग्ध व्यक्ति बैठते हैं, जिनके बारे में कहा जाता है कि वे आपराधिक कार्यों में संलिप्त रहते हैं। रामदास कुमरे मुखबिर के साथ स्वर्ण सिंग की दुकान भी देख आया।

रामदास कुमरे ने लौटकर सारी बातें इंसपेक्टर चह्वाण को बतायीं। मुखबिर पहले ही बता चुका था कि उसे जो जानकारी मिली है, उसके अनुसार स्वर्ण सिंग और उसके दो अन्य साथी ही पेट्रोल पम्प की डकैतियों के लिए जिम्मेदार हैं। दूसरे दिन इंसपेक्टर चह्वाण ने पेट्रोल पंप के डकैतों को पकड़ने की योजना तैयार की। उन्होंने प्र० आरक्षक रामदास कुमरे के साथ पुलिसकर्मी प्रकाश राजगुरु को सादी वर्दी में दुकान पर निगरानी के लिए वाडी भेजा। ये दोनों दिन भर संदिग्ध व्यक्तियों का जायजा लेते रहे। रात्रि आठ बजे पुलिस निरीक्षक चह्वाण के पहुंचते ही पुलिस ने स्वर्ण सिंग की ठेलानुमा दुकान घेर लिया। उस समय दुकान में २४ वर्षीय स्वर्ण सिंग तथा उसका बड़ा भाई जोगेन्द्र सिंग मौजूद थे। दुकान की तलाशी लेने पर एक भरा हुआ देशी कट्टा मिला। पुलिस दोनों भाइयों को गिरफ्तार करके कामठी ले आयी।

कड़ाई से पूछताछ करने पर दोनों टूट गये। दोनों ने यह स्वीकार किया कि पेट्रोल पम्प की डकैतियों में उनका हाथ था। उन दोनों ने यह भी बताया कि इन

सब अपराधों में शामिल तीसरा व्यक्ति उनका छोटा भाई सुखविंदर सिंग है।

यह पूछे जाने पर कि सुखविन्दर सिंग कहां है, उन दोनों ने बताया कि वह निरमा वाशिंग पाउडर की सप्लाई देने मेटाडोर लेकर तोतलाडीह गया है। उन दोनों ने मेटाडोर का नम्बर तथा ड्राइवर का नाम बता दिया।

उन दोनों द्वारा दी गयी जानकारी के आधार पर कामठी थाने के इंसपेक्टर ने देवलापार पुलिस स्टेशन के इंसपेक्टर से सुखविन्दर सिंग को गिरफ्तार करने का आग्रह किया। देवलापार एक छोटा सा नगर है, जो कामठी से ४० किमी० दूर है और देवलापार जबलपुर रोड पर स्थित है। तोतलाडीह देवलापार थाने के अन्तर्गत आता है।

कामठी थाने के इंसपेक्टर के आग्रह पर देवलापार की पुलिस ने सुखविन्दर सिंग को गिरफ्तार करके कामठी पुलिस को सौंप दिया।

पुलिस ने तीनों भाइयों को अदालत में पेश करके एक सप्ताह के रिमांड पर ले लिया। रिमांड के दौरान की गयी पूछ-ताछ से तीनों भाइयों के जीवन के अतीत के पृष्ठों से जो तथ्य उभर कर सामने आये, वे इस प्रकार हैं—

२७ वर्षीय जोगेन्द्र सिंग, २५ वर्षीय स्वर्ण सिंग और २३ वर्षीय सुखविन्दर सिंग सगे भाई थे। इनके पिता गुरनाम सिंग जम्मू में ट्रक यूनियन ट्रांसपोर्ट में काम करते थे। वह पंजाब के कपूरथला जिले में ढेलमा पुलिस स्टेशन के अंतर्गत आनेवाले सरगपुर गांव के रहनेवाले थे। निर्धनता के कारण घर की स्थिति बहुत ही दयनीय थी। इसी तंगी की हालत में गुरनाम सिंग ने दूसरी बीवी रख ली और उसी का होकर रह गया।

श्री मदन सिंग

उसकी पहली बीवी स्वर्ण कौर तथा बच्चे असहाय हो गये। जीवन-निर्वाह का कोई आधार नहीं रह गया। तीनों भाई काम-धंधे की तलाश करने लगे। जोगेन्द्र सिंग लकड़ी की कटाई का काम करने लगा। बाकी दोनों भाई ट्रक पर काम करने लगे। जोगेन्द्र सिंग कुछ दिनों बाद काला संघा चला आया, जो उसके गांव सरगपुर के पास ही था। वहीं पर उसने गुजर सिंग की लड़की से शादी कर ली। अब वह दो बच्चों का बाप था।

जोगेन्द्र सिंग जिस समय काला संघा आया, उसी समय स्वर्ण सिंग सागर चला गया और वहां ट्रक ड्राइवरी करने लगा। यहीं उसने अपराध जगत में पहला कदम रखा। एक दिन उसके ट्रक में कुरई से सागर के लिए ९० बोरा गेहूं लादा गया। स्वर्ण सिंग की नीयत खराब हो गयी। उसने नरसिंगपुर के एक व्यापारी के हाथ लगभग बीस हजार रुपये में सारा गेहूं बेच दिया और ट्रक लेकर इंदौर चला गया, जहां उसने

ट्रक के दो टायर बेच दिये और ट्रक छोड़कर भाग गया। यह अपराध उसने लगभग पांच वर्ष पूर्व किया था। मामला पुलिस में दर्ज था और पुलिस अब भी उसकी तलाश कर रही थी।

१९८४ में उसने फिर अपराध किया। वह नागपुर के पाल ट्रांसपोर्ट का कपड़े से लदा एक ट्रक साढ़े तीन लाख रुपये में बेच दिया। पुलिस ने भारतीय दण्ड विधान की धारा ४०६, ४०७ के तहत उसके खिलाफ जुर्म कायम किया। उसकी बहुत तलाश की गयी, पर वह पुलिस के हाथ नहीं आया। वह वहां से अमरावती भाग गया। अमरावती में भी वह ऐसे ही अपराध करने लगा।

कुछ दिनों बाद वह नागपुर आया और इंदौरा चौक में एक मकान किराये पर लेकर रहने लगा। कामठी जाने के लिए रास्ता इंदौरा चौक से ही जाता है। यहीं उसकी जान-पहचान बिल्ला उर्फ बलबीर सिंग पुत्र फकीर सिंग से हुई। बिल्ला उसका हमउम्र था। वह कोई भी अपराध बेहिचक करता था। वह कंडाला जट्टा, जिला होशियारपुर का रहनेवाला था। उसने स्वर्ण सिंग को देशी कट्टा लाकर दिया और अपराध के पथ पर बढ़ने के लिए उसे उकसाया। स्वर्ण सिंग ने आरम्भ में जो अपराध किये, उनमें से कुछ में वह भी शामिल था।

बाद में स्वर्ण सिंग के दोनों भाई भी नागपुर आ गये और ट्रक के धंधे में लग गये। स्वर्ण सिंग तो पहले ही से अपराध करता था। यहां आने के बाद उसकी संगति में पड़ कर उसके दोनों भाई भी अपराध की ओर मुड़ गये। उन तीनों ने मिलकर पहली बार कामठी रोड स्थित मोहम्मद अली के मशहूर पेट्रोल पंप पर डाका डाला और पौने दो लाख रुपये लूट लिया।

लूट की रकम को लेकर वे तीनों अपने गांव सरगपुर चले गये। वहां उन्होंने लगभग डेढ़ लाख रुपये खर्च करके एक शानदार दुमंजिला मकान बनवाया। जब पैसा खत्म हो गया तो स्वर्ण सिंग अकेला ही नागपुर आया और इंदौरा चौक में अपनी पुरानी जगह पर रहने लगा।

कुछ दिनों बाद उसका बड़ा भाई जोगेन्द्र सिंग आया और अपने ही गांव के एक व्यक्ति के ढाबे के पास जो नागपुर भंडारा रोड पर है वहां उसने अपनी दुकान लगायी और रोजमर्रा की चीजें बेचने लगा। इसी बीच तीसरा भाई सुखविन्दर सिंग भी आ गया। वह ड्राइवरी करने लगा। तीनों भाई दिन में दिखाने के लिए काम-धंधा करते थे। वस्तुतः वे किसी पेट्रोल पम्प पर लम्बा हाथ मारने के चक्कर में रहते थे।

इन तीनों भाइयों ने मिलकर हिन्दुस्तान पेट्रोल पम्प पर डाका डाला और ३८ हजार रुपये नकद लूट लिये। कुछ दिनों बाद उन्होंने नया पेट्रोल पम्प पर डाका डाला और आठ हजार रुपये लूट लिया।

स्वर्ण सिंग इंदौरा चौक में जिसके घर में किराये से रहता था, उसकी लड़की शोभा ठाकुर से वह प्यार करने लगा। बाद में उसने शोभा से शादी कर ली। शोभा की छोटी बहन के रूप पर सुखविन्दर मुग्ध हो गया।

इसी बीच तीनों भाइयों ने जायसवाल पेट्रोल पम्प पर डाका डालने का निश्चय किया। उन्होंने शोभा की बहन से एक धमकी भरा पत्र लिखवाया और डाक से जायसवाल पेट्रोल पम्प भेज दिया। इसके कुछ दिनों बाद उन्होंने जायसवाल पेट्रोल पम्प पर डाका डाला और एक लाख, तीस हजार, तीन सौ रुपये लूट लिये।

पेट्रोल पंप पर डाका डालने से पहले सुखविन्दर और स्वर्ण सिंग आसपास के ढाबे पर बैठकर स्थिति का भलीभांति जायजा लेते थे। वे पेट्रोल पम्प के कर्मचारियों की संख्या तथा आने-जाने और भागने के मार्ग का पहले ही पता लगा लेते थे। वे रात के बारह बजे के बाद ही डाका डालते थे। डाके से दो-तीन घंटे पहले वे पेट्रोल पंप के आगे पीछे खेतों में ट्रक या टैम्पो से आकर छिप जाते थे। वहां से वे पेट्रोल पंप की गतिविधियों का निरीक्षण करते थे। उचित अवसर पाते ही तीनों भाई चेहरे को काले कपड़े से ढंक कर डाका डालते थे और पिस्तौल दिखाकर नकद रुपये छीन लेते थे। इसके बाद वे पुलिस को गुमराह करने के लिए एक ओर भाग जाते थे। कुछ दूर जाने के बाद वे अपना रास्ता छोड़ देते थे और खेतों के रास्ते से होते हुए विपरीत मार्ग अपना लेते थे।

डकैती से प्राप्त धन को तीनों भाई ऐश आराम की जिंदगी बिताने और शराब पीने पर खर्च करते थे। स्वर्ण सिंग ने शोभा से शादी करने के बाद वाडी में चुंगी नाके के पास एक ठेले में कैसेट की दुकान लगा ली और वानाडोंगरी में रहने लगा। कुछ दिनों बाद उसके दोनों भाई भी आकर उसके साथ रहने लगे।

सुखविन्दर सिंग ने अपने बयान में बताया कि तीनों भाई पेट्रोल पंप पर डाके डालना बंद करना चाहते थे, लेकिन ऐसा नहीं हो पाया क्योंकि वह शोभा की छोटी बहन के पीछे दीवाना था। उसे पाने के लिए वह धन कमाना चाहता था। उन तीनों ने कन्हानरामटेक रोड पर किसी पेट्रोल पंप पर अंतिम डाका डालने की योजना बनायी थी। भाग्य ने उनका साथ नहीं दिया और वे अपनी योजना पर अमल करने से पहले ही पुलिस की गिरफ्त में आ गये।

कामठी पुलिस ने इन तीनों के घर से मोहम्मद अली पेट्रोल पंप से लूटा गया माल बरामद कर लिया। नया पेट्रोल पंप से भागते समय स्वर्ण सिंग फोन का रिसीवर लेकर भागा था। वह रिसीवर पेट्रोल पंप से दूर मिल गया। तीनों भाइयों के पास से पुलिस ने कुल ३१ हजार रुपयों का माल बरामद किया।

तीनों के विरुद्ध आरोप पत्र दाखिल कर दिया गया है। तीनों भाई इस समय जेल में हैं। स्वर्ण सिंग एक बच्चे का बाप बन गया है। उसकी पत्नी शोभा कभी-कभी उससे मिलने जेल जाती है। ■

प्लास्टिक का इंजन

विज्ञान के आविष्कार विलक्षण और महत्वपूर्ण होते हैं। इनमें से कुछ तो ऐसे होते हैं, जिनकी मनुष्य ने आविष्कार से पहले कभी कोई कल्पना भी नहीं की थी। ऐसा ही एक आविष्कार प्लास्टिक का इंजन भी है, जिसने सबको आश्चर्य में डाल दिया है।

विज्ञान का यह चमत्कारिक आविष्कार जर्मनी में यूरोपियन मैन्युफैक्चरर्स एण्ड युनिवर्सिटी इंस्टीट्यूट के आटोमोबाइल्स विशेषज्ञों की एक टीम ने किया है। इस टीम द्वारा तैयार किया गया कार इंजन पूर्ण रूप से प्लास्टिक का बना है। इंजन के विभिन्न कल-पुर्जों को जोड़ने वाले नट-बोल्ट भी प्लास्टिक के बने हैं। इसका वाटर पम्प और जेनरेटर भी प्लास्टिक के हैं।

प्रस्तुति—पी०आर० शुक्ल

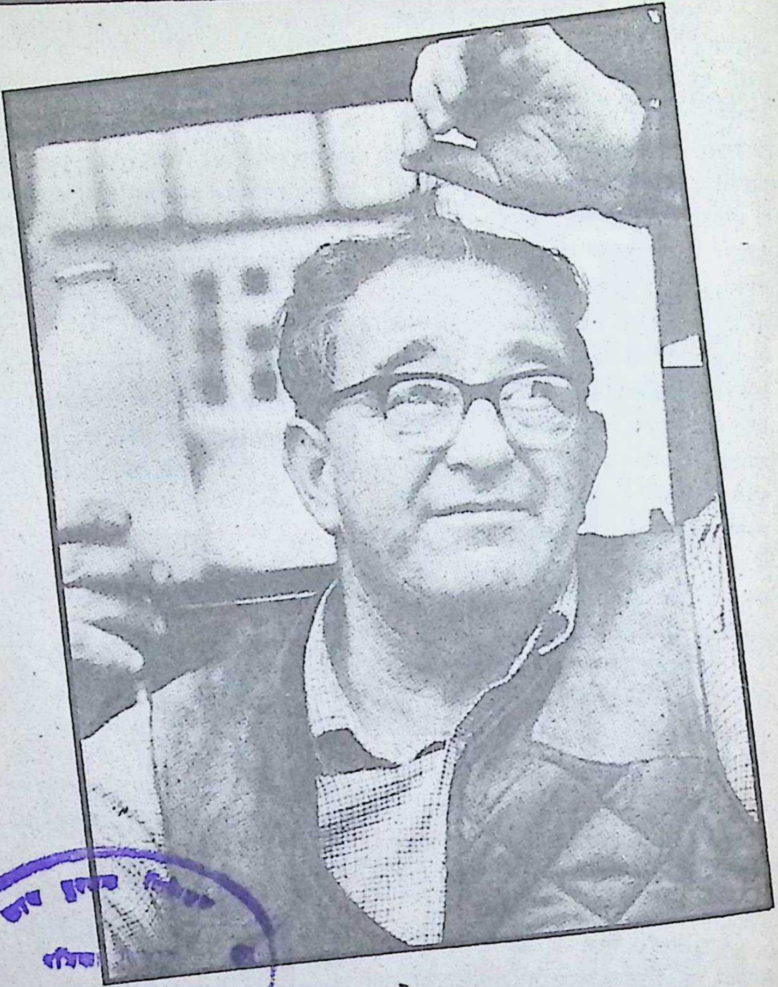

स्टांप (अस्पष्ट)

गंजे की किस्मत

हैम्पशायर निवासी हैरल्ड बैनेट को बचपन से ही अपने सिर के घुंघराले बालों से बेहद प्यार था। उसका विश्वास था कि सिर के बालों के बगैर किसी पुरुष का व्यक्तित्व अधूरा रहता है।

चमकती हुई चांद वाले लोग हैरल्ड को अच्छे नहीं लगते थे। स्वयं को किसी भी स्थिति में गंजा देखने की कल्पना उसके लिए भयानक और कष्टदायक थी।

मनुष्य जिस बात से डरता है वह बात उसके साथ जरूर होती है। हैरल्ड के खूबसूरत बालों को सहसा जैसे किसी की नजर लग गयी। पच्चीस की उम्र पहुंचते ही उसके सिर की फसल उजड़ने लगीं। कोशिशों के बावजूद भी बालों की फसल को वह उजड़ने से नहीं बचा पाया। दो बरस में ही उसके सिर के नब्बे प्रतिशत बाल गायब हो गये। वह एक गंजा इंसान बन गया।

हैरल्ड अपने सिर का गंजापन सहन नहीं कर पाता था। उसने गंजेपन से छुटकारा पाने का प्रयास जारी रखा। उसने सिर पर कई प्रकार के तेल लगाये, औषधियुक्त मरहमों का लेप किया, दवाएं खायीं, किन्तु कोई आशाजनक परिणाम न निकला। उसके सिर की बंजर बनी जमीन पर दोबारा बालों की फसल नहीं लहलहायी।

कई बरसों के प्रयास के बाद हैरल्ड को मायूसी की हालत में लगा कि सिर पर दोबारा बाल उगाने का प्रयास दीवार पर सिर पटकने के समान है। जब ५४ वर्ष की उम्र तक उसका गंजापन नहीं गया, तब उसने इस सत्यता से समझौता कर लिया कि अब उसे जीवन भर गंजा ही रहना है।

हैरल्ड शहर में अपने ग्राहकों को नियमित रूप से दूध की बोतलें सप्लाई करता था। एक दिन वह गाड़ी में से बोतलें निकालकर ऊपर उठा तो उसका सिर लोहे की उस सलाख से जोर से जा टकराया जो दरवाजे को खुला रखने के काम आती थी। हैरल्ड का मस्तिष्क सुन्न सा हो गया। उसको ऐसा लगा जैसे उसकी गंजी खोपड़ी से खून बह रहा हो। उसे अपनी गंजी खोपड़ी में खुजलाहट महसूस हुई। अगले दिन जब हैरल्ड तैयार होने के लिए दर्पण के सामने खड़ा हुआ, तब उसको अपनी आंखों पर यकीन नहीं आया। वह जो कुछ देख रहा था वह अकल्पनीय चमत्कार था। गंजी खोपड़ी पर, जहां उसे पिछले दिन

चोट लगी थी, उसी के आसपास बाल निकल रहे थे। उसने अपनी गंजी खोपड़ी पर हाथ फेरा तो उसे खुरदुरापन महसूस हुआ। ध्यान से देखा तो उसकी खुशी का ठिकाना न रहा, क्योंकि उसके सिर पर बाल निकल रहे थे।

कुछ ही दिनों में हैरल्ड को अपनी गंजी खोपड़ी पर उगते हुये बाल साफ दिखायी देने लगे, जो काफी तेजी से बढ़ रहे थे। दो-तीन मास में ही हैरल्ड की चमकती चांद काले-सफेद बालों में छिप गयी। खोपड़ी पर लगी चोट उसके लिए वरदान बन गयी। इस विलक्षण चमत्कार से हैरल्ड स्तब्ध तो हुआ ही, साथ ही साथ बेहद खुश भी हुआ।

जो भी व्यक्ति हैरल्ड को देखता, वही चकित रह जाता था। जिस गंजेपन के संबंध में यह प्रसिद्ध था कि वह ठीक ही नहीं होता, वह कैसे ठीक हो गया, इसे जानने के लिए सभी उत्सुक थे। जब लोग हैरल्ड से पूछते कि उसने अपना गंजापन कैसे दूर किया, तब वह उत्तर देता—"भाई, गंजेपन से छुटकारा पाने का एक ही रास्ता है कि अपनी गंजी खोपड़ी को किसी लोहे की सलाख के साथ दे मारो।"

प्रस्तुति—सुरेन्द्र कुमार

जिन्दगी का तोहफा

सर्कस के एक जोकर ने, जो केवल रंग-बिरंगी टोपी लगाकर विनोद भरी बातों और मुद्राओं से दर्शकों को हंसाता रहता है, ऐसा अद्‌भुत साहस दिखा दिया कि दर्शकों ने दांतों तले अंगुली दबा लिया। वह युवती जिसकी उसने जान बचायी, उस पर इतनी दीवानी हुई कि अपनी जिन्दगी से दूर हट जाने पर भी उसने उसका पीछा तब तक नहीं छोड़ा, जब तक कि उसने उसे ढूंढ़ नहीं लिया।

यह कहानी है, दो ऐसे कलाबाजों की जो आस्ट्रेलिया के सोलोव्रास सर्कस में साथ-साथ काम करते थे। इनमें से एक का नाम था, नेल्सन यंग और दूसरे का नाम था जूली। जूली अपनी कलाबाजी में जितनी अधिक मोहक थी, उससे कहीं अधिक मोहक वह अपनी सुन्दरता में थी। नेल्सन जूली के अपरूप सौंदर्य पर मुग्ध था, किन्तु जूली को इसका पता न था।

सर्कस में एक और कलाबाज था, ट्रोपेज। वह भी जूली को चाहता था, हालांकि जूली को उससे कोई आकर्षण नहीं था। वह बहुधा जूली के लिए सब कुछ करने का दम भरता था। जूली को उसकी बातों पर विश्वास नहीं होता था। वह जानती थी कि जिसमें कुछ कर गुजरने की क्षमता होती है, वह दम्भ नहीं भरता, बल्कि समय आने पर अपने को खरा सिद्ध कर देता है।

गर्मी के दिन थे। सर्कस शुरू होने में अभी कुछ समय था। जूली खेमें में प्रसन्न मुद्रा में बैठी थी। आज उसका सोलहवां जन्म दिवस था। उसके परिचित और सर्कस के उसके सहकर्मी उसे बधाइयां दे रहे थे।

इसी समय सर्कस में काम करने वाला एक नौकर आया और बोला, "मिस जूली,

किसी ने आपको आपके जन्म दिन पर सोलह गुलाब के फूलों का यह गुलदस्ता भेजा है। गुलदस्ते से चिपकी हुई एक पर्ची है। इसे भी पढ़ लीजियेगा।"

जूली ने गुलाब के महकते फूलों का गुलदस्ता हाथ में ले लिया। गुलाब के फूलों की महक से उसके मन का गुलाब भी खिल गया। वह सोचने लगी–"निश्चय ही जिस किसी ने यह गुलदस्ता भेजा है, वह हृदय से मुझे चाहता है।" उसने पर्ची को देखा तो उस पर लिखा था–"तुम्हारे लिए मेरी तरफ से प्यार।" इन शब्दों ने उसके मन में प्यार का बीज़ तो बोया ही, साथ ही यह उत्कट उत्सुकता भी जगा दी कि आखिर यह उपहार किसने भेजा है।

जूली ने नौकर से बार-बार पूछा कि यह उपहार किसने भेजा है, किन्तु नौकर ने कुछ भी न बताया। अन्ततः निराश होकर वह सर्कस में अपनी कलाबाजी दिखाने चली गयी।

ट्रोपेज उसके पास ही खड़ा था। उसके चेहरे पर कुटिलता और ईर्ष्या के भाव थे। वह जानता था कि गुलाब के फूलों का गुलदस्ता नेल्सन ने भेजा है, किन्तु उसने किसी को कुछ नहीं बताया।

इसके बाद जूली सर्कस में अपना करतब दिखाने चली आयी। वह मिन्येक नामक हथिनी पर सवार हुई और अपना रोमांचक करतब दिखाने लगी। इससे पहले वह कभी भी 'मिन्येक' नाम की हथिनी पर सवार होकर सर्कस में दर्शकों के सामने नहीं आयी थी। जूली अपने जन्म दिन के उमंग में थी और मिन्येक का मिजाज ठीक नहीं था। वह कुछ अधिक क्रोध में थी। जूली अपने करतब से दर्शकों के मन को अनोखे ढंग से मोह लेना चाहती थी और मिन्येक उसे काल की झोली में डाल देना चाहती थी।

मिन्येक हथिनी ने बेहद गुस्से से हिंसक रुख अपना लिया। उसने अपने शरीर को झटका दिया और कलाबाजी दिखाने वाली जूली उस पर बंधी जीन में उलझ गयी। हथिनी इतने से ही शांत नहीं हुई। वह पागल की तरह मुख्य तम्बू को फाड़कर बाहर निकल आयी। उसने एक वृक्ष को उखाड़ डाला। उसने जूली को अपनी सूंड़ में लपेट लिया और उसे लगातार तेजी से घुमाने लगी।

जूली मदद के लिए चिल्लायी, किन्तु कोई आगे बढ़कर उसे बचाने न आया। मौत से जूझकर उसे मौत से बचा लेने का साहस कोई भी न जुटा पाया। उसके लिए जीने-मरने की कसम खाने वाला ट्रोपेज भी दूर खड़ा तमाशा देखता रहा और मौत जूली को अपने दामन में समेटने के लिए आगे बढ़ती रही। जूली निराश हो गयी। उसने समझ लिया कि उसे अब मृत्यु से कोई नहीं बचा सकता।

जूली ने असहाय दृष्टि से भीड़ पर दृष्टि डाली। उसे नेल्सन बेचैनी से इधर-उधर भागता नजर आया। वह लोगों से जूली को बचाने की प्रार्थना करता था, किन्तु किसी पर उसकी प्रार्थना का कोई प्रभाव नहीं पड़ता था। जंगली जानवरों को जीवन भर प्रशिक्षण देनेवाले भी विवशता की मूर्ति बने खड़े थे। जब कोई आगे नहीं बढ़ा, तब रंग-बिरंगी टोपी लगाने वाला जोकर नेल्सन आगे बढ़ा।

नेल्सन ने पाव रोटी का एक टुकड़ा बेकाबू हो चुकी हथिनी की ओर फेंका। उसने ऐसा इसलिए किया कि जब तक हथिनी पावरोटी लेने के लिए अपनी सूंड़ बढ़ाये, तब तक जूली नीचे कूद पड़े। जूली नेल्सन का मंतव्य समझ गयी। हथिनी के सूंड़ आगे बढ़ाने की स्थिति में जब वह नीचे कूदने की कोशिश करने लगी तब वह जीन से उल्टी लटक गयी। उसके पैर ऊपर फंसे रहे और सिर जमीन की ओर हो गया। हथिनी ने पावरोटी लेने के बाद जूली को जमीन पर पटक कर अपने पैरों

से कुचलने का इरादा किया। जूली ने मौत की प्रतीक्षा में भय से आंखें बन्द कर लीं।

अचानक नेल्सन तेजी से लुढ़कता हुआ आया। हथिनी ने जूली को जमीन पर पटकने के लिए ज्यों ही सूंड़ नीचे की त्यों नेल्सन ने पूरी ताकत से जूली को अपनी ओर खींच कर अपनी बांहों में उठा लिया। इससे पहले कि हाथी उससे भी बदला लेने के लिए आगे बढ़ता, वह जूली को लेकर ऐसे स्थान पर पहुंच गया, जहां उसके लिए कोई खतरा नहीं था। नेल्सन के साहस ने जूली को मृत्यु से उस समय बचा लिया, जब कि मृत्यु के हाथ जूली तक पहुंच चुके थे।

जूली ने आंखें खोलीं तब वह अपने को नेल्सन की बाहों में पाकर फूली न समायी। वह बोलीं, "नेल्सन, मैं सोचती थी कि रंग-बिरंगी टोपी लगाने वाले जोकर में साहस नहीं होता, किन्तु आज मैं समझ गयी कि तुममें जो साहस है, वह साहस विरले लोगों में ही होता है...आज तुमने मेरे जन्म दिन पर जीवन का उपहार दिया है। यह एक ऐसा उपहार है, जिसने सदा के लिए तुम्हें मेरे दिल में बसा दिया है।

"जूली, तुम्हारे जन्म दिन पर मेरा यह दूसरा उपहार है। इससे पहले भी मैंने तुम्हें एक उपहार और दिया है।" नेल्सन ने इतना कहा तो जूली को सोलह गुलाब के फूलों का गुलदस्ता याद आ गया। वह बोली, "तो क्या सोलह महकते गुलाब के फूलों का गुलदस्ता तुमने ही भेज था?"

"हां जूली, उसे मैंने हीं भेजा था। उसी गुलदस्ते ने तो मुझमें तुम्हें बचाने के लिए अपने प्राण की बाजी लगाने का साहस भरा।" नेल्सन के मुंह से इतना सुनते ही जूली के हृदय सरोवर में प्रेम के पुष्प खिल उठे और वह उनकी मादक सुगंध से आत्म-विस्मृत हो गयी।

पास ही ट्रेपेज खड़ा था। जूली पर वह अपना एकाधिकार समझता था। जूली के मन मन्दिर में नेल्सन को अधिष्ठित होते देख उसका मन ईर्ष्या और प्रतिशोध से जल उठा। उसने नेल्सन को यह धमकी दे दी कि यदि वह सर्कस में रहेगा, तो वह उसकी हत्या कर देगा।

नेल्सन अगले ही दिन सर्कस छोड़कर न जाने कहां चला गया। सर्कस के उसके सहयोगियों ने भी उसे बहुत ढूंढ़ा, किन्तु कहीं पता नहीं लगा। जूली का तो बुरा हाल था। जिसको उसने अपने मन मन्दिर का देवता बना कर जीवन भर उसकी पूजा करने का व्रत लिया था, वही उसे छोड़कर न जाने कहां चला गया। वह दुख और पीड़ा के आवेग में अपनी सुध-बुध खो बैठी।

इसी समय उसकी अन्तरात्मा की आवाज गूंजी, "जिस व्यक्ति ने तुम्हें मत्यु के मुंह से बचाया, क्या उसके लिए तुम इतना भी नहीं कर सकती कि तुम तब तक चैन न लो, जब तक तुम उसे ढूंढ़ न लो। नेल्सन तो अपनी अग्नि-परीक्षा में खरा उतरा। अब तुम भी अपनी अग्नि-परीक्षा में खरी उतरो।"

अन्तरात्मा के उद्‌बोधन पर जूली ने नेल्सन को ढूंढ़ निकालने का व्रत ले लिया। उसने सर्कस छोड़ दिया और चार-पांच वर्षों तक दीवानी होकर नेल्सन की खोज में भटकती रही। अन्त में उसकी साहस भरी साधना रंग लायी और न्यूजीलैण्ड में उसकी भेंट उसके प्रेमी से हो ही गयी। जिस समय वे दोनों मिले उस समय जूली की आंखों में शिकायत के आंसू थे, हृदय में प्रेम का आवेग था और वाणी में अब कभी न अलग होने का संकल्प था। नेल्सन के चेहरे पर भी खुशी थी।

जूली और नेल्सन दाम्पत्य बंधन में बंध गये। दोनों आज भी सिडनी में है। ■

संस्थापक: स्वर्गीय श्री क्षितीन्द्रमोहन मित्र। सम्पादक: आलोक मित्र। श्री वीरेन्द्रनाथ घोष द्वारा मित्र प्रकाशन प्रा०लि० के लिए प्रकाशित तथा माया प्रेस प्रा०लि०, इलाहाबाद—३ में मुद्रित। दिल्ली कार्यालय—१०५ रोहित हाउस, ३ टालस्टाय मार्ग, नई दिल्ली—११०००१।

पहले परीक्षा करें योजना

सफेद दाग

बर्षो लगातार परिश्रम, खोज के बाद सफेद दाग की चिकित्सा मे सफलता प्राप्त की है। यह इतनी तेज व प्रभावी है कि इलाज शुरु होते ही दाग का रंग वदलने लगता है और शीघ्र ही दाग होने बाली कारणो को दूर करते हुए चमड़ी के रंगो मे सदा के लिए मिला देता है। **अभी प्रचार हेतू ''पहले परीक्षा करें योजना'' के अन्तर्गत 7 दिनो की औषधि फ्री दी जा रही है** ताकि पहले परीक्षण कर गुण को देख लें, संतुष्ट हो ले, तब इलाज करावें। इसलिए निराश रोगी एवं कहीं से चिकित्सा करा रहे रोगी भी इस योजना का लाभ अवश्य उठावें। रोगी का उम्र, दागो का स्थान एवं कितने दिनो से है अवश्य लिखकर भेजें।

पेट गैस के रोग

हमारे आयुर्वेदिक इलाज से पेट में गैस बनती हो, अफरा, बदहजमी, कब्ज, भूख न लगना, हवा खारिज न होना, छाती में जलन, नींद न आना, दिल की धड़कन की शिकायत, बेचैनी, माथे में चक्कर की शिकायत से शीघ्र छुटकारा प्राप्त करें।

इलाज कि किमत रू. 100/-स्पेशल इलाज रू. 200/- डाक खर्च अलग।

निराशा का जीवन क्यों?

बचपन के गलत कार्य करने से या कुसंगति के कारण या उम्र की अधिकता के कारण या किसी अन्य कारण वश यदि वैवाहिक जीवन निराशा से भर गया हो या किसी गुप्त रोग जैसे स्वप्नदोष,पेशाव, मे धातू जाता, शीघ्रपतन, नामर्दी, लिंग कमजोरी, शुक्राणु की कमी, स्त्री रोग-श्वेत प्रदर, मासिक खरावी, संतानहीनता रोग से ग्रसित हो गए हो तो रोग का विवरण उम्र सहित भेजकर **परामर्श फ्री लें या निःसंकोच चिकित्सा हेतू लिखें। गाईड ''यौवन दीप'' मुफ्त मंगावे।**

गया आयुर्वेद भवन (M.S/9।

पो० कतरी सराय (गया)

Regd. No. AD-5
Lic. No. U/AD-4

M.K. Suppliment

RNI No. RN 2393/57
Rs. 7.00 Per Copy

पं० द्वारका प्रसाद शर्मा (वैद्य भूषण) की अनुपम भेंट

जन प्रियता का प्रतीक

हिमताज तैल

अनुभूत आयुर्वेदिक औषधियों के सम्मिश्रण से बनाया गया हिमताज तैल सिर दर्द को दूर कर, आंखों की रोशनी बढ़ाता है। हिमताज-तैल सिर पर लगाते ही मस्तिष्क के कोमल तन्तुओं को शीतलता प्रदान क[illegible] है एवं मस्तिष्क को तनावमुक्त करके सदा प्रफुल्लित बनाये रखता है। यह तैल बालों की जड़ों [illegible] आवश्यक तत्व प्रदान कर उन्हें मजबूत एवं लम्बा, घना, काला बनाये रखने में सहायक है। जन-जन [illegible] पसन्द 'आयुर्वेदिक' हिमताज तैल

कब्ज संहार

मन्दाग्नि, अजीर्ण अरुचि, पेटदर्द, अम्लपित्त, कब्ज को दूर कर पेट में वायु (गैस) बनने की प्रतिक्रिया को समाप्त करके जठराग्नि को प्रवल बनाता है

आयुर्वेदिक औषधियों के निर्माता

पं० द्वारका प्रसाद शर्मा (वैद्य भूषण)

१६१/१, महात्मा गान्धी रोड (बॉग[illegible] बिल्डिंग) कलकत्ता-७००००७